Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

...sident about the ...
...y also visited some ...

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अखिल भारतीय आयुर्वेद महासम्मेलन

श्री शंकर दाजी शास्त्री पदे स्मारक पुस्तकालय

धन्वन्तरी-भवन, नई दिल्ली-२६

१. क्रमांक

२. ग्रन्थनाम आयुर्वेद शब्दार्णव:

३. लेखक/सम्पादक डा. गंगा प्रसाद शर्मा

४. प्रकाशक

५. क्रय तिथि

६. मूल्य

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

विज्ञापनम् ।

पुरा किल ज्ञानगरिमाम्बुधिस्तपःप्रभावर्द्धिशाली कारुण्यनिलयो भगवानात्रेय इतस्ततो घोरैर्व्याधिभिर्भृशं पीड्यमानान् लोकानालोक्य व्यथितहृदयस्तेषां दुःखं संहर्त्तुकाम आयुर्वेदमहाचार्यात् त्रिदिवपतेर्भगवतो मघोनः साङ्गमायुर्वेदमधीत्य पृथिव्यां प्रचारयामास । ततःप्रभृति ज्ञानविज्ञानसम्पन्नैर्बहुभिर्मुनिभिर्विविधानि चिकित्सातन्त्राणि प्रणीय जगतः परमोपकारः साधितः । परन्तु तन्त्राणां तेषां बहुकालगतिप्रभावादस्माकं दुरदृष्टवशान्निघण्ट्वादीनामकण्ठस्थकरणाच्च शब्दार्था ओषध्यादीनां लोकप्रचलितपर्यायाश्च न सम्यगवभासन्ते । इत्यादिभिः कारणकूटैरायुर्वेदशास्त्रस्य तदनुसारिण्याश्चिकित्सायाश्च सम्यगादरहानिर्जाता । इत्याकारैर्हेतुसंघैरस्माभिः धन्वन्तरिहरीतक्यादिगुडूच्यादिद्रव्यगुणग्रन्थमदनपालभावप्रकाशामरकोषादि—निघण्टुप्रभृतिभ्यो विविधायुर्वेदग्रन्थेभ्योऽकारादिश्रेणिबद्ध आयुर्वेदशब्दार्णवाख्यः संग्रहोऽयं निबद्धः । संग्रहस्यास्य निबन्धेऽस्माभिर्महान् यत्नः श्रमश्च कृतः । कीदृश एष जात इत्यपेक्षायां सहृदयेषु विद्वत्स्वेव तद्विचारभारः । संग्रहेऽस्मिन्नायुर्वेदपारदर्शिना प्रथितयशसा चिकित्सकशिरोमणिना पूज्यपादेनास्मद्गुरुणा श्रीयुतशुक्लोपपदसंकटाप्रसादशर्म्मणा विशिष्टा कृपादृष्टिर्विहिता तच्चरणभक्तिबलेनैवाहमस्य प्रकाशे समर्थ आसम् । किमत्र बहुनोक्तेनेति । तथैव तदप्यवश्यं वाच्यं मम चिरसुहृदा वेदादिशास्त्रविचक्षणेन श्रीमता भीमसेनशर्म्मणा एतस्य संशोधनादौ भूयान् श्रमः कृतः । तत्कृत एष महोपकारश्चिराय मम हृदि जागरूको वर्तिष्यत इति ॥

फाल्गुनशुक्लदशम्यां शनौ १९४३ संवत्सरे

ह० पं० गंगाप्रसादशर्म्मणः चिकित्सकस्य ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Lk
15786

~~061572~~
1

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No. L.R. 1.S.M86
Book No.
Acc No. 000018

ओ३म्

भूमिका

विदित हो कि आयुर्वेद (वैद्यक) के पूर्णाभिप्राय जानने के अर्थ उस के कोषों को जान लेने की सर्वसाधारण को अत्यावश्यकता बनी रहती है, इस का कारण यह है कि हमारे प्राचीन ऋषि महात्माओं ने भी संस्कृत भाषा में निघण्ट्वादि अनेक ग्रन्थ बड़े परिश्रम से रचे हैं जिन से हम को पूर्ण लाभ होता है जब हम उन को पूर्ण रूप से कण्ठस्थ कर लेते हैं। परन्तु यह एक बड़े शोक का विषय है कि वे ग्रन्थ आधुनिक मनुष्यों को जो कि निघण्ट्वादि कण्ठस्थ किये विना ही आयुर्वेद के सम्पूर्ण प्रयोगों के पढ़ने वा जानने की आकांक्षा रक्खते हैं यथेष्ट लाभदायक नहीं होते, क्योंकि और २ भाषाओं के तुल्य इन प्राचीन कोषों की प्रणाली सुगम नहीं है कि विना कई वर्ष अध्यापक के पास पढ़े और कण्ठस्थ किये लाभ उठा सकें। इस विचारांश से यद्यपि कितनेक महात्माओं ने कोष बनाये तथा उन से संस्कृत पढ़ने वालों को अधिक लाभ भी पहुंचता है तथापि वे ग्रन्थ चिकित्सकों का उपकार यथेष्ट नहीं कर सक्ते क्योंकि उन में अधिक औषधियों के शब्द संस्कृत से संस्कृत और प्रचलित देश भाषा में मिलना दुर्लभ सा प्रतीत होता है तथा उन कोषों का मूल्य भी अधिक है। इन सब अभावों के दूर करने के लिये अपने कई एक सन्मित्रों के अनुरोध से मैंने यह आयुर्वेदशब्दार्णव नाम का कोष अंगरेज़ी कोषों (Dictionaries) के सदृश अकारादि श्रेणिबद्ध रचा है कि जिस से मुझ को आशा है कि यह कोष आयुर्वेद के पठनपाठन में सर्वसाधारण को यथेष्ट लाभदायक हो। क्योंकि इस में सम्पूर्ण आयुर्वेदीय शब्दों के पर्यायवाची शब्द जहां तक ज्ञात होसका वहां तक प्रचलित इस समय की लोकभाषा में सुगम रीति से दर्शाये गये हैं और जिन के संशोधन में महात्मा श्रीमत् वेदादि शास्त्रों के जानने वाले भीमसेन शर्म्मा प्रयाग निवासी ने अत्यन्त परिश्रम किया है अधिक क्या विद्वानों के समक्ष लिखूं।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इस ग्रन्थ की-नियमावली

प्रथम=इस में अधिक विस्तार भय से केवल द्रव्यों के नाम भिन्नार्थ और एक या दो पर्याय वाची शब्द लिखे गये हैं।

द्वितीय=इस के लिखे जाने के समय श्रीधन्वन्तरि हरीतक्यादि गुडूच्यादि द्रव्य-गुणग्रन्थ, भावप्रकाश, मदनपाल और अमरकोषादि निघण्टु से लिये गये थे कि कोई प्रचलित शब्द च्युत न होजांय।

तृतीय=शब्द के आगे लिङ्ग का संकेत फिर संस्कृत शब्द पुनः क्रम से उन का अर्थ आर्यभाषा में लिखा गया है।

चतुर्थ=जो शब्द लिंगान्तरों में अर्थ करते हैं उन के लिंग संकेताक्षर और शब्दान्ताक्षर ( ) ब्राकट में प्रकाश कर अर्थ किया गया है।

पञ्चम=पु. (पुल्लिङ्ग)। स्त्री. (स्त्रीलिङ्ग)। न. (नपुंसकलिङ्ग) त्रि. (त्रिलिङ्ग) व्य. (अव्यय) जानना चाहिये।

षष्ठ=पर्यायवाची को (,) लघुविराम से। भिन्नार्थ को (.) गुरुविराम से और अन्त में (।) पूर्णविराम से पृथक्त्व दिखाया गया है।

फाल्गुनसुदी १० शनिश्चरबार
संवत् १९४३ द्विवेदिपुर

ह० पं० गङ्गाप्रसाद शर्म्मणः
चिकित्सकस्य।

19

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अथायुर्वेदशब्दार्णवः ॥

अकरा–स्त्री. आमलक। आंवला,अमरा ।

अकुप्य–न. स्वर्ण. रौप्य। सोना. चांदी ।

अकोट्–पुं. गुवाक । सुपारी का दरख़्त ।

अक्रान्त–त्रि. अनतिवाहित. अपराजित. उपस्थित(स्त्री) वार्त्ताकीवृक्ष। जिस्पर कोई सवकत न लेगया हो. हाज़िर. वैंगन का पौधा, भांटा का वृक्ष, वताऊ का वृक्ष ।

अक्ष–पु. कर्षपरिमाणक । तोला, सोलह मासे वज़न. रुद्राक्ष। पाशा। इन्द्रिय।

अक्षकलपु. चिंञा । इमली का पेड़. अमला का दरख़्त ।

अक्षत–त्रि. अखण्डित, (न०) भर्जिततण्डुल. यव (स्त्री) कर्कटशृङ्गी। साबूत. हिजड़ा.खीला,लाई.जों.काकड़ाशृङ्गी।

अक्षधर–पु. रुद्राक्षवृक्ष। रुद्राक्ष का पेड़ ।

अक्षधूर्तिल–पु. वृषभ । बैल, नरगावो।

अक्षारलवण–न. गोघृत, गोदुग्ध। मुंगी. तिल. जों. सेन्धानिमक। जिस में कोई खार वा लवण न मिला हो ऐसा धान्य वा हविष्य होमने योग्य वस्तु ।

अक्षि–न. चक्षु । आंख, चशम ।

अक्षिब–पुं. शोभाञ्जनवृक्ष, (न) सैंधवलवण । सुहांजने का पेड़, संहिजने का वृक्ष. सेंधा निमक ।

अक्षोट(ड)–पु. पीलूवृक्ष । पहाड़ी पीलुया, अख़रोट का दरख़्त ।

अखट्ट–पु. प्रियाल वृक्ष. अश्वत्थ। पीपल का पेड़. चिरोंजी का पेड़ ।

अखात–पु. देवखात, ह्रद । झील, खाड़ी, तालाव ।

अगज–न. शिलाजतु । शिलाजीत ।

अगद–पु. औषध (त्रि०) नीरोग । दवाई. तनदुरुस्त ।

अगदङ्कार–पु. चिकित्सक । वैद्य, वैद, तबीव ।

अगदतन्त्र–न. विषप्रतीकार. अगदो विषप्रतीकारः तदर्थं तन्त्रमगदतन्त्रम् अथवा विषगरवैरोधिकसम्प्रयोगो गदः, तस्याभावः अगदः अगदाय तन्त्रमगदतन्त्रम् । विषनाशन उपाय ।

अगरी–स्त्री. मूषिकविषनाशन. देवताड़ वृक्ष। एक किस्म की घास जिस्से चूहे का जहर उतरता है। चौराई ।

अगरु–न. पु० अगरु. सुगन्धियुक्त काष्ठ। एक किस्म की खुशबूदार लकड़ी।अगर।

अगस्ति–पु. मुनिद्रुम। अगस्तिका वृक्ष।

अगस्तिकुसुमशाक–न. अगस्ति के फूल का शाक ।

अगुरु–न. शिंशपावृक्ष, सुगन्धियुक्त काष्ठ, अगर(त्रि) लघु। शीशम. सन्दल. हलका।

अगरुगन्ध–न. हिंगु । हींग ।

अगूढगन्ध–न. हिंगु. मृगनाभि. पलांडु. लशुन। हींग. कस्तूरी. पियाज. लसन, थोम, लहसुन । मुश्क. बसल ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अग्नि—पुं. अनल. चित्रक । आग. चीता ।

अग्निगर्भ—पुं. सूर्य्यकान्तमणि. अग्निजार वृक्ष । आतशीशीशा. छींकुरि । एक किसम का दरखत । रणि ।

अग्निज—पु. चित्रक. भल्लात, (स्त्री) स्वर्ण । चीता. भेलावां. सोना ।

अग्निज्वाला—स्त्री. गजपिप्पली, धातकी । गजपीपरि. आंवला ।

अग्निदमनी—स्त्री. वृक्षविशेष । भूंख कम करनेवाली बूटी. लटजीरा ।

अग्निदीपन—पुं. वारुण । वरुणाका पेड़ ।

अग्निनिर्यास—पु. अग्निजार, एक किस्म का पौधा ।

अग्निप्रस्तर—पुं. अग्निजनक पाषाण । चकमकपत्थर ।

अग्निबीज—न. स्वर्ण । सोना ।

अग्निभ—न. स्वर्ण । सोना ।

अग्निभू—पु. स्वर्ण, स्वामिकार्तिक. जल । सोना. शिवजी का बेटा. पानी ।

अग्निमणि—पु. सूर्यकान्तमणि । आतशी शीशा ।

अग्निमन्थ—पु. जया । अगेथि. गनियारि. रणि. रनि । (अरणी)

अग्निमुखी—स्त्री. भल्लातक । भेलांवां. भेला ।

अग्निरजस—पु. इन्द्रगोप नामक कीट. स्वर्ण । वीरबहूटी. सोना ।

अग्निल—पु. भल्लातक । भेलांवां. भेला ।

अग्निवाह (हु)—पु. धूम । धुआं ।

अग्निशिख (शेखर)—पु. दीप. वाण. कुसुम्भवृक्ष. कुंकुम (न) स्वर्ण । चिराग. तीर. कुसुभे का दरखत. रोली सोना ।

अग्निशिखा—स्त्री. लांगली । करिहारी ।

अग्निष्ठ—न. लोहमय तण्डुलादि भर्जनपात्र । कड़ाह, कड़ाही ।

अग्निसख—पु. वायु, पवन । हवा ।

अग्निसार—न. रसाञ्जन । आंख की दवाई. सुरमा ।

अग्निसंस्पर्शा—स्त्री. पर्पटी. पद्मावती । सुगन्धद्रव्य उत्तरमें प्रसिद्ध है. पद्मावती ।

अग्र—न. पलपरिमाण । चार तोले का बांट ।

अग्रजङ्घा—स्त्री. प्रतिजङ्घा । जांघ का अगला भाग ।

अग्रहायण—पु. मार्गशीर्ष । अगहन ।

अङ्कुर—पु. न. रुधिर. लोम. बीजोद्भव. जल । खून. बाल. अंकुर. पानी ।

अंकोट(ठ)—पु. दीर्घकील । ढेरा. अंकोहर ।

अङ्कोल—पु. " " "

अङ्गग्रह—पु. शरीरबेदना । जिस्मानीतक्लीफ. देहपीड़ा ।

अङ्गज—पु. पुत्र. कन्या. केश. मद्य. पीड़ा. रुधिर. प्रेम । लड़का. लड़की. बाल. शराब. दर्द. खून. मुहब्बत ।

अङ्गना—स्त्री. कलनी । गंधप्रियंगु, प्रियंगु. मेहंदी के बीज ।

अङ्गव—पु. शुष्कफल । सूकाफल ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अङ्गविकृति–पु. अपस्माररोग. (स्त्री) अङ्गविकार । मिरगी की बिमारी. अंग का टेढ़ापन ।

अङ्गरुह–न. रोम. ऊर्णा. दन्त । रोंआ. ऊन. दांत ।

अङ्गारक–पु. मंगलग्रह. अंगार. कुरंटकवृक्ष. भृङ्गराज. स्फुलिङ्ग । मंगलग्रह. आगि. पीतकरसैला. वाणपुष्प. घमिरा. चिनगारी. कटसरैया ।

अङ्गारक–पु. भृङ्गराज । घमिरा ।

अङ्गारकमणि–पु. न० प्रवाल । मूंगा ।

अङ्गारककर्टी–स्त्री. पक्ववटका । लीट्टी. बाटी. भौंरिआ ।

अङ्गारधानिका–स्त्री. हसन्ती । अङ्गीठी. बरोसी ।

अङ्गारवल्लरी–स्त्री. करौंचानामक वृक्ष । करौंदा ।

अङ्गारवल्ली–स्त्री. लाक्षा । लाख, लाह ।

अङ्गारवृक्ष–पु. इंगुआ । इंगुदी ।

अङ्गारमञ्जरी–स्त्री. करौंचानामकवृक्ष । करौंदा ।

अङ्गुरि(री)–स्त्री. पाणिपादाङ्गुली । हाथ और पावों की उंगलियां ।

अङ्घ्रिपर्णी } स्त्री० चित्रपर्णीलता ।
अङ्घ्रिपर्णिका } चकोलिया बेल ।

अचिकुर–त्रि. खल्वाट । गञ्जा ।

अच्युत–पु. श्रीकृष्ण (त्रि०) स्थिर. वृक्ष विशेष । कायम. पीपल का दरख्त ।

अच्युतावास–पु. उदुम्बरवृक्ष. अश्वत्थ वृक्ष । गूलर. पीपल ।

अज–पु. मेष, छाग । बकरा ।

अजकर्ण–पु. सर्ज्जक । शाल पेड़ का भेद ॥

अजगन्धा–स्त्री. बनजवैन का पौधा । बबई ।

अजगन्धिका–स्त्री. बर्बरी । बबई ।

अजप्रिया–स्त्री. बदरी । बैरि ।

अजमोदा–स्त्री. दीप्यका । अजमोदा ।

अजमोदिका–स्त्री. यवानिका । यवाइनि, अजमायन ।

अजया–स्त्री. हरीतकी । हर्रं ।

अजरा–स्त्री. कपिकच्छु । किमाच. खजोहरा ।

अजलोमन्–पु. वृक्षविशेष । शूकशिम्बी का पौधा. खजोहरा. किमाच. कौंच ।

अजशृङ्गी–स्त्री. कर्कटशृङ्गी । मेढेसिंही, मेढासिंगी, ककरासिंगी ।

अजा–स्त्री. छागी । बकरी ।

अजाजी–स्त्री. श्वेत कृष्णजीरक । स्याह और सपेद जीरा ।

अजिनफला–स्त्री. टेपारीवृक्ष ।

अजिनयोनि–पु. कुरङ्ग । हरिण ।

अजीर्ण–न. रोगविशेष । बदहजमी ।

अज्झटा–स्त्री. भूम्यामलक । भुंइआमरा ।

अञ्चति–पु. वायु । हवा ।

अञ्जन–न. सौवीर । सुरमा ।

अञ्जनकेशी–स्त्री. नलिका, विद्रुमलता । नलिका, उत्तर में प्रसिद्ध है सुगन्धवाला के सदृश होता है । कहीं २ पवारी भी कहते हैं ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अङ्गुलिकर्ण—न. पक्षीविशेष ।

अङ्गुलिका—स्त्री. क्षुद्रमूषिका । छोटी-चूही, मुसरिया ।

अङ्गुलिकारिका—स्त्री. लज्जालुलता । लाजवन्ती का पौधा, लजारु ।

अञ्जीर—न. उदुम्बर विशेष । अञ्जीर ।

अट्ट—पु. अन्न । अनाज ।

अटरूष / अटरूषक —पु. वासक । रूसा, अरूसा, रुसाह ।

अट्टालक—पु. क्षौम । रेशमी कपड़ा ।

अटिका—स्त्री. बेणुपत्री । बंशपत्री ।

अणु—पु. व्रीहिविशेष । छोटे २ धान ।

अणुरेणु—पु. धूलिकणा. त्रसरेणु । जर्रह. धूलि ।

अण्ड—न. पेशी. मृगनाभि. वीर्य । बयत्रा मांसबोटी. कस्तूरी. नुतफ़ह, वीर्य ।

अण्डकोश—(ष)—(क) पु. शरीरावयव विशेष । आंड़, खुसिया ।

अण्डज—पु. पक्षी. सर्प. मत्स्य । (स्त्री) कस्तूरी. (त्रि) अण्डोत्पन्न वस्तु । परिन्दह. सांप. मच्छली. मुश्क. अंडे से जो चीज़ पैदा हो ।

अण्डालु—पु. मत्स्य । मच्छली ।

अण्डी—स्त्री. कनिष्ठाङ्गुली । चिटली उंगली, प्रथम अंगुली ।

अतसि—(सी) स्त्री. वृक्षविशेष । अलसी. तिसि. सन ।

अतसीतैलम्—न. अरसी का तेल ।

अतस—पु. पवन. आत्मा. शस्त्र (स्त्री) अतसी वृक्ष, (न) क्षौमवस्त्र । हवा. रूह. जीव, हथियार. सन का पौधा, अरसी. रेशमी कपड़ा ।

अतिकन्दक—पु. हस्तिकंद । हाथीचक्क ।

अतिकेशर—पु. कुब्जक । कूजफूल ।

अतिगन्ध—पु. तृणविशेष । गन्धक. चंपक वृक्ष । (त्रि) अतिशय गन्धयुक्त ।

अतिगुहा—स्त्री. पृश्निपर्णी । पिथवन ।

अतिचरा—स्त्री. पद्मचारिणी । सूरजमुखी का पेड़ । स्थल कमल ।

अतिच्छत्र—पु. कोकिलाक्ष । तालमखाना, छतिआं ।

अतितपस्विनी—स्त्री. श्रावणी । मुण्डी ।

अतिदीप्य—पु. रक्तचित्रक वृक्ष । लालचीते का पेड़ । चित्रा ।

अतिबला—स्त्री. पीतवर्ण लताविशेष, कंकतिक । केकइ, ककहिआ ।

अतिविषा—स्त्री. विषा, अरुणा । अतीस ।

अतिबृहत्फल—पु. न. पनस । कटहर ।

अतिमङ्गल्य—पु. बिल्ववृक्ष । बेलकादरख़्त ।

अतिमञ्जुला—शतपत्री । सेवती, गुलाब ।

अतिमुक्त—त्रि. प्राप्तनिर्वाण, निष्फल (पु०) वासन्ती, माधवी । नाजान्तयाफ़्तः मुक्त. बेफायदः. माधवी बेल ।

अतिमोदा—स्त्री. नवमल्लिका (त्रि) अत्यन्त सौरभ विशिष्ट । एक प्रकार की फूलों की बेल, मोतिया पुष्प. खुशबूदार ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अतियव–पु. निःशूकयव । बिना शीकुरवाला जव ।

अतिरसा–स्त्री. मूर्वा लता । बहुत रसवाली बेल, मुरहरी ।

अतिरुहा–स्त्री. मांसरोहिणी । रोहिणी. कुटकी ।

अतिरोग-पु. क्षयरोग । सिलकी बीमारी ।

अतिरोमश–पु. बनछागल. बृहत्वानर. (त्रि) अतिरोमयुक्त । बन का बकरा. बड़ा बन्दर. जिसके वदन पर ज्यादः बाल हों ।

अतिलम्बी–स्त्री. शतपुष्पा । सौंफ ।

अतिवात–पु. झञ्झावात । आंधी, झक्खड़ ।

अतिविषा–स्त्री. लताविशेष. भृङ्गी (त्रि) विषातिक्रमकारक । अतीस. भृङ्गी. विष का अतिक्रम करने वाली ।

अतिव्यथा–स्त्री. गुरुवेदना । बड़ी दर्द ।

अतिश्रम–पु. अत्यायास । बड़ी मेहनत ।

अति(ती)सार–पु. उदरामय, सङ्ग्रहणी । इसहाल ।

अतिसारकिन्–त्रि. अतिसारवान् । इसहाली ।

अतिसूक्ष्मामत्स्या–त्रि. झींगे मच्छली ।

अतिसौरभ–पु. आम्र । आम का पेड़ ।

अतीसार–पु. रोगविशेष, सङ्ग्रहणी । इसहाल ।

अतुन्द–त्रि. कृश । दुबला, लागर ।

अतुल–त्रि. अनुपम (पु) तिलवृक्ष । लासानी. तिलों का पौधा ।

अतुहिनरश्मि–पु. सूर्य्य । आफताब ।

अतेजस–पु. अन्धकार । अन्धेरा ।

अत्नु–पु. सूर्य्य । आफताब ।

अत्य–पु. घोटक । घोड़ा. असप ।

अत्यम्ल–पु. अतिशय अम्ल । इमली ।

अत्यूह–पु. नीलकण्ठ. (स्त्री) अतिशयतर्क । गरुड़. बड़ी वहिस ।

अत्रिनेत्रज–पु. चन्द्रमा । माहताब ।

अदण्डक–पु. शुक्लएरण्ड । सफेदरण्डा ।

अदन–न. भोजन । खुराक ।

अदनीय–त्रि. भक्षणीय । खानेके लायक ।

अदन्त–त्रि. दन्तहीन । बेदांत, पोपला ।

अदल–त्रि. दलशून्यवृक्षः । वह दरख़्त जिसके पत्ते न हों, करीर वृक्ष ।

अद्म–पु. घृत । घी ।

अद्मति–पु. अग्नि । आग, आतश ।

अद्यश्वीना–स्त्री. आसन्नप्रसवा । आज कल पैदा करने वाली ।

अद्रि–पु. वृक्ष. पर्वत. सूर्य्य. परिमाणविशेष । दरख़्त. पहाड़. आफ़ताब. पैमाना ।

अद्रिकीला–स्त्री. भूमि । ज़मीन ।

अद्रिज–न. गैरिक. (त्रि) पर्वत जातवस्तु. (पु) शिलाजतु । गेरुमिट्टी. पहाड़ी चीज. शिलाजीत ।

अद्रिजतु–पु. शिलाजतु । शीलाजीत ।

अधःकुन्तल–पु. अधोभाग रोम । योनि अथवा लिंग के ऊपर के बाल ।

अधमाङ्ग–न. चरण । पाऊं, पा ।

अधर–पु. निम्नोष्ठ. (त्रि) निम्न । नीचे का होठ. नीचे ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अधरेण—व्य. निम्न. पश्चिम दिक् । नीचे. मगरब, पछांह दिशा ।

अधःशल्य—पु. अपामार्ग । लटजीरा. चिरचिर. अपुठ कांटा ।

अधिजिह्व—पु. जिह्वास्फोटक । जबान का जखम ।

अधिमन्थ—पु. चक्षुपीडा । आंखकी दर्द ।

अधिकमांसक—पु. पीछे की डाढ़ में महान् शोथ और पीड़ा हो तथा लारबहे ।

अधोअपित—न. रक्तार्श । खूनी बवासीर ।

अधोमुखी—स्त्री. गोजिह्वा वृक्ष । गोभी ।

अध्यशन—न. बारम्बारभक्षण । बार २ खाना, ज्यादः खाना ।

अध्यण्डा—स्त्री. आलकुशी. कपिकच्छू । किमाच. खजोहरा ।

अध्वरा—स्त्री. मेदाकन्द । सपेदकन्द जिसकी नख से काटें तो मेद धातु के सदृश निकले यह मोरङ्ग पर्वत पर होती है ।

अनुडुह्—पु. बलीवर्द । बैल ।

अनुडुही—स्त्री. धेनु । गाय ।

अनन्त—पु. अभ्रक । अभरख ।

अनन्ता—स्त्री. पृथिवी' हरीतकी. आमलकी. दूर्वा. गुडूची. लांगली. दुरालभा । जमीन. हर्र. इमली. नीलदूब. गुरच. गिलोय. करिहारी. जवासा ।

अनलनामा—स्त्री. चित्रा । चीत ।

अनाक्रान्ता—स्त्री. कण्टकारीलता । कड़ियारीबूटी. कटाई. भ़रेलिया ।

अनामक—न. रोगविशेष । बवासीर ।

अनामय—न. आरोग्यता (त्रि) रोगशून्य तन्दुरुस्ती. तन्दुरुस्त ।

अनामिका—स्त्री. कनिष्ठिका के पास की अंगुली ।

अनार्यज—(क) न. अगरुकाष्ठ. गोरोचन (त्रि) अनार्य्यदेशजात । अगर लकड़ी. गोरोचन. म्लेच्छ ।

अनाविल—त्रि. स्वच्छ । साफ ।

अनिक्षु—पु. वृक्षविशेष । कलक. काही ।

अनिमि(मे)ष—पु. देवता. मत्स्य (त्रि) निमेषशून्य । मच्छली. जो आंख नहीं झपकाता ।

अनिल—पु. वायु (स्त्री) स्वाती । हवा. स्वाती नक्षत्र ।

अनिलसख—पु. अग्नि । आग, आतश ।

अनिलाशिन्—पु. वायुभक्षक. सर्प । हवाखोरा. सांप. मार ।

अनिष्ट—त्रि. अनभिलषित (स्त्री) नागवला । न चाहा हुआ. गुरुशंकरीवृक्ष ।

अनुतर्ष—पु. तृष्णा. मद्यपान पात्र । पियास. शराब पीने का प्याला. जाम ।

अनुबन्धा—स्त्री. हिक्का । हिचकी ।

अनुवास—पु. गंध । बू ।

अनुवासन—न. स्नेह धूपादि द्वारा सौरभान्वित । धूपवगैरह से खुसबूदार करना ।

अनुशोचन—न. शोक, दुःख । गम, रंज, तकलीफ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अनुष्ण-(त्रि) शीतल. अलस (न) पद्म । सर्द. सुस्त. कमल ।

अनूप-त्रि. सजलदेश (पु) महिष। पानी से घिरी हुई जगह. भैंसा ।

अनूमांसवर्ग-पु. १ कुलेचराः. २ प्लवः. ३ कोशस्थः. ४ पादिनः. ५ मत्स्यः. । १ भैंसे आदि पशु. २ हंसादिपक्षी. ३ शंखादि जल जीव. ४ मगर, घड़ियाल आदि जलजीव. ५ मच्छली आदि जल जीव ॥

अनेकप-पु. हस्ती । हाथी ।

अनेहस-पु. समय । वक्त ।

अनोकह-त्रि. वृक्ष । पेड़, दरख्त ।

अण्डज-पु. अण्डाज्जाताः-अण्डजाः

अन्तःप्रकृति-स्त्री. चित्त । दिल ।

अन्तःशरीर-न. आत्मा । रूह, जीव ।

अन्तःसत्वा-स्त्री. अन्तरापत्या, गर्भवती।

अन्तःस्वेद-पु. हस्ती । हाथी. फील ।

अन्तरात्मन्-न. जीव, प्राण, मन । रूह, सांस, दिल ।

अन्तरङ्ग-त्रि. आत्मीय (पु) कुरङ्ग । अपन. हरिण ।

अन्तरिक्ष-न. आकाश । आसमान ।

अन्तरीय-पु. द्वीप । टापू ।

अन्तरज्वलन-न. मनोदुःख । फ़िकर, संशय ।

अन्तर्वती-स्त्री. गर्भिणी । हामिला ।

अन्त्र-न. पुरीततीनाड़ि । आंतड़ी ।

अन्त्रवृद्धि-स्त्री. रोगविशेष । आंतड़ी वृद्धि. हिचकी ।

अन्त्राद-पु. उदरकीट । पेट के भीतर का कीड़ा ।

अन्त्रकूज-पु. उदरशब्द । पेट का गुड़-गुड़ाना ।

अन्ध-न. अन्धकार. जल (त्रि) दृष्टिही-न । अंधेरा. पानी. अंधा ।

अन्धस्-न. अन्न । अनाज. भात ।

अन्धक-पु. सौरभ. तुम्बुरूफल । तुम्बु-रुबीज. सुगन्ध ।

अन्धिका-स्त्री. चक्षुरोग. द्यूतक्रीडा. राजि. सर्षप । आंख की बीमारी. जूआ खेल. राई. सरसों ।

अन्धुल-पु. शिरीषवृक्ष । शिरिस का दरख्त ।

अन्न-पु. सूर्य्य (त्रि) खाद्य । आफताव. सब खाने की चीज. भात ।

अन्नगन्धि-पु. अजीर्णरोग । बदहज़मी ।

अन्नप्राशन-न. लड़के, लड़की को पहले २ अनाज खिलाना ।

अन्नविकार-पु० शुक्र. मल । नुतफह. वीर्य्य. गूह ।

अन्नाद-त्रि. अन्नभक्षक. (पु) विष्णु । अनाज खाने वाला. परमेश्वर ।

अन्नायिन-त्रि. बुभुक्षु । भूखा ।

अन्यपाकम्-न. सौवर्चल । चौहार. कोड़ा. कालानिमक. सोंचर ।

अन्यपुष्ट-पु. कोकिल । कोइल पक्षी ।

अन्यभृत्-पु. काक. कोकिल। कव्वा. कोइल ।

अन्येद्युषः-पु. रात्रि दिन में एक बार ज्वर आवे ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अप्–स्त्री. जल, पानी । आब ।

अपचार–पु. अजीर्णरोग. अहिताचरण बदहजमी. बदसलूकी ।

अपथ्य–त्रि. रोग्य. अहित । बीमार करने वाली. नामुवाफिक ।

अपराजिता–स्त्री. दुर्गा. विष्णुक्रांता. शालिपर्णी । सपेद या नील फूल का विश्नुकांता. सरिवन ।

अपलाषिका–स्त्री. पिपासा । पियास ।

अपशुच–पु. आत्मा । जीव, रूह ।

अपस्कर–पु. रथाङ्ग. गुह्यद्वार. विष्ठा । गाड़ी का पहिया.जायनिहानी. गुदा. गूह ।

अपस्मार–पु. मृगीरोग. मूर्छा । मिरगी, गश ।

अपान–पु. पक्वाधानालयो वायुः पक्वाशयस्थानः स क्रुद्धः अश्मर्य्यादीन् भगंदरादीन् च व्याधीन् कुरुते । गुह्य.पवन. (न) भग । गुदा. हवा. कुस. योनि ।

अपांपित्त–न. अग्नि. चित्रकवृक्ष । आग, आतश. चित्रा. चीत ।

अपामार्ग–पु. सिखरी । लटजीर. चिरचिर. ऊंगा ।

अपूप–पु. पिष्टक । आटे का पूड़ा. पूआ ।

अपूप्य–पु. गोधूमचूर्ण । आटा, मयदा ।

अपूरणी–स्त्री. वृक्षविशेष । सिंबल का पेड़ ।

अपेतराक्षसी–स्त्री. श्वेता तथा कृष्णा तुलसी । सपेद या श्याम तुलसी का वृक्ष ।

अप्नस–न. जल. अपत्य । पानी. औलाद ।

अप्पति–पु. समुद्र । समुन्दर ।

अप्पित्त–न. अग्नि । आग, आतश ।

अप्रकृष्ट–त्रि. अधम,(पु)काक । कमीना. कौवा ।

अप्रिया–स्त्री. शृङ्गीमत्स्य । शींगमछली ।

अफला–स्त्री. आमलकी. भूम्यामलकी. घृतकुमारी । आंवला, भुइआंवला. घिकुआरी ।

अफूक } न. अहिफेन । अफीम ।
अफेन }

अबल–त्रि. दुर्बल, (पु) वरुणवृक्ष । कमजोर . बरुन का पेड़ ।

अवल्गुज–स्त्री. सोमराजी । वकुची ।

अबाध–त्रि. बाधारहित । तन्दुरुस्त, निरोग ।

अब्ज–पु. चन्द्र. धन्वन्तरि (न) कमल. शंख । चांद. हकीम विशेष. कमलफूल. शंख ।

अब्धिकफ–पु. समुद्रफेन । समुन्दरफग ।

अब्धिजा–स्त्री. मद्य । शराब ।

अभ्र–न. मेघ. धातुविशेष । बादल. अभ्रक ।

अव्यथा–स्त्री. हरीतकी. मुण्डी (न) स्थल कमल । हर्र. मुण्डी. गुलाब ।

अविबल्लभा–स्त्री. पाटला । पाड़रि ।

अभय–न. वीरणमूल (त्रि) निर्भय । एक किस्म का पीला खुशबूदार घास. बेखौफ. ज्वरांकुश तृण ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अभया—स्त्री. हरीतकी । हर्र ।

अभिघातौष्ठरोग—अभिघात अर्थात् चोट लगने से ओष्ठ का रोग ।

अभिघार—पु० हवि, घृत । होम में डालने की चीज. घी ।

अभिन्यासज्वर—पु० नात्युष्णशीत. अल्पसंज्ञ. भ्रांतप्रेक्षी. हतस्वर. खरजिह्व. शुष्ककंठ. स्वेदविणमूत्रवर्जितः. हृदिव्यथा. भक्तद्वेषी हतप्रभ. श्वसन्. निपतितः शेते प्रलापोपद्रवायुतः ।

अभ्यञ्जन—न० तैललेपन. तेल । तेललगाना, तेल ।

अभ्यमिति—त्रि० रोगी । बीमार ।

अभ्र, अभ्रक } आकाश. मेघ. अभ्रकधातु. स्वर्ण । आस्मान. बादल. अभरक. सोना ।

अभ्रपुष्प—न. जल (पु) वेतसवृक्ष । पानी. वेतस का पेड़. वेद, वेत ।

अमङ्गल—पु. एरण्ड (त्रि) मंगलरहित । रंडा का वृक्ष. असगुनी ।

अमर—पु. देवता. पारद (त्रि) मृत्युरहित । विद्वान. पारा. जो मरे नहीं ।

अमरबल्लरी—स्त्री. आकाशबल्ली ॥ अमरबेलि ।

अमररत्न—न. स्फटिक । काच. बिलौर ।

अमरा—स्त्री. दूर्वा. गुडूची. इन्द्रपुरी. गर्भनाड़ी. जरायु । दूब. दाभ. गुरच. गिलोय. कोख, वक्करी ।

अमल—त्रि. परिष्कार (न) अभ्रकधातु । सफा. अभरक ।

अमलकी—स्त्री. भूम्यामलकी । भुंईअवला

अमला—स्त्री. लक्ष्मी. भूम्यामलकी ।

अमिन्—त्रि. रोगी । बीमार ।

अमितद्रुम—पु. तमालवृक्ष । पत्रज का दरखत ।

अमुन्दकी—पु. गर्भास्था एव ये पाकयन्ति ते षाष्टिकाः । गर्भ ही में पकने वाला वर्षाती धान. सेढ़ ।

अमृणाल—न. उशीर । खसखस, गाड़र की जर ।

अमृणालालय—न. वीरण । पीत खुशबूदार घास ।

अमृत—पु. धन्वन्तरि. देवता (त्रि) सुन्दर. अमर (न) पीयूष. जल. घृत. यज्ञशेष. अयाचितवस्तु. मुक्ति. दुग्ध. विष. पारद. अन्न. धन. स्वर्ण. हृद्य. स्वादुद्रव्य (त्रि) मरणरहित (स्त्री) दूर्वा. तुलसी । खूबशूरत. वह चीजजो मुरदे को जिन्दा करे और मौत से बचावे. पानी. घी. दूध. जहर. पारा. अनमांगीचीज. नजात. अनाज. दौलत. सोना. मज़ेदार. जो मरे नहीं ।

अमृतकदली—स्त्री. केलाभेद । केला का वृक्ष ।

अमृतकर—पु. चन्द्र । महताब ।

अमृतफल—पु. पटोल. (न) नाशपती । परवरफल. नासपती ।

अमृतफला—स्त्री. द्राक्षा. आमलकी । दाख. आंमला ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अमृतवल्लरी—स्त्री. पोतकी शाक। पोय का शाग ।

अमृतरसा—स्त्री. गोस्तनी । अबजूसी. मुनक्का. अंगूर ।

अमृता—स्त्री. गुडूची. मदिरा. दूर्वा. आमलकी. हरीतकी. तुलसी. पिप्पली. विरेचना। गिलो. शराब. दाभ. आंमला. हरीड़. पीपली ।

अमृताष्टक—न. हरीतक्यादि अष्टद्रव्य। हरड़. गिरी. मुस्था. चित्रा. चिरायता, हलदी. इन्द्रजौ. सोंठि ।

अमृताह्व—न. रुचिफल । खुरासानदेश की नाशपाती ।

अमेध्य—त्रि. अपवित्र (न) विष्ठा । नापाक. मैला ।

अमोघ—त्रि. अव्यर्थ (पु) नदविशेष(स्त्री) हरीतकी। नाबेफायदः. एकदर्या. हरीड़ ।

अमोघा—(स्त्री) पाटलि. विडङ्ग. हरीतकी । पाडरि. वायविडङ्ग. हरीड ।

अम्बक—न. चक्षु. ताम्र. पिता । नेत्र, आंख. तांबा. बाप ।

अम्बर—न. आकाश. वस्तु. कर्पास. सौरभ. अभ्रकधातु । आसमान. कपड़ा. कपास. सुगन्ध. अभरक ।

अम्बष्ठकी—स्त्री. पापचेलिका । पाढ़ा ।

अम्बष्ठा—स्त्री. माचिका. पापचेलिका. यूथिका । केवैआ, मोइआ. पाढ़ा. जूही, जाही जूही का फूल ।

अम्बालिका—स्त्री. केमाचिका । केवइआ, मोइआ ।

अम्बिका—स्त्री. माचिका. तिन्तिडीक । केवइआ. इमली ।

अम्बु—न. जल । पानी ।

अम्बुज—न. पद्म. बज्र (पु) स्थलबेतस. चन्द्र। कमल. हीरा. स्थलबेतस. चांद।

अम्बुनम—न. वाल । सुगन्धबाला ।

अम्बुपत्रा—स्त्री. उच्चटावृक्ष । सपेद या लालगुञ्जा—अर्थात् घुंघची ।

अम्बुरुह—पु. कमल । गुलेसौसन ।

अम्बुशिरीषिका—स्त्री. टिपिटणिका । जलशिरीषि. टिटिणि ।

अम्बुसर्पिणी—स्त्री. जलौका । जोंक ।

अम्बुसारा—स्त्री. कदली । केला ।

अम्भोज—न. कमल. सारसपक्षी, (पु) चन्द्र (त्रि) जलजात। पानी की पैदाइस।

अम्भ—न. जल, पानी ।

अम्भोजिनी—स्त्री. पद्मलता । पद्मसमूह. पद्मयुक्तदेश ।

अम्भोद—पु. जदल । बादल ।

अम्र—न. चूत । आम ।

अम्रफलपानक—न. आम्र का पना ।

अम्ल—न. तक्र. (पु) अम्बल (त्रि) अम्लरस। छाछ, मट्ठा. खटाई, खट्टी चीज।

अम्लक—पु. लकुच वृक्ष। बड़हल का पेड़।

अम्लकेशर—पु. वीजपूर। बिजौरा निंबू. चकोतरा, तरज्ज. गलगल ।

अम्लगु—स्त्री. आम्ली । अम्बिली ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अम्लजम्बीर–पु. जम्भीरीनिम्बू ।
अम्लपत्रका–स्त्री. चांगेरी । अम्लोणा ।
अम्लवृक्षक–न. चुक् । विषाम्बिल. चूक ।
अम्लवेतस–न. शतवेधि । अमिलवेतस ।
अम्लफल–न. तिन्तिडीवृक्ष । इमली ।
अम्ललोणिका–स्त्री. चांगेरीशाक. लूणक । अम्लोना शाक ।
अम्ला–स्त्री. तिंतिडीवृक्ष । इमली का पेड़ ।
अम्लाटन, अम्लात, अम्लातक } पु० बाणपुष्प । बाणफूल गौड़ देश में प्रसिद्ध है ।
अम्लिका–स्त्री० तिन्तिडीक । इमली ।
अम्लिकावटका–स्त्री० इमली के पने में भिगोये हुये बरे ।
अम्लिकाफलपानक–न० इमलीका पना ।
अम्ली–स्त्री० तिन्तिडी । अमिली ।
अयस्–न० लोहधातु । लोहा ।
अयस्कान्त–पु० कान्तलोह. चुम्बक प्रस्थर । कांतीसार लोहा. चुम्बकपत्थर ।
अयास्–पु० अग्नि । आग, आतश ।
अरक–पु० शैवाल, शिंवाल. एरा. सेवार ।
अरङ्गार–पु० कृत्रिमविष । बनावटीजहर ।
अरण्यहलदीकन्द–स्त्री० आंबाहलदी ।
अरविन्द–न० पद्म. सारसपक्षी. ताम्र. रक्तकमल. नीलकमल. कमल. सारस. तामा. लालकमल । नीलोफर ।
अरलु–पु. स्योनाक । सोनापाढा ।
अराल–त्रि. वक्र (पु) सर्जरस । टेढा. राल, धूप ।
अरिक–न. जल । पानी ।
अरिमेद–पु. विटखदिरवृक्ष । रियां का पेड़ ।
अरिष्ट–न. सूति का गृह. अशुभ. तक्र. (पु०) लशुन. निम्ब. काक. मद्यविशेष । सौरि. खराब. छाछ. लसन. नीम. कौआ. एक किस्म की शराब ।
अरिष्टक–पु. मांगल्य । रीठा ।
अरुस्–पु. सूर्य्य. रक्तखदिर. (न) क्षत. मर्म । आफ़ताब. लालखैर. ज़खम. जोड़ ।
अरुचि–स्त्री. रोगविशेष । अन्न न रुचना ।
अरुज–त्रि. निरोग (पु) वृक्षविशेष । राजी. एक प्रकार का पेड़ ।
अरुण–पु. अर्कवृक्ष. सूर्य्य. गुड़ (न) कुंकुम, सिन्धूर (त्रि) रक्तवर्ण वस्तु । मदार का पेड़. सूर्य. गुड़. केशर. सिंदूर ।
अरुणअपामार्ग–पु. रक्तचिरचिरिया लटजीरा ।
अरुणलोचन–पु० रक्तनेत्र. कपोत. कोकिल । जिसकी आंखे सुरख हो. कबूतर. कोइल ।
अरुणा–स्त्री. मञ्जिष्ठा. अतिविषा । मंजीठ. अतीस ।
अरुष्क–पु. भल्लातकवृक्ष । भिलावें का दरखत ।
अरुहा–स्त्री. भूधात्री । मलमेढ़ा. भुईं-आमला ।
अरोकदन्त–त्रि. मलिनदशन । जिसके दांत मैले हों ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अर्क–पु. सूर्य. इन्द्र. ताम्र. स्फटिक. पण्डित. ज्येष्ठभ्राता. रविवार. अर्कवृक्ष। तांबा. बिल्लौर. दाना. बड़ाभाई. यशवंह. लालफूल का मदार वृक्ष ।

अर्कज–पु. अश्विनीकुमार । स्वर्गवैद्य ।

अर्कपर्ण–पु. रक्तार्क। लालफूल का मदार या आग का पेड़ ।

अर्कपर्णी–स्त्री. बृहद्दन्ती। बड़ी दन्तूनि जिसके एरण्ड के सदृश पत्ते होते हैं उसी के फल को जमालगोटा कहते हैं।

अर्कपत्रा–स्त्री. अर्कमूला । निर्बसी ।

अर्कप्रिया–स्त्री. जयापुष्प । दुपहरिया का पौधा ।

अर्कपुष्पी–स्त्री. जल कामुका. पयसा। अर्कपुष्पी, प्यास ।

अर्काश्मन्–पु. अरुणोपल. सूर्यकान्तमणि । आतशीशीशा ।

अर्जका–स्त्री. श्वेताबर्बरी। सपेद बबई।

अर्जुन–पु. राजापाण्डु के ३ पुत्र. मयूर. श्वेतवर्ण, (त्र) श्वेतवर्ण विशिष्ट (स्त्री) तृण, नेत्ररोग। मोर. सुपेद रंग वाला तिनका. आंख की बीमारी ।

अर्णस्–न. जल । पानी ।

अर्ति–स्त्री. पीड़ा, धनुरग्रभाग । दुःख. कमान का सिरा ।

अर्थसाधक–पु. पुत्रजीव । पितौजिया. पुत्रजीवा का वृक्ष ।

अर्थसाधन–पु. अरिष्टक । रीठा ।

अर्घ्य–न. शिलाजतु । शिलाजीत ।

अर्द्धकण्टिका–स्त्री. महाशतावरी । बड़ी सतावरि ।

अर्द्धचन्द्रा–स्त्री. श्यामात्रिवृत् । श्यामनिशोथ ।

अर्द्धतिक्त–पु. ज्वरान्तक । नैपाली चिरायता ।

अर्प्पिस–पु. हृदय । दिल. छाती ।

अर्व्वगन्धर्व–पु. अश्व । घोड़ा ।

अर्भ–पु. बालक. शिशिर. कुशतृण । लड़का. सर्दीमोसम. दाब का तिनका. कुशा, दाभ ।

अर्बट–न. भस्म । धूड़, खाक ।

अर्बटी–स्त्री. घोटनी । घोड़ी ।

अर्श–(स्) न. रोगविशेष । बवाशीर ।

अल–पु. वृश्चिकडङ्क. हरीताल । विच्छू का डंक. हरताल ।

अलक्ता–स्त्री. लाक्षा । लाख, लाही ।

अलक्त } पु. लाक्षारस । लाख का रंग
अलक्तक } महावर ।

अलर्क–पु. श्वेतार्क । सुपेद मादार का पेंड़ ।

अलगर्द(र्द्ध)–पु. जलव्याल । पानी का सांप ।

अलजी–स्त्री. चक्षुरोगविशेष। आंख की बीमारी ।

अलञ्जर–पु. बहुजलधर मृण्मयपात्र। मट्ट, मट्टका ।

अलम्बुषा–स्त्री. लज्जालूभेद । ताल की लाजवन्ती, लजारु ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अलस–त्रि. निरुद्योग (पु) पादरोग (स्त्री) हंसपदी लता । सुस्त. पांव की बीमारी. करैबू ।

अलात–न. दग्धकाष्ठ. उल्मुक । कोइला. लुकटा ।

अलाबु–स्त्री. तुम्बीलता । लौकी, कद्दू ।

अलि–पु. भ्रमर. काक. कोकिल. मद्य. वृश्चिक । भौंरा. कव्वा. कोइल. शराब. विच्छू ।

अलिक–त्रि. जिह्या (न) ललाट । दुरोग. पेशानी. माथा ।

अल्पपत्र–पु. तुलसी का पौधा ।

अल्पमारिष–पु. मारिष. श्वेत तथा रक्त मारिष । सुपेद वा लाल चौराई. मरसा ।

अल्पास्थि–न. परूषक । फरूसा. फालसा, फालसे ।

अलिपका–स्त्री. मुद्गपर्णी । बनमूंग ।

अवक्राथ–पु. मन्दाग्नि । बदहज़मी ।

अवट–पु. स्त्री. ग्रीव. पश्चाद्भाग. कूप. गर्त. वृक्षभेद । गर्दन का पीछा. कुआ. गढ़ा. खास एक किस्म का दरख़्त ।

अवटीट–त्रि. नतनासिक । चपटी नाकवाला ।

अवदात (क)–पु. श्वेतवर्ण. पीतवर्ण. (त्रि) निर्मल. (न) वीरण । सुपेदरंग. पीला रंग. साफ. पीतछवि वाला खस २ के सदृश तृण ।

अवदारण–न. खनित्र । कुदाल ।

अवदाह–न. वीरणमूल । खस ।

अवपीड–पु. नस्य । नसवार ।

अवभञ्जन–पु. पक्षी विशेष ।

अवभ्रट–त्रि. नतनासिक । चपटी नाकवाला ।

अवयव–पु. अङ्ग । उज़्व ।

अवरिका–स्त्री. धन्याक । धनियां ।

अवरुग्ण–त्रि. विदीर्ण. रोगी । तोड़ा हुआ. बीमार ।

अवलेह–पु. लेह्यद्रव्य । चटनी. पाक. माजून ।

अवलेहन–न. अरिहन ।

अवशीन–पु. वृश्चिक । विच्छु ।

अवश्या–स्त्री. कुज्झटिका । धुंद. कुहासा ।

अवश्याय–पु. शिशिर. गर्व । पाला, फख़र ।

अवश्रवण–न. अर्द्धाकर्णन । आधा सुनना ।

अवष्कयणी–स्त्री. चिरप्रसूता गौ । बहुत दिन पीछे प्रसूत होने वाली गाय ।

अवष्वाण–न. भोजन । खाना ।

अवसाद–पु. दौर्बल्य. अवसन्नता. विषाद । कमजोरी. थकावट. दुश्मनी ।

अवसेकिम–पु. वटक । पीठी का बड़ा ।

अवसेचन–न. जलसेचन. रक्तस्रवण । सीचना. खूनवहना ।

अवस्कर–पु. सम्मार्जनी. निक्षिप्तधूल्यादि. विष्ठा. गुह्य । झाड़ू से उड़े हुये जर्रे. गूह. कूड़ा. गुदा ।

अवस्था–स्त्री. दशा. आयु । हालत. उमर ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अवि–पु. सूर्य्य. पर्वत. मेष. स्वामी. छागरक्षण. मूषिक. प्राचीर. वायु. कम्बल. (स्त्री) रजस्वला । भेड़. मालिक. हिफाजत. चूहा. छावनी. हवा. हैजवाली औरत ।

अविक–पु. रत्नविशेष. वज्र । हीरा ।

अवित्यज–त्रि. पारद । पारा ।

अविदूस–न. मेषदुग्ध । भेड़ी का दूध ।

अविद्धकर्ण–स्त्री. भृङ्गराज लता । घमिरा ।

अविपट–पु. ऊर्णवस्त्र । कम्बल. भूरा ।

अविमरीस–न. मेषदुग्ध । भेड़ी का दूध ।

अविला–स्त्री. मेषी । भेड़ी ।

अशन–न. भोजन, खाद्य (पु) पीतसल वृक्ष । खुराक, उबाले हुये चावल, विजैसारवृक्ष ।

अशनाया–स्त्री. क्षुधा । भूख ।

अश्टत–त्रि. अपक्क । कच्चा ।

अशोक–न. पारद (त्रि) शोकरहित (पु) हेमपुष्पवृक्ष । पारा. बेगम. अशोक का पेड़ ।

अशोका–स्त्री. कटुका । कुटकी बूटी ।

अश्म–पु. पर्वत. मेघ. प्रस्तर (न) लोह । पहाड़. बादल. चटान. लोहा ।

अश्मगर्भ–पु. मरकतमणि । पन्नारत्न ।

अश्मघ्न–पु. गिरिभिद । पाषाणभेद औषध ।

अश्मज–न. शिलाजतु । शिलाजीत ।

अश्मभाल–न. द्रव्यचूर्णार्थ लोहादि पात्र । हमामदस्तह, खरल ।

अश्मरी–स्त्री. रोगविशेष । पथरी की बीमारी ।

अस्र(स्त्र)–न. नेत्रजल. शोणित । आंसू. खून ।

अस्रु(स्त्रु)–न. नयनजल । आंसू ।

अश्व–पु. घोटक । घोड़ा ।

अश्वकर्णिका–पु. शाल । साल, सांखो वृक्ष ।

अश्वखुरा(री)–स्त्री. अपराजिता लता । विश्नुकांता की बेल ।

अश्वगन्धा–स्त्री. वाजिगन्धा । असगंध ।

अश्वगन्धिका–पु. वृद्धदारुकवृक्ष । विधारा का पेड़ ।

अश्वत्थ–पु. बोधिद्रुवृक्ष । पीपल का पेड़ ।

अश्वत्थफला–स्त्री. हवुषा । हौहवेर । जो पीपल के फल के सदृश और मच्छली कीसी गन्ध हो ।

अश्वत्थभेद–पु. नन्दीवृक्ष । बेलिया पीपर का पेड़ ।

अश्वमारक–पु. श्वेतपुष्प करवीर । सपेद फूलवाला कनयर का पेड़ ।

अश्वा–स्त्री. घोटकी । घोड़ी ।

अश्वारि–पु. महिष । भैंसा ।

अश्वी–स्त्री. घोटकी । घोड़ी ।

अश्वीघृत–न. घोटकी का घृत । घोड़ी का घी ।

आषाड–पु. शुचिमास आसाढ़ का महीना ।

अष्टगाध–पु. शरभ. मकड़ी । सरभ पक्षी. मकरी. कीट ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अष्टधातु–न. आठ धातुएं, यथा–सोना १. चांदी. २ तांबा ३. पीतल. ४ कांसी ५. जस्ता ६. कली ७. लोहा. ८

अष्टमिका–स्त्री. अर्द्धपल। दो तोले वजन।

अष्टवर्ग–पु. आठ वर्ग यथा–१ जीवक. २ ऋषभक. ३ मेदा. ४ महामेदा. ५ काकोली, ६ क्षीरकाकोली. ७ ऋद्धि. ८ वृद्धि।

असन–पु. बीजकवृक्ष। बिजैसार का पेड़।

असारदधि–न. निरसदुग्ध. दुग्ध का दही। बैठे हुए दूध का दही।

असि–पु. खड्ग। शमशेर, तलवार।

असिक–न. अधर और चिवुक का मध्य। ओठ और ठोडी का बीच।

असितकारक–पु. तिन्दुक। तेंदू का पेड़।

असिताश्मन्–न. वैडूर्य्यमणि, नीलमणि। नलं रत्न।

असिदंष्ट्र–पु. मकर, कुम्भीर। मच्छी, घडियाल।

असिपत्र–पु. इक्षु। जंख, ईख।

असुरसा–स्त्री. बर्बरी। बबई का पौधा. न्याजबो।

असुराह्व–न. कांस्य। कांसी।

असुरी–स्त्री. राजिका। राई।

अस्वस्थता–स्त्री. रोग। बीमारी।

असृज्–न. रक्त. कुङ्कुम। खून. रोली।

असृकर–पु. शरीरस्थविशेष। कच्चा पानी जिस का खून बनता है।

असृग्धरा–स्त्री. रक्तधरानाडी(न)चर्म्म। खून धरने वाली नाड़ी. चमड़ा।

अस्करतेजना–पु. वंश। बांश।

अस्तनजघृत–न० अस्तन के दूध का घी। [किसी फलादि से हुआ घी]

अस्मन्तक–पु. चांगेरी। अम्बलोना।

अस्थियुक्–पु. अस्थिसंहारक। हड़सिङ्गार।

अस्थिशृङ्खला–स्त्री. ग्रन्थिमान्। हड़सिङ्गार।

अस्थिसंहारक–पु. } „ „
अस्थिसंहारी–स्त्री. }

अस्र–पु. कोण. केश (न) रक्त. अश्रु। बाल. खून. आंसू।

अस्रगन्धा स्त्री. कपूर. हरदी।

अस्रप–पु. निशाचर, जलौका। राक्षस. जोंक।

अस्रु–न. चक्षुजल। आंसू।

अहर्पति–पु. सूर्य. अर्कवृक्ष। आफताब. मदार या आग का वृक्ष।

अहिका–स्त्री. शाल्मलीवृक्ष। सिंबल का पेड़, सेंबर का वृक्ष।

अहिकान्त–पु. वायु। हवा।

अहिच्छत्रा–स्त्री. शर्करा.(पु) मेषशृङ्गी। चीनी, शक्कर, खांड, मेढेसिंही।

अहिपर्णी–स्त्री. पृष्टिपर्णी। पिथवन, पिठवन।

अहिफेण– } न. आफूक। अफीम।
अहिफेनक }

अहिभज–पु. गरुड़. मयूर. नकुल। पिढैयाढंख. मोर. नेउला।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अहीदीप्य–पु. द्विमुखसर्प । दो मुंह वाला सांप ।

अह्लला–स्त्री. भल्लातकवृक्ष। भेलावें का पेड़।

अक्ष–पु. विभीतक । बहेरा ।

अक्षोठक–पु. पीलु। अखरोठ, फीलु मेवा।

आ

आक्षेपक–पु. वातव्याधि । वायु की बीमारी ।

आकष–पु. प्रस्तरविशेष कसौटी ।

आकाशवल्ली–स्त्री. आकाश बेलि । अम्बर बेलि ।

आखनिक, आखु –पु. चौर. शूकर. इन्दुर. खनित्र । चोर. सुअर. मूषा. कुदाल ।

आखुकर्णपर्णिका,–स्त्री. मूसाकर्णी । मूसेकन्नी ।

आखूकर्णी–स्त्री. मूसाकर्णी । मूसेकन्नी लता ।

आखोट–पु. वृक्षविशेष । आखरोट का दरख्त ।

आगन्तुक–पु. व्याघ्रादिकृताः शस्त्रादिकृताश्च । बाघादि या हथियार से हुई व्याधि ।

आगन्तुज्वर–पु. विषमज्वराः । आघातादि ज्वर ।

आग्नेयम्–पु. अग्निभूताधिदैविकस्वभावमाग्नेयम् । उष्णतायुक्त ।

आच्छाक–पु. वृक्षविशेष ।

आच्छाद–पु. वस्त्र, अम्बर । कपड़ा ।

आज–न. घृत. छागमांसादि । घी. बकरे का मांस ।

आज्य–न. घृत । घी ।

आटरूष–पु. बासा । रूसा, आरूसा, रूसाह ।

आटोकर–पु. वृषभ, वृष, सांड़ ।

आडि–स्त्री. शरालिपक्षी. मत्स्यविशेष । चिड़िया. एक किस्म की मछली ।

आढक–पु. न. चतुः प्रस्थपरिमाण । सात पौण्ड और ११ औंस २५६ तोला ऽ३ ≡), तीन सेर सवा तीन छटाक ।

आढका–स्त्री. सौराष्ट्रीमृत्तिका । सोरठी माटी ।

आढकी–स्त्री. शमी धान्यविशेष. तुवरी । अरहर. तुवर धान्य ।

आतङ्क–पु. भय. सन्ताप. रोग. मुरजध्वनि. ज्वर. संदेह । खौफ. तक्लीफ. बीमारी, ढोल की आवाज. बुखार. शक्क ।

आतपत्रक, आतपवारण – न. छत्र । छाता ।

आतर–पु. तरपण्य । मोरबहरी ।

आतापिन्–पु० चिल्हपक्षी । (त्रि) धूर्त्त । चील. चिड़िया. चुगल. बदमाश ।

आतुर–त्रि. रोगी । बीमार ।

आत्मक–(त्रि) भाविक । ज़ाती ।

आत्मगुप्ता–स्त्री. कपिकच्छु लता । आत्मकुशी. किमांच. खजोहरा ।

आत्मघोष–पु. काक । कव्वा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आत्मदर्श–पु. दर्पण । आरसी, आईनह।
आत्मलोमन्–न. श्मश्रू । केश. दाडड़ी. बाल ।
आद्य–त्रि. प्रथम (न) धान्य । पहिला. धान ।
आधान–न. गर्भाधान. स्थापितद्रव्य । हमल. जमानत ।
आधि–पु. मनःपीड़ा. बन्धक. प्रत्याशा. अधिष्ठान । फिकर. गिरवी. उम्मेद. ठिकाना या मुकाम ।
आधूर्य–न. दौर्बल्य । दुवलापन ।
आध्मात–त्रि. ध्वनित. दग्ध (पु) युद्ध । आवाज. जला हुआ. लड़ाई ।
आध्मान–पु. वातरोग. भस्त्रा । वाई की बीमारी. लोहार की धौंकनी ।
आनन–न. मुख । मुह, चेहरा ।
आनन्दा–स्त्री. फलेन्द्रा. जम्बुवृक्ष । फरेन्दा. जामुनी का पेड़ ।
आनाह–पु. मूत्रपुरीषरोधकरोग. दैर्घ्य । कब्ज. कपड़े की लम्बाई ।
आनूप–पु. अनूप देश के जीव. जलप्रायदेश । गैंड़ा. भैंसा, सुअर वगैरह ।
आप–पु.व्यापन(न) जल. पाप । व्यापक. पानी. दोष ।
आपन्नसत्वा-स्त्री. गर्भवती । हामिलह ।
आपस्–न. जल. पाप. कन्या राशि। पीनी. गुनाह. ६ राशि ।
आपालि–पु. केशकीट । जूं ।
आपीत–न. माक्षिकधातु (त्रि) मस्त. ईषत् पीतवर्ण । सोनामाखी. रूपामाखी. मस्त. थोड़ा जर्द ।
आपीन–पु. तुन्नक । तुणि, तूनि ।
आपूप्य–पु. सक्तू । मयदा. वेसन. वगैरह चीज़ें. सत्तू ।
आपूष–न. त्रपू । रांगा. टीन ।
आप्यान–त्रि. मांसल । मोटा ।
आफूक–न. अहिफेन । अफीम ।
आवि–स्त्री. अजा । भेंड़ी ।
आभाष–पु. बबूल । बबुर का पेड़ ।
आम–त्रि. पाकरहित(पु) रोग(न) आम्रफल । कच्चा. बीमारी. बदहज़मी. आमका फल ।
आमखडु–पु. शुक्ल एरण्ड । सपेद एरण्डा का पेड़ ।
आममूलक–पु. गुन्द्र । गुन्दपटेर ।
आमय–पु. रोग(न) कुष्ठ नामक औषधि। बीमरी. कुट्ठ. औषधि. कूटी दवा ।
आमरक्त–पु.उदरामय । पेचिश की बीमारी ।
आमलक–त्रि. धात्री । आवला ।
आम्बलकी–स्त्री. (न) धात्रीवृक्ष, धात्रीफल । आमले का पेड़, आमले का फल ।
आमान्न–न. अपक्वान्न । कच्चा अन्न ।
आमाशय–पु. आमस्थली । नाभि और स्तनों के बीच की जगह ।
आमिक्षा–स्त्री. दधिकूर्चिका । उभरते हुये दूध में दही डाल देने से जो फुटके बन जाते हैं ।
आमिष–पु. मांस. रूप. भोजन. उत्कोच। गोश्त. सूरत. खुराक. घूस ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आम्र–पु. चूत (न) आम्रफल । आम का पेड़. आम का फल ।

आम्रगन्धिहरिद्रा–स्त्री. आंबाहल्दी ।

आम्रबीज–न. कोइलिया । आम की गुठली ।

आम्रात–पु. राजाम्र । कलमी आम. भल्लातकवृक्ष. भेलावां ।

आम्रातक–पु. आम्र । छोटा आम. रीरी।

आम्रावर्त–पु. आम्रसक्तु । आमचूर. अमावट ।

आम्ल–न. आम्लरस (पु) तिन्तिडी वृक्ष। तुर्शजायकह. इमली का दरखत ।

आयस्–न. लोह ।(त्रि) लोहे से बना हुआ।

आयुस्–पु. न. जीवितकाल. घृत । उमर. घी ।

आयुर्वेद–पु. चिकित्साशास्त्र । ऋग्वेद का उपवेद. यथा–चरक सुश्रुत इत्यादि । इलमतिब्ब । आयुरस्मिन् विद्यते अस्त्यायुर्वेदः । आयुर्विद्यते ज्ञायते अनेनायुर्वेदः, आयुर्विद्यते विचार्य्यते अनेन वा इत्यायुर्वेदः । आयुरनेन विन्दति प्राप्नोति वा आयुर्वेदः ।

आर–न. लोहशलाका. पीतल. कोना(पु) मंगलग्रह. संगतरे का वृक्ष (स्त्री) आर ।

आरकूट–पु.न. कांचीपीतल. सांची का हथियार. सथी ।

आरग्वध–पु. व्याधिघात । अमिलतास. घनबहेरा ।

(आर्द्यमधु)–न. माक्षिकविशेष । एक किसम का सहत ।

आरण्य–त्रि. वन्य । जंगली ।

आरनाल–पु. सन्धानविशेष । शिरका ।

आरबेत–पु. आरग्वध । अमिलतास. घनबहेरा ।

आरिष्ट–पु. सन्धानविशेष । एक किस्म का सन्धान ।

आरु–पु. वृक्षभेद. कर्कट. सूकर । खाश दरखत. केकड़ा. सुअर ।

आरुष्क(र)–पु. भल्लातक । भेलांवा ।

आरोह–पु. दैर्घ्य. आरोहण. नितम्ब. समुच्छ्रय. परिणामविशेष । लम्बाई. चढ़ना. चूतड़. उचाई ।

आर्ग्वध–पु. वृक्षविशेष. व्याधिघात । दारचीनी. अमिलतास ।

आर्घा–स्त्री. एक किसम की मक्खी. खाश मच्छली ।

आर्घ्य–न. माक्षिक विशेष । आर्घा मक्खियों का सहद ।

आर्त–त्रि. पीडित । दर्द अंगेज़ ।

आर्तगल–पु. श्वेतसहचर । सपेद फूल वाला करसैला ।

आर्तव–न. स्त्रीरज, (त्रि) ऋतुसम्बन्धी । हैज़. फूल ।

आर्तवी–स्त्री. घोटकी । घोड़ी ।

आर्ति–स्त्री. पीड़ा. रोग. धनुष्कोट । दर्द. बीमारी. कमान का सिरा ।

आर्द्रक–न. शृङ्गवेरमूल । आदरक ।

आर्द्रिका–स्त्री. ” ”

आर्य्यावर्त–पु. पुण्यभूमि । विंध्य और हिमालय के बीच का मुल्क ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आल—न. ताल (त्रि) बृहत् । हरताल धातु. बड़ा. चौड़ा ।
आलकी—स्त्री. पटिया । अरई. घुंया ।
आलगर्द्द—पु. अलगर्द्द । केंचुआ ।
आलजिह्वा—स्त्री. उपजिह्वा । घंड़ी ।
आलावर्त—न. वस्त्रनिर्मित व्यजन । कपड़े का बना हुआ पङ्खा ।
आलाबू—स्त्री. गिरितुम्बी । लवलौआ, कद्दू, लौकी. तोरई ।
आलिञ्जर—पु. अलिञ्जर.बृहन्मृण्मयपात्र । मट्ठ, मटुका ।
आलीनक—न. धातुविशेष । रांगा.शीशा।
आवर्त—न. माक्षिकधातु । सोनामाखी. रूपामाखी ।
आवर्तनी—स्त्री. धातुद्रावणार्थमृत्पात्र । धात गलाने की गुठानी, खड़िया ।
आवर्तनी—स्त्री. अजशृङ्गी । मेढ़ासिंही ।
आवि—स्त्री. मेषी । भेंड़ी, मेढी ।
आविक—पु. कम्बल (त्रि) ऊन का. भेड़ी का कंमर ।
आविकघृत—न. मेषीघृत । भेंड़ का घी ।
आविकदुग्ध—न, भेड़ी का दूध ।
आवी—स्त्री. प्रसववेदना । दर्दज़ेह ।
आवेगी—स्त्री. वृद्धदारुक । विधारा ।
आवेश—पु. अहंकार. अपस्मार रोग. भूतावेश । तकब्बुर. मिरगी की बीमारी. आसेव ।
आब्धिक—पु. समुद्रकफ । समुद्रफेन. समुद्रफल ।

आशयाश—पु. अग्नि । आग ।
आषाढ—पु. आषाढ़मास. पलाशदण्ड । असाढ़ महीना. पलाश की लकड़ी. छिऊल या ढाक की लकड़ी ।
आशिस्—स्त्री. आशीर्वाद । सर्पादिदन्त. दुआ. सांप वगैरह के दांत ।
आशी—स्त्री. आशीर्वाद. सर्पविष । दुआ करना, सांप की ज़हर ।
आशीविष—पु. सर्प । सांप. ज़हरीसांप ।
आश्वत्थ—न. पिप्पलफल । पीपल का फल ।
आसन—न. पीठ. हस्तिस्कन्ध. तृतीययोगाङ्ग. (पु) जीरकवृक्ष । चौकी. हाथी का कंधा. ३ योग का अङ्ग. जीरे का पेड़ ।
आसव—पु. मद्यविशेष । मधुचीनी से निकाली हुई शराब ।
आसुर—न. विरिआ. सोंचर निमक ।
आसुरी—स्त्री. राजिका । राई ।
आस्फोत—पु. अर्कवृक्ष. कोविदार. भूपलाशवृक्ष । मदार, अर्क. पहाड़ी आबनूस ।
आस्फोता—स्त्री. श्वेता. नील. अपराजिता । सपेद और नील विष्नुकांता लता।
आस्य—न. मुख । (त्रि) मुखभव । चेहरा. मुख में जो हो ।
आस्यपत्र—न. पद्म । कमल फूल ।
आहरण—न, आनयनम् । ले आना ।
आह्वायक—पु. दूत । बुलानेवाला. कासद ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इ

इक्षु–पु. रसाल. गुड़तृण । पौंड़ा, गन्ना ।

इक्षुकाण्ड–पु. मुञ्जक. काश. इक्षु । मूंज. काही. गन्ना ।

इक्षुगन्ध–पु. कोकिलाक्ष । तालमखाना ।

इक्षुगन्धा–पु. काश (स्त्री) विदारीकन्द । काही. विलारीकन्द. गेठि ।

इक्षुगन्धिका–स्त्री. गोक्षुर । गुखुरू ।

इक्षुपत्र–पु. धान्यविशेष । जुवार ।

इक्षुवालिका } पु. क्षुरक । तालमखाना.
इक्षुर } बूटी ।

इक्षुरस–पु. काशेक्षु । कास. काही घास ।

इक्षुसार–पु. गुड । गुड़. गुर भिठाई ।

इक्ष्वाकु–पु. सूर्य्यवंशी. एक राजा (स्त्री) कटु तुम्बीफल । तीतलौकी, करुई तोम्बी, करुईलौकी ।

इक्ष्वालिक(क)–पु. काशतृण. काही. घास।

इङ्गुद–पु. इङ्गुदी वृक्ष। हिंगोट का दरख्त।

इङ्गुदी–स्त्री. तापसतरु । जियापोता. इङ्गुआ. हिंगोट का पेड़ ।

इङ्गुल–न. दरदधातु । हिंगूलू. ईङ्गुरु ।

इञ्जल–पु. समुद्रकफ। समुद्रफल. समुद्रफेन।

इध्म–न. अग्निसन्दीपन काष्ठ। ईंधन ।

इन–पु. सूर्य्य । आफताब ।

इन्दिवर–न. नीलोत्पल । नीलोफ़र । काका वेल ।

इन्दिरावर–पु. विष्णु (न) नीलकमल । नीलोफर ।

इन्दु–पु. चन्द्र. कर्पूर । माहताब. कपूर ।

इन्दुकमल–न. सितोत्पल । सुपेदकमल।

इन्दुकलिका–स्त्री. केतकीपुष्प । केवड़ा का फूल ।

इन्दुवल्ली–स्त्री. सोमलता । सोमलता. गुर्च ।

इन्दुर–पु. मूषिका । चूहा ।

इन्द्र–पु. देवताओं का राजा. सूर्य्य. परमेश्वर. रात्रि. महाधनी. इन्द्रयव बीज । शब. दौलतमन्द. इन्द्रजव ।

इन्द्रगोप–पु. इन्द्रवधूकीट । पटवीजना. बीरबहूटी कीड़ा ।

इन्द्रजम्बूकवरपत्रा–स्त्री. कृष्णाशारिवा । करिआ वांसा. कालादूध. उरुलता ।

इन्द्रदारु–पु' देवदारुकाष्ठ । देवदारु का वृक्ष ।

इन्द्रनील–न. नीलमणि । नलम् रत्न ।

इन्द्रद्रु–पु. अर्जुनवृक्ष । कौह. अर्जुनहर्रा ।

इन्द्रवृद्धा–स्त्री. व्रणरोग । ज़ख्म की बीमारी ।

इन्द्रभेषज–न' शुण्ठी । सोंठ ।

इन्द्रयव–पु. न' कलिङ्ग । इन्द्रजव अर्थात् कुरैआ के बीज ।

इन्द्रयवफलवृक्षक–पु' कुटजवृक्ष । कोरैया का पेड़ ।

इन्द्रवारुणी–स्त्री. गवादिनी लता । इन्द्रायन, इन्द्रोरनि ।

इन्द्रिय–न. ऋषीक। जैसे आंख. कान. नाक. जबान. खाल. हाथ. पांव. लिङ्ग. गुदा. आवाज. मन. बुद्धि. चित्त. अहंकार ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इन्द्रियायतन—न. शरीर । जिस्म ।

इन्द्रीवरी—स्त्री. शतावरी बूटी । छतावरि।

इभ—पु. हस्ती । हाथी, फील ।

इभकणा—स्त्री. गजपिप्पली। गजपीपली ।

इभ्या—स्त्री. हस्तिनी । हथिनी ।

इरिमेद (व) पु. दुर्गंध खदिरवृक्ष । रिञ्जा का दरखत ।

इरु—पु. बीज । तुख्म ।

इल्लस—पु. मत्स्यविशेष । हीलसा मछली ।

इष्टा—स्त्री. शमीवृक्ष । जंड़ी का पेड़. छींकुरि का दरख्त ।

इष्टिकापथक—न. लामज्जक तृण । यह खसखस के सदृश पीत रंग का तृण होता है ।

इध्म—पु. कामदेव. बसन्तकाल । मोसिम बहार ।

इष्य—पु. वसन्त का मौसिम ।

ई ।

ईरिका—स्त्री. वृक्षविशेष ।

ईर्म्म—न. व्रण । फोड़ा, ज़खम ।

ईशानी—स्त्री. दुर्गा देवी. शमीवृक्ष । जंड़ी का पेड़. छींकुरिका दरख्त ।

उ ।

उक्षतर—पु. महावृष । बड़ाभारी बैल ।

उखा—स्त्री. स्थाली । टोकनी, डेलैया ।

उग्र—त्रि. उत्कट, क्रोधी. (न) क्रोध. विषविशेष. वृक्षविशेष । एक किसम की ज़हर. बच का पौधा ।

उग्रकाण्ड—पु. कारवेल । करेले का पौधा।

उग्रगन्ध—न. हिङ्गु (पु) लशुन. चम्पक (त्रि) उत्कटगंधयुक्त । हींग. लसन. चंबा. तेज़ बूदार ।

उग्रगन्धा—स्त्री. जवानी. बच. अजमोदा। महाभरी बच अर्थात् कुलिञ्जन. जवायन. लहशुन ।

उग्रा—स्त्री. बच औषध ।

उङ्कुण—पु. केशकीट । जूं ।

उच्चटा—स्त्री. लशुन. श्वेता. रक्ता. गुञ्जा. भूम्यामलकी. दंभचर्य्या । लहसन. सुपेद और लालरत्ती छोटी झाड़ी. रूर. आदत ।

उच्चतरु—पु. नारिकेल वृक्ष । नरियल का पेड़ ।

उच्छिलीन्ध्र—न. छत्त्रिका, काकरुन्धा । खुंब. कुकुरमुत्ता ।

उच्छीर्षक—न. उपधान । तकिया ।

उडुम्बर—पु. उदुम्बरवृक्ष । गूलर का पेड़ ।

उड्र—पु. जल. जवापुष्प । पानी. जवा फूल, दुपहरिया ।

उत्कट—त्रि. तीव्र. मत्त. उद्दाम. विषम. तज. मस्त । मुशकिल (पु) मस्त हाथी. (न) तज. दालचीनी ।

उत्कटा—स्त्री. सैंहली लता ।

उत्कुट—न. उत्तान शयन । सीधा सोना ।

उत्कुण—पु. केशकीट । जूं ।

उत्कूट—पु. छत्त्र । छाता ।

उत्क्रोश—पु. कुररपक्षी । जनरव. अबीबील. गौगा, ढिटिहरी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

उत्क्षिप्त–पु. धूर्त्तफल. (त्रि) । उछाला हुआ धतूरे का फल ।

उत्तमाङ्ग–न. मस्तक. शिर । माथा । शिर ।

उत्तानपत्रक–पु. रक्तैरण्ड । लालएरंडा ।

उत्ताप–पु. उष्णता, सन्ताप । गरमी, धूप ।

उत्तार–त्रि. महोच्च उत्कृष्ट (पु) वमन, उल्लङ्घन । बड़ा. ऊंचा. उर्द्दः. कैकरना. गुजरजाना ।

उत्तुष–न. भ्रष्टधान्य । खील ।

उत्पल–नीलकमल. कुष्ठौषधि (त्रि) कृश । नीलोफर. कुष्ठ दवाई कूट. दुबला, पतला ।

उत्पलपत्र–न. पद्मपत्र. (स्त्री.) नखक्षत. तिलक । कमल का पत्ता. औरत के पिश्तान पर नखून का निशान. टीका ।

उत्पाव–पु. शुद्धघृत । साफ घी ।

उत्पाली–स्त्री. आरोग्य । तन्दुरुस्ती ।

उद(क)–न. जल । पानी ।

उदकीर्य्या–स्त्री. हस्तिवारुणी । अरारि. करञ्जीवृक्ष ।

उदश्वित्–न. तक्र । आधा पानी मिलाया हुआ मट्ठा ।

उदान–पु. उदानो नाम यस्तूर्द्ध्वं गच्छति पुनः नाम्युरः कण्ठानि स्थानानि [कालादीन् करोति] स दुष्टः नयनवदनघ्राणश्रवणशिरःसंश्रयान् तथा । इसी से बोलना गाना होता है ।

उदीच्य–पु. सरस्वती नदी के उत्तर पश्चिम का देश (न) वालानाम गन्धद्रव्य (त्रि) उत्तरदेशीय । सुगंधवाला, नेत्रवाला. वाला. शमाली ।

उदुम्बर–पु. वृक्षविशेष. कुष्ठरोग. देहली. (न) ताम्र । गूलर का पेड़. कोढ़ की बीमारी. दहलीज. तांबा ।

उदुम्बरपर्णी–स्त्री. लघुदन्ती । छोटी दतून का पौधा ॥

उद्गार–पु. उद्वमन. शब्द । कै. आवाज. डकार ।

उद्गारण–न. वमन, कण्ठगर्जन । कै. डकार ।

उद्गारशोधन–पु. कृष्णजीरक । स्याह जीरा ।

उद्दाल (क)–पु. शेलु । कोद्रव धान्य. ऋषिविशेष । बहुवार का पेड़. कोदों धान्य ॥

उद्दाली–स्त्री. कोद्रवधान्य । कोदोंधान्य ।

उद्दीप–न. गुग्गुलु (पु) दीपन । गूगल. जलाना ।

उद्धर्षण–न. रोमांच । रोम खड़ा होना ।

उद्धारा–स्त्री. गुडूची । गुरच, गिलोय, गिलो ।

उद्वमन–न. उद्गीर्ण । कै करना ।

उद्भट–पु. कच्छप. सूर्य (त्रि) श्रेष्ठाशय । कछुआ. आफताब. मशहूर ।

उद्भिज–(ज्ज) त्रि. उद्भिज्ज. भुवमुद्भिद्य जाताः उद्भिजाः । नबातात ।

उद्यान–न. पुष्पवाटिका. निस्सरण. प्रयोजन । फुलवाड़ी. निकला. मतलब ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

उद्गध—पु. रथकील. ताम्रचूड़पक्षी। धुरी. मुरग ।

उद्गेका—स्त्री. महानिम्ब । बकाइन का पेड़ ।

उद्वर्त्तन—न. अभ्यञ्जन. घर्षण. उत्पन । उबटन. घिसना. उछलना ।

उद्वाहनी—स्त्री. कपर्दिका । कौड़ी ।

उद्वाहिनी—स्त्री. रज्जु । रस्सी ।

उद्वेग—न. गुवाकफल (पु) उद्वेजन. चमत्कार. भय. (त्रि) शीघ्रग. ऊर्ध्वबाहु । सुपारी. खौफ. फिक्रजल्दरी. ऊंची बाहु किये हुये ।

उन्नमन—न. अधःस्थितस्य शिरकर्णादेरूर्द्ध्वनयनम् ।

उन्नाह—न. काञ्जिक । काञ्जी ।

उन्मत्त—त्रि. उन्मादयुक्त (पु) धूस्तरवृक्ष, धूर्त्तवृक्ष । नशई. पागल. धतूरा. मुचकंदनाम पेड़ ।

उन्मथन—न. प्रणष्टस्य शल्यस्य मार्गं शलाकादिभिरालोडनम् ।

उन्माद—पु. चित्तविभ्रम, उन्मत । एक किसम की बीमारी. पागलपन ।

उन्मान—पु. द्रोण, तौल, परिमाण । १०२४ तोला वा ।८२॥- तौल ।

उपकालिका—स्त्री. कृष्णजीरक । स्याह जीरा ।

उपकुञ्चिका—स्त्री. कृष्णजीरक. क्षुद्रैला । स्याहजीरा. इलाची छोटी ।

उपकुञ्ची—स्त्री. कृष्णजीरक । स्याह जीरा ।

उपकुल्या—स्त्री. पिप्पली । पिपली ।

उपकुश—पु. मसूढ़ों में दाह, दन्तहिले पीड़ा हो रक्तगिरे मुख में दुर्गन्ध हो ।

उपघात—पु. उपकार. रोग. नाशन । बीमारी. चोट. तबाही ।

उपचार—पु. रोगप्रतीकार । बीमारी का इलाज ।

उपचित्रा—स्त्री. बृहद्दन्ती । बड़ी. दतूनि ।

उपजिह्विका, उपजिह्वा —स्त्री. घण्टिका. कीटविशेष । घंड़ी. एकखास छोटा कीड़ा ।

उपदंश—पु. मद्यपान. रोचकद्रव्य. चक्षण. वृक्षविशेष. दंशन । मजा. आतशक. डंकमारना ।

उपदा—स्त्री. उपढौकना. भेंट, नजर ।

उपधातु—पु. अष्टप्रकार धातु सदृश धातु यथा—१ माक्षिक. २ तुत्थक. ३ अभ्रक. ४ नीलाञ्जन. ५ मनःशिल. ६ हरताल. ७ रसाञ्जन । शरीर के सप्तोपधातु यथा—१ रस से दूध. २ रक्त से रज. ३ मांस से वसा. ४ मेदा से घर्म. ५ अस्थि से दांत. ६ मज्जा से केश. ७ शुक्र से ओज ।

उपधान—न. शिरोधान. विष. प्रणय. लंघन । तकिया. जहर. मेहरबानी. फाकह ।

उपरत्न—पु. कांच. खपरिया. कपनीया, सीप. शंख इत्यादि ।

उपरस—पु. उपधातु यथा—१ गंधक. २ हिंगुलू. ३ अभ्रक. ४ हरताल. ५ मैनशिल. ६ सुरमा. ७ सोहागा. ८ रावटी. ९ चुम्बकपत्थर. १० फटकरी. ११

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

संख. १२ गेरू. १३ स्वर्णगेरू. १४ कशीश. १५ खपरिया. १६ कौड़ी. १७ वालू. १८ बोल. १९ मुरदासंख. २० सोरठीमाटी. २१ खपरिया मट्टी ।

उपल्–पु. पाषाण. रत्न। पत्थर. जवाहर ।

उपल–पु. शर्करा । चीनी ।

उपविष–न. यथा–१ अर्कक्षीर. २ सेहुण्डक्षीर. ३ लांगली. ४ करवीर. ५ गुञ्जा. ६ अहिफेन. ७ धूर्तफल ।

उपविषा–स्त्री. अतिविषा । अतीस ।

उपस्थ–पु. लिङ्ग. भग. क्रोड़ (त्रि) निकट । केर. कुस. गोद. नजदीक ।

उपानह्–स्त्री. चर्म्मपादुका । जूती ।

उपान्त–त्रि. निकट. (पु) चक्षुःकोण । नजदीक. गोशहचशम ।

उपोती } उपोदिका(की) } स्त्री. पूतिका. मार्जारी. पोतकीलता। चौलाई साग. विल्ली. पोय बेल ।

उभयकण्टिका–स्त्री. कोल. बदरी। बेरि का पेड़ ।

उमा–स्त्री. दुर्गा. अतसीवृक्ष. कीर्ति. हरिद्रा. कान्ति. शान्ति । अलसी. मशहूरी. हलदी. चमक. अमन. ।

उरग–पु. सर्प्प। सांप. सिक्का वा नक्षत्र।

उरगारि–पु. गरुड़, । सारस ।

उरण(भ्र)–पु. स्त्री. मेष. मेघ । मेंढ़ा. बादल ।

उरसिज–पु. वक्षोज. चूंची । पिस्तान ।

उरुबू(क)–पु. रक्तैरण्ड । लालएरंडा ।

उर्णा–स्त्री. मेषादिलोम । ऊन ।

उलप–पु. प्रतानिनी लता (न) खड़तृण । दाखकी बेल. चटाईका घास ।

उलूलक–न. तृणविशेष (पु) उलूक. इन्द्र. शकुनीपत्र । दूब. उल्लू. देवताओं का राजा ।

उलूक–पु. उल्लू पक्षी । घूघू ।

उलूखल–न. ऊखल । गुग्गुलु ।

उलूत–पु. अजगरसर्प्प । अजदहा ।

उल्ल्व–न. जरायु. गर्त । रेहम. गढ़ा ।

उशिज्–पु. अग्नि. घृत (त्रि) कमनीय । आग. घी. खूबशूरत ।

उशीर (क)–पु. न. वीरणमूल । खस्स, गाड़र की जर ।

उष–न. पांशुलवण(पु) कामी. रात्रिशेष । शोरा. शहवती. सुबह ।

उषण–न. मरिच. पिप्पलीमूल । मिरच. पिपलामूढ़ ।

उषणा–स्त्री. पिप्पली. शुंठी । पिपली, सोंठि ।

उषर्बुध–पु. अग्नि. चित्रकवृक्ष । आग. चित्रक. चीत ।

उषीर–पु. न. वीरणमूल । खस्स ।

उष्ट्र–पु. पशुविशेष । ऊंट, शुत्तर ।

उष्ट्रीदुग्ध–न. ऊटनी का दूध ।

उष्ण–पु. ग्रीष्मऋतु, तप आतप. पलाण्डु (त्रि) दक्ष. तप्त (स्त्री) संताप । गरममोसम, गरमी, धूप. पियाज. होशियार. तपा हुआ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ऊ

ऊधन्य(स्य)–त्रि. न. दुग्ध. दूध । क्षीर ।

ऊबी–स्त्री. आर्द्रभर्जितधान्य । ऊबी, ऊबिआ ।

ऊरु–पु. जङ्घा । जांघ ।

ऊरुपर्वन्–न. जानु । घुटना ।

ऊर्णनाभ (भि)–पु. कीटविशेष. लूता । मकड़ी ।

ऊर्णा–स्त्री. मेषादिरोम । ऊण. पशम· पानी की घुमर. दोनों भवों के वीच के रोम. भेड़ी ।

ऊर्णायु–पु. कम्बल. ऊर्णनाभि. मेष । मकड़ी. मेढ़ा ।

ऊर्ध्वपुष्प–न. जपापुष्प । बोड़हुल का फूल, सांफी का फूल ।

ऊर्वष्ठीवत्–न. जानु. जंघा । घुटना, जांघ ।

ऊष–पु. मत्स्यविशेष । मच्छली ।

ऊष–पु. क्षारमृत्तिका(न)प्रभात । खारी-मट्टी. सुबह ।

ऊषण–न. मरिच. सोंठि. पिप्पलीमूल । (पु) व्याघ्र, चित्रक (स्त्री) शुंठी । स्याहमिरच. चीता. सोठ. मद्य. पिपलामूढ़. चीत ।

ऊषणा–स्त्री. चव्य । चाभ. चव. शुंठी. पिप्पलीमूल । सोंठि. पिपलामूढ़ ।

ऋ

ऋक्ष–पु. भालू, रीच्छ, भल्लुक ।

ऋजीक–पु. इन्द्र. धूम । देवराज. धुआं ।

ऋजीष–न. भर्जनपात्र. धन, नरकविशेष । तवा. दौलत. दोज़ख़ ।

ऋजुकरण–न. कुटिल को सीधा करना ।

ऋतु–पु. षड्विधकाल । यथा–१ वसन्त. २ ग्रीष्म. ३ वर्षा. ४ शरद्. ५ हेमन्त. ६ शिशिर. स्त्री रज. दीप्ति । हैज. चमक ।

ऋषभ–पु. वृष. कर्णरंध्र. वाराहपुच्छ । बैल. कान का पोल. सुअर की पूंछ. ऋषभक लता ।

ऋष्य–पु. नीलाङ्गबराह मृग । नीलेरंग का बाराह मृग ।

ऋष्यप्रोक्ता–स्त्री. कङ्कतिका । केकई का पौधा. रेखाखतमी ।

ऋष्याप्रोक्ता–स्त्री. महाशतावरी । महाशतावरि ।

ॠ

ॠ–व्य. रक्षा. निन्दा. भय. (न) वक्ष. पार्श्व. (स्त्री) देवमाता. स्मृति. गति. (पु.) भैरव. दनुज । हिफाजत. मलामत. खौफ. पकली. दिति. याद्दास्त. जाना ।

ऌ

ऌ–व्य. देवमाता-भूमि. पर्व्वत । जमीन पहाड़ ।

ए

एकचर–पु. हिंस्रपशु (त्रि) असंसर्ग । गैंड़ा. अकेला फिरने वाला ।

एकदृश–पु. महादेव. काक (त्रि) काण । कौवा. काना ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एकमूला—स्त्री. अत सी । अलसी ।
एकष्ठीला—स्त्री.अम्बष्ठा । पाढ़ा औषध ।
एकाङ्ग—पु. बुधग्रह (न) चंदन । संदल ।
एकाष्ठीला—स्त्री. बकुल । बृहद्गोलसरी । बड़ी मौनशिरी का वृक्ष ।
एड़का—स्त्री. मेषी । भेंड़ी, दुम्बा मेढ़ी ।
एडगज—पु. चक्रमर्दक. दादमर्दन । चकवड़ का पौधा ।
एण(क)—पु. मृगविशेष—कृष्णमृग (स्त्री) (णी) मृगीविशेष । जिस का स्याहरंग वसदा आंखें और छोटी २ टांगे होती हैं वह हरन, हरिनी ।
एणनाभि—स्त्री. मृगनाभि । कस्तूरी ।
एणाजिन—न. मृगचर्म । हिरण की खाल ।
एत—पु. मृग. कर्बुरवर्ण, (त्रि) आगत. कर्बुरवर्णविशिष्ट । हरण. चितकबरा रंग, वा चितकबरे रंग वाला ।
एन—पु. कृष्णमृग । करसाइल हरिण ।
एरका—स्त्री.गुन्द्रमूलातृण । एरा. मोथी तृण ।
एरङ्ग—पु. मत्स्यविशेष । अरंगी मच्छली ।
एरण्ड(क)—पु.गन्धर्वहस्त । एरण्डका पेड़ ।
एरण्डतैल—न. अरण्डी का तेल ।
एरण्डफल—न. लघुदन्ती । छोटी दन्तूनि का पौधा ।
एरवारु—स्त्री.कर्कटी । ककड़ी ।
एर्वारुक—न.हरिणवत । कस्तूरिया मृगा ।
एलक—पु. मेष । मैंढ़ा ।
एलङ्गा—पु. मत्स्यविशेष । एक किस्म की मच्छली ।
एलपर्णी—स्त्री. युक्तरसा. रास्ना । रहसनिका पौधा ।
एला—स्त्री. इलाची का फल वा पेड़ ।
एलाबालुक—न. ऐलेय । एलाबालुक. कंकोल के सदृश कुष्ठ कीसी गंध हो जिस्में. वोल. मुसब्बर ।
एलीका—स्त्री. इलाचीका फल वा पेड़ ।
एषण—न. गम्भीरकादौ पूयाद्यन्वेषणम् ।
एषणिका—स्त्री. तुला । सुनार का कांटा ।

ऐ

ऐङ्गुद—न. इङ्गुदीफल । हिंगोट का फल ।
ऐन्दवी—स्त्री. सोमराजी । वाकुची बूटी ।
ऐन्द्री—स्त्री.इन्द्रारुण । इन्द्रोरनि की वेल ।
ऐरवारु—स्त्री. इन्दवारुणी । इन्द्रोरणि ।
ऐरिण—न. सैन्धवलवण । पहाड़ीनिमक ।
ऐरेय—न. मद्य । शराब ।
ऐलालु } ऐलेय } न. एलाबालुक । कंकोल के सदृश होता है कुष्ठ कीसी गंध आती है ।
ओकुल—पु. गोधूमकृततम्रापक्व । मयदे की गर्मरोटी ।
ओकोदनी—स्त्री. यूक । जूं ।
ओडिका—स्त्री. नीवारधान्य । पसही के चावल ।
ओड्र—पु. जवापुष्प. उत्कलदेश । जवापुष्प. जवाफूल. उड़ीदेश का शिमाली हिस्सा ।
ओतु—पु. विडाल । बिल्ली ।
ओदन—न. अन्न । भात ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ओ३म्–व्य. प्रणव । परमेश्वर का सब से बड़ा नाम ।

ओल–पु. सूरणकन्द । सूरन ।

ओषधि (धी)–स्त्री. ज्योतिर्लता. फलपाकान्तवृक्षादि । वह पौधे जो फल पकने तक ही रहते हैं ।

ओषधीश–पु. चन्द्र. कर्पूर । चांद. कपूर ।

ओष्ठ–पु. दशनाच्छादन । होंठ ।

ओष्ठी–स्त्री. बिम्बफलवृक्ष । कुन्दुरू की बेल ।

ओष्ठोपमफला–स्त्री. ” ”

औ

औख्य–त्रि. स्थालीपक्व । बटलोही में रिन्धी हुई चीज ।

औडुम्बर–पु. यम (न) कुष्ठरोग. ताम्र. (त्रि) उदुम्बरनिर्मित. ताम्रनिर्मित. क्रोड । मौत का देवता. न्यायकरने वाला. कोहड़ की बीमारी. तांबा. गूलर का बना हुआ. ताम्बे का बना हुआ ।

औदश्वित (क)–न. अर्द्धजलयुक्तघोल । छाछ, मट्ठा ।

औदुम्बर–न. ताम्र. कुष्ठरोग । तांबाधातु. कोहड़ का रोग ।

औद्दालक–न. वल्मीकस्थ कपिल कीट-संचितमधु । बेंबौरिहा सहद ।

औद्भिज्ज(द्)–न. पांशवलवण । सोरा. कच्चानिमक ।

औद्भिदजलम्–न. भूमि को विदारण कर के बड़ी धारा से निकलता हुआ जल । सोता का पानी ।

औपसर्गिक–पु. सन्निपातरोग विशेष । सिरसाम की बीमारी ।

और्व–पु. बाड़वानल. पांशवलवण । सामुन्दरी आग. पहाड़ी निमक ।

औषण–न. कटुरस । कड़वास्वाद ।

औषध–न. भेषज । दवाई ।

औषर(क)–न. पांशवलवण, अयस्कान्त । पहाड़ीनिमक. चुम्बक ।

औष्ट्र–न. उष्ट्रदुग्धादि । ऊंट का दूध वगैरह चीज़ें ।

औष्ण्य–न. सन्ताप । धूप, गरमी ।

औष्म्य–न. उष्णता, गरमी ।

अं

अंशुमती–स्त्री. शालिपर्णी । सरिवन ।

अंशुमतीफला–स्त्री. कदली । केला ।

क

कम्–न० जल । पानी ।

कंक–न. मल्लादीर्घचञ्चुर्महाप्राणः । बड़ा कौआ ।

कंसक–न. कांस्यधातु. कौशीश । कांसा धातु. आंख की दवाई. हीरा कसीस ।

कंसकार–पु. काश्मारी । कसेरा ।

ककुज्झल–पु. स्त्री. चातकपक्षी । पपीहा ।

ककुभ–पु. अर्जुनवृक्ष । अर्जुनहर्रा का पेड़ ।

ककुन्दनी–स्त्री. ज्योतिष्मती वृक्ष । मलकांगुनी का पेड़ ।

ककुन्दर-पु. ताम्रचूड । कुकरौंधा का पौधा ।

कक्ष–पु. बाहुमूल. शुष्कतृण. लता । बगल. शूखीघास. बेलि ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कक्षरुहा—स्त्री. नागरमुस्था । नागरमोथा

कङ्कत, कङ्कतिका, कङ्कती —स्त्री. अतिबली औषध. केशप्रसाधिनी । ककहिआ, ककई. कंघी ।

कंकपत्र—पु. बाण । तीर ।

कङ्कमुख—पु. सन्दंश । संडासी ।

कङ्कर—त्रि. कुत्सित. कर्कश (न) तक्र । खराब. सख्त. छाछ ।

कङ्काल—पु. अस्थिपञ्जर. अस्थि । हड्डियों का ढांचह. हड्डी. कमर ।

कङ्कु (ङ्गु)—पु. तृणविशेष । कंगुनी ।

कङ्कुष्ट—न. पर्वतीयमृत्तिका. काककुष्ट । पर्वत की मट्टी. मुर्दाशंख ।

कङ्केलि (ल्लि) —पु. अशोकवृक्ष । अशोग का पेड़ ।

कङ्कोल—न. कंकोलमिरिच. कोषफल । शीतलचीनी. कंकोलमिरच ।

कङ्गु (नी)—स्त्री. धान्यविशेष. प्रियंगू. ज्योतिष्मती । कांकुनिधान्य.मालकंगुनी ।

कच—न. केश. मेघ. बृहस्पतिपुत्र (स्त्री) हस्तिनी. शोभा । बाल. बादल. बेड़ी. बृहस्पति का बेटा. सूखाजखम. हथिनी. खूबसूरती ।

कचङ्गन—न. विक्रय—स्थान । मंडी ।

कचङ्गल—पु. समुद्र । समुन्दर ।

कचट—न. तन्दुलीयभेद । चवराई शाग का भेद ।

कचप—न. तृण. पत्र । घास. पत्ता ।

कचमाल—पु. धूम । धुआं ।

कचु—स्त्री. कर्चूरवृक्ष. हरिद्रा । कचूर. हलदी ।

कच्चट—न. जलपिप्पली । जल में पैदा होने वाला पौधा ।

कच्चर—त्रि. मलिन. कुत्सित.(स्त्री) शूकशिम्बी । मैला. बद शरीर. किमाच की बेलि ।

कच्छ—पु. पुन्नागवृक्ष (त्रि) जलप्रायदेश (स्त्री) परिधेयवस्त्र. नाव का पिछला भाग । एक किस्म का वृक्ष. नदी आदि का तीर. कछुआ. काछनी, लहँगा ।

कच्छक—पु. नन्दिवृक्ष । तुणि का पेंड ।

कच्छप—पु. कूर्म्म. कुबेर निधिविशेष. नन्दीवृक्ष. मदिरायन्त्रविशेष । कछुआ. कुबेर का खज़ानह. तुनि का पेंड. शराब निकालने की कल. वारुणीयन्त्र ।

कच्छरुहा—स्त्री दूर्वा । दूब ।

कच्छु—स्त्री. रोगविशेष । खारिश की बीमारी ।

कच्छुरा—स्त्री. दुरालभा । जवासा का पौधा ।

कच्छू—स्त्री. रोगविशेष । खारिश की बीमारी ।

कच्छूरा—त्रि. कच्छरोग युक्त. परस्त्रीगामी (स्त्री) कपिकच्छु । खारशी. शेहवती. आलकुशी. किमांच का पौधा ।

कच्छोर—न. शटी । निर्म्मसी. कचूर औषध ।

कज—न. कमल (त्रि) जलजात । पानी की पैदाइश ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कज्जल—न० अञ्जन (पु) मेघ (स्त्री) मत्स्य विशेष। कज्जल; बादल; एक खास मच्छली।

कज्जलध्वज—पु० दीप। चिराग़।

कज्जलरोचक—न० दीपाधार। शमअदान।

कञ्चट—न० नलिकाशाक। नारी का शाग; करेंबू का शाग।

कञ्चड—पु० एक प्रकार का पौधा।

कञ्चार—पु० सूर्य्य। आफताब।

कञ्चिका—स्त्री० कञ्ची; क्षुद्रस्फोट। बांस की टहनी; फुन्सी।

कञ्चुक—पु० वर्म्म; वस्त्रविशेष; सर्पत्वच। ज़रह; चोली; जांघिया; सांप की केंचली।

कञ्चुकिन्—पु० अन्तःपुररक्षक; लम्पट; सर्प; यव; चनकनामक मुनि, (त्रि) आबद्ध कंचुक। रनवास की हिफाजत करने वाला; अय्याश; एलुए की लकड़ी. सांप; जौ; एक संत का नाम; जिसने (कञ्चुक) पहिरा हुआ है।

कञ्जक—पु० पक्षी विशेष; कोकिला। कोयल; मैयना।

कञ्जर—पु० ब्रह्मा; सूर्य्य; उदर; हस्ती,। पेट; हाथी।

कञ्जल—पु० मदनपक्षी। छोटी चिड़िया जो खास करके बंगाल में होती है।

कट—पु० औषध; तृण; यव। दवाई; घास; जौं।

कटक—पु० न० पर्बत का नितम्बदेश; सैन्धवलवण; हस्तिदन्त। पहाड़ के पासे. सेंधा निमक. हाथीदांत।

कटकिन्—पु० पर्ब्बत। पहाड़।

कटकोल—पु० पीकदान।

कटङ्कटेरी—स्त्री० दारुहरिद्रा। दारुहरदी।

कटभा—
कटभी— } स्त्री० ज्योतिष्मती लता। मालकांगुनी की बेलि।

कटफल—पु० सोमवल्कः। कयफरा।

कटम्भरा—स्त्री० स्योनाक, गंधप्रसारणी सोनापाढ़ा. गंधपसारणी (पु) स्वादु पुष्प कटभी,।

कटसारिकः—पु० सैरेयक। श्वेत करसैला, सुपेद फूल का कटसहैआ।

कटायन—न० बीरणमूल। खस्।

कटाह—पु० तैलादिपाक पात्र। कढ़ाह।

कटि (टी) पु०—स्त्री० श्रोणीदेश, हस्तिगण्ड, नितम्ब। जंघा, हाथी की कनपटी, चूतड़, चूलह।

कटिल्ल(क)—पु० कारवेल्ल—करेला। कृष्णा वर्वरी। स्याम बबई।

कटु—न० दूषण, अकार्य्य (पु) रस विशेष (त्रि) परस्त्री. कातर. कर्कश. उग्र, दुर्गन्ध, सुरभि. कुत्सित. कटुरसयुक्त (स्त्री) कटुवीलता. राई. सर्षप। ऐब. नाकरने के लायक. कड़वा. हासिद. तुंद. कठिन. दुर्गन्ध. सुगंध. पसंद. कड़वा, कुटकी. राई. सरसों।

कटुकस्नेह—पु० राई का तैल। सरसों का तैल।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कटुका–स्त्री० कट्वी । कुटकी ।

कटुग्रन्थि–न० शुण्ठीमूल. पिप्पलीमूल । सोंठ की जड़. पिपली की जड़ ।

कटुच्छद–पु० तगर वृक्ष । तगर का पेंड़ ।

कटुतिक्त–पु० निरातिक्त. चिरायता ।

कटुतुम्बी–स्त्री० कटुअलाबू । करुइ लौकी तोरई ।

कटुत्रय } न० त्रिकुटा । सोंठ. पीपल.
कटुत्रिक } स्याह मिरच ।

कटुपत्रिका–स्त्री० कण्टकारी । कंडियारी बूटी । गुखुरु ।

कटुपर्णी–स्त्री० चुक्र । चोक चूक ।

कटुभद्र–न० शुंठी. आर्द्रक।शोंठि.आदरक

कटुम्भरा–स्त्री० कट्वी । कुटकी बूटी ।

कटुरव–पु० भेक । मेंडक ।

कटुरोहिणी–स्त्री० कट्वी । कुटकी बूटी।

कटुवार्ताकी–स्त्री० श्वेतकण्टकारी । सुपेद कण्डियारी । संपेवन भांटा ।

कटुशाकन्न–न० सार्षपशाक, सरसोंकासाग

कट्वङ्ग–पु० श्योनाक वृक्ष । सोनापाढ़ा का पेड़ ।

कट्वर–न० तक्र. दधिसर । व्यञ्जन । छाछ, चटनी ।

कट्वी–स्त्री० कटुम्भरा । कुटकी ।

कठाहक–पु० दात्यूहपक्षी । पपीहा ।

कठिका–स्त्री० सुरसा । तुलसी का पौधा. चाकमट्टी ।

कठिञ्जर–पु० सुरसा. पलाशवृक्ष. बब्बुंरा। तुलसी. ढांख का पेंड़. छीवलु. न्याजवो, ववई ।

कठिनी–स्त्री० खटिकामृत्तिका । चाकमिट्टी, छुही, खरीमट्टी ।

कठिल्ल–पु० कारवेल्ल। करेला (न) करेली ।

कठिल्लक–पु० कारवेल्ल. पुनर्नवा. सुरसा। करेला. गदापुरैना. तुलसी ।

कडक–न० सामुद्रलवण । सामुंदरीनिकम

कडङ्ग–पु० सुराविशेष । एक किशम की शराब ।

कडम्बी–स्त्री० कलम्बीशाक । कलौंजी का साग ।

कण–पु० शस्य के क्षुद्र २ अंश, अतिसूक्ष्म, (स्त्री) कणिका, वनजीरक । कनियां. ज्यादह वारीक. वन का जीरा ।

कणजीर–पु० श्वेतजीरक । सुपेद जीरा ।

कणभक्ष(क)–पु० भारिटपक्षी । एक किसम की चिड़िया ।

कणा–स्त्री० पिप्पली. श्वेतजीरक । पीपली. सुपेद जीरा ।

कणाटीन–पु० खञ्जनपक्षी । ममोला. चिड़िया. खड़रैचा ।

कणावि–पु० कणा । मयदा ।

कणेर–पु० कर्णिकारवृक्ष । कनेर का दरखत. नैनिया का दरखत ।

कण्टक–पु० खदिरवृक्ष । खैर का पेड़ ।

कण्टकभुज्–पु० उष्ट्र । ऊंट ।

कण्टकाढव–पु०कुब्जकवृक्ष । कूजा का पेंड़

कण्डकाढ्या–स्त्री० शाल्मलीवृक्ष. कुब्जकवृक्ष । सेमर का पेंड़, कूजा का पेंड़।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कण्टकारिका } स्त्री—क्षुद्रा। कंडियारी.
कण्टकारी } भटकटैया, रोंगिणी।

कण्टकाशन—पु० उष्ट्र। ऊंट।

कण्टकिन्—पु० मत्स्यविशेष, खदिरवृक्ष, मदनवृक्ष, गोक्षुर औषध, बदरीवृक्ष, वंश। खास मच्छली, खैर का दरख्त, बेरिका पेंड़, मयनफल का पेंड़, गोखुरु का पौधा. कठहर दरखत, वांश।

कण्टकिनी—स्त्री० क्षुद्रा। भटकटैया, कंडियारी।

कण्टकिफल—न० पनसफल। कटहर का फल

कण्टकिल—न० लघुत्रपुस। वालमखीरा

कण्टकी—स्त्री० स्वादुकण्टक। कण्टाईवृक्ष

कण्टकीद्रुम—पु० खदिरवृक्ष। खैराका पेंड

कण्टकुरण्ट—पु० झिण्टी। एक किसम का पौधा।

कण्टतनु—स्त्री० बृहती। बड़ी भटकटैया।

कण्टदला—स्त्री० केतकी। कवड़ाका पौधा

कण्टपत्र—पु० विकङ्कतवृक्ष। एक किसम का पौधा।

कण्टपत्रफला—स्त्री० ब्रह्मदण्डीवृक्ष।

कण्टफला—पु० क्षुद्रगोक्षुर, पनस, धूस्तर, करञ्जलता, एरण्ड। छोटी गोखुरु बूटी, कटहर, धत्तूरह, करंजुआ, रेंड।

कण्टालु—पु० वंश, बृहती, वार्ताकी, वर्बुर। वांस, बड़ी भटकटैया, बेंगन, कीकर बब्बूरु।

कण्टाह्वय—न० पद्मकन्द। भिस, भिसेंड़

कण्टिन्—पु० कलाय. अपामार्ग, खदिर, गोक्षुर। मटर. अपुठकांटा, लटजीरा. खैरा, कटहर।

कण्ठ—पु० गलदेश, कण्ठध्वनि। गला, गले की आवाज़।

कण्ठनीडक—पु० चिल्हपक्षी। चील।

कण्ठाल—पु० शूरण, युद्ध, नौका, खनित्र, उष्ट्र. अरित्र. (स्त्री) (ला) जलगोणिका। सूरन. जंग. नाव. कुदाल. ऊंट. चप्पा. गाय या बैल के गले के नीचे जो मांस लटकता है।

कण्ठालिका—स्त्री० बृहती। भटकटैया।

कण्ठीरव—पु० सिंह. मत्तगज. कपोत। शेर. मस्तहाथी. कबूतर।

कण्डरा—स्त्री० महास्नायु। बड़ी रग।

कण्डु (ण्डू)—स्त्री० कंडूयन। खुरकन. (स्त्री) कपिकच्छुलता। आलकुशी. किमाच. खजोहरा।

कण्डुरा—स्त्री० कपिकच्छुलता। आलकुशी. किमाच. खजौहरा।

कण्डूर—पु० कारवेल्ललता। करेलेकी बेल।

कत—पु० कतकवृक्ष। निर्मली का पेड़।

कतक—न० पयःप्रसादि। निर्मली का पेड़। विड. विरिआं. सोचरनिमक।

कतकफल—न० पयःप्रसादिका फल। निर्मली फल।

कत्तृण—न० पृश्नि. कुम्भिका। सुगंधितृण

कत्तोय—न० मद्य। शराब।

कदम्ब—पु० नीपका वृक्ष. कदमका पेड़

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कदम्बक—पु० रक्तसर्षप । लालसरसों. राई
कदम्बपुष्पिका—स्त्री० तपस्विना । मुरडी बूटी ।
कदर—पु० श्वेतखदिर. पापरीखैरा. सुपेदखैर ।
कदल—पु० कदलीवृक्ष वा फल (स्त्री) (ला) मृगी विशेष. पृष्णीलता. शाल्मलीवृक्ष. डिम्बिका । केले का पेड़ वा केला. हरणी. दरयाई पौधा. सिंबल का पेड. बुलबुला ।
कदलक—पु० कदलीवृक्ष. केले का दरखत.
कदली—स्त्री० कदलीवृक्ष. केलेकादरखत
कदलीकन्द—पु० केला की कन्द । केला की जर ।
कदल्याकुसुम—न० कदली का पुष्प । केले का फूल ।
कदाख्य—न० कुष्ठवृक्ष । कुष्ठ. कूट ।
कनक—न० स्वर्ण (पु) पलाशादिवृक्ष । सोना. ढाख आदि सब वृक्ष जिन के सुरख फूल होते हैं ।
कनकक्षार—पु० टङ्कण । सोहागा ।
कनकपल—पु० पलपरिमाण । सोलह मासे
कनकप्रभा—स्त्री० सुवर्णकेतकी । केवड़ा का फूल ।
कनकाह्व—पु० नागकेशरपुष्प । नागकेशर का फूल ।
कनकाह्वय—पु० धूस्तरवृक्षः नागकेशरवृक्ष । धत्तूरे का पौधा. नागकेशर का पौधा ।

कनिष्ठ (ष्ठा)—स्त्री० चिटिली उंगली (पु) छोटा भाई ।
कनिष्ठक—न० शूकतृण सीकुर घास ।
कनीचि—स्त्री० गुञ्जा. शकट. पुष्पयुक्तलता । फूलदार बेल. लालरत्ती. छकड़ा
कनीनिका—स्त्री० चक्षुःतारा, कनिष्ठाङ्गुली कनिष्ठा भगिनी । आंख की पुतली. चिटली अङ्गुली छोटी बहन ।
कनीनी—स्त्री० कनिष्ठाङ्गुली । छगुनिआ अंगुली या चिटली अंगुली ।
कनीयस्—पु०ताम्र । तामा ।
कन्तु—पु० कामदेव (न) हृदय (त्रि) सुखी।
कन्थारि—स्त्री० वृक्षविशेष ।
कन्द—न० शूरण. शस्यमूल. गृञ्जन (पु) मेघ. योनिरोगविशेष । सूरन. नवा तात की जड़ । गाजर. बादल. एक किस्म की कुसकी अर्थात् योनि की बीमारी ।
कन्दर—पु० अंकुश (स्त्री) पर्वतकन्दरा (न) आर्द्रक । आंकुस. पहाड़ की गार. अदरक ।
कन्दर्पकूप—पु० स्त्रीचिह्न । कुस. भग ।
कन्दर्पमूषल—पु० पुरुषचिन्ह । लिङ्ग. केर
कन्दराल—पु० गजदण्डसहोरा । पीपलभेद
कन्दल—न० गण्डदेश. कपाल. कलध्वनि. उपराग. नूतन. अङ्कुर. अपवाद. कन्दलीपुष्प. (पु) स्वर्ण युद्ध. शूरण । गाल. कनपटी. खोपरी. ग्रहण. शगूफह. मलामत. झाड़ी का फूल. सोना. लड़ाई. सूरन ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कन्दलता–स्त्री० सालाकन्द । एक किस्म का पौधा ।

कन्दली–स्त्री० मृगीविशेष. गुल्मविशेष. पताका. पद्मबीज । हिरण की किस्म झाड़ी झण्डा । कमलडोडा. कमलगट्टा.

कन्दाढ्य–पु० धरणीकन्द । जिमीकन्द. सूरण ।

कन्दालु–पु० कासालु. धरणीकन्द. त्रिपर्णिका. रतालु. जिमीकन्द ।

कन्दिरी–स्त्री. लज्जालुलता । लाजवन्ती बेल । शर्मिंदी बूटी ।

कन्दु–पु० लोहमयपाकपात्र । तवा ।

कन्दोत–पु० कुमुद । सुपेदकमल. क्षाका बेल ।

कन्धर–पु० ग्रीवा. मेघ. स्कन्ध. मारिषवृक्ष । गर्दन. वादल. कन्धा. एक किस्म का पौधा [मरसा]

कन्धि–स्त्री० ग्रीवा (पु) समुद्र । गर्द्दन समुन्दर ।

कन्या–स्त्री० दशमवर्षीया कुमारी. घृतकुमारी. स्थूलैला. वाराहीकन्द. वन्ध्या. वन्ध्याकर्कोट. कीलता. षष्ठराशि. दुर्गा । दश वर्ष की क्वारी लड़की. घिकुआरि. बड़ी इलायची. आकाशवेल. वाराहीकन्द. बांझ. बांझखेखसा. वाभूषसा. छठीराशि. देवी. ।

कपर्द्द–पु० शिवजटा । वराटिका । शिव जी की जटा. कौड़ी ।

कपाल–पु० न० करोटि. कुष्टरोग. मृत्पात्राद्धं. जनता. जातिविशेष । खोपरी. कोढ़रोग. । भीड़. मट्टी का वर्त्तन आधा अर्थात् खपरा. एक खाश जात ।

कपालिका–स्त्री० दान्तों की जड़ टूटजावे खीलोंसमेत ।

कपि–पु० शिला (स) बानर. विष्णु. रक्तचन्दन. करञ्ज. धात्रिका. सिह्लक । वन्दर. परमेश्वर का नाम । लाल चन्दन. सुरखचन्दन. करञ्जुआ. आमला. लोहबान धूप. शिलाजीत ।

कपिकच्छू (रा) स्त्री—आत्मगुप्ता । आलकुशी. किमाच की बेलि ।

कपिकन्दुक–न० शिरोस्थि । सिरकी हड्डी

कपिकोलि–पु० कोलि विशेष । झलबेरिया का पौधा. झलबेर ।

कपिज–पु० तुरुष्क । शिलारस लोहबान

कपिञ्जल–पु० गौर तित्तिरि पक्षी. चातक पक्षी । सुपेद तीतर. पपीहा ।

कपितैल–न० तुरुष्कक नामक गंधद्रव्य धूप । शिलारस, लोहबान ।

कपित्थ–पु० न० दधित्थवृक्ष । कैथा का पेड़ ।

कपित्थपर्णी–स्त्री वृक्षविशेष । कैथा के माफिक जिस्के पत्ते हैं ।

कपित्थपत्र–न० हरिबालुक । एलाबालुक यह कंकोल अर्थात् शीतल चीनी के सदृश कुष्टके सदृश गंध वाला होता है ।

कपिनामन्–पु० सिह्लक, तुरुष्क । धूप.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

लोहवान, शिलारस ।

कपिपिप्पली–स्त्री० रक्त अपामार्ग । लाल लटजीरा, शुरख चिरचिरा ।

कपिप्रिय–पु० कपित्थ । कैथा, कैथि का पेंड़ ।

कपिवल्ली–स्त्री० गजपिप्पली । गज पीपरि ।

कपिरुत–पु० पारीष । गजदण्ड सिहोरा का वृक्ष ।

कपिल–पु० सिल्लक वृक्ष । लोहवान, धूप, सिल्ल का पेंड़ ।

कपिलच्छाया–स्त्री० मृगनाभि कस्तूरी, मुशक ।

कपिलद्युति–पु० सूर्य्य । आफताब ।

कपिल्लक–पु० रक्तपुनर्नवा । लाल गंदा-पुरैना ।

कपिला–स्त्री० राजपुत्री शिशिपावृक्ष, आरकूट रेणुका, यह मिरच स्याह के माफिक होती है । धातु, शीशम का पेंड़, पीतरि धातु, कांचीपीतरि धातु ।

कपिल्लिका–स्त्री० गजपिप्पली । एक किसम का पौधा, गज पीपरि ।

कपिलोमन्–स्त्री० रेणुका । खुशबूदार चीज, शर्द्दचीनी ।

कपिलोह–न० पित्तल । पीतल ।

कपिवदान्य–पु० आम्रातकवृक्ष । रीरी आम का पेंड़, ।

कपिवल्ली–स्त्री० गजपिप्पली, कपित्थ । गज पीपरि, कैथा का पेड ।

कपिश–पु० रक्तपीत मिश्रित द्रव्य. सिल्लक नाम गंधद्रव्य । भूरारंग. शिलाजीत. लोहवान ।

कपिशी–स्त्री० माधवीलता. मदिरा । पुष्प का पेड़. शराब ।

कपिशीका–स्त्री० मद्य । शराब ।

कपीज्य–पु० क्षीरिकावृक्ष । खिरनी का पेंड़ ।

कपीतन–पु० आम्रातकवृक्ष.गर्द्दभांडवृक्ष. शिरीषवृक्ष. अश्वत्थवृक्ष. गुवाकुवृक्ष विल्ववृक्ष । आम्र आम. गजदण्ड सहोरा. सिरसा. पिप्पल. सुपारी. वेल का पेंड़ ।

कपीष्ट–पु० कपित्थ. राजादनीवृक्ष । कैथा. खिरनी. चिरौंजी का पेंड़ ।

कपोत–पु० पारावत. पक्षिमात्र स्वर्जिका । कबूतर. चिरिया. सज्जी खार ।

कपोतक–न० सौवीराञ्जन । सुरमा ।

कपोतचरणा–स्त्री० विद्रुमलता । नलिका उत्तर में प्रसिद्ध है कहीं २ पवांरी भी कहते हैं यह सुगंध वाला के माफिक होती है ।

कपोतपर्णी–स्त्री० सूक्ष्मैला । छोटी इलायची ।

कपोतवङ्का–स्त्री० ब्राह्मीऔषध । बरंभी बूटी, ब्रह्मी ।

कपोतांघ्रि–स्त्री० कपोतचरणा । नलिका या पवारी गंधद्रव्य ।

कपोतारि–पु० श्येनपक्षी । बाज जुर्रा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कपील–पु० गरुड़. तिंदुकवृक्ष । गाल. कुपीलु या मकर तेंदुआ, इसी के फल को कुचिला कहते हैं ।

कपोली–स्त्री० जान्वस्थि । घुटने के ऊपर की तखनी ।

कफ–पु० श्लेष्मा शरीरस्थधातु विशेष बलगम ।

कफकूर्चिका–स्त्री० लाला, । थूक ।

कफज्वरः–पु० गौरव. शीत. उत्क्लेश. रोमहर्ष. अतिनिद्रा. स्रोतोरोधः. रुगल्पत्वं. मधुरास्यता. नातिउष्णगात्रता. छर्दि. अंगसाद. अग्निमांद्य. अरुचि. कासः ।

कफणि–स्त्री० भुजमध्यग्रंथि । कोहनी ।

कफपित्तज्वरः–पु० शीत. दाहारुचि. स्तंभ. स्वेद. मोह. मद. भ्रम. कासांगसाद. हृल्लास ।

कफान्तक–पु० बबूर वृक्ष (त्रि) कफनाशक। कीकर अर्थात् बबुर का पेंड़, बलगम दूर करने वाला ।

कफारि–पु० शुंठी । सोंठि ।

कफीतक–न० दारुहरिद्रा। दारु हल्दी।

कफेलु–त्रि० कफयुक्त । बलगमी ।

कबन्ध–पु० उदर. अपमूर्द्धकलेवर (न) जल । पेट. धड़. पानी ।

कबरी–स्त्री० पृथ्वीका । हिङ्गुपत्री. मगरैल ।

कबिका–स्त्री० मत्स्यविशेष । कबई मछली ।

कबित्थ–पु० स्वनामख्यातवृक्ष । कैथा ।

कम्–अव्य० जल. मस्तक. सुख. मङ्गल. पादपूरण. निन्दा । पानी. शिर. खुशी. नेकी. हजो ।

कमठ–न० भाण्डविशेष (पु) कच्छप. वंश. शल्लकी । (स्त्री) (ठी) कच्छपी । मुनिलोकों का बर्तन. कच्छुआ. वांस. स्याही पशु ।

कमण्डल–पु० गजदण्डसहोरा । पीपल का भेद ।

कमन–त्रि० लम्पट. सुन्दर. अभिरूप. (पु) काम. अशोकवृक्ष. । स्नेहवती. खूबसूरत. । चाहने के लायक. मुहब्बत. अशोग का पेंड़ ।

कमन्ध–न० जल । पानी ।

कमल–न० पद्म. ताम्र. औषध. क्लोम. (पु) मृगविशेष. सारसपक्षी. । कमल फूल. तामा. दवाई. हरिण. सारस ।

कमलिनी–स्त्री० पद्मिनी. कमल समूह ।

कमलोत्तर–न० कुसुम्भपुष्प । कुसुम्भ का फूल ।

कम्पन–न० कम्प. (पु) शिशिरऋतु । काम्पना. सर्द्दमौसिम ।

कम्पलक्ष्मन् } –पु० वायु । हवा ।
कम्पाक } पु० ” ”

कम्पिल (ल्ल)–पु०रोचना । चूक का पौधा ।

कम्पिल्लक–पु० करमचा वृक्ष। कबीला ।

कम्बल–पु० मेषादि लोमरचित वस्त्र.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मृगविशेष. नागविशेष. कृमि. उत्तरीय वस्त्र. शाखा. (न) जल । ऊनी कपड़ा. एक किसम का हरिण. सांप. छोटा कीड़ा. दुपट्टा. गवगव..पानी ।

कम्बु–पु० न० शङ्ख. शम्बुक (पु०) ग्रीवा. गलदेश. हस्ती. वलय. अङ्गुलीय. कर्बुरवर्ण । (त्रि) चित्रित. । संख. घोंघा. कड़ा. अंगूठी. चितकबरा. गर्दन. हाथी. नकश किया हुआ ।

कम्बुका–स्त्री० अश्वगंधा वृक्ष । असगंध ।

कम्बोज–पु० शङ्खविशेष. देशविशेष । एक किसम का शंख. हिन्दुस्तान के उत्तर में एक मुल्क ।

कम्भारी–स्त्री० गाम्भारीवृक्ष । गम्भार खम्भारी ।

कम्भु–न० उशीर । खस्स ।

कयस्या–स्त्री० काकोली नामकी दवाई ।

करक–पु० दाडिम्बवृक्ष. राजस्व. पक्षीविशेष. लट्वाकरञ्ज. पलाश. कोविदार, बकुल. करवीर. आदि वृक्ष (न) कमण्डलु (स्त्री) वर्षोपलशिला । अनार का दरखत. महसूल. एक खास पक्षी. छोटा करञ्ज. ढाख. सुपेद या सुर्ख कचनार. मौलसिरी. कनेर. वगैरह का पेंड़. लोटा. ओला ।

करकण्टक–पु० नख । नाखून ।

करकाजल–न० हिम । बरफ ।

करकाम्भस्–पु० नारिकेल । नारियल ।

करच्छद–पु० शाखोटवृक्ष (स्त्री) (दा) सिन्दूरपुष्पी । सहोरे का पेड़. सिंदुरिआ वा सदासोहागिल फूलका पौधा।

करज–पु० नख. करञ्जवृक्ष. । नाखून. करञ्जुआ ।

करञ्ज (क)–पु०करञ्जवृक्ष. भृङ्गराजवृक्ष । करञ्जुआ पौधा. घमिरा का पौधा ।

करञ्जी–स्त्री हस्ति वारुणी । अरारि का वृक्ष. कंजी का वृक्ष ।

करट–पु० कुसुम्भवृक्ष । कुसुम्भे का पौधा पक्षीविशेष । सारस ।

करण्ड–पु० हृदयरोग कलेजे की बीमारी

करण्डिन्–पु० मत्स्य । मच्छली ।

करतल–पु० हस्ततल । हाथ की तली ।

करपत्रवत्–पु० तालवृक्ष । ताड़ का दरखत

करपर्ण–पु० भिण्डातक । रक्तएरण्ड । लालरंडा का पेंड़ ।

करपल्लव–पु० अङ्गुली । अंगुरी ।

करबाल–पु० नख. खड्ग । नाखून. शमशेर

करभ–पु० मणिबन्ध. कोहनी से छिंगली ऊङ्गली तक हाथ का वहराला हिस्सा

करभञ्जिका–स्त्री० करञ्जी का वृक्ष. अरारि का पेंड़. कंजी का पेंड़ ।

करमट्ट–पु० गुवाकवृक्ष । सुपारी का दरखत ।

करमर्द्द } पु० सुषेण । करंचा दरखत,
करमर्द्दन } न० करौंदा का पेंड़ ।

करम्ब–पु० करम्भ । दही में मिले हुये सत्तु

करम्भ(क)–पु० दधिमिश्रितसक्तू । दही मिले हुये सत्तू ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

करुरुह–पु० नख । नाखून ।

करवीर–पु० अश्वमारक । सुपेद फूल का कनयर

करशूक–पु० नख । नाखून ।

करहाट पु० पद्ममूल. मदनवृक्ष. महापिण्डीवृक्ष. देश विशेष । भिस. मयनफल. खास मुल्क ।

करिक–पु० विटखदिर । रिंथा का पेड़ ।

करिकणा––स्त्री० गजपिप्पली । जगपीपरि ।

करिका–स्त्री० नखक्षत । नखूनों का घाव ।

करिकेशर–न० नागकशर । नागकेशर

करीर–पु० न० वंशाङ्कुर. क्रकर । बांस की फूट करीर का दरखत ।

करीष–पु० शुष्क गोमय । गोइटा. वेनुआ कण्डे. सूखागोबर ।

करुणमल्ली–स्त्री० नवमल्ली. मालती । चम्बेली. इश्कपेचह ।

करेट–पु० नख । नाखून ।

करेन्दुक–पु० भूतृण । एक किस्म की घास

करेवर–पु० तुरुष्क । शिलारस.लोहबान ।

करोट } पु० न०
करोटि } पु० शिरोस्थि । खोपड़ी ।
करोटी } स्त्री०

कर्कट–पु० कुलीर. कर्कराशि. वृक्षविशेष. तुम्बी. पद्मकन्द. पक्षीविशेष । केंकड़ा. चौथीराशि. एक किसम का पेड़. तूंबी. भिस ।

कर्कटश्टङ्गिका } स्त्री० कुलीरविषाणिका
कर्कटश्टङ्गी } ककड़ाशिंही का पौधा ।

कर्कटाख्या–स्त्री० „ „

कर्कटि (टी) स्त्री० शाल्मलीवृक्ष. सर्प. कलशी. देवदाली लता. कर्कटीश्टङ्गी वृक्ष. घोटिकावृक्ष. एरवारुलता । गोरक्षकर्कटी । सिंवल का पेड़. सांप. गगरी. सोनैया वा बन्दाल. ककड़ी. गुरभी ।

कर्कटि–(नी) स्त्री० दारुहरिद्रा । दारुहल्दी ।

कर्कन्धू–स्त्री–पु० क्षुद्रबदरि । उनाब, बेर ।

कर्कर–पु० दर्प्पण । आईना ।

कर्कराङ्ग–पु० कालकंठपक्षी । नीलकण्ठ चिड़िया ।

कर्करटु–पु० कटाक्ष । तिरछी निगाह ।

कर्करटुक–पु० कर्करेटुपक्षी । केकड़ा ।

कर्कराल–पु० न० चूर्णकुन्तल । जुलफ ।

कर्कश–पु० काम्पिल्लवृक्ष. इक्षु. काशमर्द्द. खड्ग (त्रि) कठिन. निर्दय. अतिशय. साहसिक. कृपण । खंडारोचनी या कबीला. पौंडा. रूसा. शमशेर. शखत. बेरहम. ज्यादह. दिलेर. कन्जूस ।

कर्कशद–स्त्री० पटोललता । परवर की वेल ।

कर्कशिका–स्त्री० वनकोलि । जंगली बेर उन्नाब ।

कर्कस–पु० करमर्द्द । करौंदी, करौदी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कर्कसार—न० करम्भक, दधिसक्तु । दही से मिला हुआ आटा या गोश्त या सत्तू ।

कर्कारु—पु० कुष्मांड । पेठा, कुम्हड़ा ।

कर्कारुक—पु० कलिङ्गवृक्ष, । कुरैया का पेड़. करञ्ज का पौधा ।

कर्कोटक—पु० बिल्ववृक्ष. कद्रुपुत्र. इक्षुः तुम्बीलता. । बेल का दरख़्त. ईख. तुम्बी की बेल, ।

कर्कोटी—स्त्री० पीतपुष्पा । खेखसा ।

कर्चूर—पु० वेधमुख्य (न) स्वर्ण. हरिताल कचूर. सोनह, हड़ताल ।

कर्ण—पु० श्रवणेंद्रिय. सुवर्णालिवृक्ष । कान, ।

कर्णकण्डू—पु० कर्णरोग । कान की बीमारी

कर्णकोटि—स्त्री० कीटविशेष । कनखजूरा

कर्णक्ष्वेड़—पु० कर्णरोगविशेष । कान की बीमारी, जिस से कांन से शां २ होती है

कर्णगूथ—न० कर्णमल । कान की मैल ।

कर्णजलूका—स्त्री० शतपदी । कनखजूरह।

कर्णपाली—स्त्री० कर्णभूषण । बाली ।

कर्णफल—पु० मत्स्यविशेष । एक किस्म की मच्छली ।

कर्णवर्जित—त्रि० बधिर (पु) सर्प्प. बहरा।

कर्णशष्कुली—स्त्री० कर्णगोलक । कान में का सुराख जो पतली झिल्ली से मढ़ा हुआ होता है जिसपर हवा की टक्कर से आवाज सुनाई देती है ।

कर्णाट—पु० देशविशेष (स्त्री) रागिनी-विशेष. हंसपदीनामक वृक्षविशेष । करेंबूबेलि ।

कर्णारि—पु० अर्जुन. नदीसर्जवृक्ष । राल का पेड़ ।

कर्णि—पु० शरविशेष. कण्टकारि का वृक्ष। तीर. कंढियारी या भटकटैया ।

कर्णिका—स्त्री० कर्णभूषण. पद्मबीजकोष करमध्याङ्गुली. अजशृङ्गीवृक्ष. शत-पत्री । कान का ज़ेवर. कमलगट्टा. मझली अंगुली. मेढ़ासिंही बूटी. सेव-ती गुलाब का पुष्प. लेखनी या कलम

कर्णिकार—पु० पादपोत्पलपुष्पवृक्ष. आ-रग्वेतवृक्ष । कनयर का पुष्प. नैनिया का पुष्प. अमलतास का वृक्ष ।

कर्तृण—न० रोहिष । हरद्वारीकुश. सों-धिया. ।

कर्द—पु० कर्दम । कीचड़ ।

कर्दट—पु० पद्मकेशर. पङ्क. पङ्कजाल । कमल की तिरी. कीचड़. पानी की वैदाइस ।

कर्दम—पु० पङ्क(न) मांस । कीचड़, गोश्त।

कर्दमक—पु० धान्यविशेष । हेमन्तऋतु में होने वाला धानविशेष ।

कर्प्पट } पु०
कर्प्पटि(का) } स्त्री० चीर । चीथड़ा ।

कर्प्पर—पु० कपाल, कटाह. शस्त्रविशेष. उदुम्बर । खोपरी. कड़ाही. हथियार विशेष. अंजीर का दरख़्त ।

कर्प्परांश—पु० शर्करा । रेता. कंकर ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कर्प्पराल–पु० कन्दराल. पर्वतज पीलू-
वृक्ष । आखरोट ।
कर्प्परी–स्त्री० अञ्जन । सुरमा ।
कर्प्पास–न० कर्पास–(स्त्री) (सी) कर्पास
का पौधा. । कपास । बंगा ।
कर्प्पासफल–न० कर्पासबीज । बिनौला ।
कर्पूर–पु०–न० सिताभ्र । काफूर ।
कर्पूरक–पु० कर्चूरक. कर्पूर. । कचूर.
काफूर ।
कर्पूरनालिक–स्त्री० कर्पूनालि । कपूर-
फेनी ।
कर्पूरमणि–पु० रत्नविशेष । जवाहर ।
कर्पूरा–स्त्री० कर्पूरहरिद्रा । कपूर हलदी ।
कर्पूराश्मा–स्त्री० कपुर्नीआ । कपनिया
उपरत्न ।
कर्फर–पु० दर्प्पण । शीशा ।
कर्बुदार–पु० कोविदारवृक्ष । कचनारवृक्ष
कर्बुर–पु० स्वर्ण, जल, धत्तूरवृक्ष । सोना.
पानी. धत्तूरा ।
कर्बूर–न० स्वर्ण. हरिताल. धत्तूरवृक्ष,
जल । सोना. हड़ताल. धत्तूरा. पानी ।
कर्म्ममूल–न० कुशतृण । कुशा घास ।
कर्मर्द्द–पु० सुषेणवृक्ष । करौंदा का पेड़ ।
कर्मर्द्दिका–स्त्री० लघुकृष्णापाकफला ।
करौंदी का पेड़ ।
कर्म्मरङ्ग–न० वृक्षविशेषफल । कमरखफल ।
कर्म्मरी–स्त्री० वंशरोचना । तवाशीर.
वंसलोचन ।
कर्म्मार–पु० कर्म्मकार. वांस । लोहार.
बढ़ई. बांस ।
कर्व्वर–पु० व्याघ्र (स्त्री) शिवा. हिङ्गु-
पत्री । चीता. गिदड़ी. सिआरि.
हींग का पौधा ।
कर्वूर–पु० शठी । कचूर ।
कर्व्वर्य–पु० न० कर्च्चूर । कचूर ।
कर्ष–पु० न० षोडशमाषपरिमाण । ९६
रत्ती भर सुश्रुत के मत में और ८०
रत्ती भर चरक के मत में होता है ।
कर्षफल–पु० विभीतक बहेड़ा. बहेरा ।
कर्षफला–स्त्री आमलकी । आंवली का
पेड़ ।
कल–पु० मधुरकुकुटध्वनि. सालवृक्ष
(त्रि) अजीर्ण (न) कोलीवृक्ष । मीठी
आवाज. साल का दरख़्त. बदहज़मी.
झरबेरिया ।
कलक–पु० शकुलमत्स्य । एक किस्म की
मच्छी ।
कलकण्ठ–पु० कोकिल. कोइल. कबूतर.
हंस ।
कलघोष–पु० कोकिल । कोइल ।
कलघण्टिका–स्त्री० कृष्णाशारिवा । क-
रिआ वांसा. काला दुधजरू ।
कलत्र–न० भार्य्या. नितम्ब. दुर्ग । अपनी
औरत. चूतड़. किला ।
कलधूत–न० रौप्य । चांदी ।
कलधौत–न० स्वर्ण. रौप्य. मधुध्वनि
सोना. चांदी. मीठी आवाज़ ।
कलन–पु० वेतसवृक्ष. (न) चिह्न. गर्भ

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मिश्रितशुक्रशोणित । बेत का पेड़. दाग़. जोड़वग़ैरह बनने के पहिले शिकम में बच्चे की जो शकल होती है

कलपत्रक–पु० मुनिपुत्र.पुष्पवृक्ष। दवना का पुष्प ।

कलबिङ्क–पु० चटक । गर्गवा पखेरू ।

कलभ–पु० धस्तूरवृक्ष । धतूरे का पेड़ ।

कलभवल्लभ–पु० पीलुवृक्ष. पीलू का पेड़ ।

कलम–पु० धान्यविशेष. लेखनी चौर । मुंजी. कलम. दुज़्द ।

कलम्ब–पु० शर. कदम्बवृक्ष. कलमी शाक। तीर. कदम का दरख़्त. कलौंजी का पौधा ।

कलम्बी–स्त्री० शतपर्वी शाक । कलमी का शाक. कलौंजी का शाग ।

कलम्बुट–न० हैयङ्गवीन । ताज़हमक्खन ताज़ी नेनू ।

कलम्बू–स्त्री० कलम्बीशाक। कलमीशाक

कलरव–पु० कोकिल. पारावत। कोइल. कबूतर ।

कलल–पु० न० जरायु। बच्चहदान.बच्चह.

कललज–पु० धूना । राल ।

कलविङ्क–(ङ्ग) पु० चटकपक्षी । गर्गवा चिड़िया ।

कलश–पु० न० घट । घड़ी (पु) द्रोणपरिमाण । ।।ऽ२।। वा १०२४ तोला ।

कलशी–स्त्री० पृष्टिपर्णी, घट । पिठवन औषध. घड़ा ।

कलाकुल–पु० विष । ज़हर ।

कलाङ्कुर–पु० सारस पक्षी ।

कलाचिका } स्त्री० प्रकोष्ठ । कोहनी से
कलाची } पौंचे तक हाथ ।

कलानिधि–पु० चन्द्र । चांद ।

कलानुनादिन्–पु० भ्रमर. चटक. चातक। भैंरा. गरगवा. पपीहा ।

कलापिन्–पु० कोकिल. मयूर. प्लक्षवृक्ष. कोइल. मोर. पिलखन या पकरिआ का पेड़ ।

कलापिनी–स्त्री० नागरमुस्था. रात्रि । नागरमोथा. शब ।

कलायशाक–न० केरावशाक । मटर का शाक. दुविआ का साग ।

कलामक–पु० कलमधान्य । एक किसम का धान जो शर्द मोसिम में पकता है।

कलालाप–पु० भ्रमर । भैंरा ।

कलाविक–पु० कुक्कुट । मुर्ग़ ।

कलिका–स्त्री० अस्फुटपुष्प । कली ।

कलिङ्ग–पु० इन्द्रयव. कुटजवृक्ष. शिरीषवृक्ष. पूतिकरञ्ज. बटवृक्ष. देशविशेष। इन्द्रजव. कुरैआ का पेड़. शिरीस का पेड़. करंजुऐ का पेड़. बड़ का पेड़. खाशमुलक ॥

कलिद्रुम } पु० विभीतक बहेरे का
कलियुगालय } पेड़

कलिहारी–स्त्री० लाङ्गली । करियारी ।

कलेवर–न० शरीर । जिसम ।

कल्क–पु०न० कर्णमल. किट्ट. पाप (त्रि) पापी. शठता । खूंट. मैल. सोत.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

गुनाह. गुनहगार. शरारत ।
कलकफल—पु० दाडिम्बवृक्ष । अनार का पेड़ ।
कलपक—पु० नापित. कचूर । हजाम. कचूर औषध ।
कल्पनी—स्त्री० कर्त्तनी । कैंची ।
कलमाष—पु० गन्धशाली । खुशबूदार चावल ।
कलमाषकण्ठ—पु० मयूर । मोर ।
कलप्या—स्त्री० मद्य. शुभात्मिका वाणी. हरीतकी । शराब. मुबारिखकुलाम. हरड़ ।
कुलहार—पु०न० कमलभेद । कमल की किस्म. कलहारफूल. सुपेद कंमल ।
कवच—पु० वर्म्म. नागरावाद्ययन्त्र. गर्द्दभाण्डवृक्ष. पर्पट (न) मन्त्रसमूह । संजोह. जङ्गी बाजह. गजदण्ड सिहोरे का पेड़. पित्तपापरा या दवनपापरा. एक पोथी ।
कवचनामक—पु० पर्पट । पित्तपापरा ।
कवचपत्र—न० भूर्जपत्र । भोजपत्ता ।
कवयी—स्त्री० मत्स्यविशेष । खासमच्छली ।
कवर—पु० न० अम्ल. लवण. केशपाश । खट्टा. निमक. जुलफ ।
कवरी—स्त्री० केशविन्यास. काकोली. हिङ्गुपत्री. बर्बरा । गुत्त. काकोली बूटी. हीङ्ग का पौधा. बबई ।
कवल—पु० ग्रास. मत्स्यविशेष । लुगमह. खाश मच्छली ।
कवालवक्र— न० वृक्षविशेष । एक खुशबूदार पौधा ।
कवार—न० पद्म । कमल फूल ।
कशेरु—न० पु० मेरुदंड । पीठ की हड्डी. कंगरोड़ ।
कषण—त्रि० अपक्व (न) घर्षण. कण्डूयन । कच्चा. कसौटी. खुजली ।
कषाकु—पु० सूर्य्य. अग्नि । आफताब. आतिश ।
कषाय—पु० न० रसविशेष । कसैलह ।
कषायकृत्—पु० रक्तलोध्र । सुरखलोध ।
कषाया—पु० यासक । जवासा ।
कषेरुका—स्त्री० पृष्ठास्थि । पीठ की हड्डी कंगरोड़ ।
कष—पु० कष्टिप्रस्तर । कसौटी ।
कसेरु पु० शूकरप्रियतृण. मूलविशेष. राजकसेरु. चिचोढ़ । खाशघास जिसको सुअर खाते हैं- बड़ा कसेरु. चिचोढ़ कसेरु ।
कस्तीर—न० रङ्ग । रांगा ।
कस्तूरिका—स्त्री० मृगनाभि । कस्तूरी ।
कस्तूरिकालता—स्त्री० मुशकदाना ।
कस्तूरी—स्त्री० मृगनाभि । मुशक. कस्तूरी
कह्लार—न० श्वेतोत्पल । सुपेद कमल ।
कह्व—पु० बकपक्षी । बगला ।
काक—पु० स्वनामख्यातपक्षी । कौआ
काककङ्गु—स्त्री० चीनक । चीना ।
काककर्कटी—स्त्री० क्षुद्रखजूर । छोटी खजूर. खज्जी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

काककुष्ट–न० कङ्कुष्ट । मुरदाशंख ।

काकघ्नी–स्त्री० महाकरञ्ज । घोराकरञ्ज ।

काकचिञ्चा, काकचिञ्चि –स्त्री० काकचिञ्ची. श्वेता तथा रक्ता गुञ्जा । सुपेद और लाल घुंघची वा रत्ती ।

काकच्छद, काकच्छदि –पु० खञ्जनपक्षी । ममोला. खढ़रैचा ।

काकजंघा –स्त्री० पारावतपदी । मसी. चिकचोहनी ।

काकण–न० कुष्टविशेष । एक किसम का कोढ़ जिस से स्याह और सुरख़ धब्बे पड़जाते हैं ।

काकतिक्ता–स्त्री० काकजंघा । मसी. चिकचोहनी ।

काकतिन्दुक–पु० काकपीलुक । कुचला ।

काकतुंडफला–स्त्री० काकनासा । कौआ ढोढी ।

काकनाशा–स्त्री० काकाङ्गी । कौआढोढी

काकपर्णी–स्त्री०मुद्गपर्णी । वनमूंग ।

काकपीलू–स्त्री० श्वेत और रक्त गुंजा । सुपेद और सुरख़ रत्ती ।

काकपुच्छ–न० ग्रंथिपर्ण. (पु) कोकिलपक्षी । गठिवन. कोइल ।

काकपुष्ट–पु० कोकिल । कोइल ।

काकपुष्प–न० गन्धपर्णवृक्ष । न्याज़बू. बवई ।

काकफल–पु० निम्बफल । नीम का पेड़ ।

काकबल्लरी–स्त्री० रक्त और श्वेतगुञ्जा. स्वर्णबेलि । सुरख वा सुपेद रत्ती. नागबेलि. अमरबेलि ।

काकमद्गु–पु० दात्यूहपक्षी । पनकुकड़ी ।

काकमाची–स्त्री०ध्वांक्षमाची । कवैआ का पौधा ।

काकमुद्गा–स्त्री० मुद्गपर्णी । वनमूंग ।

काकलीद्राक्षा–स्त्री० द्राक्षाविशेष । एक किसम का दाख । गोस्तनी मुनक्का ।

काका–स्त्री० काकलता. काकजंघावृक्ष. रक्तिकालता. मलयू वृक्ष. काकमाची वृक्ष । वनमूग. मसी. गुञ्जा. कठूमरि का पेड़. कवैआ का पौधा ।

काकाङ्गा, काकाङ्गी, काकाञ्ची –स्त्री० काकजंघावृक्ष । कौआ ढोढीबूटी. चिकचोंहनी ।

काकादनी, काकानन्ती –स्त्री० गुञ्जा । रत्ती. घुंघचि ।

काकायु–स्त्री० स्वर्णबेलि । रक्तफला ।

काकाह्वा–स्त्री० काकमाची । कवैआ का पौधा ।

काकिणी–स्त्री० वाराटिकादशकद्वय. मानदण्डविशेष. माषचतुर्थांश । २० कोडी. हाथभर. मासेका ४ था हिस्सा ।

काकु–स्त्री० जिह्वा । जबान ।

काकुद–न० तालु । तालू ।

काकुमुदिका–स्त्री० कटफल । कायफरा ।

काकेक्षु–पु० काशतृण. कोकिलाक्ष । सरकंडाघास. मूंज. तालमखाना का पौधा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

काकेन्दु—पु० कटुतिन्दुक। कुपीलु. मकरतेंदुआ. कुचिला।

काकेष्ट—पु० निम्बवृक्ष। नीम का पेंड़।

काकोदुम्बरिका—स्त्री० मलयू। कुटुम्भरी का पेंड़. कठूमारि का पेड़।

काकोदर—पु० सर्प। सांप।

काकोल—पु० काक. सर्प. शूकर. कुलाल. (न) विष (स्त्री) वायसी। सांप. सुअर. कुम्हार. ज़हर. कौवेकीमादीन. कौवा।

काकोली—स्त्री० वायसोली। काकोली

काक्षी—स्त्री० तुबरिका. सौराष्ट्रमृत्तिका। वबई. सोरठीमाटी।

काक्षीव (क)—पु० शोभाञ्जनवृक्ष। सहजने का पेड़।

काखोली—स्त्री० खराश्वा। अजमोदा।

काग—पु० काक। कौआ।

काच—पु० मणिविशेष। बालू और एक किसम की खार से उत्पन्न वस्तु. मोम. आंख की बीमारी।

काचमल—न० काचलवण। शोरा।

काचस्थाली—स्त्री० अलिवल्लभा। पाखरि।

काचहञ्जिका—स्त्री० लाक्षा। लाख. महाउरु।

काच्छी—स्त्री० सौराष्ट्रमृत्तिका. सोरठीमाटी।

काचिघ—पु० काञ्चन. मूषिक. छेमण्ड। सोना. चूहा. यतीम।

काञ्चन—पु० कञ्चनपुष्पवृक्षविशेष. चम्पक. कोविदारवृक्ष. उदुम्बर. धूस्तर (न) स्वर्ण. धन. पद्मकेशर. नागकेशर. पुष्प (त्रि) स्वर्णमय (स्त्री) हरिद्रा. गोरोचना। एक पेड़ जिसमें खुसबूदार पीले फूल होते हैं. चम्बा. सपेद तथा लाल फूल वाला कचनार का पेड़. गूलर. धतूरे का पौधा. सोना. ज़र. कमल की. तिरी. नागकेशर. सोने का. हल्दी।

काञ्चनक—पु० पक्षीविशेष. कोविदार वृक्ष. हैमतोत्पन्नधान्यविशेष. (न) हरिताल। एक खास परिन्दः. पहाड़ी आबनूस या कचनार. धान विशेष. हरताल।

काञ्चनकदली—स्त्री० सुवर्णकदली। सोना केला।

काञ्चनार } पु० कोविदार। कचनार
काञ्चनाल } का पेड़।

काञ्चनाह्वय—पु० नागकेशरवृक्ष। नागकेशर।

काञ्चनी—स्त्री० हरिद्रा। हलदी।

काञ्चनीया—स्त्री० गोरोचना। गोरोचन।

काञ्ची (ञ्ची)—स्त्री० चन्द्रहार. गुञ्जा. वृक्ष विशेष. चदनहार. रत्ती. एक खास पौधा।

काञ्जिक—न० काञ्जी। शिरका।

काञ्जिका—स्त्री० जीवन्तीलता। पलाशीलता।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

काञ्जिकाबटका-स्त्री० काञ्जी में भिगोये हुए बड़े।

काठ-पु० पाषाण । पत्थर. चटान ।

काण्ड-पु० न० गुच्छ. शर. अवकाश. प्रस्तर. नाल. जल (पु) आक्षोटवृक्ष । दरखत की मोटी टहनी. गुच्छह. तीर. । नौका. पत्थर. नल. पानी. अखरोट का वृक्ष. पीलू का पेड़ ।

काण्डकटुक-पु० कारवेल्ल। करेला ।

काण्डकाण्डक-न० काशतृण । काही घास. कास ।

काण्डतिक्ता-स्त्री० कैरात । चिरायता ।

काण्डरुहा-स्त्री० कट्वी । कुटकी ।

काण्डीर-पु० अपामार्गवृक्ष. अपुठकांटा. लटजीरा. जङ्गा ।

काण्डीरा-स्त्री० मञ्जिष्ठा । मजीठ ।

काण्डेक्षु-पु० कोकिलावृक्ष. काशतृण । तालमखाना. काही घास. कास ।

काण्डेर-पु० तन्दुलीयशाक । चवराई का शाग ।

काण्डेरी-स्त्री० नागदन्तीलता । नागदमनी ।

कातर } पु० मत्स्यविशेष । एक किस्म
कातल } की बड़ी मच्छली. पढ़िना ।

कादम्ब-पु० कदम्बवृक्ष. इक्षु, शर (न) कदम्बपुष्प । कदम का पेड़. गांडा. ऊख. तीर. कदम का फूल ।

कादम्बरी-स्त्री० मद्य. शारिका. कोकिला । शराब. मयनापक्षी. कोइलपक्षी

कादम्बा-स्त्री० करम्रा ।

कानक-न० जयपालबीज । जमालगोटा ।

काननारि-पु० शमीवृक्ष । जंडी का दरखत. छीकुरि का दरखत ।

कान्त-पु० लोह. बसन्तऋतु. कुङ्कुम । कान्तीसारलोहा. मौसिमवहार. केशरि

कान्तपक्षिन्-पु० मयूर । मोर ।

कान्तपाषाण-पु० अयस्कान्तमणि । चुम्बकपत्थर ।

कान्तलक-पु० तुणि । तुनि ।

कान्तलोह-न० कान्तीसारलोहा ।

कान्ता-स्त्री० गन्धप्रियङ्गु । मेहदी के बीज ।

कान्तार-न० पद्म. कमल फूल (पु०) इक्षु. कोविदार । कमल. केताराऊख. आबनूस. कचनार ।

कान्तारक-पु० इक्षुविशेष । केताराऊख ।

कान्तारी-स्त्री० इक्षुविशेष । मतिना ऊख ।

कान्तिदा-स्त्री० सोमराजी लता । वाकुची वेल ।

कान्दव-न० पक्वान्न । मिठाई ।

कापाल-पु० कर्कटी (न) कुष्टविशेष । ककड़ी. पेठा. एक किस्म की कोढ़ ।

कापिश-न० मद्यविशेष । खाश शराब ।

कापिशायन-न० मद्य शराब ।

कापिशायनी-स्त्री० द्राक्षा । दाख ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कापोत } —न० सौवीराञ्जन ।
कापोताञ्जन } सुरमा

काम—पु० चूत । आमका पेंड़ ।

कामजान—पु० कोकिल । कोइल ।

कामरूपिणी—स्त्री० अश्वगन्धावृक्ष । असगन्ध ।

कामाङ्ग—पु० आम्र । आम ।

कामाह्व—पु० राजाम्र । कलमी आम ।

कामिन्—पु० चक्रवाक्. पारावत. चटक. सारस. चन्द्र. ऋषभौषधि(त्रि)कामुक। चकवा. कबूतर. गरगवा. सारस. चांद. ऋषभ. लाजवन्ती. औरत. जिनाहकार

कामुक—त्रि० अशोकवृक्ष. माधवीलता. चटक पक्षी (पु) अभिलाषुक (स्त्री) विलासिनी. मैथुनेच्छावती । अशोक का पेंड़. माधवीबेल. गरगवा परिंद. ख्वाहिशमन्द या जिनाही. शहवतपरस्त औरत ।

काम्पिलक—पु० रक्तांग औषध । कम्बीला. कबीला ।

काम्पि (म्पी) लक } —स्त्री० " " ।
काम्पिल्य }

काम्बोज—पु० पुन्नागवृक्ष (स्त्री) खदिर. गुञ्जा । वाइविडंग का पेंड़. खैर. रत्ती ।

काम्बोजी—स्त्री० माषपर्णी । बनउर्दी ।

कायचिकित्सा—स्त्री० कायोऽत्राऽग्निरुच्यते तस्य चिकित्सा. अथवा कायो देहस्तस्यचिकित्सा कायचिकित्सा ।

कायस्था—स्त्री० हरीतकी. आमलकी. काकोली. हरड़. आवला. काकोली औषध।

कायस्थिका—स्त्री० काकोली ।

कारकजल—न० तुषार जल । बर्फ का पानी

कारणा—स्त्री० तीव्रयातना । बड़ीदर्द ।

कारमिहिका—स्त्री० कर्प्पूर । काफूर ।

कारव—पु० काक । कौवा ।

कारवी—स्त्री० पृथ्वीका. शतपुष्पा. चन्द्रिका. । कलौंजी. सौंफ. चन्द्रशूर ।

कारवेल्ल (क)—न० कठिल्ल । कारेला की बेल वा फल ।

कारवेल्ली—स्त्री० " " ।

कारस्करिटका—स्त्री० कर्ण—जलौका । कनकोल. खनखजूर. कनसेराई कीड़ा।

कारायिका—स्त्री० बलाका । गलगल. बगला ।

कारञ्ज—पु० घृत करञ्ज । घीरा करञ्ज ।

कारण्डव—पु० पक्षीविशेष । ढेकचिड़िया ।

कारुज—पु० करभ. फेण. बल्मीक. नागकेशर । हाथी का बच्चा. झाग. बल्मी. नागकेशर ।

कारुण्डी—स्त्री० जलौका । जोंक ।

कार्तस्वर—न० सुवर्ण. धूस्तर. काञ्चनवृक्ष। सोना. धत्तूरा. पहाड़ी आबनूस ।

कार्प्पट—पु० जतु. कार्प्पार्थी । लाख. उम्मेदवार ।

कार्प्पास—न० तूल (त्रि) कर्पासनिर्मित बस्त्रादि । रुई. सूती कपड़ा वगैरह ।

कार्प्पासी—स्त्री० तुण्डकेरी । कपास का पौधा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कार्म्मुक—न० धनुष (त्रि) कर्मदक्ष (पु) वंश. माधवीलता. महानिम्ब । कमान. काम में होशियार. वांस. माधवी फूल की बेल. बकाइनि का पेंड़. नीम का दरखत ।

कार्य्या—स्त्री० कारीवृक्ष ।

कार्श्य—पु० शालवृक्ष. लकुचवृक्ष (न) क्षीणता । साल का दरखत. बड़हल का वृक्ष. दुबलापन ।

कार्षापण—पु० न० कृषक (न) स्वर्ण. रौप्य. अर्थ । किसान. सोना. चांदी. द्रव्य. मझने ।

कार्षिक—पु० पलचतुर्थभाग । एकतोलाभर

कार्ष्ण—त्रि० कृष्णवर्ण (पु) कृष्णसार मृग । स्याह. स्याह हरिण ।

काल—न० लोह. कंकोल (पु) समय. धूप. कोकिल । लोहा. शीतलचीनी. कंकोल मिरच. वक्त. राल. कोइल ।

कालक—पु० जतुक. अलगर्द्द (न) कालशाक. यकृत् । लाख. पानी का सांप. नरीचा शाक. करेंबू. यकृत् कलेजे के नीचे पेट में दहिनी तर्फ होती है ।

कालकण्ठ—पु० मयूर. खञ्जन. दात्यूह. चटक. चातक । मोर. अबांबील. ममोला. गरगवा. पपीहा ।

कालकूट—पु० विषविशेष । खाशजहर ।

कालकेशी—स्त्री० नीली । नीलका पौधा ।

कालनिर्य्यास—पु० गूगुलु । गूगल ।

कालपर्ण—पु० तगरवृक्ष । तगर ।

कालपीलुक—पु० कुपीलुवृक्ष । कुचिला का पेंड़ ।

कालपुच्छ—पु० मृगविशेष । वाराखिंहा हरिण ।

कालपृष्ट—पु० मृगविशेष. कङ्कपक्षी । काला हरिण. गौ समूह में रहनेवाला पक्षी ।

कालमूल—पु० रक्तचित्रक वृक्ष । सुरख चीते का दरखत ।

कालमेषिका—स्त्री० श्यामात्रवृत्. मञ्जीष्ट वाकुची । स्याह निशोथ. मजीठ. बकुची ।

काललोह—न० कृष्णायस । स्याहलोहा ।

कालशाक—न० नालिक शाक । नरिचा का शाग करेंबू ।

कालशालि—पु० कृष्णशालि । खास काल धान. श्याढ़ ।

कालशे (से) य—न० कालासेय । मट्ठा. छाछ ।

कालसर्प्प—पु० कृष्णसर्प । करिआ सांप ।

कालसार—न० पीतचन्दन । कलम्बक ।

कालस्तिन्दुक—पु० कुपीलु । कोचिला का पेंड़ ।

कालस्थाली—स्त्री० पाटलिः । पाड़रि. पाखरि ।

कालस्कन्ध—पु० तमालवृक्ष. तिन्दुकवृक्ष. उदुम्बरवृक्ष. इरिमेदवृक्ष. खदिरवृक्ष. जीरकवृक्ष. । पत्रज का पेड़. तेंदुआ का पेड़. गूलर. रिंयां. खैर. जीरा का पेड़

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

काला—स्त्री० कृष्णत्रिवृता. मञ्जिष्ठा. नीलिनी. कृष्णजीरक. अश्वगन्धावृक्ष. पटोलीलता । तिरवी. स्याहनिशोथ. मजीठ. नील. कालाजीरा. असगन्ध. परवर ।

काला-गुरु—न० कृष्णागुरुचन्दन । स्याह सन्दल. काला अगर ।

कालाजाजी—स्त्री० कारवी । कलोंजी ।

कालानुसार्य्यक—न० पीतचन्दन. शैलेय । कदम्बक. छरीला. भूर ।

कालानुसार्य्य—न० नघुप । तगर ।

कालाय—पु० हरेणुकधान्य. दक्षपक्षी । मटर. केराव. मुरग़ ।

कालायस—न० लौह । लोहा ।

कालिक—पु० बकपक्षी. (न) कृष्णचन्दन । बगला. कालासन्दल ।

कालिका—स्त्री० कारवी. मेघमाला. नवमेघ. कुज्झटिका. रोमावली. हरीतकी. मसी. वृश्चिक. श्यामापक्षी. स्त्रीकाक । कलोंजी. बद्दलों का सिलसिलह. नयीघटा आंधी. रोमपङ्क्ति. हरड़. स्याही. बिच्छू. श्यामाचिड़िया. शराब ।

कालिङ्ग—पु० हस्ती. सर्प. लौहविशेष. इन्द्रयव. कुटजवृक्ष (न) कालिन्द । हाथी. सांप. खाशलोहा. इन्द्रजव. कुरैआ का पेड़. कलींदा तरबूज़ ।

कालिन्द—न० कृष्णबीज । तरबूज. कलींदा

काली—स्त्री० कालाञ्जनी । छोटीझाड़ी ।

कालीक—पु० क्रौंच । बगुला ।

कालीय, कालीयक—न० पीतचन्दन । कलम्बक

कालीयक, कालेयक—पु० दारुहरिद्रा । दारुहल्दी ।

काल्य—न० प्रत्यूष । सुबह ।

कावार—न० शैवाल (स्त्री०) तृणादिछत्र । एरा. सेवार. छालपात का छाता ।

कावूक—पु० कुक्कुट. चक्रवाक. पीतमस्तकपक्षी । मुरग़. चकवा. बईया पंखी बया पक्षी ।

कावेर—न० कुङ्कुम, (स्त्री०) हरिद्रा । केशरि. हल्दी ।

काश—(क) पु० काशाख्यतृण । काशघास ।

काशीश—न० काशीश । हीराकशीस ।

काशेक्षु—पु० काशतृण । कास ।

काश्मर्य्य—पु० खम्भारिवृक्ष । गम्भारी. खम्भारि का पेड़ ।

काश्मरी—स्त्री० गम्भारीलता । अञ्जीर. खम्भारिबेल ।

काश्मीर—न० पुष्करमूल. कुङ्कुम. टङ्क. देशविशेष । कुट्ठ. पुष्करमूल. केशरि. सुहागा. काश्मीर ।

काश्मीरी—स्त्री० मृगनाभि । कस्तूरी ।

काश्य—न० मद्य । शराब ।

काष्ठ—न० दारु । लकड़ी ।

काष्ठक—न० अगरु । सीसम ।

काष्ठदारु—पु० देवदारु । दियार ।

काष्ठपाटला—स्त्री० घण्टापाटलि । कठपाडरि ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

काष्ठालुक–न० काठिन्ययुक्त कन्दविशेष। कटारु ।

कास–पु० रोगविशेष. काशतृण. शोभाञ्जनवृक्ष। खांसी की बीमारी. काही घास. सुहांजने का दरख्त. सहिंजना।

कासकन्द–कन्दविशेष । कासालू ।

कासघ्नी–स्त्री० कण्टकारी । कण्डयारी बूटी. भटकटैया ।

कासनाशिनी–स्त्री० कर्कटशृङ्गी। काकड़ासिंही ।

कासभञ्जन–पु० पटोलवल्ली । परवर. पलवल ।

कासमर्द्द–न० अरिमर्द। कसौदी. आलूक

कासर–पु० महिष । भैंसा ।

कासार–पु० सरोवर। बड़ा भारी तालाव।

कासारि–पु० कासमर्द्द। आलूक. कसौंदी।

कासालु–पु० कोकान के आलु ।

काहल–पु० कुक्कुट. बिडाल. मुर्ग. बिल्ली

काहलापुष्प–पु० धूस्तर । धत्तूरा ।

काहली–स्त्री० तरुणी युवती । जवान औरत ।

किंशुक–पु० कङ्कपक्षी (न) पलाशपुष्प. । छीकल. माहीखोर परिंदः केसू का फूल टेसू के फूल ।

किंशुलक–पु० पलाशवृक्ष । पलास का दरख्त छीकल ।

किखि–पु० कपि (स्त्री०) शिवा । वन्दर शियारि. लोमड़ी ।

किङ्किणी–स्त्री० कङ्कतवृक्ष। एक किसम का खट्टे अंगूर का दरख्त । खैर का वृक्ष ।

किङ्किरात(ठ)–पु० अशोकवृक्ष. शुकपक्षी. कोकिल । बब्बूलवृक्ष । अशोक का पेड़. तोता. कोइल. बबूल का पेड़।

किञ्ज, किञ्जल, किञ्जलक } पु० पद्म केशरि। कमल की केसरि ।

किटि–पु० शूकर । सुअर ।

किटिभ–पु० केशकीट । जूंआ ढ़ील ।

किट्ट–न० धातुमल । गूह ।

किट्टाल–पु० लोहमल. विष्ठा। लोह की जंग. गूह ।

किट्टी–स्त्री० लौहकिट्ट। लोह की कीटी

किण–पु० शुष्कव्रण. मांसग्रन्थि. घुणकीट। फोड़े का दाग. मसा. घुनकीड़ा

किणही–स्त्री० अपामार्ग । लटजीरा. चिरचिरा ।

कितव–पु० निशाचरवृक्ष. धूस्तरवृक्ष। ग्रन्थिपर्ण का भेद भटेउर यह नेपाल देश में होता है। धत्तूरा।

किन्तनु–पु० अष्टपादी । मकड़ी ।

किन्थिन्–पु० अश्व । घोड़ा ।

किम्भरा–स्त्री० नलीनामक गन्धद्रव्य । पवारी ।

किर–पु० सूकर । सुअर ।

किरात, किरातक, किरातिक्त } पु० भूनिंब । चिरायता।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

किराततो–स्त्री० जटामांसी । जटामासी ।
किरीटि–न० हिन्तालफल । तरखजूर का दरखत ।
किर्म्मी–स्त्री० पलाशवृक्ष. गृह । पलास का पेड़. घर ।
किर्म्मीर–पु० नारङ्गवृक्ष । नारङ्गी का पेड़
किलाटक–पु० नष्टदुग्धस्य पक्कस्य पिण्डः प्रोक्तः किलाटकः । गिजिरी ।
किलिम–न० देवकाष्ठ । देवदारु. दियार
किश(स) ल (य) पु० न० पल्लव, नूतनपत्र । नयापत्ता ।
कीकस–पु० कृमिविशेष (न) अस्थि (त्रि) कर्कश । कीड़ा. हड्डी. सख़्त ।
कीचक–पु० बांसविशेष । बांस. नल ।
कीट–पु० कृमिजाति । कीड़ा ।
कीटमाता–स्त्री० हंसपदी । करैंबू ।
कीलाल–न० जल. मधु. रुधिर. (पु) अमृत (त्रि) पशु । पानी. सहद. खून. अमृत. हैवान ।
कीलालधि–पु० समुद्र । दरिया ।
कुकभ–पु० मद्य । शराब ।
कुकूटी–स्त्री० शाल्मलीवृक्ष । सिंबल का दरख़्त सेमरा ।
कुक्कुट–पु० शितिवारशाक. दक्षपक्षी । सिरीआरी का शाक. मुर्ग. सुरुआरि
कुक्कुटाण्डक–पु० वार्षिकधान्यविशेष । वर्षाती धान का नाम ।
कुक्कुर (त्त) –पु० श्वा (स्त्री) शुनी (न) वर्हिवर्ह । कुत्ता. कुत्ती. ग्रन्थिपर्णी. स्थौणेयपत्ने ।
कुक्ष–पु० कुक्षि । कोख ।
कुङ्कुम–न० कश्मीरदेशजा कुङ्कुम ।केसरि ज़ाफरान ।
कुच–पु० स्तन । पिस्तान. चूंची ।
कुचन्दन–न० बकम् । पतंग ।
कुचफल–पु० दाडिमवृक्ष । अनार का दरखत ।
कुचाग्र–न०स्तनाग्रभाग । चूंचीकी वोड़ी ।
कुचेली–स्त्री० वृक्षविशेष । एक पौधा ।
कुच्छ–न० कुमुद । सुपेदकमलफूल. कां-का वेलि ।
कुज–पु० वृक्षविशेष । कूजा ।
कुजवक–पु० भद्रतरणिवृक्ष । कूजा का पुष्प ।
कुञ्चन–न० नेत्ररोग । आंख की बीमारी ।
कुञ्चि–पु० अष्टमुष्टिपरिमाण । आठ मूठी भर ।
कुञ्चिका–स्त्री० कृष्णजीरक. मत्स्यविशेष. तालोद्घाटकयन्त्र. गुञ्जा. मेथिका । कालाजीरा. मच्छली. चाबी. रत्ती. बांस की टहनी. मेथी. बनमेथी ।
कुञ्चित–न० तगरपुष्प । तगर का फूल ।
कुञ्ची–स्त्री० उपकुञ्ची । सुपेदजीरा ।
कुञ्ज–पु० हस्तिदन्त. लतागृह । हाथी का दान्त. कुञ्ज ।
कुञ्जनिका–स्त्री० राजिका । राई ।
कुञ्जरा–स्त्री० धातकी । धौ के फूल ।
कुट–पु० शिलाकुवृक्ष । कूट ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कुटज–पु० गिरिमल्लिका । कुरैआ का पेंड़ इसी के फल इन्द्रयव कहलाते हैं ।

कुटजबीज–न० इन्द्रयव । इन्द्रजव ।

कुटन्नट–पु०(टा) स्त्री. श्योनाकवृक्ष (न) कैवर्तीमुस्तक. । सोना पाढ़ा का पेड़. कोसचीमोथा. गुड़तजी ।

कुटप–पु० कुडवपरिमाण(न) पद्म । ३२ तोलेभर ऽ।=॥ कमल का फूल

कुटिचर–पु० जलशूकर । सुसमार ।

कुटिल–न० कालानुसार्य्य । तगर ।

कुटुम्बिनी–स्त्री० क्षुद्रक्षुपविशेष।एकबूटी

कुट्टिम–पु० न० दाडिमवृक्ष । अनार का दरखत ।

कुठाटङ्क–पु० कुठार । कुल्हाडी ।

कुठार–स्त्री० कुठार. बर्बरीवृक्ष । कुल्हाड़ी. बबई का पेड़ ।

कुठेर–पु० श्वेततुलसी. वह्नि. अर्जकवृक्ष न्याज़बू. बवई. अग्नि. सुपेदतुलसी ।

कुठेरक–पु० श्वेततुलसी. बर्बरी । सुपेद तुलसी . बबई ।

कुडुप(व)–पु० प्रस्थचतुर्थांशपरिमाण । ३२ तोला ऽ।=॥ छटांक भर ।

कुड्यमत्स्य–पु० गृहगोधिका (स्त्री) (त्सी) छिपकली ।

कुण्ड–गोलक–पु० काञ्जिक । कांजी ।

कुण्डल–पु० कोविदारवृक्ष । कचनार का पेड़ ।

कुण्डलिनी–स्त्री० मिष्टान्नविशेष । जलेबी

कुण्डलिन्–पु० सर्प्प. मयूर. चित्रमृग । सांप. मोर. चितकबरा हरिण ।

कुण्डली–स्त्री० गुडूची । गिलोय, गुरुच ।

कुतृण–न० कुम्भ । एक किस्म का पौधा ।

कुत्सला–स्त्री० नीलीवृक्ष । नील का पौधा ।

कुत्सितशाल्मली–स्त्री० कूटशाल्मली । सेमरा ।

कुथ्य–त्रि० कुशतृण । कुशा घास

कुद्दाल–पु० श्वेतपुष्प–कोविदारवृक्ष । सुपेद फूल वाला कचनार का पेड़. कुलाइ का पेंड़ ।

कुद्रव–पु० कोद्रव । कोदों ।

कुधान्य–न० क्षुद्रधान्य । ढेढ़र. कोदों ।

कुनटी–स्त्री० मनोगुप्ता. शतपुष्पा । धनिया. मैनशिल. मणशिल. मैनशिल ।

कुनाशक–पु० यासक । जवासा, जवांह ।

कुन्तल–पु० केश. यव. हस्त । बाल. जव हाथ ।

कुन्ति–पु० देशविशेष (स्त्री)(न्ती) गुग्गुलुवृक्ष.शल्लकी । गुग्गुल,गूगल.स्याहीपशु ।

कुन्द–पु० मुकुद. सदापुष्प. करवीरवृक्ष । कुन्दुरु सुगंध द्रव्य शल्लकी का गोंद. कुन्द का फूल. कनयर का फूल ।

कुन्दर–पु० तृणविशेष ।

कुन्दुरु–पु० कुन्दुरु. सुगंध द्रव्य शल्लकी का गोंद ।

कुन्दुरुकी–स्त्री० शल्लकीवृक्ष । सालई ।

कुप्य–न० स्वर्णरौप्यातिरिक्तधातु । सोने रूपे से अलावा और सब धातें ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कुवल—न० कर्कन्धु । मीठा बेरवृक्ष ।

कुवलयश्वेत—न० कुमुदिनी । कोई, क्कां का बेलि ।

कुबेराक्षी—स्त्री०पाटली । पाड़रि,पाण्डरि ।

कुब्ज—पु० खड्ग. अपामार्ग । तलवार. अयुठकांटा, लटजीरा ।

कुमार—पु० शुकपक्षी । तोता ।

कुमारजीव—पु० पुत्रजीवकवृक्ष । जीया-पोता. पुत्रजीवा ।

कुमारिका—स्त्री० नवमल्लिका. स्थूलैला । मालती का पौधा. मोटी इलायची ।

कुमारी—स्त्री० घृतकुमारी । घिकुआरि ।

कुमुद—न० कैरव. श्वेतोत्पल. रक्तपद्म. रौप्य (पु) वानरविशेष. कर्पूर. गुग्गुलु । सोसन. सुपेदकमल. सुरखकमल.चांदी. खासबन्दर. काफूर. गूगल ।

कुमुदबान्धव—पु० चन्द्र. कर्पूर । माहताव काफूर ।

कुमुदबीज—न० कैरवीबीज । भेंट. क्कां-का बेली के बीज ।

कुमुदिनी—स्त्री० कुमुद, । क्कांका बेलि ।

कुमुद्वती—स्त्री० कुमुदिनी । क्कांका बेलि ।

कुमुद्वतीबीज—न० कुमुदबीज । क्कांका-बेली के बीजा ।

कुम्भ—पु० घट. द्रोणद्वयपरिमाण. गुग्गुलु. त्रिवृत । घडा. ६४ सेर, गूगल. तिर-वी. निशोथ ।

कुम्भयोनि—पु० द्रोणपुष्पीवृक्ष । गूमा के फूल का पौधा ।

कुम्भाण्ड—पु० कूष्मांड (स्त्री) कूष्माण्डी । पेठा. कुम्हड़ा. कद्दू. लौकी ।

कुम्भिका—स्त्री० कट्फल. जलकुम्भी । कायफर. सेवार ।

कुम्भिन्—पु० हस्ती. कुम्भीर. गुग्गुलु । हाथी. घड़ियाल. गूगल ।

कुम्भिनीबीज—न०जयपाल। जमालगोटा।

कुम्भी—स्त्री० उखा. पाटलावृक्ष. वारि-पर्णी. दन्तीवृक्ष । हंडिया. पाड़रि. सेवार. दत्तूनि का पेंड़ ।

कुम्भनिस—पु० क्रूरसर्प । ज़हरी सांप ।

कुम्भीर (ल)—पु० कुम्भीर । घडियाल ।

कुम्भीबीज—न० जयपाल । जमालगोटा।

कुरङ्कर—पु० सारसपक्षी । सारस ।

कुरङ्ग (क)—पु० हरिण । आहू, हरणा ।

कुरण्टक—पु० बाणपुष्प. पीतसैरेयक । बाण का फूल. पीलेफूल का कटस-रैआ या, करसैला ।

कुरण्ड—पु० मुष्कवृद्धिरोग । पोतों के बढ़ जाने की बीमारी ।

कुरर—पु० वत्क्रोशपक्षी (स्त्री) कुरर पक्षी टिटिहरी स्त्री, मेषी । कूंज. कूंज की मदीन. भेंड़ी ।

कुरव(क)—पु० रक्तझिण्डी. पीतझिण्डी. कूंज. सितमंदार । गुलखैरा लाल या पीला सुपेद मदार ।

कुरीर—न० मैथुन. सोहबत ।

कुरु—पु० कण्टकारिका । कंडियारीबूटी. भटकटैया ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कुरुम्बिका—स्त्री० द्रोणपुष्पीलता । गूमा का पौधा ।

कुरुवक—पु० रक्तझिण्टी. रक्ताम्लान. पीतझिण्टी । गुलखैरा ।

कुरुविन्द—पु० मुस्ता. कुल्माष. दर्पण. हिङ्गुल (न) पद्मरागमणि । नागरमोथा. कुलिथ. आइनह. शिंगरफ. इंगुरु. मानक ।

कुरुविल्व—पु० पद्मरागमणि । मानक ।

कुर्पर—पु० जानु । घुटना. कोहनी ।

कुलक—पु० कुपीलुवृक्ष. वल्मीक (न०) पटोलवल्ली । कोचिला का पेड़. वरमी. पलवल. परवर की बेलि ।

कुलङ्गी—स्त्री० कर्कटशृङ्गी । ककड़ासिंही

कुलत्थ—पु० } कुलथी खुरथी का पेड़
कुलत्थिका स्त्री }

कुलाट—पु० क्षुद्रमत्स्यविशेष । छोटीसी मच्छली ।

कुलाली—स्त्री० नीलोत्पल । नीलोफर ।

कुलि—पु० हस्त । हाथ (स्त्री) कण्टकारी बड़ी कण्डियारी. भटकटैया बूटी ।

कुलिङ्ग—पु० चटक. भृङ्ग (स्त्री०)(ङ्गी) कर्कटशृङ्गी । गरगवा. भैंरा. काकड़ासिंही ।

कुलिश—पु० न० बज्र अस्थ्यहारवृक्ष. मत्स्य विशेष । हीरा. हड़सिँघार का पेड़. खाशमच्छली ।

कुली—स्त्री० कण्टकारी. बृहती । कण्डयारी. बड़ी भटकटैया ।

कुलीनस—न० जल । पानी ।

कुलीरविषाणिका } स्त्री० कर्कटशृंगी ।
कुलीरशृङ्गी } ककड़ासिंही बूटी ।

कुलुक—न० जिह्वामल । ज़बानपर की मैल

कुल्माष—पु० सूर्य्य के पारिपार्श्विक. अर्द्धस्विन्नगोधूमचणकादि. काञ्जिक. यावक. वोरवधान्य. कुलत्थ. काश्मीरजतुलसी. राजमाष. पाचितमाषादि । अधचुरे गेहूं. चने वगैरह. कांजी. महाउरु. कुलथी. काश्मीरदेश की तुलसी. लोबिआ. पकाये हुये उड़द आदि ।

कुल्य—न० अस्थि. अष्टद्रोणपरिमाण. आमिष । हड्डी. ३२ सेर. मांस. गोश्त.

कुश—पु० न० बर्हिष (न) जल । कुश घास. पानी ।

कुशेशय—न० कमल (पु०) सारस पक्षी. कर्णिकारवृक्ष । कमल. सारस. कनयर का पेड़. नयनिआ का पेड़. अमिलतास का पेड़ ।

कुष्ठ—न० रोगविशेष. आमय औषध । कोढ़ की बीमारी. कुट्ठ दवा. कूटदवा

कुष्ठगन्धिनी—स्त्री० अश्वगंधा । असगंध ।

कुष्ठघ्नी—स्त्री० सोमराजी । वाकुची ।

कुष्ठभेद—न० पौष्करमूल । पुष्करमूल ।

कुष्ठहा—पु० पटोल । परवर. पलवल ।

कूष्माण्ड—पु० पीतपुष्पफल । कुम्हड़ा पेठा फल ।

कुसुम—न० फल. पुष्प. स्त्रीरज, नेत्ररोगविशेष । फूल, हैज़, आंख की एक बीमारी ।

कुसुमासव—न० मधु । शहद ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कुसुम्भ–न० स्वर्ण,वन्हिशिखपुष्प । सोना, कुसुम्भे का फूल ।

कुसुम्भबीज–न० वन्हिशिखबीज । कुसुंभ के बीज, बरे ।

कुस्तालूखलक–न० गुग्गुलु । गूगल ।

कुस्तुम्बुरु–न० धान्यक । धनिया ।

कुहलि–पु० पूगपुष्पिका । पान का पत्ता

कुहा–स्त्री० क्षुद्रकोल । झरबेरिआ, बेरि का पेड़ ।

कूच–पु० स्तन (स्त्री) (भी) । पिस्तान, बालों की कलम ।

कूट–पु०-न० कदली । केला का पेड़ ।

कूटज–पु० कुटजवृक्ष । कोरैआ का पेड़ ।

कूटशाल्मलि–पु० कुत्सितशाल्मलि । कुट सिंबल का पेड़ ।

कूटस्थ–न० व्याघ्रनखाख्यगंधद्रव्य । बघनखी औषध ।

कूपिका–स्त्री० जलजातोत्पल । पानी का कमलफूल ।

कूर–न० अन्न । पके हुये चावल. भात।

कूर्च्च–पु० भ्रूमध्य. मयूरपुच्छमुष्टि. श्मश्रू. शीर्ष । भवों का दरिस्थान, मोरपंख की चौंरी. दाहड़ी, शिर ।

कूर्च्चशीर्षक–पु० नारिकेलवृक्ष, जीवक । नारियल, जीवक बूटी ।

कूर्प्प–न० भ्रूमध्य । भौं के बीच की जगह।

कूर्म–पु०न० कच्छप । कछुआ ।

कूष्माण्ड–पु० कर्कारु (स्त्री) (भी) पेठा कुम्हड़ा ।

कूष्माण्डकवटी–स्त्री० कूष्माण्ड युक्त माषबटी । कुम्हरौड़ी ।

कूलक–पु० पटोल । परवर ।

कृकवाकु–पु० कुक्कुट. मयूर. सरट । मुरग. मोर. गिरगिट ।

कृच्छ्र–त्रि० मूत्रकृच्छ्र । पेशाब बन्द की बीमारी ।

कृतमाल–पु० आरग्वध । अमिलतास. किरवाल. घनबहेरा ।

कृतवेधना–स्त्री० धामार्गव । तोरई ।

कृताञ्जलि–पु० औषधिभेद । हाथाजोरी ।

कृतिम–न० देवदारुवृक्ष । देवदारु ।

कृत्ति–स्त्री० कृष्णसारचर्म्म. त्वच्. भूर्ज । काले हरिण का चमड़ा, छिलका. भोजपत्ता ।

कृत्रिम–न० विट्लवण । खारी निमक ।

कृत्स–न० जल । पानी ।

कृत्स्न–न० जल. सर्व. कुक्षि । पानी. तमाम. कोख ॥

कृन्तनिका–स्त्री० छुरिका । छूरि. छुरी ।

कृपीट–न० उदर. जल. विपिन । पेट. पानी. जंगल ।

कृमि–पु० कीट. लाक्षा. उदरजात कीट रोग । कीड़ा. लाख. पेट का कीड़ा ।

कृमिकृत्–स्त्री० राजिका । राई ।

कृमिघ्न–पु० विटङ्क. विडङ्ग. पलाण्डु. भल्लातक । वायविडंग. पियाज. भिलांवा ।

कृमिघ्ना–स्त्री हरिद्रा । हल्दी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कृमिज
कृमिजग्ध } न० अगरु. कृष्णागुरु । सुपेद या स्याह अगर ।

कृमिवृक्ष—पु० कोशाम्र । कोशम्भ ।

कृशर—पु० त्रिसर (स्त्री) (रा) द्विदलमिश्रितान्न । तिलचावली. खिचड़ी ।

कृशला—स्त्री० केश. कुन्तल । बाल. जुल्फ ।

कृशानु—पु० अग्नि चित्रकवृक्ष । आग. चित्रा का दरख़्त ।

कृशोदरी—स्त्री० सारिवा । गोरिआं सांज सुपेद दुधउरु ।

कृष्टपच्य—त्रि० व्रीहिधान । धान ।

कृष्टल—न० गुञ्जा. प्रस्तरविशेष । रत्ती. घसौटी ।

कृष्ण—न० मरिच. लोह. नीलाञ्जन । स्याहमिरच. लोहा. सुरमा ।

कृष्णकाय—पु० महिष । भैंसा ।

कृष्णजीर—पु० कृष्णजरण । स्याह जीरा ।

कृष्णतार—पु० हरिण । हन्ना ।

कृष्णपाकफल—पु० करमर्द्दः । करौंदा. करौंदी ।

कृष्णपुच्छ—पु० रोहीमत्स्य । रोहूमच्छली ।

कृष्णफला—स्त्री० सोमराजी. कोलशिम्बी वाकुची. सुवशेम्बि. सेमा ।

कृष्णवृन्ता—स्त्री० माषपर्णी. पाटला. गम्भारी । बनउर्दी. पाडरि. खम्भारी ।

कृष्णभेदा—स्त्री० कटुका । कुटकी ।

कृष्णमल्लिका—स्त्री० श्यामतुलसी । काली तुलसी ।

कृष्णमृत्—
कृष्णमृत्तिका } स्त्री० कृष्णमृत्तिका । कालीमिट्टी. कालीमाटी

कृष्णराजिका—स्त्री० कृष्ण सर्षपा । स्याह राई ।

कृष्णल—पु० गुञ्जा (स्त्री) (ला) । रत्ती, रत्तियों का पौधा । चौंटली. घोंघची ।

कृष्णलोह—न० अयस्कान्त । चुम्बकपत्थर

कृष्णवर्ण—पु० अरिष्टः । रीठा ।

कृष्णबीज—न०कालिन्दा । कलींदा.तरबूज

कृष्णव्रीहि—पु०वर्षाती धानविशेष । स्पाढ़

कृष्णशारिवा—स्त्री० कृष्णसारिवा । कालादुधउरु । करिआं वांसा ।

कृष्णशिग—पु० शोभाञ्जनवृक्ष । सुहांजने का पेड़ ।

कृष्णश्टङ्ग—पु० महिष । भैंसा ।

कृष्णसर्षप—पु० कृष्णराजिका । स्याह राई

कृष्णसार—पु० हरिण. शिंशपावृक्ष । खदिरवृक्ष । हरिन. शीशम का पेड़. खैरा दरखत ।

कृष्णसारा—स्त्री० शिंशपावृक्ष । शीशम का पेड़ ।

कृष्णा—स्त्री० नीलीवृक्ष. पिप्पली. द्राक्षा. कृष्णजीरक. गम्भारी. राजसर्षप. पर्पटी. काकोली. सोमराजी सेवती । नील का पौधा. पिपली. दाख. स्याहजीरा. खम्भारी. सेरसों. पद्मावती. काकोली बूटी. वाकुची. सेवतीगुलाब ।

कृष्णाकङ्गु—स्त्री० कृष्णकङ्गुनी । काली काकुनि ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कृष्णातिल—पु० श्यामतिल. कालतिल । स्याह तिल ।

कृष्णाप्रियङ्गु—पु० कृष्णकङ्गुनी । काली कांकुनि ।

कृष्णाफला—स्त्री० सोमराजी । वाकुची ।

कृष्णाभा—स्त्री० कालाञ्जनी । कलौंजी ।

कृसर—पु० कृशर । तिलचावली ।

कृसरा—स्त्री० कृशरा । खिचड़ी ।

कृसा—स्त्री० मांसरोहिणी । रोहिणी का पेड़ । कुटकी ।

केकिन्—पु० मयूर । मोर ।

केतक—पु० केतकी वृक्ष । केवड़े का फूल ।

केतुग्रहवल्लभ—न० वैदूर्य्यमणि ।

केदारजल—न० बरहा या खेत का पानी ।

केपीजि—पु० अश्व । घोड़ा ।

केमुक—पु० वृक्षविशेष । केमुआ का पेड़ इसमें कन्द होता है ॥

केलास—पु० स्फटिक । कांच. बिल्लोर ।

केश—पु० मज्जातोपधातुविशेष. चिकुर. बालक औषध । बाल. सुगन्धवाला. नेत्रवाला ।

केशपर्णी—स्त्री० रक्त अपामार्ग । लालचिरचिर. सुरखलटजीरा ।

केशर—पु०न० किञ्जलक (पु०) नागकेशरवृक्ष. बकुलवृक्ष. पुन्नागवृक्ष. सिंहजटा, हिंगुवृक्ष । फूलों की तिरी । नागकेशर का पेड़. सुपारी का पेड़. कचनार का पेड़. हींग का पेड़ ।

केशरञ्जन, केशराज—पु० भृङ्गराज । घमिरा का पौधा ।

केशरिन्—त्रि० बीजपूरवृक्ष । विजौरा निम्बू का पेड़ ।

केशहन्त्री—स्त्री० शमी । छीकुरिका पेड़ ।

केशामुष्टि—पु० महानिम्बवृक्ष । बकायन का पेड़ ।

केशिन्—स्त्री० नीलीवृक्ष । नील कापेड़ ।

केशी—स्त्री० माचिका । भोइआ केवैआ का पौधा ।

केसरिन्—पु० पुन्नागवृक्ष । सुपारी का पेड़ ।

कैटर्य्य—पु० कटुफल । कायफर ।

कैतक—न० केतकीपुष्प । केतकी का फूल

कैतव—न० वैदूर्य्यमणि । खाशमणि ।

कैरव—न० कुमुद. श्वेतोत्पल । कोई. सुपेद्कमल ।

कैरविन्—पु० मेथिका । मेथी ।

कैरविका—स्त्री० कुमुद । क्कांका बेलि ।

कैरविणीफल—न० कुमुदबीज । भेंट. क्कांका वेलि के चावल ।

कैरवी—स्त्री० बनमेथिका । जंगली मेथी ।

कैरात—पु० न० भूनिम्ब. शम्बरचन्दन । चिरायता. संदलविशेष ।

कैराल—न० विडङ्ग. टङ्कण । वायविडंग सोहागा ।

कोक—पु० चक्रवाक. वृक. ज्येष्ठी. खर्ज्जूरीवृक्ष. भेक । चकवा. भेडिया. छिपकली. खजूर का पेड़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कोकनद–पु० रक्तकमल । लाल कमल ।
कोकिलाक्ष–पु० काकेक्षु । तालमखाना ।
कोटिर–पु० नकुल । नेउला ।
कोटिवर्षा–स्त्री० स्पृक्का । लंकोइ कपुरी ।
कोड़कसेरुक–पु० मुस्था । नागरमोथा ।
कोणकूण–पु० मत्कुण । खटमल ।
कोद्रव–पु० कोद्रव । कोदव ।
कोथ–पु० नेत्ररोग । आंख की बीमारी ।
कोबिदार–पु० श्वेत–रक्त–कञ्चनार । सुपेद या सुरख़ कचनार का पेड़ ।
कोमलवल्कल–पु० लवलीवृक्ष । हरफारेवरी का पेड़ ।
कोरङ्गी–स्त्री० सूक्ष्मैला । छोटी इलायची ।
कोरदूषक–पु० कोद्रव । कोदव अन्न ।
कोल–न० बदरी । मीठी बैरि ।
कोलक–न० कंकोल । शीतलचीनी ।
कोलकाकुल–न० कङ्कुष्ठ । मुरदाशंख ।
कोलकेपिका–स्त्री० त्रिवृत्तश्यामा । स्यामपनिलरा. स्याहनिशोथ ।
कोलवल्ली–स्त्री० गजपिप्पली । गजपीपल
कोलमूल–पु० पिप्पलीमूल । मद्य. पीपरामूल ।
कोलशिम्बि–पु० शूकशिम्बि । सुवशेम्बि खजोहरा. केवाच ।
कोला–स्त्री० पिप्पली । पिपली ।
कोली–स्त्री० बदरीवृक्ष. क्षुद्रबदरी । बेरि. झरबेरिआ ।
कोल्या–स्त्री० पिप्पली । मद्य. पीपली ।
कोश–पु० अण्ड. हिरण्य. बयजा. सोना ।
कोशकार–पु० इक्षु । पौंड़ा. गन्ना ।
कोशवासिन्–पु० शम्बुक. तन्तु. कीट. स्फटिक । घोंघा. डोरा. कीड़ा. चिक्षौरीपत्थर ।
कोशातक–पु० केश । बाल ।
कोशातकी–स्त्री० पटोली । परवर की बेल ।
कोशाम्र–पु० क्षुद्राम्र । रीरी आम. कोशम्भ ।
कोशिकार–पु० इक्षु । करिया कुसियारि ऊख. पौंडा या गन्ना ।
कोशी–स्त्री० उपानत् । जूता ।
कोष–पु० न० खड्गपिधान. अर्थसमूह. दिव्य. अण्ड. पात्र. शब्दाभिधान. भाण्डागारी. योनि. शिम्बा. । गुंचह मियान. खज़ाना. कसम. बयज़ा. बर्तन. लुगत. कुस. सूढ़ी ।
कोषक–पु० अण्ड. अण्डकोष । बयज़े. पोते ।
कोषचञ्चु–पु० सारसपक्षी ।
कोषफल–न० कङ्कोल । शीतलचीनी ।
कोष्ट्रीसिता–स्त्री० विदारीकंद. क्षीरविदारी । गेंठि. विलारीकन्द ।
कोष्ट्रविन्ना–स्त्री० पृश्निपर्णी । पिथवन. पिठवन ।
कोसिक–पु० गुग्गलु । गूगल ।
कोहल–पु० मद्यभेद । एक किस्मि की शराब ।
कौञ्च–पु० हिमालयपर्बतविशेष । हिमालय पहाड़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कीट–पु० कुटजवृक्ष (न) धूर्त । कोरैया का पेड़. शरीर ।

कौनख्य–न० कुनखीरोग । एक बीमारी जिस्से नखून गिर पड़ते हैं या काले पड़जाते हैं ।

कौन्ती–स्त्री० रेणुका औषध । यह मरिच के सदृश होती है और रेणुका नाम से मशहूर है ।

कौप. कौप्यजल–न० कूपोदक । कुए का पानी ।

कौपीन–न० कच्छा. अकार्य्य. गुह्य. पाप कुपीन. खराब काम गुदा गुनाह ।

कौप्यजल–न० कूपोदक । कुए का पनी ।

कौप्यमत्स्य–पु० कूपमत्स्य । कुए की मछली ।

कौमारभृत्य–न० कुमारा बालाः तेषां भृतिं भरणं पोषणं च भृता. तस्या इदं तन्त्रमिति कौमारभृत्यम् ।

कौलालकं–न० मृण्मयपात्र । मट्टी का बर्तन ।

कौलीन–न० गुह्य । गुदा ।

कौवेर–न० कुष्ठरोग । कोढ़ की बीमारी

कौश–त्रि० कौशेयवस्त्र । रेशमी कपड़ा ।

कौशिक–पु० गुग्गुलु. उल्लूक. नकुल (त्रि) कौशेय । गूगल. उल्लू. खूसट. नेउला. रेशमी कपड़ा । (न) रेशम ।

कौशेय–त्रि० पट्टवस्त्र (न) रेशम । रेशमी कपड़ा. रेशम ।

क्रकच–पु० न० करपत्र. ग्रन्थिलपत्र । आरा. किवड़ा का वृक्ष ।

क्रकचच्छद–पु० स्वर्णकेतकीवृक्ष केवड़ा का पेड़ ।

क्रकण–पु० तितरविशेष । एक किसम का तीतर ।

क्रकर–पु० करीरवृक्ष । करीर का पेड़ ।

क्रमि–पु० कृमि. रोगविशेष । कीड़ा. कीड़ों की बीमारी ।

क्रमिज–न० अगुरु । रेशम. लाख ।

क्रमिजा–स्त्री० लाक्षा । लाख ।

क्रमिदन्तक–पु० दन्त में काले छेद हों दन्त हिलें और पीड़ा हो ।

क्रमु, क्रमुकी } स्त्री० गुवाकवृक्ष । सुपारी का पेड़ ।

क्रव्य–न० मांस । गोश्त ।

क्रिमि–पु० कीट. द्रुमामय. रोगविशेष । कीड़ा. लाख. एक खास बीमारी ।

क्रिमिजा–स्त्री० लाक्षा । लाख ।

क्रीडारत–न० रति । मुबाशरत ।

क्रीडासरस–न० जलाशय । तालाब ।

क्रूर–पु० श्येनपक्षी. बक. रक्तकरवीरवृक्ष । बाज. बगला. सुरख कनयर का दरखत

क्रूरकर्म्मा–स्त्री० अर्कपुष्पी ।

क्रूरा–स्त्री० रक्तपुनर्नवा । सुरख गदापुरैना की बेल ।

क्रूर्च्च–पु० न० श्मश्रू । दाहड़ी ।

क्रोड़–पु० शूकर. वाराहीकन्द । सुअर. गोद अर्थात् बराहीकन्द ।

क्रोड़पाद–पु० कच्छप । कछुआ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

क्रोष्टृ–पु० शृगाल (स्त्री) (ष्टी) शृगाली । गीदड़ गीदड़ी ।

क्रौञ्च–पु० स्त्री० कुररपक्षी । कूंज पक्षी ।

क्लमनाशन, क्लमहर } न० जल । पानी ।

क्लीतका, क्लीतकिका } स्त्री० नीलवृक्ष । नील का पौधा ।

क्लीतनक–न० ज्येष्ठीमधु. जेठीमधु. मुलेठी

क्लीब–न० जल । पानी ।

क्लेदक–पु० श्लेष्मक । कफ ।

क्लेदन–पु० श्लेष्मा । कफ. गीला करना

क्लैव्य–न० दौर्बल्य. क्लीवलिंग. अपुरुषत्व कमजोरी. मुखन्नस. नामर्दी ।

क्लोम,(न्)–न० मूत्राधार । मसाना ।

क्वथिता–स्त्री० कढ़ी ।

क्वाथ–पु० दुःख. बासन. द्रव्यनिष्पाक. निर्य्यास. मण्ड । तक्लीफ. बर्तन. जुशांदा. रस. गुदा ।

क्वथित–त्रि० श्रत । जोश दिया हुआ ।

क्षणदा, क्षणिनी } स्त्री० रात्रि । शब ।

क्षतज–न० रक्त । खून ।

क्षतवृक्ष–पु० मुचुकुंदपुष्पलता । मुचुकुन्द फूल की बेल ।

क्षताभिजनक–पु० राजिका । राई. लाही

क्षपा–स्त्री० रात्रि. हरिद्रा । शब. हल्दी ।

क्षपाकर–पु० चन्द्र. कर्पूर. माहताब काफूर

क्षमा–स्त्री० अतसी. खदिर । अरसी. खैर

क्षयतरु–पु० नन्दीवृक्ष । बेलिया पीपल ।

क्षयथु–पु० काशरोग । खांसी की बीमारी

क्षर–न० जल, मेघ । पानी. बादल ।

क्षार–न० विड़लवण यवक्षार (पु) टङ्कण. लवण. काच, भस्म. गुड़ । खारानिमक जवाखार. सोहागा. निमक. कांच. राख. गुड़ ।

क्षारत्रय–न० १ स्वर्जिका २ यवाक्षार. ३ टङ्कण । सज्जीखार १ जवाखार २ सोहागा ।

क्षारद्वय–न० १ स्वर्जिका, २ यवाक्षार । सज्जीखार १, जवाखार २ ।

क्षारवृक्ष–पु० मोक्षवृक्ष । पर्वतों में पलाशक के सदृश होता है ।

क्षारमृत्तिका–स्त्री० लवणमृतिका । खारीमिट्टी. रेहू ।

क्षारश्रेष्ठ–पु० पलाशवृक्ष । ढीकुलु का पेड़ ।

क्षाराष्टक–न० १ पलाश. २ सेहुण्ड, ३ लटजीरा. ४ अस्ली. ५ तिलपिञ्जी. ६ यवाक्षार. ७ सज्जीक्षार. ८ बहेरा ।

क्षारिका–स्त्री० क्षुधा भूंख ।

क्षिति–स्त्री० रोचनानामगन्धद्रव्य । गोलोचन ।

क्षितिक्षम–पु० खदिरवृक्ष । खैरे का पेड

क्षीर–न० जल. दुग्ध । पानी. दूध ।

क्षीरकाकोली–स्त्री० औषध. [illegible] ।

क्षीरवल्लिका–स्त्री० क्षीरकाकोली ।

क्षीरवल्ली–स्त्री० विदारीकंद. क्षीरविदारी । गेंठि. बिलारीकन्द ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

क्षीरवृक्ष–पु० अश्वत्थ. उदुम्बर। पीपल गूलर।

क्षीरशर–पु० दधियोगेन पक्वोष्णादुग्ध जातामिक्षा. संतानिका। उबलते हुये दूध में दही डाल देने से जो फुटके से हो जाते हैं. मलाई.।

क्षीरशुक्ल–पु० जलकण्टक. राजादनीवृक्ष। सिंघाड़ा. खिरनी का पेड़।

क्षीरशुक्ला–स्त्री० क्षीरकाकोली. विदारीकंद। क्षीरशसा. विलारीकंद. गेंठि।

क्षीरा–स्त्री० काकोल. स्वादुपर्णी। शसाऔषध. दूधी।

क्षीराब्धिज–पु० चन्द्र (न) मौक्तिक. सामुद्रक्षार। माहताब. मोती. समुन्द्री खार।

क्षीरिका–स्त्री० पायसान्न. क्षीरिणी. पिण्डखर्जूर। खीर. खिरनी का पेड़ पिंडखजूर का पेड़।

क्षीरिणी–स्त्री० क्षीरकाकोली।

क्षीरी–स्त्री० बटवृक्ष. नन्दीवृक्ष। बरगद का पेड़. बेलिया पीपल का पेड़।

क्षुतक–पु० राजिका। राई।

क्षुताभिजनन–पु० कृष्णसर्षप। स्याह सरसों।

क्षुत्–स्त्री० क्षुधा. क्षत। भूंख. छींक।

क्षुद्र–[illegible]पुनर्नवा। सुरखगदापुरना

क्षुद्र[illegible]न–न० रक्तचन्दन। सुरखसन्दल. लालचन्दन।

क्षुद्रजम्बू–स्त्री० जम्बुवृक्ष। नदीजामुनी. भदैली जमुनी।

क्षुद्रदन्तीफल–न० लघुदन्तीबीज। छोटी दत्तूनि के बीज।

क्षुद्रधान्य–न० कुधान्य। कोदव।

क्षुद्रपनस–पु० लकुच। बड़हर का पेड़।

क्षुद्रपत्री–स्त्री० षड्ग्रन्था। बच।

क्षुद्रभण्टाकी, क्षुद्रभद्रा –स्त्री० बृहती। बड़ी भटकटैया. बरहण्टा।

क्षुद्रमत्स्य–पु० लघुमत्स्य। छोटीमच्छली. चिल्लिया।

क्षुद्रा–स्त्री० व्याघ्रीवृक्ष। कंडियारी. भटकटैया बूटी।

क्षुद्राम्र–पु० कोशाम्र। कोशम्भ. रीरीआम

क्षुमा–स्त्री० अतसी. शणवृक्ष. नीलिकालता। अलसी. सन का पेड़. नील का पौधा।

क्षुर–पु० कोकिलाक्ष. छेदनद्रव्य. नापित. लोमछेदकास्त्र। तालमखानाका पौधा. चाकू. उस्तरा. छूरा।

क्षुरक–पु० तिलकवृक्ष. कोकिलाक्ष. भूताङ्कुश। तिलक फूल का पेड़. तालमखाना. गोखुरू।

क्षुरपत्र–पु० दीर्घपत्रतृण। डाभ. कुशभेद

क्षुरप्र–पु० शर. घासछेदनास्त्र। तीर. खुरपा।

क्षुरिणी–स्त्री० वराहक्रान्ता. नापितभार्या। रतालू. नायिन।

क्षुल्लक–पु० क्षुद्रशङ्ख। छोटा शंख. कौड़ी।

क्षेत्रजा–स्त्री० श्वेतकण्टकारी। क्षुपेद

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कंडियारीबूटी. भटकटैया सुपेद ।

क्षेत्रदूतिका—स्त्री० कण्टकारी । भटकटैया बूटी ।

क्षोम—न० दुकूल (पु) अट्ट । रेशमी. दुपट्टा ।

क्षौद्र—न० मधु. जल(पु) चम्पकपुष्पवृक्ष. वर्णशङ्कर । शहद. पानी. चम्बे का दरखत. दोगला ।

क्षौद्रमधु—न० क्षुद्रमक्षिकासञ्चितमधु । भुनगहाई का सहद ।

क्षौमी—स्त्री० अतसी. अलसी । तीसी ।

क्ष्वेड—न० लोहितअर्कपर्णफल. घोषापुष्प (पु) ध्वनि. कर्णरोग. विष (त्रि) कुटिल । लालसदारे का फल. करुई तोरई. शब्द. कानकी बिमारी. कपटी ।

क्ष्वेडी (डा)—स्त्री० वंशशलाका. सिंहनाद. कोषातकी । वांश की सलाई. सिंह की आवाज. करुई तोरई ।

क्ष्वेलिका } —स्त्री० क्रीड़ा. मेथी । खेल. क्ष्वेली } बकड़ी ।

(ख)

खग—पु० वाण. सूर्य्य. वायु. शलभपक्षी । तीर. आफताब. हवा. मकड़ी. तिड्डी. चिड़िया ।

खगपति—पु० गरुड़पक्षी । पिढ़ैयाढंख ।

खगम—पु० पक्षी । पखेरू ।

खचमस—पु० चन्द्र । माहताब ।

खज—पु० दर्व्वी । चमचा. करछी ।

खजय—न० घृत । घी ।

खजल—न० आकाशवारि. नीहार । पाला. ओस ।

खजाक—पु० पक्षी (स्त्री) सछिद्रादर्व्वी । परिन्दह. चमचह जिसमें छेदहों झारना ।

खञ्जन } —पु० खञ्जरीठ । ममोला. खञ्जरीट } खढ़रैचा पक्षी ।

खट—पु० कफ. टङ्कतृण. लाङ्गलकतृण । घास. खुशबूदार घास ।

खटिका—स्त्री० लेखनमृत्तिका. कर्णकुहर खड़िया मिट्टी. कान का सुराख ।

खट्टा—स्त्री० खट्वा. खाट. पलंग. तृणविशेष ।

खट्वा—स्त्री० काष्ठादिरचित शय्याधार. । खाट ।

खड़िका (खड़ी)—स्त्री० कठिनी । खड़िया मिट्टी ।

खड्ग—न० लोह. (पु) गण्डकपशु. रोचक नामगन्धद्रव्य । लोहा. गैंड़ा. गैंड़ा का सींघ ।

खड्गिक—पु० महिषीक्षीर. फेण. शौणिका भैंस के दूध की झाग. मांसवेचनेवाला ।

खण्ड—न० विड्लवण. गुड़. शर्करा. इक्षु । कालानिमक. गुड़. राब. गन्ना. शक्कर ।

खण्डधारा—स्त्री० कर्तनी । कैंची. मिकराज

खण्डपाल—पु० मोदक । लड्डुआ. मिठाई हलवा. मुरब्बा ।

खण्डलवण—न० विड्लवण । स्याहनिमक

खाण्डिक—त्रि० कक्ष. कलाय अन्न । बगल. मटर ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

खगिडन्—त्रि० वनमुद्ग (त्रि) भग्न। वन-मूंग. टूटा हुआ।

खखडीर—पु० पीतमुद्ग। मूंगी।

खदिका—स्त्री० लाजा। खील।

खदिर—पु० रक्तसारवृक्ष (स्त्री) (री) वृक्षविशेष। खैरादरखत।

खदिरका
खदिरपत्रा
खदिरपत्री
खदिरा } स्त्री० लज्जालुलता। लाजवन्ती का पौधा।

खदिरिका—स्त्री० लाक्षा। लाख।

खपुर—पु० गुवाक. लशुन. वायुरोग (न) घट। सुपारी का पेड़. लहसन. वाई की बीमारी. घड़ा।

खवल्ली—स्त्री० आकाश बेली। अमरबेली

खभ्रान्ति—पु० चिल्ल। चील।

खमणि—पु० सूर्य्य। आफताब।

खरच्छद—पु० शाखोट। सहोरावृक्ष।

खरत्वक्—स्त्री० लज्जालूभेद। अलम्बुषा।

खरदूषण—पु० धूस्तर। धत्तूरह।

खरपर्णी—स्त्री० गोजिह्वावृक्ष। गोभी का पौधा।

खरपुष्पा—स्त्री० बर्बरीवृक्ष। बबई का पौधा।

खरबूज—न० दशाङ्गुलफल। खर्बूजा।

खरस्कन्ध—पु० [illegible] पियालफल। चिरौंजी।

[illegible]पर्शा—स्त्री० देवदाली। बन्दाल. सोनैआ।

खरा—स्त्री० देवताड़वृक्ष। ताड़।

खराश्वा—स्त्री० दीप्यक। अजमोदा। मयूरशिखा. रुद्रजटा। मोर की चोटी. शिवाली।

खरांशु—पु० सूर्य्य। आफताब।

खरु—त्रि० दन्त। दान्त. दंदान्।

खर्जु—पु० कण्डु. कीट। खाज. खारिश. कीड़ा।

खर्जुघ्न—पु० चक्रमर्द्द. धूस्तरवृक्ष. अर्कवृक्ष। चकवड़. धत्तूरा. आक का पौधा मदार।

खर्जूर—पु० खर्जूरफल. रौप्य. हरिताल खल. खजूर का फल. छोहार. सिम. हड़ताल. बद।

खर्जूरी—स्त्री० खर्जूरिका। खजूर. छोहार

खर्परी—स्त्री० रसक। खपरिआ।

खल—न० भू (पु) सूर्य. तमालवृक्ष. धत्तूरवृक्ष। जमीन. आफताब. तमाल का दरखत. धत्तूरा का पौधा।

खलि—पु० तैलकिट्ट। खली।

खलिनी
खल्या } स्त्री० तालमूली। मुसली का पौधा।

खलेश(य)—पु० खलिशमत्स्य।

खल्ल—पु० वस्त्रप्रभेद. गर्त्त. चर्म्म. चातकपक्षी. मशक. खल (स्त्री) (ली) रोगविशेष। एक खाश कपड़ा. गढ़ा. चमड़ा. पपीहा. मसा. दुष्ट. एक खाश बीमारी गंजा।

खशा—स्त्री० मुराऔषध। मुरहरी।

खस—पु० पामा। खारिश की बीमारी।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

गन्धफला–स्त्री० प्रियंगूवृक्ष. मेथिका. विदारी, शल्लकी । मालकङ्गुनी. मेथी. बनमेथी. विदारीकन्द. सालई मेंहदी

गन्धफली–स्त्री० चम्पककलिका । चम्बेली की कली ।

गन्धभद्रा–स्त्री० लताविशेष ।

गन्धमादन–पु० गन्धक । (स्त्री) (नी) मदिरा । गन्धक. शराब ।

गन्धमादिनी—स्त्री० लाक्षा. पूरानाक गन्धद्रव्य। लाख "पूरानाक" नाम खुशबूदार चीज़ ।

गन्धमार्जारबीज–न० गौराशाखभेद । आण्डी ।

गन्धमालती–स्त्री० सुगन्धद्रव्यविशेष ।

गन्धमूल–पु० कुलञ्जवृक्ष । कुलंज का दरखत ।

गन्धमूलिका–स्त्री० शठी । गंध पलाशी काश्मीर में प्रसिद्ध है ।

गन्धमैथुन–पु० वृष । बैल ।

गन्धरस–न० बपरस । बोल ।

गन्धराज–न० चन्दन. स्वनामख्यातश्वेतवर्णपुष्प । संदल. एक खाश सुपेद फूल ।

गन्धर्व–पु० घोटक. कस्तूरीमृग. पुंस्कोकिल । घोड़ा. कस्तुरिआहरिन. कोइल ।

गन्धर्वगंधा–स्त्री० अश्वगंधा । असगंध ।

गन्धर्वतैल–न० एरण्डतैल । एरण्डी का तेल ।

गन्धर्वहस्तक–पु० श्वेतएरण्डवृक्ष. सुपेद एरण्डा का पेड़ ।

गन्धवधू–स्त्री० पृथपलाशिका । गन्धपलाशी काश्मीर में प्रसिद्ध है ।

गन्धसार–पु० श्वेतचन्दन । सुपेदसन्दल ।

गन्धा–स्त्री० चम्पककलिका । चंपे की कली ।

गन्धाढ्य—न० यवआदि नामगंधद्रव्य. चन्दन (त्रि) गन्धयुक्त (पु) नारङ्गवृक्ष. खुशबूदार चीज़. संदल. खुशबूदार. नारङ्गी का दरखत ।

गन्धाढ्या—स्त्री० गन्धपत्री. स्वर्णयूथी. तरुणी. आरामशीतला. गंधाली. । सेवती गुलाब. सोनायूही ।

गन्धारिका–स्त्री० पृथुपलाशिका । गंधपलासी ।

गन्धारी–स्त्री० यासक । जवासा ।

गन्धालीगर्भ—पु० सूक्ष्मैला । छोटी इलाइची ।

गन्धाश्मन्–पु० गन्धक ।

गन्धाष्टक–न० १ चन्दन. २ अगरु. ३ कर्पूर. ४ चोर. ५ कुङ्कुम. ६ रोचना. ७ जटामासी. ८ कपियुत ।

गन्धिक–पु० गन्धक ।

गन्धोकटी–स्त्री० दमनकपुष्प । दवना ।

गन्धोत्तमा–स्त्री० मादरा. शराब ।

गव्यघृत–न० गोघृत । गाई का घी ।

गम्भारी–स्त्री० गम्भारि । खम्भारी ।

गम्भीर–कमलपुष्प. जम्बीर (त्रि) गभीर.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अगाध. निम्न (स्त्री) (रा) हिक्का । कमल का फूल. निरखू. गहरा. नीचह. हिचकी ।

गर—न० विष. रोग । जहर. बीमारी. जहरमोहरा ।

गरगरा—स्त्री० गरगरामत्स्या । गरगरा मच्छली ।

गरघ्नी—स्त्री० गरई मच्छली ।

गरनाशिनी—स्त्री० देवदाली । सोनैआ. बंदाल ।

गरपुष्प—पु० मधूकवृक्ष । महुआ का पेड़ ।

गरल—पु० विष जहर ।

गरहाट—पु० पद्मादिकन्द । भिस ।

गरागरी—स्त्री० देवदाली । सोनैआ. बंदाल ।

गरुड़—पु० स्वनामख्यात पक्षी. मरकतमणि । पिढ़ैयाढंख. पन्नारत्न ।

गरुड़ाश्मन्—पु० मरकतमणि । पन्नारत्न ।

गर्गर—पु० मत्स्यभेद । मच्छलीविशेष ।

गर्जर्क—पु० " " ।

गर्ज्जर—न० मूलविशेष । गाजर ।

गर्द्दभ—पु० खर. गन्ध. (न) श्वेतकुमुद. विडङ्ग (स्त्री) (भी) गर्द्दभी । गधा. बू. सुपेद कमल का फूल. एक किस्म का पौधा. गधी ।

गर्द्दभाण्ड—पु० गजदण्ड सहोरा । पिलखन का दरखत ।

गर्द्दभाह्वय—पु० श्वेतकुमुद सुपेदकमल ।

गर्द्दभिका—स्त्री० क्षुद्ररोगविशेष. गर्द्दभी स्त्री । एक बीमारी. गधी ।

गर्द्ध—पु० स्पृहा. गर्द्दभाण्डवृक्ष । आरजूमन्दी. गजदण्डसहोरा. पिलखन का दरखत ।

गर्भ—पु० भ्रूण. शिशु. कुक्षि. सन्धि. मध्य. सूतिकागृह. अन्तःपुर. अन्तर. उदर । हमल. बच्चा. कोख. मेल की जगह. बीच. सौरि. रनवास. अन्दर. पेट ।

गर्भकर—पु० पुत्रजीवावृक्ष । पितौजिआ का पेड़ ।

गर्भकोष—पु० गर्भाशय । जरायु । वोझरी ।

गर्भदा—स्त्री० कण्टकारी । भटकटैया बूटी

गर्भधारिणी—स्त्री० माता. गर्भवती । वालदह. हामिलह ।

गर्भनुत—स्त्री० लाङ्गलीवृक्ष । करिहारी. करियारी ।

गर्भपातन—पु० अरिष्टक । रीठा

गर्भवती—स्त्री० अन्तरापत्या । हामिलह. लरिकौरी ।

गर्भशय्या—स्त्री० गर्भोत्पत्तिस्थान । बच्चाजनने की जगह ।

गर्भस्राविन्—पु० हिन्तालवृक्ष ।

गर्भाशय—पु० जरायु. पेट बच्चहदान ।

गर्भिणी—स्त्री० गर्भवती हामिलह ।

गर्मुत्—स्त्री० तृणधान्यविशेष. स्वर्ण. नड़ । मैनाघास. सोना. नली ।

गल—पु० कण्ठ. सर्जरस. मत्स्यविशेष. रज्जु । गला. राल. खासमच्छली. रस्सी

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

गलदेश—पु० ग्रीवा । गर्द्दन ।
गलस्तनी—स्त्री० छागी । बकरी ।
गलितकुष्ठ—न० महाव्याधि । गलित कोहड़ की बीमारी ।
गलू—पु० मणिविशेष । किसमेजवाहर ।
गल्ल(क)—पु० गण्ड । गाल. रूखसारा ।
गल्वर्क—पु० मद्यपानपात्र. स्फटिका । पियाला. बिल्लौर ।
गवय—पु० गलकम्बलशून्यगोसदृश पशु. वानरविशेष । बनगाय. खासबन्दर ।
गवल—पु० वनमहिष (न) महिषशृंग । जङ्गलीभैंसा. भैंसे के सींग ।
गवादन—पु० तृण. पत्र । घास. पत्ता ।
गवादिनी—स्त्री० वृन्द्रारुणलता । बड़ी इन्द्रकाला.. बड़ी इन्दोरनि ।
गवालूक—पु० गवय । बन का बैल ।
गवाक्षी—स्त्री० इन्द्ररुण । इन्दोरणिबेलि ।
गवी—स्त्री० धेनु. वाणी । गाय. कलाम ।
गवेड़ु—पु० मेघ, (स्त्री) धान्यविशेष । बादल. गड़गड़ी धान ।
गवेधु } स्त्री० धान्यविशेष ।
गवेधुका } गरहेहुआ ।
गवेधुका—स्त्री० गुरशङ्करी । गुरसकरी बूटी. सपेद फूल की बरियारी ।
गव्य—त्रि० गोसम्बन्धीय । दूध. घी. दही. गोबर. गोमूत्र ।
गव्या—स्त्री० गोरोचना । गोलोचन ।
गाङ्गधाराजल—न० क्वार को ओस ।
गाङ्गेय—न० स्वर्ण. धूस्तरवृक्ष. (पु) मत्स्य विशेष. भद्रमुस्था । सोना. धतूरा. मच्छली विशेष. नागरमुस्था ।
गाङ्गेरुकी—स्त्री० गुरसंकरी । गुरसकरी ।
गाजर—न० ग्रजरकन्द । गाजर ।
गायत्री—स्त्री० खदिरवृक्ष । खैरा का पेड़ ।
गारित्र—पु० ओदन. अन्न. भात. उबले. हुये चावल ।
गारुड़—पु० मरकतमणि. स्वर्ण । पन्नारत्न. सोना ।
गारुत्मत्—न० मरकतमणि. (पु०) गरुड़ पक्षी । पन्नारत्न ।
गालव—पु० लोध्रपुष्प. तेन्दुकवृक्ष । लोध्र का फूल. तेंदू का वृक्ष ।
गालितदधि—न० पट्टद्रावितदधि । कपड़े का बांधा दही ।
गालोडन—न० उन्मादरोग । मस्ती की बीमारी ।
गालोड्य—न० पद्मबीज । कमलफूल के बीज ।
गिरिकदम्ब—पु० नीप. धाराकदम्ब । हलदू. यह दरख्त जम्बू के आसपास होता है ।
गिरिकर्णी—स्त्री० श्वेत और नील विष्णुक्रान्ता । सुपेद या स्याह फूल की विष्णुकान्ता लता ।
गिरिज—पु० वृक्षविशेष. [illegible] (न) शिलाजतु. लोह. अभ्रक. गैरिक. [illegible] (जा) मातुलुङ्गी. त्रायमाणा लता. गिरिकदली । मौहा का पेड़. शिला-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जीत. लोहा अभरख. गेरू. चम्बेली. लाजवन्ती. पहाड़ी केला ।

गिरिजामल–न० आभ्रक । अभरख ।

गिरिधातु–पु० गैरिक । गेरू मट्टी ।

गिरिपुष्पक–न० शैलेय । शिलाजीत ।

गिरिप्रिया–स्त्री० चमरी । सुरागाय ।

गिरिभिद्–पु० पाषाणभेद ।

गिरिमल्लिका–स्त्री० कुटजवृक्ष । खोईद का पेड़ । कुरैया का पेड़ ।

गिरिवासिन्–पु० हस्तीकन्द । हाथीचक्क ।

गिरिसानुजा–स्त्री बलभद्रा । त्रायमाणा.

गिरिसार–पु० लौह. टीन । मलय पहाड़ लोहा. टीन ।

गिलग्राह–पु० नक्र । मगर, या तेंदुआ ।

गीर्वाणकुसुम–न० लवङ्ग । लौंग ।

गु–पु० विष्टा । गूह ।

गुग्गुल(लु)–पु० रक्तशोभाञ्जनवृक्ष । गूगल का पेड़ ।

गुच्छक–न० ग्रन्थिपर्ण (पु०) स्तबक । गठिवन बूटी. गुलदस्तह ।

गुच्छपत्र–पु० तालवृक्ष । ताल का दरख़्त

गुच्छफला–स्त्री० अग्निदमनी. काकमाची. निष्पावी. द्राक्षा. कदली । आगदमन. केवैआ. मटर. दाख. केला ।

गुच्छा–स्त्री० सूक्ष्मैला । इलायची गुजराती [illegible]यची खुर्द ।

गुच्छाल–पु० भूतृण । एक किस्मि का घास ।

गुञ्जा–स्त्री० रक्तिका लता. त्रियव. वा चतुर्धान्यपरिमाण । रत्ती. तीन जौ या चार धान भर ।

गुटि–स्त्री० सूक्ष्मैला । इलायची खुर्द ।

गुटिका–स्त्री० बटिका । दवाई की गोली

गुड़–पु० कार्प्पासीवृक्ष. इक्षुपाक । कपास का पौधा. गुड़ ।

गुडची–स्त्री० गुडूची । गिलोय, गुरच ।

गुडतृण, गुडमूल–न० इक्षु । गांडा. ऊख ।

गुडल–न० "रम" नाम शराब ।

गुडा–स्त्री० सेहुण्डवृक्ष । सेहुंड़ का पेड़ ।

गुडाख्य–न० शाकम्भरिलवण । साम्भरनिमक ।

गुडिका–स्त्री० गुटिका । दवाईकी गोली

गुडूची–स्त्री० अमृता । गुरच. गिलोय ।

गुडूचीपत्र–न० अमृता शाक । गुरच के पत्तों का शाग ।

गुडेर–पु० ग्रास. गुडक । लुकमह. गुड़ ।

गुणा–स्त्री० दूर्वा. मांसरोहिणी । दूब. रोहिणी ।

गुण्ड–पु० तृणभेद । एक खास खुशबूदार घास ।

गुत्स–पु० ग्रन्थिपर्णवृक्ष । गठिवन ।

गुद–न० मलत्यागद्वार । गांड़ ।

गुदकील (क)–पु० अर्शरोग । बवासीर या कब्ज़ की बीमारी ।

गुन्द्र–पु० शरतृण । पटेर घास ।

गुन्द्रफला–स्त्री० गन्धपालसी । गन्धपलासी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

गुन्द्रमूला–स्त्री० एरक । मोथी तृण पटेर घास ।

गुन्द्रा–स्त्री० भद्रमुस्तक. गवेधुका. प्रियङ्गु । नागरमोथा. गुरशंकरी, एरका. कंगुनी ।

गुन्द्राशरी–स्त्री० एरका । मोथी तृणविशेष ।

गुम्फ–पु० श्मश्रू । दाहड़ी. मूछ ।

गुरु–पु० कपिकच्छू. शिंशपा । केवाच. शीसव का पेड़ ।

गुरुघ्न–पु० गौरसर्षप । सुपेद सरसों ।

गुरुसारा–स्त्री० शिंशपाभेद । कपिलशीसव का पेड़

गुर्विणी } स्त्री० गर्भिणी । हामिलह ।
गुर्वी }

गुल–पु० ऐक्षव । गुड़ ।

गुलफल–पु० शीतफल । पीलू का दरखत

गुला–स्त्री० वृक्षविशेष ।

गुली–स्त्री० विस्फोटकरोग. बटी । चेचक की बीमारी. दवाई की गोली ।

गुल्फ–न० पादग्रन्थि । गिट्टा. टखना ।

गुल्म–पु० रोगविशेष । पेटकी बीमारी. वायगोला ।

गुल्मशूल–न० आर्द्रक । अदरक ।

गुल्मिनी–स्त्री० विस्तृतलता. प्लीहारोग । फैली हुई बेल. पिलही की बीमारी. तिल्ली का रोग ।

गुल्य–पु० मधुर, स्वादु । मीठा. मज़ेदार

गुवाक–पु० पूगवृक्ष । सुपारी का पेड़ ।

गुहा–स्त्री० शालिपर्णी. पृश्निपर्णी । सरिवन. पिथवन ।

गुहाशय–पु० व्याघ्र । बाघ ।

गुह्य–न० उपस्थ.(त्रि)रहस्य (पु) कमठ. दम्भ (स्त्री) मलद्वार । केर. एकान्त. कछुआ. फरेब. गुदा ।

गुह्यबीज–न० भूतीक । भूतृण ।

गू–पु० विष्ठा गूंह ।

गूढ़पथ–पु० अन्तःकरण । दिल ।

गूढ़पात्–पु० कमठ । कछुआ ।

गूढ़मैथुन–पु० काकपक्षी । कौवा ।

गूढ़ाङ्ग–पु० कच्छप । कछुआ ।

गूढ़ाङ्घ्रि–पु० सर्प्प । सांप ।

गूथ–पु० मल । गूह ।

गृञ्जन–न० नारङ्गवर्ण । गाजर कन्द ।

गृत्स–पु० कन्दर्प । कामदेव ।

गृध्र–पु० पक्षीविशेष । गीध ।

गृष्टि–स्त्री० वाराहक्रान्ता. शूरणकन्द. बदरीवृक्ष. काश्मीरीवृक्ष. प्रथम प्रसूता गौ । रतालू. जीमीकन्द. बेरी का पेड़. खम्भारि का पेड़. पहिला गाय ।

गृहकन्या–स्त्री० घृतकुमारीवृक्ष । घीकुआरि का पौधा ।

गृहपाल–पु० कुक्कुर । कुत्ता ।

गृहबलिभुज्–पु० चटक. काक. वक । गरैया. कौवा. [illegible]

गृहमणि–पु० प्रदीप । दीया. [illegible]

गृहमाचिका–स्त्री० चर्मचटिका । चमगीदड़ पक्षी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

गुहाशया–स्त्री० ताम्बूली. पानका पौधा
गैरिक–न० रक्तवर्णमृत्तिका । गेरु मट्टी ।
गैरेय–न० रक्तवर्णमृत्तिका. शिलाजतु ।
गेरु मट्टी. शिलाजीत ।
गो–पु० सूर्य्यरश्मि. बज्र. चन्द्र. वृष.सूर्य्य. (स्त्री) गौ. चक्षु. बाण. दिक्. वाक्. भू (पु० न०) लोम. जल । किरण. हीरा. चांद. बैल. आफताब. गाय. आंख. तीर. दिशा. कलाम. ज़मीन. बाल. पानी ।
गोकर्णी–स्त्री० चूर्णहार । सुरहरी बूटी ।
गोकण्टकी–स्त्री० गोक्षुर । गोखुरु औषध
गोकृत–न० गोमय । गोबर ।
गोक्षुर–पु० } गोक्षुरमूल । गुखुरू ।
गोक्षुरक–पु० } " "
गोगृष्टि–स्त्री० सकृत्प्रसूता गौ । पहलनी गाय ।
गोछाल–पु० करतल । हाथ की ताली ।
गोजा } स्त्री० गोलोभिकावृक्ष ।
गोजिका } गोभी का पेड़ ।
गोजिह्वा }
गोजिह्वापत्र–न० गोलोभिकापत्र । गोभी का शाग ।
गोण्डु–पु० गोण्ड । नाभि पर बढ़ा हुआ मांस बो...
...ुम्ब–पु० शीर्णवृन्त (स्त्री) (म्बा) कालिन्दा । खीरा. तरबूज़ ।
गोत्रवृक्ष–पु० धन्वङ्ग. धामिन बूटी ।
गोद–पु० मस्तकस्नेह । मगज़ ।
गोदधि–न० गोदधि । गाय का दही ।
गोदन्त–पु० हरिताल. लवण विशेष । हरतालधातु. गुडारी निमक ।
गोदुग्ध–न० गाय का दूध ।
गोद्रव–पु० गोमूत्र । गाय का मूत ।
गोधा–स्त्री० जलजन्तु विशेष । गोह. घड़ियाल ।
गोधि–पु० ललाट. गोधिका । माथा. घड़ियाल ।
गोधूम–पु० गेहूं ।
गोधूमचूर्ण–न० चूर्णीकृतगोधूम । आटा. मैदा वगैरह ।
गोनर्द्द–न० कैवर्तीमुस्तक (पु) सारसपक्षी मोथा घास ।
गोनस–पु० सर्पविशेष. रत्नविशेष ।
गोप–न० बोल. जातिविशेष । सुरह. अहीर ।
गोपकन्या–स्त्री० शारीरौषध । सुपेद दुधउरु ।
गोपति–पु० सूर्य्य. वृष. ऋषभ नामौषधि ।
आफताव. बैल. ऋषभबूटी ।
गोपन–न० तमालपत्र । तमाल का पत्ता पत्रज ।
गोपवधू–स्त्री० श्यामशारिवा । काला दुधउरु ।
गोपवल्ली–स्त्री० श्वेतशारिवा । सुपेद दुधवरु ।
गोपा–स्त्री० श्यामा लता । "

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

गोपाकन्या—स्त्री० श्वेतशारिवा । सुपेद दुधतरु ।

गोपालिका—स्त्री० कीटविशेष ।

गोपी—स्त्री० श्वेतशारिवा । सुपेद दुधतरु

गोपुटा—स्त्री० स्थूलैला । मोटी इलायची ।

गोपुरीष—पु० गोमय । गोवर ।

गोभी—स्त्री० गोलोमी । गोभी ।

गोमायु—पु० शृगाल । गीदड़ ।

गोमूत्र—न० गाय का मूत ।

गोमेद—पु० राहुरत्न । गोमेद जवाहर ।

गोरस—पु० न० दुग्ध. दधि. तक्र । दूध दही छाछ ।

गोरक्ष—पु० गुरभी । हमुकुरु ।

गोराटी—स्त्री० शारिका । मयना चिड़िया ।

गोरोच—न० हरिताल । हड़ताल ।

गोरोचना—स्त्री० गोमस्तकस्य पीतवर्णद्रव्यविशेष । गोरोचन ।

गोर्द—न० मस्तिष्क । मगज़ ।

गोला—स्त्री० मनःशिल । मैनशिल ।

गोलिह, गोलट —पु० मोक्षवृक्ष । सुपेद या स्याह पहाड़ी पलाश के सदृश पेड़

गोलोमी—स्त्री० वच. श्वेतदूर्वा । बच. दूब ।

गोशीर्ष—न० चन्दन. हरिचन्दन । सन्दल ।

गोस—पु० बोल. उषःकाल । सुवह. बोल ।

गोस्तना, गोस्तनी —स्त्री० गोस्तनी द्राक्षा । अंगूर का गुच्छा. मुनक्का ।

गोहित—पु० घोषलता. बिल्व । खास बेल. बिल्व का दरखत ।

गोहिर—न० पादमूल । गिट्टा. टखना ।

गोह्य—न० गुदा । गांड़ ।

गौ—पु० वृष । बैल ।

गौञ्जिक—पु० स्वर्णकार । सोनार ।

गौडशाक—न० रक्तवास्तूक । बड़े पत्रों की लाल बथुई ।

गौडिक—त्रि० मद्यविशेष. गुड़सम्बन्धीय । गुड़ की शराब. ।

गौडी—स्त्री० गुड़ादिकृतसुरा । गुड़ की शराब ।

गौधार, गौधेय, गौधेर —पु० गोधिकात्मज. गोधा । गोह. गिरगिट ।

गौर—न० पद्मकेशर. कुङ्कुम. स्वर्ण (पु) श्वेतसर्षप. चन्द्र. धववृक्ष । पद्म की तिरी. केशर. सोना. सुपेद सरसों. माहताब. धव के फूल ।

गौरसर्षप—पु० श्वेतसर्षप । सुपेद सरसों

गौरिल—पु० श्वेतसर्षप . लोहचूर्ण । सुपेद सरसों. लोहे का चूर ।

गौरी—स्त्री० हरिद्रा. गोरोचना. वसुधा. मञ्जिष्ठा. श्वेतदूर्वा. मल्लिका तुलसी. सुवर्णकदली. आकाशमांसी. । हलदी. गोलोचन. जमीन. मंजीठ. सुपेद दूब. मोतिया का [illegible] सुपेद या स्याह तुलसी. सोनाकेला. गोरोचे[illegible] बेलि ।

गौरीज—न० अभ्रक । अभरक धात ।

ग्रन्थि—पु० वंशादिसन्धि. भद्रमुस्ता. हि-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तावली. पिण्डालु. कौटिल्य. ग्रंथिपर्णवृक्ष । गांठ. नागरमुत्था., पिंडारू. कुटिलता. गठिवन

ग्रन्थिक–न० पिप्पलीमूल । मद्य, पिपलामूढ़ ।

ग्रन्थिपर्ण–न० ग्रन्थि । गठिवन ।

ग्रन्थिमान्–पु० अस्थिसंहारी । हड़सङ्घार का वृक्ष ।

ग्रन्थिमूल–न० गृञ्जन. लशुन । गाजर. लहशुन ।

ग्रन्थिल–पु० कण्टकारी । भटकटैया ।

ग्रहणी–स्त्री० रोगविशेष । अतीसार की बीमारी ।

ग्रहणीहर–न० लवङ्ग । लौंग ।

ग्रहामय–पु० आवेश. मृगीरोग । भूत बाधा मिरगी की बीमारी ।

ग्रामिणी–स्त्री० नीलीवृक्ष । नील का पौधा ।

ग्रामीण–पु० नीलीवृक्ष । नीलका पौधा ।

ग्राम्या–स्त्री० श्वेता तथा कृष्ण तुलशी । सुपेद या स्याह तुलसी ।

ग्राहक–पु० सतावर । सतावर. जिस में विना फूल के फल लगता है ।

ग्राहिन्–पु० कपित्थ । कैथा का पेड़ ।

ग्रीष्महास–न० [illegible] । आककी फूल. [illegible] की रुई ।

ग्रीष्मी
ग्रैष्मी } –स्त्री० नवमल्लिका । मालती

ग्लौ–पु० चन्द्र. कर्पूर । चांद. काफूर ।

(घ)

घट–पु० कलश. कुम्भपरिमाण. द्रोणपरिमाण ।

घड़ा. १०२४ तोला ।६२॥. ।॥ तौल ।

घटक–पु० वनस्पति । विना फूल के फलने वाली बूटी ।

घटकर्प्पर–न० मृत्कपाल । घड़े का खप्पर

घटिक–न० नितम्ब । चूतड़ ।

घण्टा–स्त्री० शणपुष्पी । चहुली ।

घण्टापाटलि–पु० काष्ठपाटलि । कठपाड़रि ।

घण्टिका–स्त्री० तालूर्ध्व सूक्ष्म जिह्वा । घंटी

घण्ड–पु० भ्रमर । भौंरा ।

घन–पु० मेघ. मुस्ता. शरीर. कफ. अभ्रक धातु । बादल. नागरमोथा. जिस्म. वलगम. अबरकधातु ।

घननाभि–पु० धूम । धूआं ।

घनपेयूष–न० किनार ।

घनरस–पु० कर्प्पूर. सान्द्रनिर्यास. मोरठ. पीलूपर्णी (न) जल । काफूर. गाढ़ारस. आखरोट. मूर्वालता ।

घनसार पु० दक्षिण वर्तपारद. वृक्षभेद. कर्पूर (न) जल । पारह. खासदरखत. काफूर. पानी ।

घना–स्त्री० रुद्रजटा ।

घनाघना–स्त्री० काकमाची । केवैआ का पौधा ।

घनामय–पु० खर्जूरवृक्ष । खजूर का दरखत ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

घनोपल–पु० करका. गला. ओला ।
घर्षणी–स्त्री० हरिद्रा । हलदी ।
घल–न० तक्र । छाछ. मट्ठा ।
घस्मर–त्रि० अद्मर । पेटार्थी ।
घाट–पु० ग्रीवापश्चाद्भाग । गर्द्दन की पिछली हड्डी ।
घासि–पु० अग्नि । आग ।
घुट –पु० चरणग्रन्थि । गिट्टा. टखनह
घुटी –स्त्री० " "
घुण–पु० काष्ठकृमि । लकड़ी का कीड़ा ।
घुणप्रिया–स्त्री० लघुदन्ती छोटी दन्तून का वृक्ष ।
घुणवल्लभा–स्त्री० अतिविषा । अतीस ।
घुघुंर –पु० कीटविशेष । झींगर ।
घुर्घुरा –स्त्री० " " ।
घुर्घुरी –स्त्री० " " ।
घुसृण–न० कुङ्कुम । केशर ।
घृणावास–पु० कूष्माण्ड । पेठा. कुम्हड़ा ।
घृत–न० पक्वनवनीत. जल (स्त्री) (ता) घृतकुमारीवृक्ष । घी. पानी. घिकुआरी का पौधा ।
घृतकुमारिका–स्त्री० कुमारिका वृक्ष . घिकुआरि का पौधा ।
घृतपूर्णकरञ्ज–पु० बृहत्करञ्ज । घोरा करञ्जुआ की वेल ।
घृष्टि–स्त्री० वाराहीकन्द. अपराजिता । (पु) शूकर । गेठि. विदारीकंद. विष्णुकान्ता लता ।
घोट (क)–पु० घोटक (स्त्री) (टी.की) । घोड़ा. घोड़ी ।
घोटकारि–पु० महिष । भैंसा ।
घोटा–स्त्री० कोलवृक्ष । वैरिका पेड़ ।
घोटिका–स्त्री० बृहल्लोणीशाक । बड़ी लोणी का शाक ।
घोणा–स्त्री० नासिका । नाक ।
घोणिन्–पु० शूकर । सुअर ।
घोरण्ठ–पु० पूगवृक्ष । सुपारी का पेड़ ।
घोरा–स्त्री० रात्रि. देवदाली लता । रात. बंदाली बेल ।
घोल–न० शर्करायुक्तमथितदधि । खांड़युक्त मट्ठा ।
घोली–स्त्री० पत्रशाकविशेष ।
घोष–न० कांस्य. (पु) घोषलता. मशक । कांसी. नेनुआ की बेल. मच्छर ।
घोषक–पु० घोषालता । नेनुआ की बेल
घ्राण–न० नासिका । नाक ।
घ्राणदुःखदा–स्त्री० छिक्का नकछिकनी ।

(ङ)

ङ–पु० विषयस्पृहा । ख्वाहिश नफसानी ।

(च)

चक्रकारक–न० व्याघ्रनखसुगन्धद्रव्य । वघनखी ।
चक्रभेदिनी–स्त्री० रात्रि । रात ।
चक्रमुख–पु० शूकर । [illegible] ।
चक्रमर्द्द–पु० दद्रुघ्नवृक्ष । चकवड़ ।
चक्ररद–पु० शूकर । सुअर ।
चक्रवर्तिन्–पु० वास्तूकशाक । बथुई का साग ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

चक्रशृंगी–स्त्री० अजशृङ्गी । मेढ़ासिंही बूटी ।

चक्रा–स्त्री० मुस्था. कर्क्कटशृङ्गी । नागरमुस्था. ककड़ासिंही ।

चक्राङ्गी–स्त्री० कटुरोहिणी. हंसी. मञ्जिष्ठा. वृषपर्णी. कर्क्कटशृङ्गी । कटुकी. हंसी चिड़िया. मजीठ. वृषपर्णी. ककड़ासिंही ।

चक्राह्व–स्त्री० मधुपर्णिका । सुदर्शन का पौधा ।

चक्रिका–स्त्री० जानु. शर्करा । घुटना. चीनी ।

चक्री–स्त्री० चक्रमर्द्द । चकवड़ का पौधा

चक्षुस्–पु० दर्शनेन्द्रिय । आंख. चशम ।

चक्षुर्वेष्टन–पु० भद्रमुञ्ज । रामशर. शरपत ।

चक्षुष्य–न० प्रपौण्डरीक । खुशबूदार चीज. पुण्डेरी नाम से प्रसिद्ध है ।

चक्षुश्रवस्–पु० सर्प्प । सांप ।

चक्षुष्य–न० पौण्डरीक (पु) केतकवृक्ष. शोभाञ्जन वृक्ष. रसाञ्जन (त्रि) प्रियदर्शन । कमल. केवड़ा का पेड़. सुहाजने का पेड़. सुरमा. खुशनुमा ।

चक्षुष्या–स्त्री० कुलत्थिका. सुभगा. अजशृङ्गी. [illegible]का । कुलथी. [illegible] औरत. मेढ़ासिंही. जङ्गली कुलथी ।

चच–पु० रक्तैरण्ड । लाल एरण्डा ।

चञ्चल–पु० राजमाषान्न । लोबिया ।

चञ्चला–स्त्री० विद्युत. पिप्पली । बर्क. पिपली ।

चञ्चु–स्त्री० चञ्चु (पु) दीर्घपत्राशाक । चोंच चेवना का शाग ।

चञ्चुकी–स्त्री० चिञ्चाशाक चेवनाका शाग

चटक–पु० गृहपक्षी (स्त्री)(का) पिप्पलीमूल । गरगवा चिड़िया. पिपलामूल ।

चटु–पु० उदर । पेट ।

चणक–पु० हरिमन्थ. शस्य । चना. छोला।

चणकशक्तव–पु० चणसक्तू । चने के सत्तू ।

चणकशाक–न० सकलप्रिय शाक । चने का शाग ।

चणकाम्ल–न० चणकलोणी। चने की लोनी

चणकयारोटिका–स्त्री० चणकरोटिका । चने की रोटी ।

चणिका–स्त्री० अतसी । अलसी । तीसी ।

चण्ड–पु. तिन्तिड़ीवृक्ष (स्त्री) दुर्गा. लताविशेष । इमली का दरख्त. देवी. एक खाश बेल ।

चण्डान्त–पु० रक्तकरवीर वृक्ष । सुरख कनयर का पेड़ ।

चतुरङ्गुल–पु० आरग्वधवृक्ष । अमिलतास. किरवार. चाक्सू का वृक्ष ।

चतुर्द्दश–पु० चाङ्गेरीसदृश शाकविशेष । चौपतिआ शाग ।

चतुरम्ल–न० १ अम्लबेत. २ विषाम्ल. ३ जम्भीरी निम्बू ४ कागदी निम्बू ।

चतुर्थकज्वर–पु० चौथिया. चौथे दिन आने वाला ज्वर ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

चतुर्बीज—न० १ मेथी. २ चन्दशूर. ३ कलोंजी. ४ अजवाइन । चारदाना ।

चतुरूषण—न० शुण्ठी १. पिपली २. मिरच ३. पिपलामूल ४ ।

चदिर—पु० हस्ती. चन्द्र. कर्पूर. सर्प । फील. माहताब. काफूर. सांप. ।

चन्दन—न० श्वेतचन्दन. रक्तचन्दन । सुपेदसन्दल. सुरखसन्दल ।

चन्द्र—पु० स्वर्ण. जल. कर्पूर । सोना. पानी. काफूर (पु०) कम्बीला. वज्र । कबीला. हीरा ।

चन्द्रक—पु० नख (न०) सितमरिच । नखून. सुपेदमिरच ।

चन्द्रकला—स्त्री० चन्द्रकान्तमणि ।

चन्द्रकान्ति—न० रजत । चांदी ।

चन्द्रकिन् } पु० मयूर । मोरपक्षी ।
चन्द्रचूड़ }

चन्द्रद्युति—पु० श्वेतचन्दन । सुपेदसन्दल

चन्द्रपुष्पा—स्त्री० कण्टकारी । भटकटैया. कण्डियारी ।

चन्द्रबाला—स्त्री० बृहदेला । बड़ी इलायची

चन्द्रभा—स्त्री० कण्टकारी । भटकटैया. कण्डियारी ।

चन्द्रसञ्ज्ञ—पु० कर्पूर । काफूर ।

चन्द्रसम्भवा—स्त्री० क्षुद्रैला । छोटीइलायची ।

चन्द्रहासा—स्त्री० कण्टकारी । भटकटैया ।

चन्द्रा—स्त्री० एला. गुडूची । इलायची. गुरच. गिलोय ।

चन्द्रिका—स्त्री० स्थूलैला. मल्लिका. श्वेतकण्टकारी. मेथिका. सूक्ष्मैला. चन्द्रशूर । बड़ी इलायची. मालती. सुपेद भटकटैया. मेथी. छोटी इलायची. चन्द्रसुर ।

चन्द्री—स्त्री० कण्टकारी । भटकटैया ।

चपल—पु० पारद. राजमाषान्न । पारा. लोबिआ ।

चपला—स्त्री० पिप्पली । पिपली ।

चविका } स्त्री० चाव । चाभ ।
चव्य } न० ” ”

चमत्कार—पु० अपामार्गवृक्ष । अपुठ कांटे का पौधा । लटजीरा ।

चमरी—स्त्री० चमरीगौ । सुरहगाय ।

चमरिक—पु० कोविदार वृक्ष । सुपेद कचनार का पेड़. पहाड़ी आबनूस का पेड़ ।

चमस—पु० पर्पट. लड्डुक । पापड़ लड्डुआ

चम्पक—न० कदलीफल. (पु) चम्पापुष्प. वृक्षविशेष । केला. चम्बे का फूल. ढेक का दरखत ।

चम्पककदली—स्त्री० कदलीविशेष । एक खास केला ।

चम्पेय—पु० चम्पापुष्प । चम्पा का फूल ।

चरक—पु० पात[illegible] चरक आयुर्वेद ग्रन्थ । चरक ।

चरट—पु० खञ्जनपक्षी । ममोला. खड़रैचा

चरण—पु० पाद । पांव ।

चरणग्रन्थि—स्त्री० गुल्फ । गिट्टा. टखना ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

चरणायुध–पु० तमीचरपक्षी । मुर्ग ।
चरित्रा–स्त्री० तिन्तिडी । इमली ।
चर्प्पटि–स्त्री० पर्पट पापर अन्न की चीज
चर्म्मकषा(सा)–स्त्री० शातला पीत पुष्प वाला सेहुण्डा का पेड़ ।
चर्म्मकरी–स्त्री० रोहिणी ओषधिविशेष।
चर्म्मकरालुक–पु० विदारीकन्द. क्षीरविदारी । गेण्डि. विदारीकन्द ।
चर्म्मकील–न० किणरोग । मोक्कह. बवासीर ।
चर्म्मचटिका–स्त्री० निशाचरपक्षी । चमगीदड़ ।
चर्म्मदूषिका–स्त्री० दद्रू. कुष्ठ दाद. कोहड़
चर्म्महन्त्री–स्त्री० चन्द्रसूरद्रव्य। चन्दसुर।
चलपत्र–पु० पिप्पलवृक्ष। पीपल का पेड़
चषक–न० मधु. मद्य भेद । सहद. खाश शराब ।
चाणक्यमूलक–न० लघुमूलिका छोटी मूरी
चातक–पु० स्वनामख्यातपक्षी। पपीहा।
चातुर्जातक–न० तज १, पत्रज २, इलाइची ३, नागकेशरि ४, ।
चाङ्गेरी–स्त्री० अम्ललोणी । अमलोनिया का शाक ।
चान्द्राख्य–न० आर्द्रक।अदरख। आदी।
चामीकर–न० [illegible] ।
[illegible] पु० नागकेशरौषध। नागकेशरि।
चाम्पेयक–न० किञ्जल्क । केशर ।
चार–न० कृत्रिमविष. (पु) प्रियालवृक्ष । बनावटी जहर. चिरोंजी का पेड़
चारी–स्त्री० हिलमोचिकावृक्ष । हुरहुर का पेड़ ।
चारुकेशरा–स्त्री० सेवती। सेवतीगुलाब।
चारुक–पु० शरबीज ।
चालन–न० स्थानात् स्थानान्तरं नयनम् । एक जगः से दूसरी जगह लेजाना ।
चाष–पु० स्वर्णचातकपक्षी नीलकण्ठ ।
चिकित्सक–पु० भिषक । तबीब ।
चिकित्सा–स्त्री० रोगप्रतीकार । तिबाबत
चिकिरजल–न० स्रोतोद्भवजल । सोते का पानी (जो बालू हटा के निकालने से हो) ।
चिकुर–पु० केश. सर्प्प. पक्षीभेद. वृक्षभेद । बाल. सांप. खास चिड़िया. खास पेड़ ।
चिक्कण–पु० पूगवृक्ष। सुपारी का दरखत. चिकनी सुपारी ।
चिक्कणी–स्त्री० पूगफल । सुपारी ।
चिक्कस–पु० यवचूर्ण । जव का आटा.
चिचिण्डा–स्त्री० फलशाकविशेष। चचेड़ा की तरकारी ।
चिचोढ़–न० मुस्ताकृति कसेरुकन्दविशेष। कसेरु. कस्यार ।
चिञ्चा–स्त्री० चेवनाशाक. नाड़ी शाक अम्ली का वृक्ष ।
चिञ्चिका–स्त्री० तिन्त्तिड़ी । इमली ।
चित्र–न० कुष्ठविशेष (पु०) एरण्डवृक्ष । अशोकवृक्ष. चित्रकवृक्ष. वर्तिकापक्षी। कोहड़ की बीमारी. सुपेद एरण्ड का

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पेड़. अशोक का पेड़. चीते का पेड़. वटई पक्षी ।

चित्रक–पु० मुचुकुन्दलता । मुकुन्द फूल की बेल ।

चित्रकण्ठ–पु० कपोतपक्षी । कबूतर ।

चित्रतण्डुला–स्त्री० वायुभृङ्ग । वायबिडङ्ग

चित्रपदा–स्त्री० गोधापदी लता ।

चित्रपक्षपाण्डु–पु० पित्तरोषापक्षी ।

चित्रपर्णी–स्त्री० पृष्णिपर्णी । पिठवन. पिथवन ।

चित्रफला–स्त्री० कर्कटीकभेद. मत्स्यविशेष । खीरा. एक खाश मच्छली ।

चित्रभानु–पु० अग्नि. सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आगि. आफताब. आक का पेड़ ।

चित्रमृग–पु० ऐणेय.हरिण। आहू.हरिन.

चित्रमेखल–पु० मयूर । मोरताऊस ।

चित्रलोचना–स्त्री० सारिका पक्षी । मयना चिड़िया ।

चित्रा–स्त्री० मूषिकपर्णी. बृहद्दन्ती. श्यामालता. गण्डदूर्वा. मञ्जिष्ठा. इद्रारुण लता । मूसाकन्नी. बड़ी दत्तूनी का पेड़. श्यामाबेल. दूब. मञ्जीठ. इदोरनि की बेल ।

चित्राङ्ग–न० हिङ्गुल. हरिताल (पु०) चित्रक (त्रि०) रक्तचित्रक. सर्प्प । इंगुरु. हरताल. चीता. लाल चीते का पौधा. सांप ।

चित्राङ्गी–स्त्री० मञ्जिष्ठा. कर्णजलौका । मञ्जीठ. कानकोल या खनखजूर ।

चित्रोपचित्रा–स्त्री० बृहद्दन्ती । बड़ी दत्तूनि ।

चिपट, चिपिट, चिपिटक, चिपीटक –पु० पृथूक । चिड़वा. चिऊरा. मुरमुरा ।

चिमि(क)–पु० शुकपक्षी. वृक्षविशेष । तोता. खाश पेड़ ।

चिरजीविन्–पु० काक. जीरकवृक्ष । कौवा. जीरे का पेड़ ।

चिरबिल्वक–पु० करञ्जवृक्ष। करञ्ज का पेड़।

चिरभिट–न० गोरक्षकर्कटी । गुरभी. हमुकुरु ।

चिरमेहिन्–पु० गर्द्दभ । गधा ।

चिरम्भण–पु० चिल्ल। चील ।

चिल्ल–पु० चिरम्भणपक्षी (त्रि) क्लिन्नचक्षु । चील. चुंधी आंख ।

चिल्ली–स्त्री० लोध्र. पत्रशाकभेद लोधर. पठानीलोध एक खास पत्र शाक ।

चिल्हकी–स्त्री० चिल्लपक्षी चील ।

चीन–पु० चीनाकव्रीहि । चीना धान. सांवा ।

चीनक–पु० कङ्गुभेद. चीनाकधान्य । चीना. सांवा काकुनि. कंगुनी ।

चीरा–स्त्री० भृङ्ग[illegible] । भ्रींगर ।

चुक्र–न० चुक्र. अमलबेतस. [illegible] [illegible]चा चूक.अमिलबेत ।

चुक्रा–स्त्री० तिन्तिडीवृक्ष । इमली का पेड़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

चुक्रिका–स्त्री० तिन्तिड़ी. अम्ललोणिका. चुक्र । इमली, लूनक का शाक. चूक ।

चुञ्चुक–त्रि० कुचाग्र (पु) स्तनवृत । फितनी. या सिरेपिस्तान, पिस्तान की गुलाइश ।

चुत(ति)–पु० गुदद्वार. भगद्वार । कुस. योनिद्वार ।

चुम्बक–पु० अयस्कान्त प्रस्तर । चुम्बकपत्थर ।

चूड़ाल–न० मस्तक (स्त्री)(ला) तृणविशेष । सिर. खाश घास ।

चूर्णक–पु० सक्तु । सत्तू ।

चूर्णपारद–न० हिंगुलू । ईंगुरु ।

चूर्णि–स्त्री० कपर्द्दक । कौड़ी ।

चूत–पु० आम्र. गुह्यद्वार । आम. योनिद्वार. गुदद्वार ।

चूनी–न० मरकतमणि । चुन्नी. पन्ना रत्न ।

चेतका–स्त्री० जातीलता । चम्बेली ।

चेतकी–स्त्री० हरीतकी । हरीड़ । हर्र ।

चेतना–स्त्री० बुद्धि । अकल ।

चेदार–पु० ज्येष्टिक । गिरगिट ।

चेल–न० वस्त्र(पु)कोल । कपड़ा. फलदार बेर ।

चेलाल–पु० फललताविशेष । खीरे की बेल

चोद–न० त्वक । वस्त्र ।

चो[illegible]दा–स्त्री० वास्तुकाकारा । पला[illegible]की का शाक ।

चौञ्जल–न० चपलजल । पथरीला पानी ।

चौरी–स्त्री० चोरपुष्पी लता ।

च्युति–स्त्री० भग. गुद. क्षरण । कुस. गांड़. झरना ।

च्युप–पु० मुख । चेहरह ।

च्योल–त्रि० अण्डज । जो अण्डेसे पैदाहो ।

(छ)

छग–पु० छाग । बकरा ।

छगण–पु० न० करीष । सूखा गोबर. बिनुआ वा अन्ना कण्डा ।

छगल–पु० छाग । बकरा ।

छगला–स्त्री० पुष्पविशेष ।

छच्छिका–स्त्री० सारहीन तक्र । छांछ. मट्ठा ।

छटाफल–पु० गुवाकवृक्ष । सुपारी का पेड़ ।

छटाभा–स्त्री० विद्युत । बिजुली ।

छत्रा–स्त्री० शिलींध्र. सोआशाक. शतपुष्पा । खूब. सोआशाग. सोंफ ।

छत्राशालेय–पु० सोआशाक । सोआ का शाग ।

छत्रिका–स्त्री० शतपुष्पा । सोंफ ।

छद–पु० पत्र. पक्ष. ग्रन्थिपर्णवृक्ष । पत्ता. पर. गठिवन. इसके फूल स्याह होते हैं ।

छदन–न० पत्र. पक्ष. पिधान. तमालपत्र. तेजपत्र । पत्ता. पर. ढकना, तमाल के पत्ते. तेजपात ।

छदपत्र–पु० भूर्जपत्रवृक्ष । भोजपत्ते का पेड़ ।

छद्मिका–स्त्री० गुडूची । गुरच । गिलोय ।

छन्द–पु० विष । ज़हर ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

छन्दस्–न० मद्य । शराब ।

छर्द्दि–न० (र्द्दी) स्त्री० वमन । कै ।

छर्द्दन–न० वमन. (पु) निम्बवृक्ष । डोकी नीम का पेड़ ।

छल्ली–स्त्री० कुसुमविशेष । एक खाश फूल का नाम ।

छाग–पु० स्त्री० मेष (स्त्री) (गी) अजा । बकरा. बकरी ।

छागदुग्ध } न० छागीपय, बकरी का
छागपय } दूध ।

छागल–पु० छाग । बकरा ।

छागीदधि–न० अजादधि । बकरी का दही ।

छात्र–पु० शिष्य (न) वरटीछत्र सम्भव-मधु । शहद ।

छात्रदर्शन–न० हैयङ्गवीन । ताज़ह म-क्खन. नेनू ।

छात्रा–स्त्री० धान्यक । धनिया ।

छायाजित्–पु० वृद्धदारुक । विधारा का पेड़ ।

छिक्कक–त्रि० नस्य । नसवार. नास ।

छिक्कन–न० क्षुत (स्त्री) (नी) घ्राणदुः-खदा । छींक. तमाकू का पौधा. न-कछिकनी का पौधा ।

छिक्का–स्त्री० क्षुत । छींक ।

छिक्किनी–स्त्री० घ्राणदुःखदावृक्ष । त-माकू का पौधा. नकछिकनी का पौधा ।

छिदि–स्त्री० कुठार । कुल्हारी ।

छिन्नरुहा–स्त्री० गुडूची स्वर्णकेतकी. श-ल्लकी । गिलोइ. ज़र्दकेतकी. सेही ।

छिन्ना–स्त्री० गुडूची । गिलोय. गुरच ।

छिन्नोद्भवा–स्त्री० गुडूची । गिलोय. गुरच

छिलिहिण्ड–पु० पातालगरुड़ी । छिर-हटा. छरेहटा ।

छुप–पु० क्षुप । झाड़ी ।

छुरिका–स्त्री० अस्त्रविशेष. पलक्याशाक छूरी. पलाकी का साग ।

छेदिक–पु० वेत्र. वेतस । छड़ी. बेंत ।

छेदु–पु० सोमराजी वृक्ष । बाकुची का पेड़ ।

छेलिका–स्त्री० अजा । बकरी ।

छोलङ्ग–न० जम्बीर. निम्बू । गिलगिल. चकोतरा ।

ज

जकुट–न० वार्ताकुपुष्प । बैंगन का फूल ।

जगल–पु० सुराकल्प. मदनवृक्ष । मदिरा. मयनफल का पेड़ ।

जघन–न० वक्षण. कटिदेश. ऊरुस्थल । औरतों की कमर या गाली. कमर. जांघपाट ।

जघनफल–न० कटुम्भरीवृक्ष । कठूमरि ।

जङ्गम–त्रि० अस्थावर । मुतहर्रिक । चलने वाला ।

जङ्गुल–न० विष । ज़हर ।

जङ्घा–स्त्री० गुल्फोदूर्ध्वजानु अधो... सक्थि । जांघ ।

जङ्घाल–पु० एण । हरिण ।

जट–पु० प्लक्षवृक्ष । पाकरिया का पेड़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जटा—स्त्री० जटामांसी. रुद्रजटा. शतावरी. भूम्यामलकी । जटामांसी. शतावरी. भुईआंवला ।

जटाजूट—पु० रुद्रजटा । खास एक बूटी. जटामासी ।

जटामांसी—स्त्री० रुद्रजटा. गन्धमासी । जटामासी ।

जटायु—पु० गुग्गुलु । गूगल ।

जटाल—पु० कर्चूर. वटवृक्ष. मुष्कक. गुग्गुलु । कचूर. वर का पेड़ । कठपाण्डरि. गूगल ।

जटाला—स्त्री० जटामांसी । जटामासी ।

जटि—पु० प्लक्ष का वृक्ष । पिलखन का पेड़ । पाकरि का पेड़ ।

जटिल—पु० उग्रगन्धा. षड्ग्रन्था । बच ।

जटिला—स्त्री० जटामांसी । जटामांसी ।

जठर—पु० उदर । पेट ।

जड़—न० जल. शीशक । पानी. शीशा ।

जडुल—पु० देहस्थिततिलक । देहका तिल ।

जतु—न० वृक्षनिर्यासविशेष. लाक्षा लाख ।

जतुक—न० हिङ्गू. लाक्षा । हींग. लाख ।

जतुका—स्त्री० पद्मावती. सुगन्धद्रव्य. चर्मचटिका । पर्पटी खुशबूदार चीज़ उत्तर में मशहूर है. चमगीदड़ पखेरू

जतुकृत } स्त्री० पद्मावती. पर्पटी. सुजतुकृष्णा } गन्धद्रव्य उत्तर में प्रसिद्ध है

जतुनी—स्त्री० चर्मचटिका । चमगीदड़ ।

जतुमुख—पु० वार्षिकधान्य । वर्षाती धान विशेष ।

जननी—स्त्री० माता. चर्मचटी. मञ्जिष्ठा. यूथिका. अलक्तक. जटामांसी. पर्पटी । मा. चमगीदड़. मजीठ. जूही. लाख का रस. महावरू जटामांसी. पद्मावती सुगन्धद्रव्य उत्तर में प्रसिद्ध है ।

जनि—स्त्री० पर्पटी. पद्मावती. जनी नाम गन्धद्रव्य ।

जनी—स्त्री० पर्पटी । पद्मावती. सीमन्तिनी. लाक्षा । जनीना सुगन्धद्रव्य. पर्पटी नाम से प्रसिद्ध है. हासिल. लाख ।

जनेष्टा—स्त्री० जतुका. वृद्धिनाम औषधि. जातिपुष्प. हरिद्रा । लाख. वृद्धिबूटी. चमेली का फूल. हलदी ।

जन्तुका—स्त्री० नाड़ीहीङ्गू. जतुका । एक किसम की हींग. लाख ।

जन्तुघ्न } न० विडङ्ग. हिङ्गू (पु) जजन्तुनाशन } म्बीर । वायविडंग, हीङ्ग. जम्बीरीनिम्बू ।

जन्तुफल—पु० उदुम्बरवृक्ष । गूलर का पौधा

जपा—स्त्री० जवापुष्पवृक्ष । दुपहरी के फूल का पौधा. ओड़हुल. गुड़हल. सांपी ।

जम्बु—न० जम्बुफल । जामन. जमुनी ।

जम्बुक—पु० शृगाल. जम्बुफलवृक्ष. स्वर्णकेतकी । सियार. जामुन का पेड़. ज़र्द केवड़ा ।

जम्बुकप्रिय—न० भूस्तृण । भूघास ।

जम्बूल—पु० जम्बूवृक्ष. केतकीवृक्ष । जामुन का दरखत. केवड़ा का दरखत ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जम्भ–पु० जम्बीर. हनु. तृण । जंबीरी निम्बू. दाढी. दांत. घास ।

जम्भक–पु० जम्बीर (स्त्री) (का) जृम्भा । जम्बीरी निम्बू. जम्हाई ।

जम्भन–न० मैथुन । जमा ।

जम्भल–पु० जम्बीर । जम्बीरी निम्बू ।

जम्भारि–पु० अग्नि. वज्र । आग. हीरा वरक ।

जम्भीर, जम्भीरी } पु० जम्बीर । जम्बीरी- स्त्री० निम्बू ।

जय–पु० जयन्ती अगेथि. गनियारि रणि

जयन्तिका–स्त्री० हरिद्रा । हलदी ।

जयन्ती–स्त्री० जया । अगेथि. गनियारि. रणि ।

जयपाल–पु० बृहद्दन्तीवृक्ष । जमालगोटे का पेड़ ।

जया–स्त्री० विजया. जयन्ती । भांग. गांजा. अगेथि. गनियारि. रणि ।

जरण–न० हिङ्गू. कुष्टौषधि (पु) जीरक. कृष्णजीरक. सौवर्चल लवण. कासमर्द्द. हींग. कुट्ठ. सुपेदजीरा. स्याहजीरा. सोंचल निमक. रूसा ।

जरा–स्त्री० वृक्षविशेष ।

जरायुज–त्रि० जरायुगर्भाशय. जरायुणा-जाता जरायुजाः । वोझरी. बच्चेदान से पैदा ।

जरायुस्–पु० गर्भाशय । बच्चेदान ।

जर्जर–पु० शैलज । शिलाजीत ।

जर्त(र्तु) पु० योनि. हस्ती । कुस. हाथी ।

जल–न० तोय. क्षोद. शीतलता । पानी. पेट. सर्द्दी ।

जलकण्टक–पु० पानीफल । सिंघाड़ा ।

जलकपि–पु० शिशुमार । घड़ियाल ।

जलकरङ्क–पु० नारिकेल. पद्म. शङ्ख. मेघ तरङ्ग । नारियल. कमलफूल. शंख. बादल. पानी की लहर ।

जलकल्क–पु० पङ्क । कीचड़. दलदल ।

जलकारिका–स्त्री० लज्जालुलता । लजारु. लाजवन्ती ।

जलज–न० पद्म. शङ्ख (पु) शिशुमारादि मत्स्य. हिज्जलवृक्ष. शैवाल । कमल. शंख. मच्छली. घडियाल वगैरह. शेवार. काई ।

जलतण्डुलीय–न० शाकराट् शाक । चवराई का शाग ।

जलतुम्बिका–स्त्री० नदीजाम्बुनी । नदीजामुनि ।

जलद–पु० मेघ. मुस्तक । बादल. नागरमोथा ।

जलधर–पु० मेघमुस्तक. तिलिशवृक्ष । बादल. नागरमोथा. एक खास दरख्त

जलपिप्पली–स्त्री० मत्स्यादिनी. पनि[illegible]ग

जलप्रिय–पु० चातक. मत्स्य । पपीहा. मच्छली ।

जलफल–न० शृङ्गाटक । [illegible] ।

जलबन्धु–पु० मत्स्य. मच्छली ।

जलवेतस–पु० जलवेत । वेत ।

जलमोद–न० उशीर । खसूस ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जलरुह–पु० पद्म । कमल ।

जलसूचि–पु० कङ्कत्रोटमत्स्य. शृङ्गाटक. शिशुमार(स्त्री)जलौका. काक. बक । टेगना मछली. सिंघाड़ा, घड़ियाल. जोंक. कौवा. बगला ।

जलाका–स्त्री० जलौकस । जोंक ।

जलाटन–पु० कङ्कपक्षी (स्त्री) (नी) जलौका । बगला. जोंक ।

जलाबुका–स्त्री० जलौका । जोंक ।

जलायूका–स्त्री० जलौका । जोंक ।

जलालूक–न० पद्मकन्द. शालूक (स्त्री) (का)जलौका । भिसिंड. जोंक ।

जलाशय–पु० शृङ्गाटक (न) उशीर(स्त्री) (या) गुण्डालावृक्ष । सिंघाड़ा. खस्स. गुण्डाला का पेड़ ।

जलिका – स्त्री०
जलूका – स्त्री० जलौका । जोंक ।
जलौकस – त्रि०
जलौका – स्त्री०

जागर – पु० जागरण । जागना ।
जागर्य्या – स्त्री०

जागृवि–पु० अग्नि । आग ।

जाङ्गलमांसवर्ग–त्रि० जंघाल १, विलस्थ २, गुहाशय ३, पर्णमृग ४, विष्किरि ५, प्रतुद ६, प्रसह ७, ग्राम्य ८ ।

जातरूप–[illegible] स्वर्ण. धूस्तरवृक्ष । सोना. धतूरा ।

जातवेदस–पु० अग्नि. चित्रकवृक्ष । आग. चीता का पौधा ।

जाति–स्त्री० अश्वमन्तिका. आमलकी. जातीफल. मालती. काम्पिल. मेथिका. बनमेथिका. बिभीतक । अङ्गीठी. आंवला. जायफल. चम्बेली. कवीला. मेथी. बनमेथी. बहेरा ।

जातिकोश–न० जातीफल । जायफल ।

जातिपीता–स्त्री० स्वर्णकेतकी । जर्द केवड़ा ।

जातिफल – न० जातीफल । जायफल
जातिसार –

जाती–स्त्री० जातीपुष्प । चम्बेली का फूल ।

जातीकोष–न० जातीफल । जायफल ।

जातीपत्री–स्त्री० जायत्री । जलवत्री. जावित्री ।

जातीपीता–स्त्री० स्वर्णजाती । जर्द चम्बेली की बेल ।

जतीफल – न० जायत्री । जलवत्री. जावित्री ।
जातीफलत्वक् –

जातुक–न० हिङ्गु । हींग ।

जानु–पु–न० अष्ठीवत् । घुटना ।

जाम्बव–न० जम्बूफल. सुवर्ण जामुनी सोना ।

जाम्बूनद–न० स्वर्ण. धूस्तर । सोना. धतूरा ।

जायु–पु० औषध । दवाई ।

जारी–स्त्री० औषधविशेष ।

जारणी–स्त्री० स्थूलजीरक । सुपेद जीरा

जाल–पु० कदम्बवृक्ष । कदम का पेड़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जालका–स्त्री० मोचकफल । सेमर का फल
जालकामुका–स्त्री० अर्कपुष्पी. पयस्या । आर्क पुष्पी ।
जालकिनी–स्त्री० मेषी । भेंड़ी. दुम्बी ।
जालिका–स्त्री० जलौका । जोंक ।
जालिनी–स्त्री० धामार्गवा । तोरई ।
जाहक–पु० मार्ज्जार. खट्वा. जलौका । बिलारि. खाट. जोंक ।
जिगत्नु–पु० प्राणवायु । दम. जिन्दगी ।
जिघित्सा–स्त्री० क्षुधा । भूंख ।
जिङ्गिनी–स्त्री० झिङ्गिनी । जिङ्गिनी ।
जिङ्गी–स्त्री० मञ्जिष्ठा । मंजीठ ।
जिह्म–न० तगरवृक्ष । तगर ।
जिह्व–पु० जिह्वा (न) तगरमूल । ज़बान तगर की जड़ ।
जिह्वा–स्त्री० जिह्वा । जबान. जीभ ।
जिह्वाय–पु० कुक्कुर. व्याघ्र. विडाल. भल्लूक चित्रकव्याघ्र । कुत्ता. बाघ. रीछ. बिल्ली. चीता ।
जीव–पु० महानिम्बवृक्ष । बकायन का पेड़ ।
जीवक–पु० अष्टवर्गान्तर्गतऔषधविशेष एक दवाई ।
जीवद–पु० वैद्य । तबीब ।
जीवन–न० जल. नवनीत (पु) क्षुद्रफल का वृक्ष । पानी. मक्खन. पेड़विशेष ।
जीवनकी–स्त्री० हरीतकी । हरीड़ ।
जीवन्त–पु० औषध. प्राण (त्रि) जीवशाक (स्त्री)(न्ती) लताविशेष. गूडुची शमी. वन्दा. डोडी हरीतकी दवाई. जिन्दगी. जिवई का शाक. जीवन्ती. बेल. गिलोय. छीकुरि. बादा. हरीड़
जीवनीया–स्त्री० जिवन्तीशाक । जिवई का साग इसके फूल शर्करा के सदृश होते हैं ।
जीवनीयगण–पु० जीवक १. ऋषभक २. मेदा ३. महामेदा ४. काकोली ५. क्षीरकाकोली ६. ऋद्धी ७. वृद्धी ८. ज्येष्ठीमधु ९. जवती १०. मुद्गपर्णी ११. माषपर्णी १२.
जीवनी–स्त्री० जीवन्तीशाकविशेष । जिवई शाग ।
जीवपुत्र–पु० इङ्गुदीवृक्ष । हिंगोट का दरख़त ।
जीवप्रिया–स्त्री० हरीतकी । हर्रें ।
जीवमन्दिर–न० शरीर । जिस्म ।
जीवा–स्त्री० जीवन्तीवृक्ष. मौर्वी. वचा. भूमि. जीवित. भूषण । जीवन्तीलता चिल्ला–रोदा. वच. जमीन. जिन्दह जेवर ।
जीवातु–न० पु० अन्न. जीवित । अनाज जिंदह ।
जीवात्मन्–पु० देही. प्राण । रूह. जान
जीवाधार–पु० क्षेत्र. पृथिवी. शरीर । खेत. जमीन. जिस्म ।
जीव्या–स्त्री० गोक्षुरदुग्धा. जीवन्ता. [illegible]रीतकी । गुखुरु, जीवन्ती. हरीड़ ।
जीमूत–पु० पर्वत. मेघ. मुस्ता. देवता-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ड़वृक्ष. घोषकलता । पहाड़. बादल. मुस्था. नागरमोथा. ताड़ का वृक्ष. नेनुआ की बेल ।

जीर (क)–पु० जरण । जीरह ।

जीर्ण–पु० जीरक । जीरा ।

जुकुट–पु० कुक्कुर (न) वार्ताकु । कुत्ता बेगन का पौधा ।

जुहुवान–पु० अग्नि । आग. आतिश ।

जूर्णि–स्त्री० सूर्य. देह. ज्वर । आफताब जिस्म. बुखार ।

जूर्ति–स्त्री० ज्वररोग । बुखार की बीमारी

जूषण–न० धववृक्ष । धव का फूल ।

जेलजैत्र–पु० वनमधूकवृक्ष । वनमहुआ का पेड़ ।

जैत्र–पु० पारद । पारा ।

जैपाल–पु० जयपाल । जमाल गोटा ।

जैवातृक–पु० चन्द्र. कर्पूर. पुत्र. भेषज । चांद. काफूर. लड़का. दवाई ।

ज्योतिष्–पु० अग्नि. सूर्य्य. मेथिका । आतश. आफताब. मेथी ।

ज्योतिष्का, ज्योतिष्मती –स्त्री० ज्योतिष्मतीलता । उमजिनी. माल कंगुनी ।

ज्योत्स्नी–स्त्री० पटोलिका. रेणुकामामक गंधद्रव्य. चन्द्रिकायुक्ता रात्रि । ...रेणुका. खुशबूदार चीज़. चांदनी रात ।

ज्वर–पु० ज्वरण । ताप. बुखार. जिसमें पसीना न निकले अग्नि मंद हो जाय देह उष्ण रहे इन्द्रियवैकल्य हो ।

ज्वरघ्न, ज्वरारि –पु० गुडूची. वास्तूक । गुरुच बथूई का शाक ।

ज्वलन–पु० अग्नि. चित्रकवृक्ष । आग. चित्रा का पेड़ ।

ज्वालामुखी–स्त्री० अगिया का वृक्ष ।

झ

झकश्रेष्ठा–स्त्री० मत्स्यविशेष । रोहू मच्छली ।

झटी–स्त्री० क्षुद्रवृक्ष । झाड़ी ।

झरझर–पु० झरझरा । हाथा. झरना ।

झर्झरिका–स्त्री० माषरोटिका । उरद की रोटी ।

झर्झरीक–पु० शरीर । जिस्म ।

झल्लकण्ठ–पु० पारावत । कबूतर ।

झष–न० खिल (पु) मत्स्य. ताप. वन. (स्त्री)(षा) नागबला । थोड़ा. मच्छली. धूप. जङ्गल. गुरशंकरी का पौधा ।

झाटा–स्त्री० भूम्यामलकी. यूथिवृक्ष । भूआंवला. जूही का पेड़ ।

झाटास्त्वच्–पु० तरम्बुज । तरबूज़. कलींदा. हिन्दोना ।

झिङ्गिनी, झिङ्गी –स्त्री० सुनिर्य्यासा । जिंगिनी

झिरिका, झिरि, झिरुका –स्त्री० झिल्ली । झींगुर ।

झुण्ट–पु० स्तम्ब. अप्रकाण्डवृक्ष । खम्बा. झाड़ी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

झूणि–पु० गुवाकविशेष. आकाशवाणी । खाश सुपारी. इलहाम ।

(ञ)

ञ–पु० गायन. घर्घरध्वनि. बलीवर्द्द. शुक्र. वाममति । गाना. घुरघुराना. बैल. वीर्य्य. शुक्र. बेईमान ।

(ट)

टङ्क–पु० कोप. कोष. खड्ग. ग्रावदारण, चतुर्माषक परिमाण. जङ्घा. दर्प. मुद्रा. पु० न० नीलकपित्थ. खनित्र. टङ्कण । गजब. खजानह. शमसेर. ४ चारमासे. जाङ्घ. गरूर. मोहर. स्याह कैथा का पेड़ । कुद्दाल. सोहागा ।

टङ्कण
टङ्क (ङ्ग) सा } न० स्वर्णपाचक क्षार-विशेष । सोहागा ।

टङ्कारी–स्त्री० टङ्कारिनामकऔषधिविशेष

टट्टनी–स्त्री० ज्येष्ठी । छिपकली ।

टिट्टिका–स्त्री० अम्बुसिरीषिका । टिटिणि । जलसिरीषि ।

टुण्टुक–पु० स्योनाकवृक्ष । सोनापाढ़ा ।

(ठ)

ठ–पु० चन्द्रमण्डल । कुर्सैचांद ।

(ड)

डहु–पु० लकुचवृक्ष । वड़हर का पेड़ ।

डालिम–पु० दालिम । अनार ।

डिण्डिम–पु० क्षुद्रवृक्ष । करोंदा का पेड़ ।

डिण्डिर–पु० समुद्रफेन । सामुन्दरीझाग ।

डिण्डिश–पु० रोमशफल । डिण्डिशनाम फल ।

डिण्डीरा–स्त्री० समुद्रफेन । सामुन्दरीझाग

डिम्भ–पु० शिशु. अण्ड. मूर्ख. पशुशावक । बच्चह. अंडह. वेवकूफ़ हैवान का बच्चह ।

डिम्भक–त्रि० वालक । बच्चह ।

डोड
डोडिका } पु० विषमुष्टि । करेरूआ-स्त्री० फल. कोचिला ।

(ढ)

ढ–पु० कुक्कुर. सर्प । कुत्ता. सांप ।

(ण)

ण–पु० ज्ञान. निश्चय. धर्म्म. आत्मा । इलम. यकीन, ईमान. रूह. जीव ।

(त)

तक्र–न० अम्बुसंयुतदधि । मट्ठा. छाछ ।

तक्रपिण्ड–पु० क्षीरशाक । तुषिभरादही ।

तक्रमांस–न० मांसपाकभेद अखनी कवाब

तगर–न० नघुषवृक्ष. मदनवृक्ष । तगर. मयनफल ।

तयक–पु० तडाग । तालाब ।

तडागजल–न० तटाकजल । तालाब का पानी ।

तडिद्वत्–पु० मेघा. मुस्तक । बादल. नागरमुत्था ।

तण्डुल–पु० विडङ्ग. तण्डुलीयपाक । वायविडंग. चावल ।

तण्डुलीय
तण्डुलीबीज
तण्डुलेयक } पु० शाकराट. [illegible] " सा । चवराइश्वा छोटा मरसा ।

तनुत्वक्–स्त्री० स्वादी । दालचीनी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तनुरु(रू)ह—न० रोम । रोंआ ।
तनुस् —न० देह । जिस्म ।
तनू —स्त्री०
तनून—पु० वायु । हवा ।
तनूनप—न० घृत । घी ।
तनूनपाद्—पु० अग्नि. चित्रकवृक्ष । आग. चीता का पेड़ ।
तन्तुक—पु० सर्षप (स्त्री) (की) नाड़ी । सरसों. नाड़ी ।
तन्तुभ—पु० सर्षप. वत्स । सरसों. बछड़ा
तन्तुर(ल)—न० मृणाल । भिस ।
तन्त्रिका —स्त्री० गुडूची । गुरच.
तन्त्री —स्त्री० गिलोय ।
तन्वी—स्त्री० शालपर्णी । अरई ।
तन्तुभः—स्त्री० रक्तसर्षप । सुरख सरसों ।
तपन—पु० सूर्य्य. भल्लातकवृक्ष. ग्रीष्म. ताप. सूर्य्यकान्तमणि. अर्कवृक्ष । आफताव. भेलावां. गरमी. धूप. आतशी शीशह. मदार. या आक का पेड़ ।
तपनीय(क)—न० पु० स्वर्ण । सोना ।
तपनेष्ट—न० ताम्र । तामा तांबा ।
तपस्य—न० कुन्दपुष्प (पु) फाल्गुनमास । कुन्द का फूल. फागुन का महीना ।
तपस्—पु० माघमास. ग्रीष्मकाल । माघ महीना. गरम मौसम् ।
तप[illegible]० तवा । तवा रोटी पकाने का पात्र ।
तपस्विनी—स्त्री० मांसी । जटामासी ।
तपोधन—पु० दमनकवृक्ष । दवना ।
तपोधना—स्त्री० मुंडी । गोरखमुंडी ।
तम—पु० तमालवृक्ष । तमाल का दरखत. पत्रज का पेड़ ।
तमस्विनी—स्त्री० रात्रि. हरिद्रा । रात. हरदी ।
तमा—स्त्री० रजनी. तमालवृक्ष । रात्रि. तमाल का दरखत, पत्रज का पेड़ ।
तमाल—पु० तमालवृक्ष । पत्रज ।
तमालपत्र—न० पत्रक । पत्रज ।
तमोमणि—पु० खद्योत. गोमेदकमणि । पट बीजना, गुजनू. लहसुनिया रत्न
तरकारी—स्त्री० अग्निमन्थ । रणि- अगेथि, गनियारि ।
तरक्ष(क्षु)(क)—पु० व्याघ्रविशेष । हौहा. एक खाश चीता । जवष ।
तरणि—पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफताब. आक का पेड़ मदार का पेड़ ।
तरणिरत्न—न०माणिक्य. सूर्यकान्तमणि । मानकरत्न. आतशीशीशह ।
तरणी—स्त्री० पद्मचारिणी. स्थलकमल । गुलाब. सेवती ।
तरम्बुज—न० फलविशेष । तरबूज़ ।
तरला—स्त्री० यवागू. मधुमक्षिका । जौ की शराब. सहद की मक्खी ।
तरस—न० मांस. गोश्त ।
तरिता—स्त्री० तर्जनी. अहिफेन. आसवा अंगूठे के पास की अंगुली. अफीम. गांजा ।
तरुण—न० कुब्जपुष्प (पु) स्थूलजीरक.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

एरखड (त्रि) युवा. नूतन (स्त्री) (णी) सेवती. युवती । कूजा का फूल. सुपेद जीरा. एरखडा का पेड़. जवान. नया. सेवती. गुलाब. जवान औरत ।

तरणतोय—न० वारुणीमद्य । ताड़ी. सेंधी ।

तर्वट—पु० वत्सर. चक्रमर्द्द । बरस. चकवा.

तर्षण—न० पिपासा । प्यास ।

तल—पु० तालवृक्ष । ताड़ का पेड़ ।

तलित—न० भृष्टमांस । तला हुआ गोश्त ।

तलेक्षण—पु० शूकर. सुअर ।

तस्कर—पु० चौर. कर्ण. मदनवृक्ष । चोर. कान. मयनफल का पेड़ ।

तातन—पु० खञ्जनपक्षी । ममोला ।

तापक—पु० ज्वर । वोखार ।

तापस—न० तमालपत्र. (त्रि) तपस्वी. मदनवृक्ष । पत्रज. तप करने वाला. मयनफल का पेड़ ।

तापसतरु } पु० इङ्गुदीवृक्ष । हिंगोट
तापसद्रुम } „ का दरखत ।

तापसेक्षु—पु० तापसइक्षु । तापसऊख. वहौखा ।

तापसेष्ट—पु० प्रियाल । चिरोंजी का वृक्ष ।

तापहरी—स्त्री० तहरी । ताताहरी ।

तापिच्छा—स्त्री० तमालवृक्ष. पत्रज का पेड़

तापीज } न० सुवर्ण । सोना ।
ताप्य }

तामर—न० जल. घृत । पानी. घी ।

तामरस—न. पद्म. सारस. स्वर्ण. ताम्र । कमल. सारस चिड़िया. सोना. तांवा ।

तामसी—स्त्री० निशा. जटामांसी । रात्रि. जटामासी ।

ताम्बूल—न० पर्ण. नागवल्लरी । पान ।

ताम्बूलवल्ली—स्त्री० नागवल्लरी । पान की बेल ।

ताम्बूली—स्त्री० गुवाकफल. नागवल्ली । पान का पत्ता. सुपारी ।

ताम्र—न० औदुम्बरधातु (पु) कुष्ठरोग । तांवा. कोहड़ की बीमारी ।

ताम्र—पु० बाणवृक्ष । रूसा का पेड़ ।

ताम्रचूड़—पु० न० कुक्कुट । मुर्ग ।

ताम्रचूड़ा—स्त्री० ककुन्दर । कुकरोंधा का पौधा ।

ताम्रत्रपुज—न० कांस्यधातु । कांसा ।

ताम्रपल्लव—पु० अशोकवृक्ष. अशोक का पेड़ ।

ताम्रपुष्प—पु० कांचनारभेद । लाल फूल का कचनार. पहीअबनूस का पेड़ ।

ताम्रपुष्पी—स्त्री० धातकी. पाटला । धव के फूल. धवई. पाखडरि. पाड़रि ।

ताम्रिका—स्त्री० गुंजा । रत्ती. घुंघचिल ।

तार—न० रौप्य. मुक्ता । चांदी. मोती ।

तारका—स्त्री० चक्षुतारा । आंख. आंख की पुतली ।

ताराभ्र—पु० न० कपूर । काफूर ।

तारेय—पु० कच । बाल ।

तार्क्ष्यज } न० रसाञ्जन । रसौत ।
तार्क्ष्यशैल }

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ताल्य–न० हरिताल (पु) तालवृक्ष। हड़ताल. ताड़ का पेड़।

तालक–न० हरताल। हड़तालधातु।

तालज–न० वारुणीमद्य। ताडी. सेंधी।

तालमज्जा–स्त्री० तालफलमज्जा। ताल की गिरी।

तालमूल–स्त्री० श्वेतमुसली। सुपेदमुसरी

तालयन्त्र–न० दो प्रकार के तालयन्त्र।

तालवृन्तक–न० तालपत्रनिर्मित. व्यजन। ताड़ का पंखा।

तालाङ्क–पु० करपत्र. शाकविशेष। आरा. एक किसम का शाक।

तालीश(स)–न० धात्रीपत्र। तालीस. यह भूम्यामलकी के सदृश वृक्ष होता है।

तालु–न० जिह्वेन्द्रियाधिष्ठान। तालु।

तिक्त–न० पर्प्पटिकौषध (पु) कुटजवृक्ष. वरुणवृक्ष। पर्पटी. कुरैया का पेड़. वरुण का पेड़।

तिक्तक–पु० पटोल. चिरतिक्त. कालखदिर. इङ्गुदीवृक्ष. निम्बवृक्ष। परवर. चिरायता. स्याहखैरा. हिङ्गोट का पेड़

तिक्तका–स्त्री० चेवनाशाक.। नाडीचवतशाग।

तिक्तदुग्धा–स्त्री० क्षीरिणी. जलशृङ्गी।

तिक्तशाक–पु० वरुणवृक्ष। वरुन का पेड़।

तिक्ता–स्त्री० कटुकी। कुटकी औषध।

[इ]ङ्गुद–पु० इङ्गुदीवृक्ष। हिङ्गोट का पेड़।

तितिभ–पु० इन्द्रगोपकीट। बीरवहूटी कीड़ा।

तित्तिर
तित्तिरि } पु० तित्तिरिपक्षी। तीतर " चिड़िया।

तिथ–पु० अग्नि. काम. काल. प्रावृट्काल। आतिश. शहवत. वक्त. वरसात का मोसिम।

तिनिश–पु० दुर्वञ्जुल। शीशम. सुपेदा. तिरच्छ।

तिन्तिड़ी–स्त्री० अम्लिकावृक्ष (त्रि) अम्लरस। इमली. तुरशजायकह।

तिन्तिड़ीका
तिन्तिलि(ली)का
तिन्तिली } स्त्री० तिन्तिड़ीवृक्ष इमली का पेड़।

तिन्तिलीफल–न० जयपाल। जमालगोटा

तिन्दु–पु० तिन्दुकवृक्ष। आबनूस का पेड़

तिन्दुक–न० कर्षपरिमाण (पु) तिन्दुकवृक्ष. कुलकवृक्ष। सोलह मासे वजन. तेन्दू का पेड़. आबनूस का पेड़. आबनूस के फल. कुचिला. मकरतेंदुआ का पेड़।

तिमिव–पु० ग्राम्यकर्क्कटी। कद्दू या तरबूज।

तिरीटक–न० शावरलोध्र। सावरलोध।

तिल–पु० स्वनामख्यातशस्य. गात्रचिन्ह। तिल. देह का छोटासा काला निशान।

तिलक–न० क्लोम. कृष्णवर्ण. सौवर्चल. (पु) पुष्पवृक्षविशेष. श्वास। तिल. स्याहनिमक. सोचल. खास एक फूलदार पेड़. खास बीमारी।

तिलकट–पु० तिलचूर्ण। तिलकुटा।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तिलकिट्ट, तिलकुट्ट —न० तिलमल । खल. पीना

तिलखलि—पु० तिलमल । खल पीना ।

तिलतैल—न० तिल का तेल ।

तिलपर्ण—न० रक्तचन्दन. तिलवृक्षपत्र । सुरख चन्दन. तिलों का पता ।

तिलभेद—पु० आफूकवृक्षबीज । पोस्ता.

तिलित्स—पु० सर्पविशेष । गोह सांप ।

तिल्व(क)—पु० लोघ्र. श्वेतलोघ्र. रक्तलोघ्र लोध का पेड़ । सुपेद लोध सुरख लोध

तिष्ठद्गु—पु० सन्ध्याकाल । शाम का वक्त ।

तिष्य—पु० पौषमास । पूस का मास ।

तिष्यपुष्पा, तिष्यफला, तिष्या —स्त्री० आंमलकी । आंमला

तीक्ष्ण—न० खर. विष. लोह. समुद्रलवण (पु) यवक्षार. श्वेतकुश. क्षुद्रमूलिका । तेज. जहर. लोहा. सेन्धा या सामुंद्री निमक. जवाखार. सुपेदकुश. छोटी मूली ।

तीक्ष्णकण्टक—पु० धुस्तूर. बर्बुर. करीर. इङ्गुदी । धत्तूरा. बबूर. करीर. हिंगोट ।

तीक्ष्णगन्धा—स्त्री० राजिका । राई.

तीक्ष्णतण्डुला—स्त्री० पिप्पली । पिपली

तीक्ष्णपुष्प—न० लवङ्ग । लोंग ।

तीक्ष्णपुष्पा—स्त्री० केतकी । केवड़ा ।

तीक्ष्णमूल—पु० शिग्रु. कुलञ्जन । सुहांजने का पेड़. कुलींजन ।

तीक्ष्णशूक—पु० यव । जौ अनाज ।

तीक्ष्णा—स्त्री० छिक्कनी । नकछिकनी का पौधा ।

तीव्र—न० त्रपु. लाक्षा. लोह (त्रि) कटु (पु) शिव (स्त्री) (व्रा) तुलसी. गण्डदूर्वा. राजिका. जस्ता. लाख. लोह. कड़वा. परब्रह्म. तुलसी का पेड़. गण्डदूब. राई ।

तीर—पु० त्रपु. रङ्ग. लाक्षा । लाख. राङ्गा. टीन ।

तुगा—स्त्री० तार्क्ष्य. शमीवृक्ष । वंशलोचन. तवासीर. छीकुरि का पेड़ ।

तुगाक्षीरी—स्त्री० वंशलोचन । तवाशीर ।

तुगी—स्त्री० बर्बरीवृक्ष । बबई का पौधा

तुङ्ग—पु० पुन्नागवृक्ष. नारिकेल (न) किञ्जलक । नरियल का दरखत नरियल. फूल की तिरी ।

तुङ्गक—पु० पुन्नागवृक्ष । नारियल का दरखत ।

तुङ्गस्कन्धफला—स्त्री० नारिकेल । नरियल का पेड़ ।

तुङ्गी—स्त्री० हरिद्रा. वर्बरा. रजनी । हलदी. ख्याजबू बबई. रात ।

तुच्छा—स्त्री० क्षुद्रैला. नीलिकावृक्ष । छोटी इलाइची. नील का पौधा ।

तुणि, तुणिक —पु० तुन्नवृक्ष । तुन का दरखत

तुण्ड (क)—पु० मुख । मुह चेहरा ।

तुण्डकेरी—स्त्री० कर्पासी । कपास ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तुण्ड-पु० मुख (स्त्री) नाभि । मुह. नाफ. तोंदी ।

तुण्डिकेरी } स्त्री० विम्बी । कुंदुरु ।
तुण्डी }

तुत्थ-न० वितुन्नक । तूतिआ. नीलाथोथा

तुत्थक-न० रसक । खपरिआ ।

तुत्था-स्त्री० रसक । खपरिआ ।

तुन्नक-पु० तुणिवृक्ष । तुन का दरखत ।

तुन्द-पु० उदर । पेट. शिकम ।

तुन्दि-न० उदर (स्त्री) नाभि । पेट. नाफ ।

तुम्ब (क)-पु० अलाबू । तूंबा. कद्दू ।

तुम्बा } स्त्री० अलाबू । तूम्बी ।
तुम्बी }

तुम्बरु } न० कुस्तुम्बुरु (पु० न०) सौरभ
तुम्बुरु } धनिया. तुम्बुरुबीज ।

तुरग } -पु० चित्त. घोटक (स्त्री) (गी)
तुरङ्ग } घोटकी । दिल. घोड़ा.घोड़ी ।

तुरुष्क-पु० शिलारस । लोहबान ।

तुलसी-स्त्री० सुरसा । तुलसी का पौधा ।

तुवरी-स्त्री० आढ़की. सौराष्ट्रजमृत्तिका. शमीधान. बर्बरीवृक्ष. तिडिसा. राजिका । अरहर. सोरठीमाटी. छीमी की धान्य. बबई. तारामीरा. राई. रयूड़ा ।

तुवरीतैल-न० राजिकातैल । राई का तेल. लाही का तेल ।

तुष-पु० तुस । धान का छिलका ।

तुषार-पु० हेम । बर्फ ।

तुहिन-न० हिम. ज्योत्स्ना । बरफ. चान्दनी ।

तुहिनांशु-पु० चन्द्र. कर्पूर । चांद. काफूर

तूणिन् } पु० नन्दीवृक्ष । तुन का दरख्त
तूणी } स्त्री० „ । „

तूत-पु० ब्रह्मदारुवृक्ष । तूत. सहतूत का दरख्त ।

तूरी-स्त्री० धूस्तुरवृक्ष । धत्तूरा ।

तूल-न० पालाशवृक्ष (स्त्री) (ली) नीलिकावृक्ष । ढाक का पेड़. नील का पौधा ।

तूलिनी-स्त्री० शाल्मलीवृक्ष । सेमरे का पेड़ ।

तृखथ-न० जातीफल । जायफल ।

तृणद्रुम-पु० ताल. गुवाक. ताली. केतकी. खर्जूर. नारिकेल. हिन्ताल । ताड़. सुपारी. ताड़ी. केवड़ा. खजूर. नारियल. हींग का पेड़ ।

तृणध्वज-पु० वंश । वांश का पेड़ ।

तृणधान्य-न० कुधान्य । ढेढ़र. सांवा ।

तृणराज-पु० नारिकेलवृक्ष. तालवृक्ष । नारियल का पेड़. ताड़ का पेड़ ।

तृणसारा-स्त्री० कदली । केला ।

तृणान्त-न० नीवारधान्य । तीनी. पसहीधान ।

तृतीयकज्वर-पु० जो तीसरे दिन ज्वर आवे तिजारी. अन्तरा ।

तृपला-स्त्री० लता. त्रिफलाविशेष । १ आंवला. २ बहेड़ा. ३ हरीड़. इन ३

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

को त्रिफला कहते हैं ।

तृप्र–पु० घृत । घी ।

तृषा–स्त्री० पिपासा । प्यास ।

तृषाह–न० जल (स्त्री) (हा) शतपुष्पा। पानी. सौंफ ।

तृषित–त्रि० सतृट् (न) तृष्णा । प्यासा. प्यास ।

तृष्णा–स्त्री० पानेच्छा. रोगविशेष । प्यास. खाश बीमारी ।

तेजस्–न० नवनीत. अग्नि. सुवर्ण. मज्जा. पित्त. असहन. पराक्रम. दीप्ति. प्रभाव । मक्खन. आतिश. सोना. मिज्ज. सफ़रा. नाबरदाश्तगी. ज़ोर. चमक. ताक़त ।

तेजन–पु० वंश. शर । बांश शरपत ।

तेजनी–स्त्री० तेजबल्कल. तेजस्विनी । तेजबल्कल. तज. कल्मीतज. दालचीनी

तेजल–पु० कपिञ्जल पक्षी । तीत्तर ।

तेजवती } स्त्री० तेजोह्वा । तेजबल्कल.
तेजस्विनी } कल्मीतज. दालचीनी ।

तेजिनी–स्त्री० मूर्वा. मधुरसा । चूर्णहार. मुरहरी ।

तेजोह्वा–स्त्री० तेजस्विनी । तेजबल्कल. कल्मीतज. तज. दालचीनी ।

तैक्ष्ण्य } न० तीक्ष्णता. निदाघ ।
तैग्म्य } तीखापन . घाम ।

तैजस–न० घृत. बल. धातु. द्रव्य. जीव । घी. ज़ोर. धात. जीव ।

तैत्तिर–न० तित्तिरीगण. (पु०) तित्तरी पक्षी. गण्डक । तीतरों का झुण्ड. तीत्तर. गैंड़ा ।

तैल–न० तिलहक. स्नेह । लोहबान. तेल ।

तैलपर्णक–न० ग्रन्थिपर्ण । गठिवन ।

तैलपर्णिक–न० पु० हरिचन्दन. श्वेतचन्दन । जर्द्दसन्दल. सुपेदसन्दल. ।

तैलफल–पु० इङ्गुदी. बिभीतक । हिंगोट. बहेड़ा ।

तैलमाली–स्त्री० वर्त्तिका । बत्ती. पलीता

तैलसाधन–न० गन्धद्रव्य । काकोल ।

तैलाटी–स्त्री० वरटा । बिरनी. बरैंया. जम्बूरह ।

तैष–पु० पौषमास । पूस का महीना ।

तोक्म–न० कर्णमल. मेघ. (पु) हरिद्यव. हरिद्वर्ण. पल्लवाङ्कुर । कान की मैल. बादल. हरे जौ. सब्ज रङ्ग. पत्तों की अङ्गूरी ।

तोद–पु० व्यथा । दर्द ।

तोदन–न० तोत्र. व्यथा । छड़ी. दर्द ।

तोय–न० जल । पानी. आब ।

तोयद–पु० मेघ. मुस्तक (न०) घृत । बादल. नागरमुस्था. घी ।

तोयधि } पु० समुद्र । समुन्दर. बहर ।
तोयनिधि }

तोरण–न० कन्धरा (पु० न०) बहिर्द्वार । कांधा. बरान्दा. बाहर का दरवाजा. छज्जा ।

तोरमाक्षिक–न० स्वर्णमाक्षिकधातु । सोनामाखी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तोल–पु०न० षोड़शमाषक. षण्णवति रक्तिका । तोला ।

तौतिक–न० मुक्ता (पु) शुक्ति । मोती. सिप्पी ।

तौषार–न० तुषारजल. शीतता । बर्फ का पानी. सर्दी ।

त्रपु–न० सीसकधातु । सीसा. टीन ।

त्रपुटी–स्त्री० सूक्ष्मैला । छोटी इलायची ।

त्रपुस्–न० रङ्गधातु । रांगा ।

त्रप्स्य–न० द्रप्स । पतला दही. मठा ।

त्रयी–स्त्री० सोमराजीवृक्ष । वाकुची का पेड़ ।

त्रयीतनु–पु० सूर्य्य । आफताब ।

त्रसरेणु–पु० स्त्री० त्रिंशत्परमाणुपरिमाण । ३० परिमाणु जितना ।

त्रायमाणा(ना), त्रायन्ती –स्त्री० बलभद्रा । त्रायमाण ।

त्रिक–न० पृष्ठवंशाधार. त्रिफला. त्रिकुटा. त्रिमद. ओम्. त्रय. त्रिपथसंस्थान । पीठ की हड्डी का निचला हिस्सा. (हरीड़. बहेड़ा आंवला) (सोंठ. पीपली. मरिच) (विद्या अवस्था. धन) प्रणवनाम परमेश्वर का. तीन. तीनरास्ते जहां इकट्ठे हों ।

त्रिकटु–न० त्र्यूषण । सोंठि. पीपल. मिरच ।

त्रिकण्ट (क)–पु० गोक्षुर । गुखुरू ।

त्रिकोणफल–न० शृङ्गाटकफल । सिंघाड़ा

त्रिजात–न० तज. पत्रज. इलायची ।

त्रिदन्ती–स्त्री० महामेदा ।

त्रिपदा–स्त्री० हंसपदीलता । करैंबू ।

त्रिपर्ण–पु० पलाशवृक्ष । ढांख का पेड़ ।

त्रिपर्णी–स्त्री० शालिपर्णी । सरिवन ।

त्रिपाद्–पु० ज्वर । ताप ।

त्रिपादिका–स्त्री० हंसपदीलता । करैंबू ।

त्रिपुटा–स्त्री० मल्लिका. सूक्ष्मैला. त्रिवृत. कर्णस्फोटा. स्थूलैला. कलायू । चमेली. छोटी इलायची. निशोथ. तिरबी. कनफोड़ा. बड़ी इलायची. खेसारी. मटर ।

त्रिफला–स्त्री० बरा । आंवला. हरीड़. बहेड़ा ।

त्रियामा–स्त्री० रात्रि. हरिद्रा. यमुना. नीली. कृष्णत्रिवृत । रात. हल्दी. जमुना नदी. नील. श्यामनिशोथ ।

त्रिरेख–पु० शङ्ख । शंख ।

त्रिवृतश्यामा–स्त्री० कृष्णत्रिवृता । काला निशोथ ।

त्रिवृता–स्त्री० श्वेतत्रिवृता । सुपेद निशोथ ।

त्रिशङ्कु–पु० बिडाल. शलभ. चातक. खद्योत । बिल्ली. टीड़ी. पपीहा. पटबीजना. जुगनू ।

त्रिशिख–पु० बिल्ववृक्ष । बेल का पेड़ ।

त्रिशिर–पु० ज्वर । ताप । बुखार ।

त्रिसंध्या–स्त्री० बन्धूकपुष्पवृक्ष । ओड़हुल. सांभी. दुपहरिआ ।

त्रुटि–स्त्री० क्षुद्रैला । छोटी इलायची ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

त्र्यूषण–न० त्रिकटु । (सोंठि. पीपल. मिरच) ।

त्रैलोक्यविजया–स्त्री० भङ्गा । भांग ।

त्रोत्र–न० व्याधिविशेष । एक किस्म की बीमारी ।

त्वच्–स्त्री० इन्द्रियविशेष. वल्कल. चर्म्म गुड़त्वच् । खाल. दरखत का छिकला. चमड़ा. दालचीनी ।

त्वक्कर्म्मा–स्त्री० वंश । वांस का पेड़ ।

त्वक्क्षीरी–स्त्री० वंशलोचन । वंशरोचन तबासीर ।

त्वक्पत्र–न० गुड़त्वच् । दालचीनी ।

त्वक्पत्री–स्त्री० हिङ्गुपत्री । हिंगुआ ।

त्वक्पुष्प–न० रोमाञ्च. किलास । रोंआं फूटना ।

त्वक्सार–पु० वंश. गुड़त्वक्. शोणवृक्ष सरन्ध्रवंश । बांस. दारचीनी. सोना दरखत. सुरखदार वांस ।

त्वग्ज–पु० रोम. रुधिर । बाल. खून ।

त्वक्सुगन्ध–पु० नारङ्ग । नारङ्गी ।

त्वक्स्वादी–स्त्री० दारुसिता । दारचीनी दालचीनी ।

त्वच–न० वृक्षविशेष (स्त्री) (चा) त्वक्स्वादी । दारचीनीवृक्ष दालचीनीछाल

त्वचिसार–पु० वंश । वांस तालवृक्ष ।

त्वाष्ट्री–स्त्री० मण्डूकपर्णी । ब्रह्ममाण्डूकी

(थ)

थ–पु० व्याधिविशेष ।

थुल्क–न० मेषी । मेढी. भेंड़ी ।

(द)

द–पु० दन्त । दान्त ।

दंश–पु० कीटविशेष. सर्प्पक्षत. दन्त । मच्छड. सांप का डंक. दान्त ।

दंष्ट्रा, दंष्ट्रिका –स्त्री० दन्तविशेष । दाढ़. डाढ़ ।

दक–न० जल । पानी. आब ।

दक्ष–पु० ताम्रचूडपक्षी. द्रुमभेद. अग्नि. दक्षिणहस्त (स्त्री) (क्षा) पृथिवी । मुरग. वृक्षभेद. आग. दाहिना हाथ. जमीन ।

दक्षाय्य–पु० गरुड़. गृध्र । पिढैया ढंख. गीध ।

दक्षिणायन–न० याम्यायन । राखुलजदी ।

दग्ध–न० कतृण (स्त्री) (ग्धा) वृक्षविशेष खराब घास. खाश पेड़ ।

दग्धमत्स्य–पु० भर्जितमत्स्य । भुनी हुई मच्छली ।

दण्ड–पु० अश्व. मन्थान । घोड़ा. मथानी

दण्डपाल–पु० अर्द्धशफरमत्स्य । । एक खास छोटी मच्छली ।

दण्डविष्कम्भ–स्त्री० दधिमन्थनदण्ड । मथनियां ।

दण्डहस्ती–स्त्री० पिण्डतगर ।

दण्डाहत–पु० तक्र । छाछ ।

दण्डिक–पु० दण्डमत्स्य । एक खाश मच्छली ।

दण्डिन्–पु० दमनकवृक्ष । ब्रह्मदण्डीबूटी

दत्–पु० दन्त । दान्त ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

दद्रु–पु० रोगविशेष । दाद की बीमारी

दद्रुघ्न–पु० चक्रमर्द । चकवड़ का वृक्ष ।

दद्रुघ्नपत्र–न० एडगजशाक । चकवड़ी का शाग ।

दधि–न० श्रीवास. वासन. क्षीरोत्तराव-स्थाभाव । राल. घर. दही ।

दधिकूर्चिका–स्त्री० आमिक्षा । गरम दूध में खट्टा दही डाल देने से जो एक चीज़ बन जाती है।

दधित्थ } पु० कपित्थवृक्ष । कैथा का
दधिफल } पेड़. कैथी का पेड़ ।

दधिसक्तव–पु० करम्भ । दही से मिले हुये सत्तू ।

दधिसर } पु० दधिस्नेह. नवनीत
दधिसार } दही की मलाई. मक्खन नेनू

दन्त } पु० गजदन्त. चर्वणसाधना-
दन्तक } स्थि । हाथीदान्त. दान्त ।

दन्तच्छद–पु० ओष्ठ । होंठ ।

दन्तधावन–पु० खदिर । खैर ।

दन्तपुप्पुटक–पु० दंतमांस फूलने का रोग

दन्तबीजी–स्त्री० दाडिम । अनार ।

दन्तवेष्टक–पु० मसूढ़ोंसे रक्त और पीब निकले तथा दन्त हिलें ।

दन्तवैदर्भ–पु० घिसने से मसूढ़ों में शोथ हो और दन्त हिलें ।

दन्तशठ–पु० कपित्थ. जम्भीर. अम्लिका । कैथा. जम्भीरी निम्बू. इमली ।

दन्तशठा–स्त्री० लोणिकाशाक । अम्लोनी

दन्तशर्करा–स्त्री० दान्तों से निकला मैल ।

दन्तहर्ष–स्त्री० दन्त शीत उष्ण का स्पर्श न सह सकें ।

दन्तिन्–स्त्री० दन्तिनी । मूसेकन्नीबूटी ।

दन्तिबीज–न० जयपाल । जमालगोटा ।

दन्ती–स्त्री० बृहद्दन्ती । बड़ी दतूनि का पेड़ ।

दन्दश–पु० दशन । दान्त ।

दन्दशूक–पु० सर्प ।

दमन(क)–पु० कुन्दपुष्पलता. मुनिपुत्र-पुष्प । कुन्द की बेल. दवना फूल ।

दमुनस्–पु० अग्नि । आग ।

दर–न० शङ्ख । शंख ।

दर्दुर–पु० मेघ. (पु० स्त्री०) भेक । बादल. मेंढक–बेंग ।

दर्प–पु० कस्तूरी. ऊष्ण । कस्तूरी. घाम

दर्पण–पु० मुकुर (न) चक्षु । आइना. आंख

दर्भ–पु० कुशतृण. काशतृण । कुशा-काहीघास. काश ।

दर्भाह्वय–पु० मुञ्ज । मूञ्ज ।

दर्शन–न० पु० नयन. दर्पण । आंख. आइना ।

दल–पु० न० घन. तमालपत्र । बादल. तमाल का पत्ता ।

दलप–न० पु० स्वर्ण । सोना ।

दलहीनफला–स्त्री० सुलेमानिपिण्डख-जूर । सुलेमानी खज्जी ।

दलाढक–पु० स्वयञ्जाततिल. कृष्णी. गैरिक. फेन. नागकेशर. कुन्द. शिरीष. जंगलीतिल. एड़ी. गेरीमिट्टी. झाग

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नागकेशर. कुन्द की बेल. खिरस का दरखत ।

दशन—पु० न० दन्त । दान्त ।

दशमूल—न० पाचनविशेष यथा-बिल्व. १ श्योनाक २ गम्भारी ३ पाटला ४ गणकारिका. ५ शालपर्णी. ६ बृहती. ७ क्षय. ८ पृश्निपर्णी. ९ गोक्षुर १० । बेल. सोनापाढ़ा. खम्भारि. पाखडरि. रणि. सरवन. छोटी भटकटया. बड़ी भटकटैया. पिथवन. गुखुरु ।

दशाङ्गुल—न० खर्बूजफल । खर्बूजा ।

दहन—पु. अग्नि. चित्रक. भल्लातक. (त्रि) कपोत । आतश. चित्रा का पेड़. भेलावां कबूत्तर ।

दहनकेतन—पु० धूम । धुआं ।

दहर—पु० मूषिक. बालक. सूक्ष्महृदयाकाश । मूसा. लड़का. दिल ।

दाकी—स्त्री० पक्व आढकी । दाल. दलि. पहिति ।

दाडिम—त्रि० दन्तबीजीवृक्ष (न) दन्तबीजी फल (स्त्री) (मी) एल । अनार का पेड़ अनार. इलायची ।

दाडिमपुष्पक—पु० रोही । रोहिंतक ।

दाढिका—स्त्री० दंष्ट्रा. श्मश्रु । डाढ़. दाढ़ी ।

दात्यूह—पु० जलकाक. चातक. मेघ । पपीहा. पनकुकड़ी. बादल ।

दात्यौह—पु० दात्यूह । पपीहा ।

दाधिक—त्रि० दधिसंस्कृतवस्तु । दही से मिली हुई खाने की चीज़. राइता वगैरः ।

दान—न० गजमद । हाथी की मस्ती ।

दान्ती—स्त्री० दमनक । दवना ।

दामन्—न० स्त्री० रज्जू । रस्सी ।

दारण—न० शिरःकर्णादिद्विधाकरणम् । शिर कान आदि को काटना ।

दारद—पु० दरददेशोद्भवविष. पारद. हिङ्गूल. समुद्र । ज़हर जो "दरद" शहर में पैदा होता है. पारा. सिन्धूर. इंगुरु. शिंगरफ. समुन्दर ।

दारि—त्रि० क्षुद्ररोग । एक खाश बीमारी. बिवाँई ।

दारिन्—पु० धूस्तर तैल । धत्तूरे का तेल

दारु—पु० न० काष्ठ (न) देवदारु. पित्तलधातु (स्त्री) कर्पूर. हलदी । लकड़ी. देवदारु. पीतल. कपूर. हलदी ।

दारुक—न० देवदारु । देवदारु का पेड़ ।

दारुभद्र—न० देवकाष्ठ । देवदारु ।

दारुसिता—स्त्री० त्वक्स्वादी । दालचीनी

दारुहरिद्रा—स्त्री० दारुनिशा । दारुहलदी ।

दार्द्दुर—न० दक्षिणावर्तशङ्ख. जतु. जल. दर्दुर । दहिनावर्तीशंख. लाख. पानी मेंढ़क ।

दार्व्वाघाट—पु० मयूर । मोर. ताऊस ।

दार्विका—स्त्री० गोजिह्वा । गोभीशाग ।

दार्वी—स्त्री० दारुहरिद्रा. गोजिह्वा. देवदारु. हरिद्रा । दारुहल्दी गोभी का

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पीधा. दियार. देवदारू. हल्दी ।

दार्वीभेदा—स्त्री० कर्पूर. हरिद्रा । कफूर. हलदी ।

दाल—न० बन्यमधु (पु) कोद्रव । एक किसिम का सहद जो दरखत की खोल के भीतर निहायत छोटी २ मक्खियों के द्वारा बनाया जाता है. कोदौं ।

दालन—पु० जिस से दान्त टीसें और तीव्र पीड़ित हों ।

दालि—स्त्री० दाको । दालि. पहिति ।

दालिम—पु० दाडिम । अनार ।

दाशेर—पु० भृत्य. उष्ट्र । नौकर. ऊंट ।

दाशेर(क)—पु० मालवदेश । मालवे का मुलक ।

दासपुर—न० कोसचीमुस्था । गुड़तजी ।

दासी—स्त्री० काकजंघा । मसी. चिकचोहनी ।

दाहक—पु० चित्रकवृक्ष । चित्रा' चीत ।

दिङ्क—पु० लिक्षा । लीख ।

दिवाकर—पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष. काक. सूर्य्यमुखी पुष्प । आफताब. आक का पेड़. कौवा. सुर्यमुखी का फूल ।

दिवाभीत—पु० उल्लूक. कुमुदारक । उल्लू. सुपेद कमल . काका वेली ।

दिवामणी—पु० सूर्य्य । आफताब ।

दिवोकस्—पु० देवता. चातकपक्षी। देवता. पपीहा ।

दिवौकस्—पु० देवता. चातक . मृग. मधुमक्षिका. हस्ती । देव. अर्थात् विद्वान्. पपीहा. हरन. शहत की मक्खी. हाथी ।

दिव्य—न० लवङ्ग. हरिचन्दन. (पु) गुग्गुलु. यव (स्त्री)(व्या) हरीतकी. ब्राह्मी। लौंग. श्वेतचंदन. गूगल. जव. हरीड़ ब्रह्ममण्डूकी ।

दिव्यगंध—न० लवङ्ग. (पु) गन्धक. (स्त्री) (न्धा) स्थूलैला । लौंग. गन्धक. बड़ी इलायची ।

दिव्यरत्न—न० चिन्तामणी । खासएकजवाहिर ।

दिव्यपानीय—न० धाराजल१ कर्कभव २ तौषार ३ हैम ४ ।

दिव्या—स्त्री० धात्री. शतावरी. महामेदा. ब्राह्मी. स्थूलजीरक. श्वेतदूर्वा. हरीतकी। आंवला. सितावरी. महामेदा. वरमी. मोटाजीरा. सुपेददूब. हरीड़ ।

दिव्यौषधी—स्त्री० मनःशिल । मैनसिल ।

दिष्ट—पु० काल. दारु—हरिद्रा । वक्त. दारू हल्दी ।

दिष्टान्त—पु० मरण । मौत ।

दीन(क)—न० तगरपुष्प. (स्त्री) मूषिका । तगर का फूल. मूसी. चूही ।

दीप—पु० दीपक । दीया. चिराग ।

दीपन—न० तगरमूल. कुङ्कुम. (पु) मयूरशिखा. काममर्द्द. पलाण्डु (त्रि) प्रदीप्त. पाचक. (स्त्री) (नी) मेथिका. यवानी । तगर की जड़. केसर. मोरशिखा. कूसा. कसौदी. पियाज.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

बावरची. मेथी. अजवाइन. आजवान ।

दीपनीय—पु० यवनि । आजवाइन ।

दीप्त—न० हिङ्गु. स्वर्ण. (पु) निम्बूक । हींग. सोना. निम्बू ।

दीप्ताक्ष—पु० बिडाल. मयूर । बिल्ली. मोर ।

दीप्ताङ्ग—पु० मयूर । मोर ।

दीप्ति—स्त्री० लाक्षा. कांस्य । लाख. कांसी

दीप्य—पु० यमानी. जीरक. मयूर. शिखा. रुद्रजटा । आजवैन. ज़ीरा. मोरशिखा । रुजटा बूटी ।

दीप्यक—पु० अजमोदा. यमानी. बर्हिचूड़ा । अजमोदा. आजबैन. मोरशिखा

दीप्यका } —स्त्री० यवानी । अजवाइन ।
दीप्या } " " "

दीर्घ—पु० लताशालवृक्ष. उष्ट्र । साल का दरखत. ऊंट ।

दीर्घकण्टक } —पु० बकपक्षी ।
दीर्घकन्धर } बगला ।

दीर्घकर्ण—पु० छागल । बड़े कानवाला बकरा ।

दीर्घकेश—पु० भल्लूक । भालू ।

दीर्घकोला—स्त्री० अङ्कोटवृक्ष । ढेरा. अङ्कोहर ।

दीर्घच्छद—पु० इक्षु । ऊख ।

दीर्घजङ्घ—पु० बक. उष्ट्र । बगला. ऊंट ।

दीर्घजिह्व—पु० सर्प्प । सांप ।

दीर्घजीरक—पु० श्वेतजीरक । सुपेद जीरा

दीर्घजीव—पु० चिरायु. काकपक्षी. उमरदराज़ कौवा ।

दीर्घदण्ड—पु० श्वेतएरण्ड । सुपेद एरण्ड का पेड़. अंडी ।

दीर्घपत्र—पु० राजपलाण्डु. विष्णुकन्द. हरिदर्भ. कुन्दर. ताल. कुपीलु । बड़ा प्याज. एक मूल का नाम. कुशा. कुन्दरा घास. ताड़ का वृक्ष. तेंदूआ का पेड़ कुचिला का दरखत. डाभ कुश का भेद ।

दीर्घपत्रक—पु० कुपीलु. रक्तलशुन. एरण्ड. हिज्जल. बेतस. करीरवृक्ष. जलजमधूक. लशुन. पलाण्डु । लाललहसन. कोचिला का पेड़. एरण्डा का पेड़. समुद्रफल. बेत. बांस. करीर का पेड़. मौहा का पेड़. लहसन. प्याज ।

दीर्घपत्रा—स्त्री० शालिपर्णी. चिञ्चाशाक. इक्षु । सरिवन. चेवना का शाक. ऊख ।

दीर्घपत्रिका—स्त्री० श्वेतवचा. घृतकुमारी. शालपर्णी. श्वेतपुनर्नवा । सुपेदवच. घीकुआरि. सरिवन. सुपेद गदापुरैना ।

दीर्घपादप—पु० ताल. पूग । ताड़ का दरखत. सुपारी का दरखत ।

दीर्घफल—पु० आरग्वध । अमिलतास ।

दीर्घवृन्त—पु० श्योनाक । सोनापाढा ।

दीर्घरागा—स्त्री० हरिद्रा । हल्दी ।

दीर्घरोमन्—पु० भल्लूक । रीछ ।

दीर्घशाख—पु० शालवृक्ष । साल का पेड़. शाणवृक्ष ।

दीर्घशूक—त्रि० हैमतोद्भवधान्य । ठंढ़काली धान ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

दीर्घाङ्गी–स्त्री० शालपर्णी । सरिवन ।

दीर्घातुम्बी–स्त्री० लौकिका । लवलौआ. लौकी. तोरई ।

दीर्घायुस्–पु० शाल्मलीवृक्ष. काक. जीवकवृक्ष । सिंबल का दरखत. कौवा. जियापोते का पेड़ ।

दुःप्रधर्षिणी–स्त्री० वरहंटा । बड़ी भटकटैया ।

दुःसाध्य–त्रि० कष्टसाध्य । मुश्किल ।

दुःस्पर्श–पु० दुरालभा. लताकरञ्ज. (त्रि) खरस्पर्श. (स्त्री) (र्शा) कपिकच्छू. आकाशवल्ली. कण्टकारी । जवासा का पौधा. कंटकरेजाकरञ्जा. आकाशबेल. कण्डियारी या भटकटैया बूटी ।

दुग्ध–न० क्षीर । दूध ।

दुग्धकूपिका–स्त्री० क्षीरकुपिका । दूधकूपिका रोटी ।

दुग्धघृत–न० क्षीरनिस्सृतघृत । दूध से निकाला हुआ घी ।

दुग्धिका–स्त्री० स्वादुपर्णी । दूधी का पौधा. दुधिया ।

दुच्छक–पु० मुरानामगन्धद्रव्य । मुरहरी ।

दुन्दुभि–पु० विष । ज़हर ।

दुम्बक–पु० छगल । दुम्बामेढ़ा ।

दुरग्रहा–स्त्री० अपामार्ग । लटजीरा ।

दुरगन्धा–स्त्री० पलाण्डु । प्याज ।

दुरद–न० हिङ्गुल । ईंगुरु ।

दुराधर्ष–पु० गौरसर्षप (स्त्री) (र्षा) कुटुम्बिनीवृक्ष । सुपेद सरसों. एक खाश वृक्ष ।

दुरारुह–पु० बिल्व. नारिकेल. (स्त्री) (हा) खर्जूरी. शाल्मलीवृक्ष । बेल का पेड़. नारियल का पेड़. खजूर. सिम्बल का पेड़ ।

दुरालभा, दुरालम्भा –स्त्री० यासका । जवासा का पौधा ।

दुरुपचार–त्रि० असाध्य. अचिकित्स्य । लाइलाज ।

दुर्गन्ध–न० सौवर्चल लवण. (पु) दुष्टगन्ध. आम्रवृक्ष. पलाण्डु । सैंचरलून. खराबबू. आम का पेड़. पियाज ।

दुर्घोष–पु० भल्लूक । रीछ ।

दुर्द्दर–न० ऋषभनामौषध ।

दुर्नासक–न० अर्शोरोग । बवासीर ।

दुर्बला–स्त्री० अम्बुशिरीषिका । जलशिरीस का पेड़ ।

दुर्लभ–पु० कर्चूर (स्त्री) (भा) श्वेतकण्टकारी । कचूर. सुपेद कण्डयारी ।

दुश्चर–पु० शम्बुक. भल्लूक । घोंघा. भालू

दुस्थ–पु० कुक्कुर. कुक्कुट । कुत्ता. मुर्गा ।

दूरजरत्न–न० वैडूर्य्यमणि ।

दूरदर्शिन्–पु० गृध्रपक्षी । गीध ।

दूर्वा–स्त्री० अनन्ता. सुपेद दूब घास ।

दूष्य–न० विष्ठा. । गूह ।

दूली–स्त्री० नीली । नील का पौधा ।

दूषक–पु० शिशिरऋतु में जो धान होते हैं उन का नाम ।

दूषि(षी), दूषीका –स्त्री० चक्षुमला । आंख की मैल. कीचड़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

दूष्य–न० वस्त्रगृह । तम्बू ।

दृक्कर्ण, दृक्श्रुति, दृग्विषय –पु० सर्प्प । सांप ।

दृढ़–न० लौह । लोहा ।

दृढ़पृष्ठक–पु० कच्छप । कछुआ ।

दृढ़फला–स्त्री० नारिकेलवृक्ष । नारियल ।

दृढ़रङ्गा–स्त्री० रक्तस्फटिका । लाल फिटकरी ।

दृढ़लोमन्–पु० शूकर । जङ्गलसुअर ।

दृढ़ाङ्ग–न० हीरक । (त्रि) गण्डार । हीरा. गैंड़ा ।

दृढ़ारंगा–स्त्री० रक्तस्फटिका । लालफिटकरी ।

दृता–स्त्री० जीरक । जीरा ।

दृति–पु० चर्म्मपुटक. मत्स्य । धोंकनियें का जोड़ा. मछली ।

दृन्भू–स्त्री० सर्प्प. (पु) वज्र. सूर्य्य । सांप. हीरा. आफताव ।

दृम्फू–पु० सर्प्प । सांप

दृशत–(द्). स्त्री० पाषाण । पत्थर. शिलबट ।

दृशा–स्त्री० चक्षु । आंख. चश्म ।

दृशि, दृशी –स्त्री० चक्षु । आंख. चश्म ।

देव–पु० त्रि. दातव्य (न) इन्द्रिय (पु) विद्वान्. मेघ. पारद । देने के लायक. हवास. बादल. पारा ।

देवकुसुम–न० लवङ्ग । लौंग ।

देवखात–न० अकृत्रिम जलाशय । झील ।

देवजग्ध–न० रोहिष । सोधिआ. हरद्वारीकुश. उशरांकुश ।

देवतरु–पु० मन्दार. पारिजात. सन्तानक. कल्पवृक्ष. हरिचन्दन । हरसिंघारफूल का वृक्ष. बेहिश्त का पेड़. सुपेदचन्दन ।

देवता, देवताकितव –पु० धूस्तर वृक्ष । धतूरे का पौधा ।

देवताड़–पु० वृक्ष विशेष. अग्नि. घोषकलता । देवताड़ का दरखत. आग. नेनुआ की लता ।

देवताण्डी–स्त्री० देवदाली । सोनैआ. बन्दाल ।

देवदारु–पु० देवकाष्ठवृक्ष । देवदारु का पेड़. दियार ।

देवदाली–स्त्री० वन्दाली । घघरबेल. सोनैआ ।

देवदासी–स्त्री० वनबीजपुर. वेश्या । जङ्गलीविजौरा. कचनी ।

देवदुन्दभी–स्त्री० श्वेता. तथा कृष्णासुरसा । सुपेद और स्याह तुलसी का पौधा ।

देवदूत–पु० पवन । हवा ।

देवधूप–पु० धूप. गुग्गुलू । गूगल. राल ।

देवन–न० पद्म । कमल का फूल ।

देवतामणि–स्त्री०महामेदौषध । महामेदा

देवनिर्मिता–स्त्री०गुडूची । गुरच. गिलोय।

देवभवन–पु० अश्वत्थ वृक्ष । पीपल ।

देवमातृक–त्रि० वृष्ट्यम्बुसम्पन्नव्रीहि-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पालित देश । जहां पर फसल सिर्फ बारिस पर ही है ।

देवरात–पु० सारस पक्षी ।

देववक्त्र–पु० अग्नि । आग ।

देवश्रेणि–स्त्री० मूर्वालता । मुरहरी ।

देवात्मन्–पु० अश्वत्थवृक्ष । पीपल का पेड़ ।

देवाहू–पु० वामकर्ण । वांयां कान ।

देविक–त्रि० धूस्तरवृक्ष । धतूरेकापौधा ।

देवी–स्त्री० मूर्वा. स्पृक्का. आदित्यभक्ता. लिङ्गिनी. वन्ध्याककोटकी.शालपर्णी. महाद्रोणी. नागरमुस्ता. हरीतकी. अतसी. श्यामापक्षी. । मुरहरी. चूर्णहार. लङ्कोइकपुरी. सुगंधि चीज. हुर हुर. पचगुरिआ बेल. बाँझखेखसा. सरिवन. एरखडी. नागरमोथा. हरीड़. अलसी. थासन. स्यामाचिडिया ।

देवेष्ट–पु० गुग्गुलु (स्त्री) वनबीजपूर । गूगल । जङ्गली अनार ।

देशिनी–स्त्री० तर्ज्जनी । अङ्गूठे के पास वाली अङ्गुली ।

देहव–पु० शरीर । जिसम ।

देहद–पु० पारद । पारा ।

देहभृत्–पु० जीव. प्राण. आत्मा । रूह. जिन्दगी ।

देहला–स्त्री० मद्य. शराब ।

देहसार–पु० मज्जा । भेजा ।

दैत्या–स्त्री० मूर्वा । मुरहरी. ।

दैवदीप–पु० चक्षु । चश्म ।

दोस्–पु० बाहु. हस्त । बाजू. हाथ ।

दोला, दोलि –स्त्री० नीलिनी । नील का पौधा ।

दोषज्ञ–पु० पण्डित. चिकित्सक (त्रि) दोषवेत्ता । आलिम. तबीब. ऐब जानने वाला ।

दोषत्रय–न० (वात. पित्त. कफ) । बाई बलगम. सफरा ।

दोहज–न० दुग्ध । दूध ।

दौर्बल्य–न० दुर्बलता । दुबलापन. कमजोरी ।

दौलेय–पु० कच्छप । कछुआ ।

द्युमणि–पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफताब आक का पौधा ।

द्रप्स्य–न० घनेतरदधि । मठा. छाछ ।

द्रवन्ती–स्त्री० मूषिककर्णी. बृहद्दन्ती । मूसाकन्नीबूटी. बड़ी दन्तूनि ।

द्रवरसा–स्त्री० लाक्षा । लाख ।

द्रविण–न० काञ्चन. बल. धन. । सोना. जोर. दौलत ।

द्रव्य–न० पित्तल. वित्त. न्यायमते पृथिव्यादिनव. विलेपन. क्लीव. भेषज. जतु. विनय. मद्य. वस्तु (त्रि) द्रुमसम्बन्धीय. । पित्तल. दौलत. इलम मंतिक में ये नव जैसे १ जमीन २ पानी ३ रौशनी ४ हवा ५ आसमान ६ वक्त ७ तरफ ८ रुह ९ दिल आलूदगी. मुखन्नस. दवाई. दरखत का. लायक. लाख. हलीमी. शराब. चीज ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

द्राविड़—न० सौवर्च्चल । सोंचर निमक (पु) कर्चूर । कचूर ।

द्राविड़ी—स्त्री० सूक्ष्मैला । छोटी इलाइची

द्राक्ष—पु० ऋषभकौषध ।

द्राक्षा—स्त्री० फलविशेष । दाख ।

द्राक्षापर्वतजा—स्त्री० क्षुद्रद्राक्षा । पहाड़ी किशमिस ।

द्राक्षाबीजा } —स्त्री० द्राक्षा । किशमिस ।
द्राक्षास्वल्पतरा }

द्रुकिलिम—न० देवदारु । दियार ।

द्रुण—पु० वृश्चिक. भृङ्ग । बिछू. भौंरा ।

द्रुणी—स्त्री० कर्णजलौका. कच्छपी । कानखजूरा. कछुई ।

द्रूण—पु० वृश्चिक । विच्छू ।

द्रोण—न० पु० चतुः आढकपरिमाण. द्रोणपुष्पी ॥५५॥—॥ शेर. गूमा का पौधा

द्रोणकाक—पु० वनकाक । पहाड़ी कौआ।

द्रोणपुष्पी—स्त्री० द्रोणवृक्ष । गूमा का पेड़ ।

द्रोणपुष्पीदल—न० द्रोणपत्री । गूमापत्ती

द्रोणा—स्त्री० द्रोणपुष्पी । गूमा का पौधा

द्रोणिका—स्त्री० नीलीवृक्ष । नील का पौधा ।

द्रोणी—स्त्री० नीलवृक्ष. द्विसूर्प्पपरिमाण। नील का पौधा ५५४॥- तौल ।

द्वन्द्व—न० रोगविशेष । जो रोग दो से मिल के हो ।

द्वन्द्वचर } —पु० चक्रवाकपक्षी । चकवी चकवा ।
द्वन्द्वचारिन् }

द्वारदारु—स्त्री० भूमीसह । भुईसहा ।

द्विककार—पु० काक. कोकिल । कौवा कोयल ।

द्विज—पु० दन्त. अण्डज. सर्प. मत्स्यादि (स्त्री) (जा) रेणुकानामगन्धद्रव्य. भारङ्गी. पालङ्की. धान्यक । दान्त. अण्डे से पैदा हुआ. सांप. मच्छली. रेणुका. खुशबूदार चीज. भारङ्गी. पालाकी. धनिया. ।

द्विजप्रिय—पु० सोमलता ।

द्विजा—स्त्री० रेणुकानामगन्धद्रव्य । रेणुका

द्विप—त्रि० हस्ती. नागकेशर । फील. नागकेशर ।

द्विपायिन्—पु० हस्ती । हाथी ।

द्विमुख—पु०राजसर्प्प (स्त्री)(ख) जलौका । बड़ा सांप. जोंक ।

द्विरद—पु० हस्ती । हाथी ।

द्विरसन—पु० सर्प्प । सांप ।

द्विरेफ—पु० भ्रमर (त्रि) वर्बर. मूर्ख । भौंरा जट्टसंदल. जाहिल ।

द्विहन्—पु० हस्ती । हाथी ।

द्वीप—न० पु० व्याघ्रचर्म. व्याघ्र. जलवेष्टितभूमि। बाघ की खाल. बाघ. जजीराह ।

द्वीपिन् } —पु० चित्रव्याघ्र । चीता ।
द्वीपी }

द्व्यणुक—न० परमाणुद्वय । मिले हुये दो परमाणु ।

द्व्यष्ट—न० ताम्र । तांमा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

(ध)

धट–पु० तुला. धातकी । तराजू. धव के फूल ।

धटक–पु० द्विचत्वारिंशद्रक्तिका । ४२ रत्तीभर ।

धत्तूर–पु० धूस्तर (स्त्री) (रा) धूस्तर । धत्तूरा का पेड़ ।

धनञ्जय–पु० अग्नि. चित्रकवृक्ष. अर्जुनवृक्ष. देहमारुतविशेष । आग. चित्रा. अर्जुनहर्रा. जिस्मानी हवा ।

धनद–पु० हिज्जलवृक्ष । समुद्रफलवृक्ष

धनसू–पु० पक्षीविशेष । धनवास पक्षी ।

धनहर–पु० गणहासक । भटेउर नेपाल में प्रसिद्ध है ।

धनिक–पु० धन्याक । धनियां ।

धनुर्वृक्ष–पु० धन्वङ्गवृक्ष । धामिन का पेड़ ।

धनुष्पट–पु० खरस्कन्ध । चिरौंजी ।

धनुस्–पु० प्रियालवृक्ष । चिरौंजी का पेड़

धनेयक–पु० धन्याक । धनियां ।

धन्य–त्रि० अश्वकर्णवृक्ष (स्त्री) (न्या) आमलकी. धन्याक । साल का पेड़. आंवला. धनियां ।

धन्याक–पु० धन्या । धनिआं ।

धन्वन्–न० पु० धनुष (पु) स्थल । कमान. रेगिस्तान ।

धन्वङ्ग–पु० धनुर्वृक्ष धामिन का पेड़ ।

धन्वदुर्ग–न० निर्जलदेश । थल का मुल्क ।

धन्वन–पु० धन्वङ्गवृक्ष । धामिन का पेड़ ।

धन्वन्तरि–पु० चिकित्सकविशेष । दिवोदास. या धन्वन्तरि तबीब । (धन्वं शल्यशास्त्रं तस्यान्तं पारं इयर्ति गच्छतीति धन्वन्तरिः) ।

धन्वयासक–पु० यासकवृक्ष । जवासा का पेड़ ।

धमन–पु० नल. (स्त्री) (नी) नाड़ी. ग्रीवा. हरिद्रा (स्त्री) (नि) नाड़ी । नरकुल. रग. गर्द्दन. हल्दी ।

धरण–न० मानभेद (पु) स्तन. धान्य । २४ रत्तीभर. ४ मासा. पिस्तान. चूंची. धान ।

धरणीकन्द–पु० पलाण्डु । पियाज़ ।

धरा–स्त्री० पृथ्वी. गर्भाशय. नाड़ी । ज़मीन. शिकम. रग ।

धरित्री–स्त्री० पृथ्वी । ज़मीन

धर्मचारिणी–स्त्री० जाया. लताविशेष । जोरू. नाम एक बेलका । ।

धर्म्मण–पु० वृक्षविशेष । सर्पविशेष ।

धर्म्मपत्तन–न० मरिच । काली मिरच ।

धलण्ड–पु० अतिशयकण्टकयुक्तवृक्ष । कांटेदार दरख़त ।

धव–पु० पति. धातकी । खाविंद. धव का पेड़. धव के फूल ।

धवल–पु० श्वेत. अर्जुनवृक्ष. (स्त्री) (ली. ला) श्वेता गौ. (न) मरिच । सुपेद. अर्जुन का पेड़. सुपेद गाय. स्याह मरिच ।

धवलसारिवा–स्त्री० श्वेतसारिवा । सुपे-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

दुदुधजा की बेल ।

धाक–पु० वृष. आहार. अन्न । बैल. खुराक. भात ।

धातकी–स्त्री० धवपुष्प । धाईफूल. धव के फूल ।

धातु–पु० शरीराधारवस्तु. यथा १ कफ २ वात ३ पित्त. १ रस. २ रक्त ३ मांस ४ मेद ५ अस्थि ६ मज्जा ७ शुक्र. सुवर्णादि नव धातु यथा १ हेम २ तार ३ आर ४ नाग ५ ताम्र ६ वङ्ग ७ तीक्ष्ण ८ कांस्यक ९ कान्तलोह । अष्टधातु यथा १ स्वर्ण २ रजत ३ कांस्य ४ ताम्र ५ सीसक ६ वङ्ग ७ आयस ८ पारद ।

धातुकाशीश–न० काशीश । हीराकशीश

धातुद्रावक–पु० टङ्कण । सोहागा ।

धातुनाशन–न० काञ्जिक । कांजी ।

धातुपुष्पी–स्त्री० धातकी । धव के फूल ।

धातुवल्लभ–न० टङ्कण । सोहागा ।

धातुसारणी–स्त्री० सर्ज्जिका. टङ्कण । सज्जीखार. सोहागा ।

धात्री–स्त्री० आमलकीवृक्ष । आंवले का पेड़ ।

धात्रीपत्र–पु० न० तालीशपत्र. आमलकीपत्र । तालीशपात. आंवले के पत्ता ।

धात्रीफल–न० आमलक । आंमला ।

धात्रेयिका } –स्त्री० उपमाता ।
धात्रेयी } दाई ।

धान (क)–न० धान्याक. भृष्टयव. सतुषतण्डुल. (स्त्री) (ना) धान्या । धनियां. भूंजे हुये जव. भूसीसमेत चावल ।

धानी–स्त्री० पीलूवृक्ष. अपरिस्कृततण्डुल । पीलू की झाड़ी. नासाफ किये हुये चावल ।

धानुष्का (ष्की)–स्त्री० अपामार्गवृक्ष । अपुठकांटे का पौधा. लटजीरा का पौधा ।

धानुष्य–पु० वंश । बांस ।

धानेय (क)–न० धान्याक । धनियां ।

धान्य–न० तिलचतुष्टयपरिमाण. धन्याक. परिपेल. सतुषतण्डुल । चार तिलभर. धनियां. अनाज. धान ।

धान्यक–न० धान्या. धनियां ।

धान्यकपानक–न० धान्यपानक । धनिया का पना ।

धान्यकल्क–न० तुष । तुस. चोकर ।

धान्यचमस–पु० चिपीटक । चिउड़ा ।

धान्यभेद–पु० १ शाली २ व्रीहीधान्य. ३ शूकधान्य ४ शिम्बी ५ क्षुद्र ।

धान्याम्ल–न० सन्धानविशेष ।

धान्याक–न० धन्याक । धनियां ।

धान्याङ्कुरचारा–स्त्री० पक्षी । चिड़िया ।

धान्यारि–पु० मूषिक । चूहा ।

धामक–पु० माषकपरिमाण । मासाभर ।

धामनिधि–पु० सूर्य्य । आफताब ।

धामनी–स्त्री० धमनी । नाड़ी. रग ।

धामार्गव–पु० रक्तापामार्ग. महाकोसातकी. जालिनी । सुरख लटजीरा. ने-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तुआ. तोरई ।
धार—न० वर्षोद्भवजल । बारिशका पानी
धारणी—स्त्री० नाड़िका । रग ।
धारा—स्त्री० क्षीरकाकोल्यौषध ।
धाराट—पु० चातकपक्षी । पपीहा ।
धारावणि—पु० वायु । हवा ।
धारापानीय—न० धाराजलं द्विविधं, यथा गाङ्ग १ सामुद्र २ ।
धारिन्—पु० पीलुवृक्ष । पीलू का दरखत
धावनी—स्त्री० पृष्टिपर्णी. बृहती । पिठवन. भटकटैया ।
धीर—पु० ऋषभकौषध । (न) केशर ।
धीरा—स्त्री० गुडूची । गुरच. गिलोय ।
धुन्धुमार—पु० इन्द्रगोपकीट. गृहधूम. पदालिक । बीरबहूटी. करैंाहा. गिरगिट ।
धुरन्धर—पु० धातकी. । धव का दरखत
धुस्त(स्तू)र—पु० धत्तूरा । धत्तूरे का पेड़
धूनक—पु० वन्हिवल्लभ । राल ।
धूप—पु० गन्धद्रव्य । खुशबूदार लकड़ी. राल
धूपन—पु० शालवृक्षनिर्यास । राल. धूप
धूपिका—स्त्री० कुज्झटिका । कुहासा ।
धूम—पु० आग्नीन्धनप्रभव । धुंआं ।
धूमकेतन
धूमकेतु
धूमध्वज } पु० अग्नि । आग ।
धूमगन्धक—न० रोहिष । हरद्वारी कुश. सोंधिया ।
धूमयोनि—पु० मेघ. मुस्तक । बादल. नागरमुस्था ।
धूमसी—स्त्री० पिष्टी । धुवांसि. पिसी धोई उरद की ।
धूमिका—स्त्री कुज्झटिका । कुहासा ।
धूम्याट—पु० पक्षीविशेष । फिंगापंखी ।
धूम्रक—पु० उष्ट्र । ऊंट. शुतर ।
धूम्रपत्रा—स्त्री० क्षुपविशेष । एक किसम की बूटी ।
धूम्रलोचन—पु० कपोत । कबूतर ।
धूम्राट्—पु० पक्षीविशेष । फिंगापंखी ।
धूम्राभ—पु० वायु । हवा ।
धूम्रिका—स्त्री० शिंशपा । शीशम का दरखत ।
धूर्त—पु० धूस्तरवृक्ष. चोरकवृक्ष. (न) विट्लवण. लोहविट् । धतूरा. चोरक का पेड़. स्याहनिमक. लोहे का चूरा ।
धूर्तक—पु० शृगाल. धूर्त । गीदड़. लुच्चा
धूलक—न० विष । जहर ।
धूली
धूलि } —स्त्री० धूलि । धूड़. खाक ।
धूलिध्वज—पु० वायु । हवा ।
धूलिपुष्पिका—स्त्री० केतकी । केवड़ा ।
धूलिकदम्ब—पु० कदम्ब. तिनिश. वरुणवृक्ष । कदम का पेड़. पसही. वरुण का पेड़ ।
धेनुका—स्त्री० धान्यक । धनियां ।
धेनुदुग्ध—न० चिरभिट्ट । गुलमीहमुकुरु
धौर—पु० धववृक्ष । धावे का पेड़ ।
ध्याम—न० दमनकवृक्ष. गन्धतृण (त्रि)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्यामल । दवना का पेड़. सुगंध घास सेमल का पेड़ ।

ध्वंसिन्–पु० पर्वतीयपीलुवृक्ष । पहाड़ी पीलु का दरखत ।

ध्वज–पु० मेढ्रचिन्ह । लिंग. केर ।

ध्वाङ्क्षनाशिनी–स्त्री० हवुषा । हौहबेर

ध्वाङ्क्षमाची–स्त्री० काकमाची । केवैआ

ध्वान्तारि, ध्वान्ताराति –पु० सूर्य्य. चन्द्र. अग्नि । आफताब. चांद. आग ।

ध्वान्तोन्मेष–पु० खद्योत । पटबीजना. जुगनू ।

(न)

नकुट–न० नासिका । नाक ।

नकुल–पु० बभ्रु । नेउला ।

नकुली–स्त्री० नक्कटी. मांसी. शङ्खिनी. कुङ्कुम । नेउली. जटामासी. क्यौड्याला. केसरि ।

नकुलेष्टा–स्त्री० रास्नाभेद । नाई ।

नक्त–पु० कुम्भीर (न० स्त्री०) नासिका घड़ियाल. नास. नाक ।

नक्तमाल–पु० करञ्ज । कञ्जा ।

नक्र–पु० नाक । मगर ।

नक्रदमनी–स्त्री० वन्ध्याकर्कोटकी । वांझखेखसा ।

नक्षत्रेश–पु० चन्द्र. कर्पूर । चांद. काफूर

नख–न०पु० नखरुह (न० स्त्री) नखीसुगन्धद्रव्य । नाखून. "नखी" नाम खुशबूदार चीज़ ।

नखर–पु० न० नख । नाखून ।

नगणा–स्त्री० लताविशेष । हिंगोटकी बेल

नगभू–पु० क्षुद्रपाषाणभेद । पाषाण भेद ।

नगरोत्था–स्त्री० मुस्थातृण । नागरमुस्था ।

नगरौषधि–स्त्री० कदली । केला ।

नघुष–न० कालानुसार्य्य । तगर ।

नट–पु० श्योनाकवृक्ष. सोनापाढ़ा. किलक ।

नटी–स्त्री० नलिका । पवारी यह खुसबूदार चीज़ उत्तर में प्रसिद्ध है ।

नड़–पु० नलतृण । नड़ घास ।

नत–न० तगरमूल । तगर ।

नदीकान्त–पु० समुद्र. जम्बूवृक्ष. (स्त्री) (न्ता) काकजङ्घौषधिलता । समुन्दर. जामुनी का पेड़. "काकजङ्घा" मसी. चिकचोहनी ।

नदीज–न० अर्जुनवृक्ष (स्त्री) (जा) अग्निमन्थवृक्ष । कौह अर्जुन का पेड़. रणि का पेड़ ।

नदीसर्ज्ज–पु० अर्जुनवृक्ष । कौह. अर्जुनहर्रा का पेड़ ।

नन्दक–पु० तुणि. पिप्पलि । तुनि का पेड़. पीपली ।

नन्दितरु–पु० धातकी । धव का पेड़ ।

नन्दिनी–स्त्री० चन्द्रशूर । चन्दसुर ।

नन्दिवृक्ष–पु० तुणिवृक्ष. तुनि का पेड़ ।

नन्दीमुख–पु० शूकरहितगोधूम । (स्त्री) (खी) पक्षीविशेष । मुड़िया गेहूं. बतख. चिड़िया पत्राटी पक्षी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नन्दीवृक्ष—पु० प्ररोहीवृक्ष । बेलिया पीपर का पेड़ ।

नभस—न० पु० आकाश. (पु)(स्) श्रावण मास. मेघ । आसमान. सावन का महीना ।

नभस्य—पु० भाद्रमास । भादों का महीना ।

नमस्कारी—स्त्री० लाजवन्तीलता । लजालू की बेल ।

नमेरु—पु० सुरपुन्नागवृक्ष । रुद्राक्ष का पेड़

नम्रक—पु० वेतस । बांस. वेद वृक्ष ।

नयन—न० चक्षु । आंखि ।

नर—पु० कर्पूरतृण । एक घास ।

नरिदारु—पु० भूमीसह । भुइसहा वृक्ष ।

नर्द्द—पु० कुटन्नट । कोसचीसोथा या गुड़तजी ।

नल—पु० नलनामकवृक्ष । नरकुल का पेड़ ।

नलद—न० उशीर. लामज्जक । खस. खस के सदृश पीला तृण. जटामासी ।

नलिका—स्त्री० विद्रुमलता । पवांरी उत्तर देश में प्रसिद्ध है ।

नलिन—न० पद्म । कमल ।

नलिनी—स्त्री० पद्मिनी । कमलनी ।

नली—स्त्री० नलिका । पवारी यह उत्तर में प्रसिद्ध है ।

नवनी } —स्त्री० नवनीत । ताजा
नवनीतक } —न० मखन ।

नवमल्लिका—स्त्री० बासन्तीपुष्पलता । नेवारि ।

नवरत्न—न० नवमणि. यथा. पन्ना १, पुखराज २, हीरा ३, मोती ४, माणक ५, गोमेद ६, नीलम ७, पद्मराग ८, लहसुनिया मूंगा ९ ।

नसा—स्त्री० नासिका । नाक ।

नस्य—न० नासिकादेयचूर्णादि (स्त्री) (स्या) घ्राणेन्द्रिय । नसवार, नाक ।

नाकुली—स्त्री० रास्नाभेद । नाई का वृक्ष

नाग—न० रङ्ग. सीसक(पु) पन्नग. हस्ती. नागकेशर. पुन्नाग. मेघ. मुस्तक. उद्दार. ताम्बूली. रांगा. सीसा. सर्प. हाथी. नागकेशर. पुन्नागवृक्ष. बादल. नागरमुस्था. डकार. सुपारी ।

नागकिञ्जल } —पु० नाग । नागकेशर ।
नागकेशर }

नागगर्भ—पु० सिन्दूर । सेंदुर ।

नागजिह्विका—स्त्री० मनःशिला । मैनशिल ।

नागदन्त—पु० हस्तिदन्त. (स्त्री) (न्ती) वश्या. लताविशेष । हाथीदान्त. कंचनी. हाथीसुखा नाम बेल ।

नागदमनी—स्त्री० नागपुष्पी । नागदमनी

नागनामक—न० शीसक । शीशा ।

नागपत्रा—स्त्री० नागपुष्पी । नागदमनी ।

नागपुष्प—पु० नागकेशर (स्त्री) (ष्पी) नागिनीवृक्ष । नागपुष्पी. नागकेशर. नागपुष्पी. नागदमनी ।

नागवल्ली—स्त्री० तम्बूलवल्ली । पान की बेल ।

नागबला—स्त्री० गुरशंकरी । गुरसकरी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नागर–त्रि० विदग्ध. नीच (पु) देवर. नागरङ्ग (न) शुंठी. मुस्ता । होशयार. कमीना. खाविन्द का छोटा भाई. सन्तरा. सोंठ. नागरमुत्था ।

नागरङ्ग–पु० वृक्षविशेष । नारङ्गी का दरखत ।

नागरमुस्तक–पु० मुस्ता । नागरमुत्था ।

नागरी–स्त्री० स्नुहीवृक्ष । सेहुण्ड का पेड़

नागरेणु–पु० सिन्धूर । सिंदूर ।

नागसुगन्धा–स्त्री० नाकुली । नाईवृक्ष ।

नागारि–स्त्री० बन्ध्याकर्कोटकी । बांझ-खेखसा ।

नागिनी–स्त्री० नागपुष्पी. नागवल्ली । नागपुष्पी. पान की बेल ।

नाचिकेतु–पु० अग्नि । आग ।

नाडिक–न० नरिचाशाक । कालशाक. करेंबू का शाक ।

नाडीक–पु० पट्टशाक । पटुआ का शाक

नाडीकपालक–पु० सर्पाक्षी । सरहटी. गखिनी ।

नाडीच–पु० शाकभेद । "नालीता" शाक

नाडीयन्त्र–न० बीस प्रकार के नाड़ीयन्त्र

नाडीशाक–पु० पट्टशाक । पटुआ का शाक ।

नादेय–पु० जलवेतस । जलवेत ।

नादेयजल–न० नदी का जल । नदी का पानी ।

नादेयी–स्त्री० जम्बूकवृक्ष. रणि । जमुनी का पेड़. रनि का पेड़ ।

नाभि–पु० स्त्री० पाणयङ्ग (स्त्री) कस्तूरिका । नाफ़. कस्तूरी ।

नार–पु० जल । पानी ।

नारङ्ग–न० गर्ज्जर. (पु०) पिप्पलीरस. नारङ्गफलवृक्ष । गाजर. पिपली का रस. सन्तरे का दरख़्त ।

नारङ्गवर्णक–न० गर्ज्जर । गाजर ।

नारङ्गी–स्त्री० नागरङ्गी । नारङ्गी का पेड़

नारायणी–स्त्री० शतावरी । छतावरि. सतावरि ।

नारिकेर(ल)–पु० स्वनामख्यातफलवृक्ष । नारियल का पेड़ ।

नारीघृत–न० स्त्रीघृत । औरत का घी ।

नार्य्यतिक्त–पु० किराततिक्त । चिराइता ।

नार्य्यादुग्ध–न० स्त्रीदुग्ध । औरतका दूध ।

नाल–न० उत्पलादिदण्ड । कमल की डण्डी ।

नालवा–स्त्री० पोतकीशाक । पोय का शाग ।

नालि(ली) स्त्री० देहस्थशिरा. शाकभेद. पद्मादिदण्ड. दण्डात्मककाल । जिस्म की रग । शाकखास. कमल की डंडी. चौबीस मिनट की घड़ी ।

नालीक–पु० शर. शरीर (न) पद्मखण्ड बाण. जिस्म. कमल का टुकड़ा ।

नासत्य–पु० द्वि० अश्विनीकुमार । स्वर्ग के तबीब. स्वर्गवैद्य ।

नासा } स्त्री० नासिका. शब्द ।
नासिका } नाक. आवाज़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

निःश्वास–पु० मुखनासिकानिर्गतवायु। श्वांस. दम।

निकुञ्ज–पु० जलवेतस। बेत।

निकुम्भ–पु० लघुदन्ती। छोटीदन्तूनि का पेड़।

निकेतन–न० गृह (पु०) पलाण्डु। घर. प्याज।

निकोच–पु० अङ्कोटवृक्ष। ढेरा. अंकोहर का पेड़।

निगूढ़–पु० वनमुद्ग। जङ्गली मूंग।

निचुल–पु० हिजलवृक्ष. वेतस। समुद्रफल. बेत।

निटल–न० कपाल। माथा।

नितम्ब–न० कटितट. स्कन्ध. कटिमात्र चूतड़. कन्धा. कमर।

निदिग्धिका–स्त्री० बृहती। भटकटैया।

निदाघ–पु० ग्रीष्मकाल. ऊष्म. घर्म्म. घर्म्मजल.। गरम मौसम. गरमी. घाम. पसीना।

निदान–न० रोगमूलानुसन्धान. रोगनिर्णय। बीमारी की जड़ का पहचानना

निदिग्धा–स्त्री० एला। इलायची।

निधि–पु० नलीनामगन्धद्रव्य। एक खुशबूदार दवाई।

निधुवन–पु० न० मैथुन. नर्म्म। जमा खेल या ठट्ठा।

निन्दितजल–दुष्टजल। खराब पानी।

निन्दु–स्त्री० मृतवत्सा। जिस्के मरी हुई औलाद पैदा हो।

निष्फला–स्त्री० ज्योतिष्मती लता। मालकाङ्गुनी।

निबन्ध–न० गीत. (पु०) मूत्ररोधरोग. निम्बवृक्ष. ग्रन्थसन्दर्भ। राग. पेशाब बन्द की बीमारी. नीम का पेड़. शरा।

निमज्जन–न० अवगाहन. स्नान। गोता मारना न्हाना।

निम्ब–पु० अरिष्टवृक्ष। नीम का पेड़।

निम्बतरु–पु० पारिभद्रवृक्ष। फरहद का पेड़।

निम्बुक } न० निम्बू कागदी निम्बू।
निम्बू } स्त्री०
निम्बूक } न०

निम्बूकफलपानक–न० निम्बू का पना।

निःशूकयव–पु० हरितशूकरहित यव। सब्ज विना सीकुर के जौ।

निरामय–त्रि० वनच्छगल (पु०) शूकर (त्रि) रोगरहित। जङ्गली बकरा. सुअर. तन्दुरुस्त।

निरामालु–पु० कपित्थवृक्ष। कैथा का पेड़. कतबेल का दरखत।

निर्गुण्डी–स्त्री० नीरस. कलिका. पद्मकन्द. सिन्दुवारवृक्ष। खुश्क. गुञ्च. कमल की जड़. सेउढ़ी. सम्भालू. सेन्दुवार का पेड़।

निर्ज्जरा–स्त्री० गुडूची. तालपर्णी। गुरच. गिलोय।

निर्घातन–न० हृतशेतस विघात्य निर्हरणम्।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

निर्द्दहन–पु० भल्लातक (स्त्री) मूर्वालता (त्रि०) वह्निशून्य । भेलावां । मुरहरी. बेआग ।

निर्मध्या–स्त्री० नलिका । पवारी सुगन्ध बीज ।

निर्म्मोक–पु० सर्प्पकञ्चुक । सांप की केंचुलि ।

निर्यास } निर्यूह } –पु० वृक्षरस. क्वाथ । गोंद. दुशांदह. काढ़ा ।

निशा–स्त्री० रात्रि हरिद्रा । रात. हल्दी

निशाकार–पु० चन्द्र. कुक्कुट । चांद. मुर्ग ।

निशाख्या–स्त्री० हरिद्रा । हलदी ।

निशाचर–पु० घनहरीषधि. शृगाल. पेचक. सर्प. चक्रवाक. चौर । भटेउर यह नैपाल में होता है. गीदड़. उल्लू. सांप. चकवा. चोर ।

निशि–स्त्री० रजनी. हरिद्रा । रात. हल्दी ।

निशित–न० लौहधातु । लोहा ।

निशोत्रा–स्त्री० श्वेता त्रिवृता । सुपेद निशोथ ।

निश्चला–स्त्री० पृथिवी. शालपर्णी । जमीन. सरिवन बेल ।

निषेक–पु० गर्भाधान. सिञ्चन । हमल ठहराना ।

निष्क–पु० न० हेम. पल परिमाण । सोना ४ कर्ष चार तोला ।

निष्कुटि–(टी) एला । इलायची पूर्वी ।

निष्ठीव–(न०) पु० न० निष्ठीवन । थूक ।

निष्पाव–पु० राजशिम्बी । भेटवासु छीमी का अन्न ।

निस्त्र (स्त्रा) व–पु० भक्तमण्ड. अपक्षरण. मांड़. चूना ।

नीच–त्रि० चौरनामकगन्धद्रव्य । भटेउर यह नैपाल में होता है ।

नीप–पु० कदम्बवृक्ष. बन्धूकवृक्ष. नीलशोकवृक्ष (कदम का पेड़) । दूपहरी गुड़हल. का पेड़ स्याह अशोक का पेड़ ।

नीर–न० जल. रस । पानी. अर्क ।

नीरज–न० पद्म. मुक्ता. कुष्ठौषधि. (त्रि) जलजात. (पु) जलजन्तुविशेष । कमल. मोती. कुट्ठ. पानी में पैदा. जलजीव. उद्बिलाव ।

नीरद–पु० मेघ. मुस्तक (त्रि) दन्तरहित । बादल. मुरथा. बेदांत ।

नीरस–पु० दाडिम (त्रि) रसहीन । अनार. खुश्क ।

नील(म्)–न० मणिविशेष । नीलमरत्न।

नीलकण्ठ–पु० मयूर. पीतसार. दात्यूह. ग्रामचटक. खञ्जन. (न) मूलक । मोर. संदल की किसम. पपीहा. गरगवा. ममोला. जड़ ।

नीलकण्ठशिखा–स्त्री० मधुच्छदावल्ली । मोरशिखा ।

नीलदूर्वा–स्त्री० शतपर्विकातृण । स्याम दूब ।

नीलपुष्प–न० ग्रन्थिपर्ण । गठिवन ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नीलपुष्पा–स्त्री० नीलिकावृक्ष । नील का पौधा ।

नीलपुष्पी–स्त्री० सेन्दुवारवृक्ष. अतसी । संभालू का पेड़. अलसी. अरसी ।

नीलवृक्षाकृति–पु० शरपुंखावृक्ष । सरफोंका का पेड़ ।

नीलालिकुलसंकुला–स्त्री० कुब्जकपुष्पवृक्ष । कूजा ।

नीलाखण्डक–पु० रोहूमत्स्य । रोहू मच्छली

नीलिका / नीलिनी / नीली –स्त्री० नीलपुष्पावृक्ष । नील का पौधा ।

नीलोत्पल–न० नीलवर्णउत्पल । नीलोफ़र ।

नीवार–पु० तिनिसधान्य । पसही के धान ।

नूतनघृत–न० नवीनघृत । नयाघी ।

नूद–पु० वृक्षविशेष । शहतूत का दरखत ।

नृपकन्द–पु० राजपलाण्डु । बड़ा पियाज़ ।

नेत्र–न० वृक्षमूल. जटा. नाड़ी. शलाका. चक्षु । जड़. रग. सलाई. आंख ।

नेत्रोपमफला–स्त्री० वातद । बादाम ।

नेप–पु० जल । पानी ।

नेपालमूलक–न० बृहन्मूलिका । नेवारि की मूली ।

नेपाली–स्त्री० वासन्तीपुष्प. मनःशिला । नेवारि का फूल. मैनशिल ।

नेम –पु० / नेमि –स्त्री० तिनिश । तिरच्छ ।

नैपाली–स्त्री० इक्षुभेद । ऊख ।

नैयग्रोध–न० वटफल । बड़ का फल ।

नैर्झरजल–न० झरनोद्भूतजल । झरना का पानी ।

न्यग्रोध–पु० वटवृक्ष. शमीवृक्ष. व्यायामपरिमाण. (स्त्री) (धा) बृहद्दन्ती (स्त्री) (धी) मूषिकपर्णी । बड़ का दरखत. जड़ी. छीकुरि का पेड़. चारहाथ की माप. बड़ी दतूनी का पेड़. मूसेकन्नी बूटी ।

न्यङ्कु–पु० मृगविशेष । बारासिङ्गा ।

न्युब्ज–त्रि० अधोमुखकुब्ज. कुश (न०) कर्म्मरङ्गफल । कुबड़ा. कुशाघास. कमरख का फल ।

(प)

प–पु० पवन. पर्ण । हवा. पत्ता ।

पक्कदुग्धदधि–न० पके हुये दूध का दही ।

पक्षाघात–पु० अर्द्धाङ्गाघात । लकवे की बीमारी ।

पक्षिप–पु० पलाशवृक्ष । छिऊलु. ढांख ।

पक्ष्मन्–न० नेत्रावरक. लोम. पद्मादिकेशर. खगादिपक्ष । पलक. रोंआं. कमल फूल की तिरी. परिन्दों का पर ।

पङ्क–पु० न० कर्द्दम. पाप । कीचड़. गुनाह

पङ्कज–न० पद्म. सारसपक्षी । कमल. सारस ।

पङ्कार–पु० शैवल. सेतु. सोपान । शिवाल फूल. बन्द. सीढ़ी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पङ्केरुह–त्रि० पद्म. सारसपक्षी । कमल. सारस ।

पङ्करुहा–स्त्री० पद्मिनी । कमलनी ।

पङ्क्तिचर– पु० कुररपक्षी । कूंज. कुलंग ।

पङ्ग–पु० पतङ्ग. पतङ्गा. पांखी. पखाना ।

पचत–पु० सूर्य्य. अग्नि. चन्द्र । आफ-ताब. आगि. चांद ।

पचम्पचा–स्त्री०दारुहरिद्रा । दारुहल्दी ।

पचि–पु० वह्नि. पचन । आग. पकाना ।

पचेलिम–पु० सूर्य्य. अग्नि. माष । आ-फताव. आग. उड़द ।

पञ्च–त्रि० संख्याविशेष । पांच ।

पञ्चकषाय–पु० महास्नानीयपञ्चप्रकारक-षायद्रव्य. यथा. जम्बु १ शाल्मलि २ वाटवाल ३ वकुल ४ बदर ५ ।

पञ्चकोल–न० कोलपरिमाणपञ्चप्रकारद्र-व्य. यथा. पिप्पली १ पिप्पलीमूल २ चव्य ३ चित्रक ४ नागर ५ ।

पञ्चक्षीरवृक्ष–पु० यथा. वट १ उदुम्बर २ अश्वत्थ ३ शाखोट ४ प्लक्ष ५

पञ्चगव्य–न० गोसम्बन्धीयपञ्चद्रव्य. यथा। गोमल १ गोमूत्र २ गोदुग्ध ३ गोदधि ४ गोघृत ५ ।

पञ्चप्राण–पु० (बहु) प्राणादि पञ्चवायु । १ प्राण २ अपान ३ समान ४ उदान ५ व्यान ।

पञ्चप्रासाद–पु० देवगृहविशेष. पञ्चरत्न । यथा. स्वर्ण. रौप्य. ताम्र. विद्रुम. मौक्तिक ।

पञ्चवल्कल–पु० यथा. १ बट २ उदुम्बर ३ पीपल ४ साखोट या गजदण्डस-होरा. ५ प्लक्ष ।

पञ्चशस्य–न० पञ्चधान्य. यथा । १ धान २ मुंग ३ माष ४ यव ५ कोद्रव ।

पञ्चशाख–पु० हस्त । हाथ ।

पञ्चाङ्ग–न० वृक्ष का छिलका १ पत्ता २ फूल ३ फल ४ मूल ५ । कल्दुआ ।

पञ्चामृत–न० दुग्धं च शर्करा चैव घृतं दधि तथा मधु । १ दूध २ खांड़ ३ घी ४ दही ५ शहद ।

पञ्चाम्ल–न० १ अम्लवेतस. २ वृक्षाम्ल. ३ बृहज्जम्बीर ४ निम्बुक. ५ बीजपूर ।

पञ्चाशत्–त्रि० संख्याभेद।पचास.पञ्जाह ।

पञ्चेन्द्रिय–न० पञ्चज्ञानेन्द्रिय. यथा १ श्रोत्र. २ त्वच् ३ नेत्र. ४ रसन. ५ घ्राण । पञ्चकर्म्मेन्द्रिय. यथा. १ वाच् २ पाणि. ३ पाद ४ पायु. ५ उपस्थ. । हवासख-मसा. हवासनातका ।

प(पि)ञ्जर–पु० न. शरीरास्थिवृन्द । पिञ्जर ।

पटल–न० छदि. नेत्ररोग. फलविशेष (पु) वृक्ष । पड़दा. फूली आंख की बामारी. खाशफल. दरखत ।

पटि(टी–)स्त्री० पटविशेष. ताम्बुली. कु-म्भिकाद्रुम । पड़दा. सुपारी.खाशपेड़ ।

पटु–पु० पटोल. पटोलपत्र. कारबेल्ल. चोरक.(न) छत्रा. लवण. पांशुलवण । परवल. परवर. परवर का पत्ता. करे-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ला. खुसबूदार चीज. खुंब. भूतृण. निमक. शोरानिमक ।

पटुपर्णी—स्त्री० स्वर्णक्षीरिणीवृक्ष । सोना खिरीबूटी ।

पटेरक—पु० गन्धपटेर.गुद्र । गुन्द. पटेर ।

पट्टरञ्जक—पु० पतङ्ग । बकम् ।

पट्टशाक—पु०नाडीशाक । पटुआ का शाक

पट्टिकालोध्र—पु० स्थूलवल्कल । पठिआलोध ।

पणस—पु० कण्टकिफल । कटहर ।

पण्यालता—स्त्री० तेजोवती । उमगिनी. मालकङ्गुनी ।

पतङ्ग—पु० सूर्य्य. पक्षी. शलभ. धान्यविशेष, (न) पारद. पट्टरञ्जक. अग्नि. वाण । आफताब. टिड्डी. खासधान. पारा. पतङ्ग. बकम्. आग. वाण ।

पतिम्बरा—स्त्री०कृष्णजीरक । कालाजीरा

पत्तूर—न० पतङ्ग । बकम् ।

पत्र—न० पत्रक । पत्रज. तेजपात ।

पत्रनामक—न० पत्रक । पत्रज. तेजपात ।

पत्रपुष्प—पु० रक्ततुलसी (स्त्री) (ष्पा) तुलसी । लालतुलसी. तुलसी ।

पत्रसूचि—पु० कण्टक । कांटा. खार ।

पत्राङ्ग—न. भूर्यपत्र. रक्तचन्दन । भोजपत्ता. सुरख चन्दन ।

पत्राम्ला—स्त्री० चुक्र । चूक ।

पत्रीग्रन्थिल—पु० करीरवृक्ष ।

पत्रोर्ण—न० श्योनाकवृक्ष । सोनापाढ़ा ।

पथ्य—त्रि० रोगी(न)सैंधव.(पु)हरीतकीवृक्ष(स्त्री) (थ्या)हरीतकी । बीमारी. सैंधानिमक. हरीड़ ।

पद—न० पाद । पांव ।

पद्म—न० पु० पद्म. कमल. अम्बुज. पुष्करमूल. सीसकधातु । गुलेसौसन. कमल. पोहकरमूल. सीसाधातु ।

पद्मक—न० पद्माक । पद्माख ।

पद्मकर्कटी—स्त्री० कमलाक्ष । कमलगट्टा ।

पद्मकिनू—पु० भूर्जवृक्ष । भोजपात का दरखत ।

पद्मकेशर—न० किञ्जल्क । कमल फूल की तिरी ।

पद्मगन्धि—न० पद्माक । पद्माख ।

पद्मगुग्गुलु—न० गुग्गुल । गूगल ।

पद्मचारिणी—स्त्री० स्थलकमल । गुलाब ।

पद्मपत्र—न० पौष्करमूलक । पुष्करमूल ।

पद्मपत्रा—स्त्री० कर्पूरहरिद्रा । कपूरहल्दी

पद्मराग—पु० माणिक्यरत्न । मनक ।

पद्मबीज—न० पद्मकर्कटी । कमल के बीज

पद्मबीजाभ—न० माखान्न । मखाना. मखाने के लावा ।

पद्मा—स्त्री० भार्ङ्गी । भारंगी. बभनेठी ।

पद्माक्ष—न० पद्मबीज । कमलगट्टा ।

पद्माट—पु० चक्रमर्दवृक्ष । चकवड़ का पेड़

पद्माह्वय—न० पद्माक । पद्माख ।

पद्मिनी—स्त्री०स्वनामप्रसिद्धा । कमलनी

पनस—पु० कण्टकिफल । कटहर का पेड़. कटहर ।

पन्नग—पु० सर्प्प । सांप ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पयस्(स)—न० जल दुग्ध । पानी दूध ।

पयःप्रसादि—स्त्री० कतक । निर्मली ।

पयरस—पु० जल. । पानी ।

पयसनवनीत—न. दूध का मक्खन ।

पयस्विनी—स्त्री० क्षीरकाकोली. जीवन्ती. क्षीरविदारी. विदारीकंद । गेठि.

पयस्य—त्रि० पयोविकार. (पु) विडाल. (स्त्री)(स्या) दुग्धिका. आमिक्षा । दूध से बनी हुई चीज़ें. बिल्ली. दूधीया बूटी. गरम दूध में दही डालने से जो फुटके से हो जाते हैं ।

पयसा—स्त्री० अर्कपुष्पी । अर्कपुष्पी दूधीया ।

पयोधर—पु० स्त्रीस्तन. मेघ. नारिकेल. कसेरु । औरतों के स्तन. बादल. नारियल. कंगरोड़. कसेरु ।

परपुष्ट—पु० कोकिल । कोइल ।

परभृत्—पु० काक । कौआ ।

परभृत—पु० कोकिल । कोइल ।

परमान्न—न० पायस । खीर. जाउरि तसमई ।

परशु } पु० अस्त्रविशेष । फरसा.
परश्वध } कुल्हाड़ी ।

परा—स्त्री०बन्ध्याकर्कोटकी । वांझ खेखसा

पराक—पु० रोगविशेष. जन्तुविशेष ।

परानसा—स्त्री० चिकित्सा । तिब्रावत ।

परापर—न० पारूषक । फरुसा. फालसा ।

पराह्ण—पु० दिवसस्य चरमभागे । दिन का पिछला पहर ।

परिकर्म्मा } पु० सेवक । दास. खिद्-
परिचारक } मतगार ।

परिपक्व—त्रि० सुपक्व. पटु. वृक्ष ।

परिदर—पु० दन्तमांसफटजावे. और थूकते रक्त गिरे ।

परिपाकिनी—स्त्री० त्रिवृता. तेउड़ी ।

परिपेल } न० कैवर्तीमुस्तक । कोस-
परिपेलव } चीमोथा ।

परिप्लुत—त्रि० जलमग्न(स्त्री) (ता)मदिरा. रतिसमये वेदनायुक्ता योनि. । पानी में डूबा हुआ. शराब. रति के समय जिस योनि में पीड़ा होती है ।

परिमल—पु० विमर्द्दन. मर्द्दनोत्थितमनोहरगन्ध. कुंकुमादिगन्ध. मैथुन । मलना. मलने से उठी हुई दिलचस्प खुशबू. केसर वगैरः की बू ।

परिवह—पु० वायुविशेष । हवा ।

परिव्याध—पु० जलवेतस. कर्णिकारवृक्ष । बेत. नैनिया ।

परूष } न० पारूषक । फालसा ।
परूषक }

परेत—त्रि० मृत । मराहुआ. मुर्दह ।

पर्कटि } स्त्री० प्लक्ष । पाकरि. पकरिया
पर्करी } का पेड़ ।

पर्जन्य—पु० इन्द्र. मेघ (स्त्री) (न्या) दारुहरिद्रा । इन्द्र. बादल. दारुहल्दी ।

पर्जन्या } स्त्री० दारुहरिद्रा । दारुहल्दी
पर्जनी }

पर्ण—न० पत्र. पक्ष । पत्ता. पंख ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पर्णक–पु० शितिवारशाक सुरुश्रारि। का शाग।

पर्णलता–स्त्री० ताम्बूलीलता। पान की बेल।

पर्णास–पु० तुलसी (स्त्री) (सा,सि) बर्बरी। तुलसी. बबई का पौधा।

पर्णी–स्त्री० पलाशवृक्ष। छीऊल।

पर्द्द–पु० केशसमूह. अपानवायुत्याग। जूड़ा. पाद. गोज़।

पर्पट, पर्पटक–पु० वरतिक्त। द्वनपापरा. पित्तपापरा।

पर्पटपत्र–न० वरतिक्तपत्र। द्वनपापरे के पत्ते।

पर्पटा–स्त्री० पापड़। पापर।

पर्पटी–स्त्री० पद्मावतीसुगन्धद्रव्य।

पर्य–न० नवतृण। नया घास।

पर्य्यङ्कपट्टिका–स्त्री० शूकशिम्बी। सुवाशेम्बि।

पर्य्यट–पु० क्षुपभेद. मुद्गादिचूर्णकृतपिष्टकभेद (स्त्री)(टी) पद्मावतीसुगंधद्रव्य। क्षेतपापड़ा. पापड़. पद्मावती। खुशबूदार चीज़ उत्तर में प्रसिद्ध है।

पर्व्वत–पु० गिरि. मत्स्यभेद. वृक्षविशेष. शाकविशेष। पहाड़. खाशमच्छली।

पर्षरुह–पु० दाडिम। अनार।

पल–न० मांस. कर्षचतुष्टयपरिमाण। गोश्त. चार तोला।

पलक्या–स्त्री० क्षुरिकाशाक। पलाकी।

पलङ्कष–पु० गुग्गुलु। गूगल।

पलङ्कषा–स्त्री० लाक्षा. गोक्षुर. रास्ना। लाख. गोखुरू. रहसनि।

पलल–न० मांस. पङ्क. तिलचूर्ण। गोश्त. कीचड़. तिलकुट।

पलाण्डु–पु० यवनेष्टा। पियाजु।

पलाश–न० पर्णीवृक्ष। (स्त्री) (शी) लाक्षा. गन्धप्रसारणीलता। छीऊलु. लाख, गन्धपसारनि. गजदषडसहोरा. गन्धपलाशीलता।

पलाशी–स्त्री० गन्धपलाशी।

पलित–न० केशपाक. केशशुक्लता जनकरोग. शिलाजतु. ताप. कर्द्दम। बालों की सुपेदी. बालों को सुपेद करने वाली बीमारी. शिलाजीत. घाम. कीचड़।

पल्यङ्क–पु० पर्य्यङ्क। खाट।

पल्ली–स्त्री० छिपकली।

पल्लवक–पु० वेश्यापति. मत्स्यविशेष। श्रयाश. खाशमच्छली।

पल्लिका–स्त्री० गृहगोधिका। छिपकली

पल्वल–न० क्षुद्रजलाशय। पोखरा. तलैश्रा।

पवन–पु० वात (न) जल। हवा. पानी।

पवनाश–पु० सर्प्प। सांप।

पवनाल–पु० पुनेराधान्य। पुनेरा।

पवमान–पुं० वायु। हवा।

पवि–पु० वज्र। हीरा।

पवित–त्रि० पवित्र (न) सूत्र। पाक. सूत।

पवित्र–स्त्री० न० कुश. ताम्र. जल. वर्षण. घर्षण. यज्ञोपवीत. मधु. घृत.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

(न) कुशद्वय (त्रि) व्रतादिनाशुद्ध. (पु) तिलवृक्ष. पुत्रजीववृक्ष. (स्त्री०) (त्रा) तुलसी. हरिद्रा. नदीविशेष । कुस. तांबा. पानी. सहत. घी. २कुसा. तिल. पुत्रजीवा. तुलसी. हरदी. नदी खास।

पवित्रक—पु० अश्वत्थ. उदुम्बर. कुश. दूर्वा । पीपल. गूलर. कुश. दूब ।

पशुमेहनकारिणी—स्त्री० चन्द्रशूर। चंदसुरु

पश्चिम—त्रि० शेष. प्रतीचीदिक् । बाकी. पछांह. मगरब ।

पसद—न० रीतिहेतुधातु । जस्ता ।

पांशव—पु० लवणविशेष । शोरा निमक ।

पांशु—(सु) पु० धूलि. सस्यार्थं चिरसंचितं गोमयं. कर्पूरविशेष । खाक. खात. काफूर ।

पांशुपर्य्याय—पु० पर्पट । दवनपापरा. पित्तपापरा ।

पांशुल—पु० पापी । गुनहगार ।

पांशुलवण—न० लवणविशेष । शोरा निमक ।

पाक—न० शोचरलवण । विरिआ शोचर. स्याह निमक ।

पाकक्षार—पु० यवक्षार । जवाखार ।

पाकल—न० कुष्ठौषधि (पु) कुञ्जरज्वर. वायु. वह्नि । कूट. हाथी का बोखार. हवा. आग ।

पाक्य—न० विड्लवण. पांशुलवण (पु) यवक्षार. । सोंचर निमक. शोरा निमक. जवाखार ।

पाचक—न० पित्तविशेष (पु०) अग्नि. (त्रि) अन्नादिपाककारकौषधि । पित्त का नाम. आतिश. हाजमे की दवाई।

पाचनक—पु० टङ्क । सोहागा ।

पाचनी—स्त्री० हरीतकी । हरीड़ ।

पाचक—न० पचन (पु०) पाचक. अग्नि. वायु । पकाना. रसोइया. आतिश. हवा ।

पाञ्चाङ्गुल—पु० श्वेतएरण्ड । सुपेद. एरण्डा ।

पाञ्चाल—त्रि० पञ्चालदेशोद्भव । पञ्जाब देशी ।

पाटल—पु० वार्षिकधानविशेष । श्वेत-रक्तवर्ण. (न) पाटलीपुष्प । बरसाती धान. गुलाब का फूल. गुलाबीरङ्ग ।

पाटला, पाटलि } स्त्री० पाटलि । पाडुरि ।

पाटिया—स्त्री० रक्तालुभेद । अरईकन्द ।

पाठिन, पाठीन } पु० मत्स्यविशेष. गुग्गुलुवृक्ष । पढ़िना मच्छली. गूगुल ।

पाढा, पाढिका } स्त्री० पापचेलिका । पाढ़ा. पाढ़ी ।

पाण—पु० हस्त (त्रि) ताम्बूलीपत्र । हाथ पान ।

पाणि—पु० हस्त । हाथ ।

पाणिका—स्त्री० दार्वीविशेष । कड़छी. चमचा ।

पाण्डु—पु० पटोल. (त्रि०) रोगविशेष. (स्त्री) सुगन्धमूला । परवर । पांडुरोग.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

लवली. हरफारी. हरफारेवरी ।

पाण्डुक-पु० हैमन्तधान । ठण्ढकाली-धान ।

पाण्डुद्रुम-पु० कुटजवृक्ष । कोरैया का पेड़ ।

पाण्डुपुत्री-स्त्री० राजपुत्री । रेणुका. यह मिरच सदृश होती है ।

पाण्डुफल-पु० पटोल । परवर ।

पाण्डुल-पु० माषपर्णी । वन उर्द ।

पातर्णादा-स्त्री० दक्षपक्षी । मुरग ।

पातालगरुडाह्वया } स्त्री० पातालगरुडी । छिरहटा ।
पातालगरुडी

पातुकाशीश-न० कौशीश । हीराकशीस ।

पाथ-न० जल. (पु) सूर्य्य. अग्नि । पानी आफताब. आग ।

पाथस्-न० जल । पानी ।

पाथोज-न० कमल । गुलेसोसन. कमलफूल ।

पाथोद-पु० मेघ । बादल. अबर ।

पाद-पु० चरण. वृक्षमूल । पाव. जड़ ।

पादचत्वर-पु० छाग. सैकत. पिप्पल. करक । बकरा. बालू. पीपल. ओला ।

पादत्राण-न० पादुका । जूती ।

पादपोत्पल-पु० कर्णिकारवृक्ष । नैनिआ ।

पानस-न० पनसभवमद्य । कटहर का शराब ।

पानीय-न० जल । पानी ।

पानीयद्विविध-न० दिव्य । भौम ।

पानीयफल-न० मखान्न । मखाना. मखाने के लावा ।

पानीयामलक-न० प्राचीनामलक । पनिआमरा. पनिआंवला ।

पापघ्न-पु० तिल ।

पापचेलिका-स्त्री० अम्बष्ठा । पाढ़ा. पाढ़ी ।

पापशमनी-स्त्री. शमीवृक्ष । जड़ी का दरखत. छीकुरि का दरखत ।

पामघ्न-पु० गन्धक. कण्डुरोगनाशक । गोगिरद. खारिश की बीमारी को दूर करने वाला ।

पामन्-पु० विचर्चिका । खुजली की बीमारी ।

पामन-त्रि० पामरोगविशिष्ट । कच्चूर ।

पायस-पु० न० दुग्धद्वारासंस्कृतान्न । खीर. जाऊर ।

पायु-पु० गुह्यद्वार. दूर्वं । दुब. गुदद्वार ।

पार-पु० पारद । पारा ।

पारज्-पु० स्वर्ण । सोना ।

पारटीट-पु० प्रस्तर । पत्थर. संग ।

पारत-पु० पारद । पारा. सीमाब ।

पारद-पु० रसराज । पारा. सीमाब ।

पारवत-पु० कपोत । कबूतर ।

पारशव-पु० लौह । लोहा ।

पारसीकवचा-स्त्री० हैमवती । खुरासानी बच ।

पारसीकयवानी-स्त्री० खुरासानी अजवाइन ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पारावत–पु० कपोत । कबूतर ।

पारावतपदी–स्त्री० तेजोवती. काकजङ्घा । मालकङ्गुनी. मसी ।

पारिजात–पु० सुरतरु. पुष्पविशेष । फरहद का पेड़ ।

पारिभद्र(क)–पु० वृक्षविशेष. परिजातवृक्ष. देवदारुवृक्ष. निम्बवृक्ष. (न) कुष्ठौषधि । फरहद का पेड़. दियारु-देवदारु का पेड़. नीम का पेड़. कुट्ठ कूट ।

पारिभव्य–न० कुष्ठौषधि । कूट्ठ ।

पारिमाण्डल्य–न० परमाणुपरिमाण जर्रा

पारिश–पु० पालशवृक्ष- पारीरवृक्ष । छिउलु का पेड़. गजदण्ड सहोरा ।

पारीष–पु० पारीषवृक्ष । पिप्पलभेद. गजदण्डसहोरे का पेड़ ।

पारु–पु० वह्नि. सूर्य्य । आतश. आफताब

पार्थ–पु० अर्जुनवृक्ष । अर्जुन का पेड़ ।

पार्थिव–न० तगरपुष्प । तगर का फूल ।

पार्वत–पु० निम्बवृक्ष (त्रि) शल्लकी ।

पार्वती–स्त्री० आतसी अरसी, अलसी ।

पार्श्व–न० पु० कक्षाधो भाग । एक फासा फसली ।

पार्श्वक–त्रि० कक्षाधो भाग । फसली ।

पार्श्वपिप्पल–न० हरीतकी वि० । गजहरड़ ।

पार्ष्णि–पु० स्त्री० गुल्फाधो भाग । एड़ी ।

पालक–पु० घोटकरक्षक. चित्रकवृक्ष । सईस. चित्रा का दरख्त ।

पालाश–न० तेजपत्र । तमाल का पत्ता. तेजपात ।

पालि (ली)–स्त्री० कर्णकोण. नितम्ब । कान की पाली. चूतड़ ।

पालिन्दी–स्त्री० कृष्णत्रिवृत । श्यामनिशोथ ।

पावन–पु० अग्नि. सिल्हक. पीतभृङ्गराज. गोमय. रुद्राक्ष. कुष्ठ. चित्रक. (स्त्री०) (नी) गौ. गङ्गा. तुलसी । आतिश. हीराकशीश. पीलाघमिरा. गोबर. भेलावा. कुट्ठ ।

पाशुपत–पु० बकवृक्ष । कचनार ।

पाषाण–पु० प्रस्तर । पत्थर ।

पाषाणभेद–पु० अश्मभेद । पाषाणभेद औषध ।

पिक–पु० चातक. कोकिल । पपीहा. कोइल ।

पिकवल्लभ–पु० आम्रफल । आम ।

पिङ्ग–न० शावक. (स्त्री)(ङ्गा) हरिताल । हरताल. चूहा. बच्चा ।

पिङ्गल–न० रीति. पित्तल. हरिताल. (पु)सूर्य्य. नीलपीतमिश्रितवर्ण. अग्नि. नकुल. कपि (स्त्री) (ला) रीति । पीतल. हड़ताल. आफताब. जर्दरङ्ग. आग. नेउला. बन्दर ।

पिङ्गसार–पु० हरिताल । हड़ताल ।

पिचण्ड–पु० उदर । पेट. शिकम ।

पिचव्य–पु० कर्पासवृक्ष । कपास का पौधा. वंगा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पिचु-पु० कर्प्पास. कुष्ठभेद. कर्ष। रुई. एक खाश कोढ़रोग. तोला ।

पिचुमन्द } पु० निम्बवृक्ष । नीम का
पिचुमर्द्द } पेड़ ।

पिच्च } न० सीसक (पु) नेत्ररोगविशेष
पिच्चट } रांगा. आंख की खाशबीमारी।

पिच्छ-न० मयूरपुच्छ. (स्त्री०) (च्छा) कदली. मण्ड. चोलिका. शिंशपावृक्ष। मोरपङ्ख. केला. मांड़. चोली. शीशम का दरख़त ।

पिच्छा-स्त्री० शाल्मलीवेष्टक. मोचरस। सेमरका गोंद ।

पिच्छला-स्त्री० शिंशपावृक्ष.शाल्मलीवृक्ष । शीशम का पेड़. शिमला का पेड़ ।

पिच्छिली-स्त्री० बहुआर । दुद्दाल. बहुआर ।

पिञ्ज-न० शक्ति (पु) कर्पूरविशेष (स्त्री) (ञ्जा) तूल. हरिद्रा । ताकत. काफूर रुई. हल्दी ।

पिञ्जट-पु० नेत्रमल । आंख की मैल ।

पिञ्जर-न० हरिताल. स्वर्ण. नागकेशर. देहास्थिसमूह । हरताल. सोना. नागकेशर. देह की हड्डी ।

पिञ्जल-न० कुशपत्र. हरिताल । कुश के पत्ते. हरताल ।

पिञ्जान-न० स्वर्ण । सोना. तिला ।

पिञ्जूष-पु० कर्णमल । कान की मैल ।

पिटक-पु० मञ्जूषा । पिटारी. फोड़ा ।

पिण्ड-न० अय (पु) जवापुष्प. मदनवृक्ष. (स्त्री) (ण्डी) खर्जूरी । लोहा. जवाफूल. खजूर. बेल ।

पिण्डखर्जूरिका-स्त्री० पिण्डखार्जूरी । पिण्डखजूर ।

पिण्डतगर-न० कालानुमार्य्यक । पिण्डतगर ।

पिण्डपुष्प-पु० अशोकवृक्ष । अशोक का पेड़ ।

पिण्डा-स्त्री० वंशपत्री । बांसपाती ।

पिण्डार-न० कन्दविशेष. विकंकतवृक्ष । पिण्डारू. विकंकत का दरखत ।

पिण्डालुक-पु० कन्दविशेष । सुथनी ।

पिण्डीतक } -पु० मदनफल ।
पिण्डीनट } मयनफल ।

पिण्याक-न० पु० तिलकल्क. हिङ्गु. रोगविशेष । खल. पीना. हिङ्गु. हीङ्ग. पीनस की बीमारी ।

पितृहू-पु० दक्षिणकर्ण । दहना कान ।

पित्त-न० शरीरस्थधातुविशेष । सफरा ।

पित्तज्वर-पु० पतलेदस्तहों निद्रा थोड़ी. वमन हो कंठ ओष्ठ नाक पक जावे पसीना चले रोगी बकाकरे मुंह कडू रहे मूर्च्छा दाह मद और तृषालगे ।

पित्तजित्-स्त्री० मेथिका । मेथी. वनमेथी ।

पित्तल-न० आरकूट. भूर्जवृक्ष । पीतल. भोजपत्ते का पेड़ ।

पितौष्ठरोग-पु० पित्तसंबंधी ओष्ठरोग ।

पिन्यास-म० हिङ्गु । हींग ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पिपासा—स्त्री० पानेच्छा। प्यास।

पिपीलक—पु० कृष्णकीट (स्त्री) (लिका) स्याह चींउटा. चिंउटी।

पिप्पल—न० जल (पु) अश्वत्थवृक्ष। पानी. पीपल का पेड़।

पिप्पली—स्त्री० मागधी। पिप्पली. मघ।

पिप्पलीमूल—पु० ग्रन्थिक पिप्पलीमूल. पिपलामूल।

पिप्पका—स्त्री० दन्तमल। दान्तों की मैल।

पियाल—पु० चारवृक्ष। चिरौंजी का पेड़।

पिल्ल—पु० क्लेदयुक्तचक्षु। चुन्धिआंख।

पिशित—न० मांस (स्त्री) (ता) जटामांसी। गोश्त. जटामासी।

पिशुन—न० कुङ्कुम। केशर।

पिष्ट—न० शीशक. पिष्टक। सीसा. पीठी।

पिष्टिका—स्त्री० पिष्टद्विदल। पीठी।

पिसिली—स्त्री० चाङ्गेरी। अमलोनिआ का शाक।

पीठ—पु० चित्रकवृक्ष। चित्रा. चीता।

पीडन—न० व्रणस्य पूयादिनिर्गमनार्थं अङ्गुल्यादिना।

पीत—न० हरिताल। हड़ताल।

पीतक—न० हरिताल. कुङ्कुम. अगरु. रीति. हरिद्रा. पित्तल. माक्षिक (पु०) श्योनाकभेद. किङ्किरातवृक्ष। हड़ताल. केशर. अगर. शीशम. पीतल. हल्दी. सहद. तुन का पेड़।

पीतगणिका—स्त्री० स्वर्णयूथिका। जर्द्द-जूही।

पीतचेतिका—स्त्री० स्वर्णजाती। जर्द्द चम्बेली।

पीतदारु—स्त्री० दारुहरिद्रा। दारुहल्दी

पीतदुग्धा—स्त्री० चुक्र। चूक।

पीतद्रु—स्त्री० दारुहरिद्रा। दारुहल्दी।

पीतन—न० कुङ्कुम. हरिताल. पीतदारु. (पु) वृक्षविशेष. आम्रातक। केशर. हड़ताल. पिलखन. आमड़ा।

पीतपर्णा—स्त्री० लताविशेष। विछड़ीबूटी।

पीतपुष्प—पु० कर्णिकारवृक्ष (स्त्री) (ष्पा) इन्द्रवारुणी (स्त्री) (ष्पी) सहदेवी. कर्कोटकी. त्रपुषी (पु) धामार्गव। असिलतास का पेड़. इन्दोरनि की बेलि. वोड़तुंश्रा. सहदेइया. खेखसा. खीरा. तोरई. कडुई तोंबी।

पीतफलक—पु० शाखोट। सहोरा का पेड़

पीतफेन—पु० माङ्गल्य। रीठा।

पीतवृक्ष—पु० सुरभिदारुकवृक्ष। धूपसरल

पीतभद्रक—पु० किङ्किरातवृक्ष। किंकिराठ का पेड़।

पीतमणि—पु० मणिविशेष। पुषराजरत्न।

पीतमालती—स्त्री० स्वर्णमालती। जर्द्द-चम्बेली।

पीतयूथिका—स्त्री० स्वर्णयूथी। जर्द्दजूही।

पीतरत्न—न० गोमेदमणि। पुषराजरत्न।

पीतराग—न० केशर. सिक्थक्। फूल की तिरी. मोम।

पीतराजपुत्रिका—स्त्री० स्वर्णजाती। जर्द्द-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

चम्बेली ।

पीतरोहिणी–स्त्री० गम्भारी । खंभारि का पेड़ ।

पीतशालक–पु० असन । विजैसार ।

पीतसार–न० हरिचन्दन. (पु) गोमेदक मणि. असन. तुरुष्क. शिलरस. बीजक । ज़र्द सन्दल. पुखराजरत्न. विजैसार. शिलारस. लोहवान ।

पीतसारि–न० अञ्जन । सुरमा ।

पीतसुमना } स्त्री० स्वर्णजाती ।
पीतहृद्यगन्धा } ” ज़र्दचम्बेली ।

पीता–स्त्री० हरिद्रा. दारुहरिद्रा । हल्दी. दारुहल्दी ।

पीताकङ्गु–पु० स्त्री० पीताकङ्गुनी । जर्दकांगुनी ।

पीतादेवदाली } स्त्री० सोनैआ । बंदाल
पीतापरा }

पीताप्रियङ्गु–स्त्री० स्वर्ण कङ्गुनी । जर्दकांगुनी ।

पीताभ–न० पीतचन्दन । कलम्बक. जर्द सन्दल ।

पीताम्बष्ठा–स्त्री०स्वर्णयूथिका । ज़र्दजूही

पीतिका–स्त्री० हरिद्रा स्वर्णयूथी । हल्दी. ज़र्द जूही ।

पीतिन्–पु० घोटक । घोड़ा ।

पीतु–पु० सूर्य्य. अग्नि । सूरज. आतिश ।

पीथ–न० घृत. जल (पु) सूर्य्य. अग्नि. काल । घी. पानी. सूर्य्य. आग. वक्त ।

पीनस–पु० प्रतिश्या । खांसी. जुकाम ।

पीनस्कन्ध–पु० महिष । भैंसा ।

पीपरि–पु० ह्रस्वप्लक्ष । पकरिआ ।

पीयूष–न० दुग्ध । दूध ।

पीलक–पु० पिपीलिका । चिउटा. मकौड़ा ।

पीलु–पु० प्रसून. परमाणु. अस्थिखण्ड. कृमि. प्रसिद्धफल. वृक्षविशेष । फूल. जरह. हड्डी का टुकड़ा. कीड़ा. पीलू का फल. दरखत ।

पीलुपर्णी–स्त्री० मूर्वा. कुन्दुरुकी । सुरहरी. कुंदुरु ।

पीवन्–त्रि० स्थूल(पु)वायु । मोटा. हवा

पीवर–त्रि० स्थूल (स्त्री)(रा) अश्वगन्धा. शतावरी. (स्त्री) (री) शतमूली. शालपर्णी. युवतीस्त्री. तरुणीगौ । मोटा. असगंध. छतावरि. महाछतावरि. सरिवन. जवान औरत. जवान गौ ।

पुंसवन–न० दुग्ध. गर्भसंस्कारविशेष । दूध. सियौर ।

पुच्छिन्–पु० कुक्कुट । मुरग़ ।

पुट(क)–न० जातीफल. औषधिपाकपात्र (पु०न०) अश्वखुर (त्रि) आच्छादन । जायफल. सरावसम्पुटपात्र. घोड़ों का सुम्ब. ढ़कना ।

पुटिका–स्त्री० एला । इलायची ।

पुण्डक–पु० माधवीलता ।

पुण्डरिन्–पु० औषधिविशेष ।

पुण्डरीक–पु० व्याघ्र. आम्र. सर्प्प. हस्तिज्वर. दमनकवृक्ष. कमण्डलु. श्वे-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तवर्ण. कुष्ठविशेष. कीटविशेष (न) सितपद्म. श्वेतछत्र. भेषज(त्रि) श्वेत।

पुण्ड्र–न० कृष्णइक्षु. वङ्ग देश. पिपीलकृमि. ह्रस्वप्लक्ष । स्याहपौंडा. वंगाले का मुल्क. त्रिजटा. छोटीपिलखन. पकरिया ।

पुण्य–न० धर्म्म. (स्त्री) (ण्या) तुलसी ।

पुण्यगन्ध–पु० चम्पक । चम्पे का फूल ।

पुण्यजन–पु० सज्जन । राक्षस ।

पुण्यतृण–न० श्वेतदूर्वा । सुपेददूब ।

पुत्रक–पु० सन्तान. वृक्ष विशेष । बेटा. पतौजिआ का पेड़ ।

पुत्रका } –स्त्री० लक्ष्मणबूटी ।
पुत्रकारिका } सपेदफूल की भटकटैया ।

पुत्रजीव–पु० पुत्रजीवकवृक्ष । पितौजिआ का पेड़ ।

पुत्रदा–स्त्री० वन्ध्याकर्कोटकी. वांझ करोल बेल. वांझ खेखसा ।

पुत्रभद्रा–स्त्री० बृहज्जीवन्ती लता ।

पुत्रशृङ्गी–स्त्री० अजशृङ्गी । मेढ़ासिंही बूटी ।

पुनर्नव–पु० नख (स्त्री) (वा) शोथघ्नी औषध । नाखून. गदापुरैना ।

पुनर्भव–पु० नख । नाखून ।

पुन्नाग–पु० विडंगवृक्ष. श्वेतपद्म. जातिफल । वाइविड़ग का दरखत. सुफेद कमल का फूल. जायफल ।

पुन्नाट–पु० प्रपुन्नाट । चकवड़ का वृक्ष ।

पुर–न० गेह. देह. पाटलिपुत्रनगर. मुस्ता. चर्म्म. नागर(पु) गुग्गुलु । घर. जिस्म. पटना. नागरमुस्था. चमड़ा. गूगल ।

पुर्–न० स्त्री० नगरी (पु) गुग्गुलु । शहर गूगल ।

पुरग–पु० कुटन्नत्वक् । गुड़तजी. कोसची सोथा ।

पुरञ्जन–पु० जीव (स्त्री) (नी) मति । रूह. अकल ।

पुरट–न० सुवर्ण । सोना ।

पुरण–पु० समुद्र । समुंदर ।

पुरन्दर–न० चविक (पु) इन्द्र. चौर. (स्त्री) (री) भागीरथीनदी । स्याह मिरच. इन्द्र. चोर. गङ्गानदी ।

पुरा–स्त्री० पूर्वदिशा । मशरक ।

पुराणघृत–न० पुराना घी ।

पुरासिनी–स्त्री० सहदेवीलता । सहदेइया बेल ।

पुरीष–न० विष्ठा । गूह ।

पुरु–न० गुग्गुलु । गूगल ।

पुरुष–पु० पञ्चमहाभूतशरीरसमवायः । पृथिव्यादिक पञ्चतत्त्व और जीव के संयोगरूप को पुरुष कहते हैं ।

पुल–पु० पर्वतीयमृत्तिकाविशेष ।

पुलक–पु० रोमाञ्च. अङ्गुष्ठ, कीट पाषाणविशेष. हरिताल. मद्यपात्र. राजसर्षप । रोंआं की फूट. अंगूठा. कीड़ा. खाशपत्थर. हरताल. शराब का प्याला. राई ।

पुलकिन्–पु० धाराकदम्ब । केलि कदम्ब।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पुष्कर–न० जल. व्योम. मुख, पद्म, पुष्करमूल.(पु)रोगविशेष. सारसपक्षी। आब. आसमान. चेहरा. गुलेसोसन. पोहकरमूल. खाशबीमारी. सारस।

पुष्करणी–स्त्री० पद्मिनी। कमलनी।

पुष्करमूल–न० पुष्करदेशप्रसिद्ध. कुष्ठभेद. औषधविशेष। पोहकरमूल।

पुष्करिणी–स्त्री० स्थलपद्मिनी. पुष्करमूल. पद्मनी। सूरजमुखीफूल कुट्ठ।

पुष्टि–स्त्री० अश्वगन्धा। असगन्ध।

पुष्प–न० कुसुम. स्त्रीरज. नेत्ररोगविशेष. रसाञ्जन। फूल. हैज.फूली. रसवत

पुष्पकाशीश–न० पीतकाशीश। कौशीश. काशीशसाङ्ग, फूल।

पुष्पपुर–न० पाटलिपुत्रनगर। पटना।

पुष्पफल–पु० कपित्थ। कैथा का पेड़।

पुष्पवस्ता–स्त्री० ह्रीवेरद्वय। हाहूवेर दोंनो।

पुष्पराग–पु० मणिभेद पद्मराग। पुषराजरत्न।

पुष्परोचन–पु० नागकेशर। नागकेशर।

पुष्पाण्डक–पु० हेमन्तऋतुकाधान। ठंढकालीधान।

पुस्तशिम्बिका } –स्त्री० राजशिम्बी।
पुस्तशिम्बी } सेमा, शेंबा।

पूग–पु० गुवाकवृक्ष. कण्टकीवृक्ष. स्थूलपूग (न) पूगफल (स्त्री) (गी) गुवाकफल। सुपारी का पेड़. झाली. तूत का पेड़. सुपारी।

पूगीफल–न० गुवाकफल। सुपारी।

पूत–न० अपनीततुषधान्य. (पु) शङ्ख. श्वेतकुश। छड़ेहुएचावल. शंख।

पूतधान्य–न० तिल. यव। तिल. जौ।

पूतना–स्त्री० हरीतकी. गन्धमांसी. रोगविशेष. हरीड़. जटामांसी. खाशबीमारी।

पूता–स्त्री० दुर्वा। दूब।

पूति–स्त्री० पवित्रा. दुर्गन्ध. (न) रोहिषतृण। पाकीजगी. बदबू. हरद्वारीकुश

पूतिक–न० विष्ठा (पु) पूतिकरञ्जवृक्ष। रोगविशेष. गूह. घोराकरञ्ज. खाश एक बीमारी।

पूतिकरञ्ज–पु० घोराकरञ्ज। घोराकञ्जा।

पूतिका–स्त्री० विडाली। बिल्ली।

पूतिगन्ध–न० रङ्ग(पु)गन्धक. इङ्गुदीवृक्ष। राङ्गा. गन्धक. हिङ्गोट का पेड़।

पूतितैला–स्त्री० ज्योतिष्मतीलता। लताफटकड़ी बेल. मालकङ्गुनी।

पूतिफला–स्त्री० वाकुची। बकुची।

पूप–पु० पिष्टक। बड़ा।

पूय–न० क्षतज। पीब. रेम।

पूयन–न० पूय। पीब. रेम।

पूयारि–पु० निम्बवृक्ष। नीम का पेड़।

पूर–पु० शष्कुली. पिष्टकशष्कुली। पूरी. कचौरी.।

पूरक–पु० बीजपूर। बिजौरानिम्बू।

पूरण–न० कुटन्नट (स्त्री) (णी)शाल्मलीवृक्ष। खरस. कोसचीमोथा. सिम्बले

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

का पेड़. वस्तिनेत्र प्रभृतिषु तैलादिना।
पूरिका—स्त्री० पिष्टिका। पूरी. कचौरी।
पूष—पु० ब्रह्मदारुवृक्ष। तून का दरखत।
पृथक्पर्णी—स्त्री० पृष्ठिपर्णी। पिठवन।
पृ(थ)थिवी—स्त्री० धरा। ज़मीन।
पृथिता—स्त्री० आलुकी। अरई।
पृथु—पु० कृष्णजीरक (स्त्री) अहिफेन. हिङ्गुपत्री। स्याहजीरा. अफीम. हिंगुपत्ती. हिङ्गोट की पत्ती।
पृथुक—पु० न० चिपिटक (पु) बालक (स्त्री) हिङ्गुपत्री. बालिका। चिउरा. लड़का. हिङ्गोट ली पत्ती।
पृथुकृष्णा—स्त्री० कृष्णजीरक। कलौंजी।
पृथुपलाशिका—स्त्री० सुव्रता। गन्धपलासी काश्मीरमें प्रसिद्ध है।
पृथुरोमा—स्त्री० मत्स्यविशेष।
पृथुला—स्त्री० हिङ्गुपत्री।हिंगोटकी पत्ती
पृथुशृङ्गा—स्त्री० दुम्बक। दुम्बा मेंढ़ा।
पृथुसिम्ब—पु० श्योनाक। सोनापाढ़ा।
पृथ्वी—स्त्री० पृथिवी. स्थूलैला. पुनर्नवा. कृष्णजीरक। ज़मीन. बड़ी इलायची. गदापुरैना. कलौंजी. स्याहजीरा।
पृथ्वीका—स्त्री० बृहदैला. सूक्ष्मैला. हिङ्गुपत्री. कृष्णजीरक। बड़ीइलायची. छोटी इलायची. हिङ्गोटपत्ती. कलौंजी. स्याहजीरा।
पृदाक—पु० सर्प्प. वृश्चिक. व्याघ्र. चित्रक. हस्ती. वृक्ष। सांप. बिच्छु. बाघ. चीता. हाथी. पेड़।

पृश्निपर्णी—स्त्री० पृष्ठिपर्णी। पिठवन।
पृषत्—पु० श्वेत विन्दुयुक्त.विन्दु। हरिन जिस पर सुफेद धब्बे हों. बून्द।
पृषदश्व—पु० वायु। हवा।
पृषदाज्य—न० दधिसिक्तघृत। दही से मिला घी।
पृषन्ति—पु० विन्दु। बूंद. कतरा।
पृष्ठ—शरीरपश्चाद्भाग। पीठ. पीछा।
पृष्ठदृष्टि—पु० भल्लूक। रीछ।
पृष्ठिपर्णी—स्त्री० पृश्निपर्णी। पिठवन।
पेचु—न० शाकविशेष।
पेट—पु० प्रहस्त (त्रि)पेटक. उदर (स्त्री) (टी) मञ्जूषा। चपेड़. पटार. शिकम. पिटारी।
पेटक—पु० वंशवेत्रादिमयसमुद्गकप्रायमञ्जूषा. (न) कदम्बक. समूह। पेटार. मजमह।
पेड़ा—स्त्री० महापेटिका। बड़ा सन्दूक।
पेत्व—न० अमृत. घृत। घी।
पेय—न० जल. दुग्ध। आब. दूध (त्रि) पातव्य. मांड़।
पेयूष—न० पु० अभिनवपयः। नई व्याई गाय का दूध. घी. अमृत।
पेरु—पु० वन्हि. समुद्र. पक्षीविशेष. सूर्य। आग. समुन्दर. सूजर।
पेरोज—न० उपरत्नविशेष। फ़िरोज़ा।
पेल—न० पुँश्चिन्ह। पुरुष चिन्ह बयज़ा. जाना।
पेशि (शी)—स्त्री० अण्ड. मांसपिंड।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वैजा. गोश्त का पिण्ड ।
पेषण—न० चूर्णयन्त्र. पीसना. चक्की ।
पेषणि—स्त्री० पेषणशिला । सिलवट ।
पैठर—त्रि० स्थालीपक्वमांसादि । डेगचे में रन्धे हुए मांस वगैरह ।
पैष्टी—स्त्री० पिष्टकविकाररूपमद्यभेद । आटे से निकाली हुई शराब ।
पोगण्ड—पु० दशवर्षीयबालक । दश वर्ष का लड़का ।
पोट—पु० वेश्मभूमि (स्त्री) (टा) पुरुषलक्षणयुक्ता स्त्री । दाहड़ी मूछ वाली स्त्री ।
पोटगल—पु० नल. कुश । नरकुल. कुशा घास ।
पोटिक—पु० विस्फोटक । मातारोग ।
पोतकी—स्त्री० पोदिकाशाक । पोयशाग ।
पोत्रित्—पु० बराह । सुअर ।
पोलिका—स्त्री० पिष्टकविशेष । चपाती. फुलका ।
पोलिता—स्त्री० पिष्टिका । पूरी. दुनौरी. फुलौरी ।
पौण्ड्र—पु० देशविशेष । चन्देलीका मुल्क ।
पौण्ड्रक—पु० श्वेतइक्षु । सुफ़ेद गन्ना. पौंड़ा ।
पौण्डर्य्य } न० पुण्डेरी ।
पौण्डरीयक } सुगन्धद्रव्यविशेष ।
पौतिक—न० पौतिकमधु । कैरामाखी का सहद ।
पौर—न० नगर. रोहिषतृण । शहर. रामकपूर, हरद्वारीकुश ।
पौलि—पु० पाकावस्थागतकलायादि । भूंजे हुये जौ. मटर. चने आदि ।
पौष्कर—न० पुष्करमूल । कूटकाभेद पुष्करमूल है ।
प्रक्षालन—न० जल आदि से धोना ।
प्रधमन—न० नाक में नास सूंघना ।
प्रमार्जन—न० शोधना. पोंछना. झाड़ना ।
प्रकर—न० अगरु । अगर ।
प्रकीर्ण—न० चामर. अध्याय. व्यजन. (पु) पूतिकाङ्ग. अश्व (त्रि) विक्षिप्त । चंवर. बाब. पङ्खा. घोराकरञ्ज. घोड़ा विखरा हुआ ।
प्रकीर्य्य—पु० पूतिकरञ्ज । घोराकरञ्ज.
प्रकृति—स्त्री० स्वभाव. योनि. लिङ्ग. स्वामी. अमात्य. सुहृत्. कोष. राष्ट्र. दुर्ग. बल. पुरवासीसमूह. शिल्पी. शक्ति. योषित्. स्त्री. परमात्मा. पञ्चभूत. गुह्य. जन्तु. एकविंशत्यक्षरपादछन्दोविशेष. माता. प्रत्ययप्रथम. सत्त्वरजस्तमसां साम्यावस्थाप्रकृतिः । मिजाज़. फुर्ज. केर. मालिक. वजीर. दोस्त. खजाना. जिला. क़िला. फौज़. शहर का वासि. मजमह. कारीगर. औरत. खुदा. गुदा. जानवर. २१ हर्फोंका बहर. मापनेवाला. प्रत्यय का पहला. कायम मिज़ाज़ ।
प्रकोष्ठ—पु० कूर्प्पराधोभागस्यमणिबन्धपर्य्यन्त हस्तावयव । कोहनी से हाथ के पौंहचे तक ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्रगण्ड—पु० कूर्प्परोपरिकक्षपर्य्यन्तभाग । कोहनी से लेके बग़ल तक बाज़ू ।

प्रगे—व्य० अतिप्रातःकाल । सुबह के वक्त

प्रग्रह—पु० कर्णिकारवृक्ष । कनयर का पेड़

प्रचण्ड—पु० श्वेतकरवीर । सुफ़ेद कनयर

प्रचोदनी—स्त्री० कण्टकारी । कंडियारी. भटकटैया ।

प्रच्छर्दिका—स्त्री० वमि । डोकी. उखाल. ।

प्रजाहित—न० जल । पानी ।

प्रजि (जी) न० पु० वायु । हवा ।

प्रणाद—पु० कर्णरोगविशेष । कान की बीमारी ।

प्रतल—पु० चपेट । हथेली ।

प्रतापिनी—स्त्री० गन्धप्रसारणी । गन्धपसारनि ।

प्रतिदि(दी)वन्—पु० सूर्य्य । सूरज ।

प्रतिविषा—स्त्री० अतिविषा । अतीश ।

प्रतिविष्णुक—पु० मुचुकुन्दवल्ली । मुचुकुन्द की बेल ।

प्रतिश्या स्त्री० } रोगविशेष । पीनस का रोग. ज़ुकाम ।
प्रतिश्याय पु० }

प्रतीक—पु० अवयव. पटोलवल्ली । अंग. परवर ।

प्रतीयस—पु० श्वेतार्कवृक्ष । सुफ़ेद मदार का पेड़ ।

प्रत्यक्पर्णी—स्त्री० बृहद्दन्ती. अपामार्ग । बड़ी दतूनिका पेड़ । लटजीराका पौधा

प्रत्यूषस्—पु० प्रभात । सुबह ।

प्रदर—पु० योनिरोगभेद । औरतों की बीमारी ।

प्रदीपन—पु० विषविशेष । प्रदीपनज़हर ।

प्रपथ्या—स्त्री० हरीतकी । हरीड़. हरड़ ।

प्रपद—न० पादाग्र । पांव. पांव का शिर ।

प्रपा—स्त्री० पानीयशाला । पौसाला. छबील ।

प्रपाणि—पु० कराधोदेश । हाथ की पीठ ।

प्रपादिक—पु० शिखी । मोर. ताऊस ।

प्रपुन्नाट—पु० चक्रमर्दवृक्ष । चकवड़ ।

प्रपौण्डरीक—न० पुण्डेरी नामक सुगन्धद्रव्य । पुंडेरिया ।

प्रबरलोह—न० कृष्णागरू । स्याहअगर ।

प्रबाल—न० वैडूर्य्य । मूंगारत्न ।

प्रबालफल—न० रक्तचन्दन । लालसन्दल

प्रभञ्जन—पु० वायु । हवा ।

प्रभद्र—पु० निम्बतरु । नीम का पेड़ ।

प्रभाकर—पु० सूर्य्य. अग्नि. चन्द्र. समुद्र. अर्कवृक्ष । सूरज. आग. माहताब. समुंदर. आक का पेड़ ।

प्रभाकीट—पु० खद्योत । पटबीजना. जुगनू ।

प्रभात—न० प्रातःकाल । सुबह ।

प्रभु—पु० पारद । पारा ।

प्रमथा—स्त्री० हरीतकी । हरड़ ।

प्रमद—पु० हर्ष (न) धूस्तरफल (त्रि) मत्त (स्त्री) (दा) उत्तमास्त्री । खुशी. धत्तूरह. मतवाला. खूबसूरत औरत ।

प्रमुख—पु० पुन्नागवृक्ष । सुपारी का पेड़ ।

प्रमेह—पु० रोगविशेष । मेह रोग. यकीन्न ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्रमोदिनी–स्त्री० झिङ्गिनी । जिङ्गिनी ।

मोदक–पु० गर्भ ही में पकने वाला धान सेढ़ ।

प्ररूढ़–पु० जठर । पेट ।

प्ररोही–स्त्री० पिप्पलभेद । बेलिया पीपल ।

प्रलम्ब–पु० त्रपुष. पयोधर । टीन. पिस्तान ।

प्रलेह–पु० अवलेह । चटनी

प्रवण–त्रि० उदर । पेट ।

प्रवार–न० अगरु । अगर ।

प्रवाणि(णी)–स्त्री० तन्त्रशलाका । तांती की तुरी ।

प्रवाल–पु० न० पल्ल. सूंगा । नयापत्ता मोंगा ।

प्रष्ठौही–स्त्री० बालगर्भिणी । पहिलन ।

प्रशस्तजल–न० स्वच्छजल । साफ पानी ।

प्रसाधना–स्त्री० कङ्कतिका. सिह्नि । कंघी. बूटी ।

प्रसारणी–स्त्री० लज्जालुलता. गंधप्रसारणी । लाजवन्ती. गन्धपसारणि ।

प्रसू–स्त्री० माता. घोटकी. कदली. वीरुतलता । महतारी. घोड़ी. केला. खासबेल ।

प्रसृत–न० पलद्वय (पु) अर्द्धाञ्जलि (स्त्री) (ता) प्रजङ्घा । ८ तोला. चुल्लूभर. जांघ ।

प्रस्थ–पु० परिमाणविशेष । ६४ तोला ऽ॥-॥ तौल ।

प्रस्थपुष्प–पु० मरुवक । मरुआ ।

प्रस्यिका–स्त्री० माचिका । केवैया का पौधा ।

प्रस्राव–पु० मूत्र । पेशाब ।

प्रहर्षणी–स्त्री० हरिद्रा । हलदी ।

प्रहारवल्ली–स्त्री० रोहिणी लता ।

प्राचीना–स्त्री० अम्बष्ठा । पाढ़ा. पाठा ।

प्राचीनामलक–न० पानीयामलक । पनिआमरा ।

प्राण–पु० वक्त्रसंचारीवायुः । मूर्द्धोरः कंठनासिकापि प्राणस्य स्थानं । दुष्टप्राण-हिक्काश्वासप्रतिश्यायभेदकासादिकरोग करता है । बोल ।

प्राणस्–पु० शरीरस्यपञ्चप्राण. यथा, १ प्राण, २ अपान, ३ समान ४ उदान ५ व्यान ।

प्रातर्–व्य० प्रभात । सुबह ।

प्रातिका–स्त्री० जयावृक्ष । दुपहरिया का पेड़ ।

प्रामाद्य–पु० वासकवृक्ष । रूसा का पेड़

प्रालेय–न० हिम । बरफ ।

प्रावृषायणी–स्त्री० कपिकच्छुवल्ली । किमाच. खजोहरा की बेल ।

प्राह्ल–पु० पूर्वाह्न । दिन का पहला पहर ।

प्राह्णेतराम् (तमां)–व्य० अतिप्रत्यूष । बहुत सुबह ।

प्रिय–पु० भर्ता. पति. मृगभेद. ऋद्धिनामौषधि (त्रि) हृद्य (स्त्री) (या) भार्य्या. एला. मल्लिका. मदिरा. गंधप्रियङ्गु.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

हरिद्रा । स्वामी. खासहरिण. खासबूँटी. दिलपसंद. जोरू. इलायची. मालती. शराब. खुशबूदार खास प्रियंगु. हल्दी ।

प्रियक–पु० कदम्बवृक्ष. असनवृक्ष । कदम का पेड़. विजैसार का पेड़ ।

प्रियकरी–स्त्री० कण्टकारी । भटकटैया ।

प्रियङ्गु(ङ्गू)–स्त्री० फलिनीवृक्ष. राजिका. पिप्पली । खास खुशबूदार बेल. राई. पिपली. मद्य ।

प्रियतम–पु० वृक्षविशेष ।

प्रियदर्शन–त्रि० सुदृश्य (पु) शुकपक्षी. क्षीरिकावृक्ष । खूबसूरत. तोता. खिरनी का दरख्त ।

प्रियाल–पु० बहुलवल्कलवृक्ष । चिरोंजी का पेड़. पीपल का पेड़ ।

प्रेत्यच्छूणी–स्त्री० बृहद्दन्ती । बड़ी दन्तून का पेड़ ।

प्रेष्ठ–त्रि० अतिप्रिय (स्त्री) भार्य्या. जङ्घा. बहुत प्यारा. जोरू. जांघ ।

प्रो(प्रौ)ष्ठ–पु० (स्त्री(ष्ठी) मत्स्यभेद. गौ खास मच्छली. गाई ।

प्रोथ–पु० न० कटी. स्त्रीगर्भ । कमर. औरत का हमल ।

प्लक्ष–पु० वृक्षविशेष । पाकड़ का पेड़ ।

प्लव–पु० पर्कटीवृक्ष (न) कैवर्तीमुस्तक. गन्धतृण । पाकड़ का दरखत. नागर मुस्ता. खस ।

प्लवग(ग)–पु० वानर. भेक. सारथी. कैवर्तीमुस्तक । बन्दर. मेढ़क. गाड़ीवान् नागर मोथा. गुड़तजी ।

प्लि(प्ली)हा–स्त्री० रोगविशेष । तिल्ली की बीमारी. पिलही ।

प्लीहशत्रु–पु० शरपुङ्खा । सर्फोका का पेड़

प्लीहहन्त्री–स्त्री० हबुषा । हौहबेर ।

(फ)

फञ्जिपचिका–स्त्री० आखुपर्णी । मूसेकन्नी बूटी ।

फरञ्जी–स्त्री० भाङ्गी । भारगी. बभनेटी ।

फटा–स्त्री० दन्त. शरीर । दांत. देह ।

फणा–स्त्री० सर्प्पमस्तक । सांप का फन ।

फण(णा)धर–पु० सर्प्प. सांप ।

फणिज्जक–पु० मरुवक । मरुआ ।

फणिप्रिय–पु० वायु । हवा ।

फणिभृत्, फणिन् –पु० सर्प । सांप ।

फणी–स्त्री० मरुबक । मरुआ ।

फल–न० शस्य. लाभ. फलक. कार्य्य. जातीफल. त्रिफला. कक्कोल. पूगफल. (पु) कुटजवृक्ष. अस्थिखण्ड. नागकेशर । अन्न. फल. नफा. ढाल. काम. जायफल. (आंवला १, हर २, वहेरा ३) शीतलचीनी. कुरैआ का पेड़. हड्डी का टुकड़ा. नागकेशर. सुपारी ।

फलकेशर–पु० नारिकेलवृक्ष । नारियल का पेड़ ।

फलगू–स्त्री० काष्ठोदुम्बरिका । कठूमरि ।

फलत्रिक–न० त्रिफला । (आंवला १,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

हर २, बहेड़ा ३)।

फलपुच्छ–पु० एरण्डवृक्ष । एरण्डी का पेड़ ।

फलपुष्पा–स्त्री० पिण्डखर्जूरी. निम्बुक। पिण्ड खजूर. निंबू ।

फलपूरक–पु०बीजपूरक। विजौरानिम्बू।

फलफिनी–स्त्री० मत्स्यविशेष। मछली ।

फला–स्त्री० शमीवृक्ष। छीकुरि का पेड़।

फलाध्यक्षा–स्त्री० क्षीरिणी । खिरनी ।

फलिनी–स्त्री० प्रियङ्गु। खुशबूदार चीज, गन्धप्रियंगू ।

फलेन्द्रा–स्त्री० फलेद्राजम्बूवृक्ष। फेरद-जामुनि का पेड़ ।

फलेपुष्पा–स्त्री० द्रोणपुष्पी । गूमा ।

फलेरुहा–स्त्री० पाटला। पाण्डरि ।

फाणि–पु० गुड़विकार. करम्भ. दधिमि-श्रितसक्तु। गुड़ का सीरा. राव. दही सतुआ ।

फाणिज–न० गुड़विकारविशेष । फेणी ।

फाल–त्रि० कर्पासवस्त्र । सूती कपड़ा।

फाल्गुन–पु० मासविशेष । फागुन का महीना ।

फाल्गुनानुज–पु० वसन्तकाल । वहार ।

फुत्कार–पु० अग्नि । आग ।

फेणिका–स्त्री० बुद्बुद । बुलबुला ।

फेणि(नि)–स्त्री० पक्वान्नविशेष । फेनी

फेन–पु० समुद्रफेन ।

फेनिल–पु० अरिष्टक। रीठा (न) कोल । वैरि ।

फेर(ण्ड)–पु० शृगाल। गीदड़. सिआर।

फेरव–पु० शृगाल. राक्षस। सिआर. दुष्टमनुष्य ।

फेरु–पु० शृगाल.वञ्चक। सिआर.फरेबी।

फेल(क)–न० भुक्तसमुज्झित (स्त्री)(लि=ली=लिका) । जूठ ।

(ब)

बडवा–स्त्री० घोटकी । घोड़ी ।

ब(व)दरा–स्त्री० अश्वगन्धा.क्षीरविदारी। असगंध. विदारी कंद ।

ब(व) दरामलक–न० प्राचीनामलक । बड़ा आमला ।

ब(व)दरी–स्त्री०। कोल वैरि ।

ब(व)दरीफला–स्त्री० नील शेफालिका। संभालू ।

ब(व)हुफल–पु०करञ्जवृक्ष। करंजुआ कंज।

ब(व)हुशिखा–स्त्री० उच्चटा । सफ़ेद या लालरत्ती ।

बधिर–त्रि० श्रवणेन्द्रियरहित। वहिरा ।

बन्ध–न० सीसक(स्त्री)(न्धनी) चर्म्मरज्जु। सीसा. चमड़े की रस्सी ।

बन्धन–न० रज्ज्वादिना । बांधना ।

बन्धु–पु० वृक्षविशेष "बन्धुआली" दरखत

बन्धुजीव–पु० जया। गेजुनिआ, दुपहरिआ का पौधा ।

बन्धुर(ल)–न० स्त्रीचिन्ह (पु) तिलकल्क. बिडङ्ग. बकपक्षी. बन्धुजीववृक्ष (स्त्री) (रा) सक्तुक.औरत की निशान. खलं. वायविडङ्ग. बगुला. दुपहरिया. सत्तू ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

बन्धूक–पु० बन्धुजीवपुष्पवृक्ष । गुलेदुपहरिया का पौधा ।

बन्धूकपुष्प–पु० असनवृक्ष । विजैसार ।

बन्धूलि–स्त्री० पु० बन्धुजीवपुष्पवृक्ष । गुलदुपहरी ।

बन्ध्य–त्रि० फलशून्यवृक्ष । विना फल के पेड़. बञ्झर ।

बन्ध्याकर्कोटकी, बन्ध्याकर्कोटी } वृक्षविशेष । बांझकरोड़बूटी. बांझ खेखसा ।

ब(व)बूल–पु० किङ्किरातवृक्ष । बबूल का पेड़. कीकर का पेड़ ।

बभ्रु–पु० नकुल. बह्नि(त्रि) खञ्ज । नेउला. आतिश. ममोला ।

बर–न० कुङ्कुम. आर्द्रक. (स्त्री०) (रा) त्रिफला । केशर. अदरक. आमला. हरड़. बहेरा ।

बर्बट–पु० राजमाष (स्त्री) (टा) वेश्या । रवांह. कंचनी ।

बल–न० गन्धरस. शुक. देह. पल्लव. रक्त, (पु) काक. ष्वरुण (ल्ल) वृक्ष. (स्त्री) (ला) क्षुद्रवृक्षविशेष । शिलारस. मोटाई. तोता. जिस्म. पत्ता. खून. कौवा. खास दरख्त. खास छोटा पौधा ।

बलभद्रा–स्त्री० त्रायमाण । त्रायमणा ।

बलतरु–पु० बरबेल ।

बलरसा–स्त्री० गन्धक ।

बलाका–स्त्री० बकजातिविशेष । बगलों की किस्म ।

बलाट–पु० मुद्ग । मूंग ।

बलामोटा–स्त्री० नागदमनीलता ।

बलाय–पु० वरुणवृक्ष ।

बलाहक–पु० मेघ. मुस्तक । मेह. नागरमोथा ।

बलि–पु० चामरदण्ड (स्त्री) जराद्वारालोलितचर्म्म. जठरावलि. गुह्याङ्कुर. गन्धक । चवर की दण्डी. झुरी. पेट की लकीर. सुफ़रह. गन्धक ।

बलिन्–त्रि० बलवान (पु) ऊंट. भैंसा. सूअर. श्लेष्मा. नाष ।

बलिपुष्ट, बलिभुज् } पु० काक । कौआ ।

बलि(ली)मुख–पु० वानर । बन्दर ।

बलीवर्द्द–पु० वृष । बैल ।

बल्य–न० शुक्र(स्त्री)अश्वगन्धा. अतिबला. प्रसारणी । मुतफह. असगन्ध. केकई. गन्धपसारणि ।

बष्क(स्क)यिणी (नी)–स्त्री० चिरप्रसूता गौ । बहुत रोज़ की व्याई गाय ।

बष्कयिणीदुग्ध–न० चिरप्रसूतागोदुग्ध । बकना का दूध ।

ब(व)हुकर्णिका–स्त्री० मूषिककर्णी । मूसेकन्नी बूटी ।

ब(व)हुत्वच्–पु० भूर्जवृक्ष । भोजपत्ते का पेड़ ।

ब(व)हुदुग्ध–पु० गोधूम(स्त्री)(ग्धा) मधुरक्षीरवती गौ. स्नुहीवृक्ष । गेहूं. बहुत दूध देने वाली गाय. सेहुण्ड का पेड़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ब(व)हुपर्णी–स्त्री० मेथिका. बनमेथिका। मेथी. बनमेथी ।

बहुपत्रा–स्त्री० भूम्यामलकी। भूआमला

ब(व)हुपाद्(द)–पु० बटवृक्ष । बड़ का दरख्त ।

ब(व)हुपुत्रिका–स्त्री० मेथिका. बनमेथिका । मेथी बनमेथी ।

ब(व)हुपुष्पी–स्त्री० धातकी । धवई. । धव के फूल ।

ब(व)हुफला–स्त्री० भूम्यामलकी। भूआमला ।

ब(व)हुमञ्जरी–स्त्री० तुलसी । तुलसी का पौधा ।

ब(व)हुमूलक–न० उशीर । खस्स ।

ब(व)हुरूप–पु० सर्ज्जरस. केश । राल. बाल ।

ब(व)हुरोमन्–पु० मेष । मेढ़ा ।

बहुल–त्र्य० अनेकसंख्यान्वित (पु) अग्नि. कृष्णवर्ण(न)आकाश.(स्त्री)(ला)नीली. नीलवर्णगौ. एला। कई तरहसे. आग. स्याहरंग. आसमान. नील का पौधा. काली गाय. इलायची ।

बहुलगन्धा–स्त्री० एला । इलायची ।

ब(व)हुलच्छद–पु० रक्तशोभाञ्जन। लाल सोहांजना ।

ब(व)हुवार–पु० भूतवृक्ष । बहुआर ।

ब(व)हुबीजा–स्त्री० मेथिका । मेथी. बनमेथी ।

ब(व)हुवीर्य्या–स्त्री० भूम्यामलकी. भूआमला ।

ब(व)हुशल्य–पु० रक्तखदिर । सुरखखैर

ब(व)हुस्रवा–स्त्री० सालभेद । शालई ।

ब(व)हुसुता–स्त्री० शतमूली. शतावरी। सतावरि ।

बाजि–पु० घोटक । घोड़ा ।

बाण–पु० शर. गोस्तन. मुञ्ज । सरपत. तीर. गाय का थन. मूंज घास ।

बाणाह्वय–पु० नीलकुरण्टक। नील करसैला ।

बाणीर–पु० बेतस । बेद ।

बाधिर्य्य–न० श्रवणशक्तिराहित्य. रोगभेद । बहिरापन ।

बाल–पु० न० नेत्रबालक,(पु)केश. नारिकेल (स्त्री) एला । सुगन्धबाला. बाल. नारियल. इलायची ।

बालक–पु० न० नेत्रबालक। सुगन्धबाला. लड़का ।

बालजीवन–न० स्तन्य । दुग्ध ।

बालपत्र–पु० खदिर । खैर ।

बालविल्वफल–न० विल्वपेशी। कच्चाबेल

बालमूलिका–स्त्री० माचिका । केवैया ।

बालार्क–पु० श्वेतार्क. रक्तार्क । सुफेद. लाल आक का पेड़. मदारे का पेड़ा ।

बालु } पु० "एलबालुक" नामगन्धद्रव्य
बालुक } सकता । एलाबालुक. बालू ।

बालेय–पु० अङ्गारवल्लरी. कोसचीमुस्ता। गुड़तजी. कोसची मुस्ता ।

बुक्क–न० हृदयस्थमांसपिंड. हृदय (पु)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

समय. छाग. (स्त्री०) (क्ता) शोणित । दिल का टुकड़ा. दिल. वक्त. बकरा. खून ।

बुधरत्न—न० मरकतमणि । पन्ना ।

बुध्न—न० वृक्षमूल । पेड़ की जड़ ।

बुभुक्षा—स्त्री० भोजनेच्छा । भूख ।

बुस (ष)—न० फलरहितधान्य. जल । तुष. पानी ।

बोधन—न० विज्ञान. जागरण (स्त्री) (नी) पिप्पली. मेथिका. वनमेथिका. ज्ञान. जागना. पिपली. मेथी. वनमेथी

बोधि—पु० अश्वत्थवृक्ष । पीपल का दरखत ।

ब्र (ब्र) ध्न—पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । सूरज. आक का पौधा ।

ब्रह्मकुशा—स्त्री० अजमोदा । अजमोद ।

ब्रह्मचारिन्—पु० प्रथमाश्रमी (स्त्री) (णी) ब्रह्मचारिणी. ब्राह्मणयष्टिवृक्ष ।

ब्रह्मजटी—स्त्री० दवनकवृक्ष । दवना ।

ब्रह्मतीर्थ—न० पुष्पकरमूल ।

ब्रह्म(ब्रह्म)दर्भा—स्त्री० यवानी । अजवैन ।

ब्र (ब्र) ह्मदारु—पु० अश्वत्थाकारवृक्षविशेष । शहतूत. पलाश का पेड़ ।

ब्र(ब्र)ह्मपादप—पु० पलाशवृक्ष । पलाश का दरखत ।

ब्र (ब्र) ह्मपुत्र—पु० विषभेद । जहर की किसम ।

ब्र (ब्र) ह्मवृक्ष—पु० पलाश । ढोकलु ।

ब्र (ब्र)ह्मरीति—न० काचीपीतल ।

ब्र (ब्र) ह्मसुदुर्लभा—स्त्री० सूर्य्यभक्ता । सूर्यमुखी. द्वितीयहुरहुर ।

ब्राह्मणयष्टिका—स्त्री० भार्गी । वभनेठी ।

ब्राह्मणी—स्त्री० लाक्षा. लंकोइकपुरी । लाख. खासमाग ।

ब्राह्मी—स्त्री० ख्यातप्रख्यात औषध । खास बूटी । वरभी ।

(भ)

भक्त—पु० न० अन्न. ओदन । अनाज. भात ।

भक्तमण्ड—पु० न० ओदनमण्ड । चावलों का मण्ड ।

भक्ष्यपत्र—स्त्री० ताम्बूली । पान की बेल

भक्कुर—पु० भाकुरमच्छली ।

भगन्दर—पु० ख्यातनामख्यातरोगभेद । गुदा पर का फोड़ा ।

भगाङ्कुर—पु० अर्शरोग । बवासीर की बीमारी ।

भङ्गरा—स्त्री० अतिविषा । अतीस ।

भङ्गा—स्त्री० मातुली. शणाख्यशस्य. त्रिवृता. विजया । बिजौरा. सन. तेउड़ी. निसोथ. भाङ्ग ।

भङ्गुरा—स्त्री० प्रियङ्गु. अतिविषा । खुराबूकाबीज. अतीश. मेहदी के बीज ।

भञ्जन—न० शिरःकर्णादेरामर्दनम् ।

भञ्जनक—पु० बड़ीपीड़ा हो दांत टूटजाय और मुह टेढ़ा हो ।

भटा—स्त्री० इन्द्रवारुणी । इन्द्रोरनि की बेल ।

भटित्र—न० शूलपक्कमांसादि । कबाब ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

भण्टाकी } —स्त्री० वार्ताकी. बृहती ।
भण्टिका } बैंगनका पौधा. बड़ीभटकटैया

भण्ड } —पु० शिरीष । सिरसा ।
भण्डिल }

भण्डी—स्त्री० मञ्जिष्ठा. शिरीष. श्वेतात्रिवृता । मजीठ. सेरसा. सुफेदनिशोथ

भण्डीतकी—स्त्री० मञ्जिष्ठा । मजीठ ।

भण्डीर—पु० शिरीष. तण्डुलीयशाक । सिरीस का पेड़. चवराई का शाग ।

भण्डीरी—स्त्री० मञ्जिष्ठा । मजीठ ।

भद्र—न० मुस्तक. स्वर्ण. (पु) वृष. खञ्जन. कदम्ब. मुस्था. सोना. बैल । ममोला. कदम का पेड़ ।

भद्रज—पु० इन्द्रयव । इन्द्रजौ ।

भद्रतरणि—पु० कुब्जक। कूजाका फूल का पेड़

भद्रपर्णी—स्त्री० गम्भारी. गन्धप्रसारणी । खम्भारि. गन्धपसारणि ।

भद्रमल्लिका—स्त्री० नवमल्लिका । मालती ।

भद्रमुञ्ज—न० शर । सरपत ।

भद्रमुस्त—न० नागरमुस्था । नागरमोथा ।

भद्रयव—पु० इन्द्रयव । इन्द्रजौ ।

भद्रवती—स्त्री० कटफल । कायफर ।

भद्रश्रय } —न० चन्दन । सन्दल ।
भद्रश्री } —पु० चन्दन । संदल का पेड़ ।

भद्रा—स्त्री० चन्द्रसुर. कटफल. गन्धप्रसारणी । चन्द्सुर. कायफर. गन्धपसारणि ।

भद्राली—स्त्री० गन्धालीलता । गन्धप्रसारणी ।

भद्राश्रम—पु० चन्दन । संदल ।

भद्रैला—स्त्री० स्थूलैला । बड़ी इलायची ।

भरद्वाज—पु० पक्षीविशेष । अगनचिड़िया

भर्मण्यन्—न० स्वर्ण. धत्तूर । सोना. धत्तूरह।

भल्लात } —पु० भल्लातकवृक्ष । भिलावें का दरखत ।
भल्लिका }
भल्ली } —स्त्री० „
 } —(„) „ „

भल्लु—(ल्लू)क—पु० ऋक्ष । भालू ।

भवा—स्त्री० मेदा औषध. मूषककर्णी । मुसाकन्नी ।

भष(क)—पु० कुक्कुर । कुत्ता ।

भषत्—पु० काष्ठ. जङ्घा. अन्तःकरण । लकड़ी. जांघ. दिल ।

भसन—पु० भ्रमर । भौंरा ।

भसित—न० छाई । राख ।

भस्मक—पु० रोगविशेष. विडंग. कलधोत. टङ्कण । एक बीमारी जिसमें जितना चाहो खाओ मगर भूख बनी रहै. वायविडंग. सोना. सोहागा ।

भस्मगन्धा—स्त्री० रेणुका औषध ।

भस्मगर्भा—स्त्री० शिंशिपा । शीशव ।

भस्माह्वय—पु० कर्पूर । काफूर ।

भाकट } —पु० मत्स्यविशेष । भाकर.
भाकुट } मच्छली ।

भाकोष—पु० सूर्य्य । आफताब ।

भाजन—न० पात्र. आढकपरिमाण । वर्तन।

भात—पु० प्रभात. दीप्त. अन्न । सुबह. चमकदार. भात ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

भानु–पु० सूर्य्य. दीप्ति । आफताब. चमक.

भाद्र–न० नभस्य । भादों का महीना ।

भानु
भानुमत्
भानेमि
भाम
} पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफताब. आक का पेड़ ।

भारङ्गी–स्त्री० भार्गी । बभनेठी. भारंगी।

भारद्वज–न० अस्थि (पु०) व्याघ्राटपक्षी (स्त्री) (जी) कार्पासविशेष ।

भारवा–स्त्री० तुलसीवृक्ष ।

भारि–पु० केशरी । शेर ।

भार्गवी–स्त्री० नीलदूर्वा । स्यामदूब ।

भार्गी–स्त्री० भारङ्गी । भारंगी ।

भाल–न० कपाल. तेज । माथा. चमक ।

भालाङ्क–पु० करपत्र. शाकविशेष. रोहितमत्स्य. कच्छप । संहासी. रोहूमच्छी. कछुआ ।

भालू–पु० ऋक्ष । रीछ ।

भास–पु० प्रभा. गोष्ठ. कुक्कुर. गोकुलचारी गृध्रविशेषः गृध्र. शकुन्त । चमक. गोशाला. कुत्ता. गीध. परिन्दह ।

भासन्त
भासु
} पु०–सूर्य्य आफताब ।

भासु (स्व) र–न० कुष्ठौषधि. (पु०) स्फटिक । कूठ दवाई. बिल्लौर ।

भास्कर–पु० सूर्य्य. अग्नि. वीर. अर्कवृक्ष. (न) सुवर्ण । आफताब. आग. बहादुर. आक का पेड़. सोना ।

भिक्षु–स्त्री० मुण्डी. कोकिलाक्ष । गोरखमुण्डी. तालमखाना ।

भिण्ड–पु० भिण्डवृक्ष. शाकविशेष(स्त्री) (ण्डा) । रामतुरई ।

भिन्दुर–न० वज्र (पु०) प्लक्षवृक्ष । पाकड़ का दरखत ।

भिन्द्य–पु० कुरण्टकवृक्ष । सुपेदकरसैला

भिन्न–न० क्षतरोगविशेष । खास बीमारी।

भिन्नयोजिनी–स्त्री० पाषाणभेदऔषध।

भिल्ली–स्त्री० लोध्रवृक्ष । लोध का दरखत

भिषज्–पु० वैद्य । तबीब ।

भिषङ्माता–स्त्री० वासा । रूसा ।

भिष्यिका–स्त्री० दग्धान्न । जलाहुआभात

भिस्साण्ड–न० भिसण्ड । भसेड़. कमल की जड़ ।

भिस्सटा–स्त्री० दग्धान्न । जलाहुआभात।

भित्सा–स्त्री० अन्न. भक्त । भात ।

भिस्सा–स्त्री० अन्न. भक्त । भात ।

भीरु–(लु) त्रि० भयशील. (स्त्री) भयशीला(स्त्री). अजा. छाया. (स्त्री). शतावरी. (पु) शृगाल. वयाघ्र. इक्षुविशेष । डरपोक. बकरी. सायासिआर. बाघ. पौंडा. छतावरि ।

भीरु(लु) क–न० वन. पु० पेचक. इक्षुविशेष । (त्रि०) भययुक्त । जङ्गल. उल्लू. एक खासगन्ना. डरपोक. भरेरी जंख।

भीष्मरत्न–न० एकरत्न जो सुपेद रङ्ग का हिमालय के उत्तर में पैदा होता है ।

भुज–पु० स्त्री (जा)बाहु. कर. भृष्टतण्डुल. बाजू. हाथ. भुजे चावल ।

भुजकोटर–पु० वक्ष । बगल ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

भुजग } पु० सर्प्प । सांप ।
भुजङ्ग }

भुजङ्गभुक्–पु० मयूर । मोर ।

भुजङ्गम–पु० सर्प (न०) सीसक । सांप. सीसा ।

भुजङ्गहन्–पु० गरुड़. मयूर । पिढैयाढक. मोर ।

भुजङ्गाक्षी–स्त्री० रास्नाभेद । नाइकावृक्ष

भुजि–पु० वह्नि । आग. आतिश ।

भुजिष्य–पु० स्वतन्त्र. दास. रोगविशेष । (ष्या) दासी. वेश्या ।

भूकदम्बिका–स्त्री० मुण्डी । गोरखमुण्डी ।

भूकेश–पु० शैवाल. वटवृक्ष । सेवार. बरगद का पेड़ ।

भूगर–न० विष । ज़हर. संखिया ।

भूजम्बू–न० स्त्री० गोधूम. विकङ्कतफल । गेहूं कण्टाई का फल ।

भूतघ्न–पु० उष्ट्र. लसुन. भूर्जपत्र. (स्त्री) (घ्नी) तुलसी (त्रि) भूतनाशक । ऊंट. लहसन. भोजपत्ता. तुलसी. भूतों को नाश करने वाला ।

भूतजटा–स्त्री० जटामांसी । जटामासी ।

भूतनाशन–पु० भल्लातकवृक्ष. सर्षप. भूतहन्ता (न) रुद्राक्ष । भिलावे का दरखत. सेरसों. भूतों के तवाह करने वाला. रुद्राक्ष ।

भूतवास–पु० विभीतक । बहेरा ।

भूतवृक्षक–पु० उद्दालवृक्ष । वहुआर ।

भूतहर–पु० गुग्गुलु । गूगल ।

भूतारि–त्रि० हिङ्गु. भूतशत्रु । हीङ्ग. भूतों का दुश्मन ।

भूतावास–विभीतकवृक्ष. शाखोटवृक्ष । बहेड़े का पेड़. सहोरा का दरखत ।

भूति–स्त्री० भस्म. रोहिषतृण । राख. हरद्वारीकुश. सोधियाघास ।

भूतिक(ती)–न० भूनिम्ब । चिरायता. अजवाइन ।

भूतीक–न० रोहिषतृण । हरद्वारीकुश. सोधिया. भूघास. खुम्ब (कुकुरमुत्ता)

भूत्तम–न० सुवर्ण । सोना. ज़र ।

भूधरी–स्त्री० मूषाकर्णी । मुसेकन्नीबूटी ।

भूधात्री–स्त्री० भूम्यामलकी । भुईंआंवला

भूनिम्ब–पु० कैरातक । चिरायता ।

भूपति–पु० ऋषभनामौषधि. राजा ।

भूपदी–स्त्री० मल्लिकापुष्पवृक्ष । मालती का पौधा ।

भूमि(मी)–स्त्री० पृथिवी. स्थानमात्र. जिह्वा । ज़मीन. जगह. जीभ ।

भूमिखर्जूरिका–स्त्री० क्षुद्रखर्जूरिका । छोटी खजूरि ।

भूमिछत्र–न० शिलींध्रक । धरती का फूल. खुम्ब ।

भूमिज–न० गौरसुवर्ण ।

भूमिरस–पु० इक्षु । ऊख ।

भूमिलेपन–न० गोमय । गोबर ।

भूमिवल्ली–स्त्री० कर्कोटकी । खेखसा ।

भूमितःस्वयंजात–न० पांशुलवण । लोना का निमक ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

भूमीसहा–स्त्री० नरिदारु । भुइसहा का पेड़ ।

भूम्यामलकिका } स्त्री० भूधात्री । भुइ-
भूम्यामलकी } आंवला ।

भूरि–न० स्वर्ण । सोना ।

भूरिगमा–स्त्री० गर्द्दभ । गधा ।

भूरिप्रेमन्–पु० चक्रवाकपक्षी । चकही चकहा ।

भूरिफेना–स्त्री० शातला । पीलेफूल वाले सेहुण्ड की जड़ ।

भूर्ज–पु० भूर्जपत्रवृक्ष । भोजपत्ते का पेड़ भोजदरखत ।

भूर्जचर्म्मी–स्त्री० भूर्जपत्र । भोजपत्र ।

भूर्जपत्र–पु० भूर्जपत्र । भोजपत्र का पेड़ ।

भूतविद्या–स्त्री० भूतानि देवासुरगन्धर्व-यक्षरक्षः पितृनागपिशाचाश्चाष्टौ. तान् वेत्ति अनयाइति भूतविद्या । अथवा भूतावेशापकरणार्था विद्या भूतविद्या ।

भूस्तृण–न० भूतृण । भूघास ।

भृकुटि(टी)–स्त्री० भ्रूकुटी । भौंह ।

भृगुभवा–स्त्री० भार्गी । भारंगी. बभनेठी

भृङ्ग–न० त्वच. अभ्रक (पु) भ्रमर (त्रि) लम्पट. भृङ्गराज । खाल.अभरक. भौंरा. अय्याश.घमूड़ी. चाकसू. घमिरा. तज ।

भृङ्गपर्णिका–स्त्री० सूक्ष्मैला । छोटी इ-लायची ।

भृङ्गप्रिया–स्त्री० माधवीलता ।

भृङ्गरज } पु० भृङ्गार. कालचटक ।
भृङ्गराज } घमिरा.भङ्गरा. गरगवापक्षी ।

भृङ्गार–न० लवङ्ग. सुवर्ण(पु) भृङ्गराज । लौंग. सोना. घमिरा ।

भृङ्गि–पु० वटवृक्ष(स्त्री)(ङ्गी) अतिविषा-लता । वरगद का पेड़. अतीस ।

भृङ्गेष्टा–स्त्री० घृतकुमारी । घीकुवार ।

भेक–पु० जन्तुविशेष(स्त्री)(की). मेंड़क. मेड़की ।

भेकनि(लि)–पु० मत्स्यविशेष । खास मछली ।

भेदन–न० हिङ्गु(पु)अम्लवेतस. शूकर । हीङ्ग. अमिलवेद. सुवर ।

भेदिन्–पु० अम्लवेतसवृक्ष । अमिलबेद का पेड़

भेरण्ड–पु० श्येनपक्षी । बाज़ ।

भेषज } न० औषधि । दवाई ।
भैषज }

भोगपिशाचिका–स्त्री० क्षुधा । भूंख ।

भोजन–न० जग्ध । खुराक. वह छः प्रकार की होती है–जैसे. १ चूष्य. २ लेह्य. ३ पेय. ४ भोज्य. ५ भक्ष्य. ६ चर्व्य ।

भौतिक–न० मुक्तामणि । मोती ।

भौम–त्रि० रक्तपुनर्नवा । लाल गदापुरैना

भ्रमर–पु० मधुकर (स्त्री)(री)जतुका. भ्र-मरभार्य्या । भौंरा. लाख. भौंरी ।

भ्रान्त–पु० राजधत्तूर । बड़ा धत्तूरह ।

भ्रामक } –पु० सूर्य्यावर्त । चुम्बक ।
भ्रामर }

भ्रामरमधु–न० भ्रामरमाक्षिक । भौरों का सहत कैरा का सहद ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

(म)

मकर–पु० जलजन्तुविशेष । मगर ।

मकरन्द–पु० पुष्परस. किञ्जल्क. केशर (न) कोकिल. मधुकर । फूलों का रस फूलों के बीच की तिरी. कोइल. भैंरा ।

मकुर–पु० वकुलपुष्प. कोरक. आदर्श । कचनार का फूल. आरसी. सीसा ।

मकुष्ठ, मकुष्ठक –पु० मोठ. मोथी ।

मकूलक–पु० लघुदन्ती । छोटी दन्तूनि ।

मक्कुल–पु० शिलाजतु । शिलाजीत ।

मक्षवीर्य–पु० प्रियालवृक्ष । चिरौंजी का पेड़. गोदनी का पेड ।

मघ–न० पुष्पविशेष (स्त्री) (घा) औष-धिविशेष ।

मङ्गलच्छाय–पु० वटवृक्ष । बड़ का पेड़ ।

मङ्गलप्रदा–स्त्री० हरिद्रा । हल्दी ।

मङ्गल्य–न० दधि. चन्दन. स्वर्ण. सिन्दूर. (पु) अश्वत्थ. बिल्व. मसूरक. जीरक. (स्त्री) (ल्या) शमी. शुक्लत्वचा. रोचना. प्रियङ्गु. हरिद्रा. दूर्वा. नारिकेल. क-पित्थ. । दही. संदल. सोना. सेंदुर. पीपल. बेल. मसुरी. जीरा. छोंकुरि. सुपेद बच. गोलोचन. प्रियङ्गु. हल्दी. दूब. नारियल. कैथा ।

मङ्गल्यनामधेया–स्त्री० जीवन्तीशाकवि-शेष । जिवई ।

मङ्गुर–पु० मत्स्यविशेष । मङ्गुरी मच्छली

मज्जा–स्त्री० अस्थिसार. वृक्षसारांश । मिज्ज. दरखत का सत ।

मज्जाज–पु० भूमिजात. गुग्गुलु । गूगल ।

मज्जारस–पु० शुक्र । मनि ।

मज्जासार–पु० जातीफल । जायफल ।

मञ्जर–न० मुक्ता. तिलकवृक्ष । मोती. सेरहा का पेड़ ।

मञ्जिष्ठा–स्त्री० समङ्गा । मजीठ ।

मञ्जुमणि–पु० पुष्पराग । पुषराज ।

मञ्जूषा–स्त्री० मञ्जिष्ठा । मजीठ ।

मणि–पु० रत्न ।

मणिच्छिद्रा–स्त्री० मेदौषधि ।

मणिवर–पु० हीरा ।

मणिमन्थ–पु० सैन्धवलवण । सेंधानिमक

मण्ठक–न० माठ । मठोलिया ।

मण्ड–न० पु० सर्वान्नाग्ररस (पु) एरण्ड-वृक्ष. शाकविशेष. । मांड़. एरण्डी का पेड़ ।

मण्डक–पु० माधवीलता. मांड । माधवी. मांड़ ।

मण्डलिन्–पु० विडाल. वटवृक्ष. गोनाश (स्त्री)(ली) दूर्वा. समाज । बिल्ली. बड़ का पेड़. गोह. सांप. दूब. मजलिस ।

मण्डली–स्त्री० गुडूची । गुरच. गिलोय ।

मण्डा–स्त्री० सुरा. आमलकी. मिष्टान्न-विशेष । शराब. आंमला. संदेश ।

मण्डूक–पु० भेक (स्त्री) (का,की) मञ्जि-ष्ठालता. ब्राह्मी । मेडक. मञ्जीठ की बेल. ब्राह्मी बूटी ।

मण्डूकपर्ण–न० श्योनाक (स्त्री०) (र्णी)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मञ्जिष्ठा. ब्राह्मणमण्डूकी । सोनापाढ़ा. मजीठ ।

मण्डूर–न०पु० लोहमल । लोहेकी कीटी।

मति–स्त्री० बुद्धि. मुक्ता. शाकविशेष । अकल. मोती. एक खास साक ।

मत्क–त्रि० मत्कुण । खटमल. ऊरिस ।

मत्कुण–पु० मत्क. निःश्मश्रुपुरुष. नारिकेल. (स्त्री) (णा) अजातभगलोमा । खटमल. खोजा आदमी. नारियल.

मत्त–पु० धत्तूरवृक्ष. कोकिल. महिष (स्त्री) (त्ता) सुरा । धत्तूरे का पेड़ । कोइल. भैंसा ।

मत्स–पु० मीन । मच्छली ।

मत्सरा–स्त्री० मक्षिका । मक्खी ।

मत्स्य–मीन । मच्छली ।

मत्स्यगन्धा–स्त्री० ह्रीवेर. मत्स्याक्षी. सकुलादिनी । हौहबेर. मछेछी का पौधा. पनिसगा. जलपिपली ।

मत्स्याण्ड–न० मछली के अण्डे ।

मत्स्यपित्ता } स्त्री० कटुम्भरा । कुटकी.
मत्स्यशकला } " " "

मत्स्याक्षी–स्त्री० गण्डदूर्वा. मत्स्यादनी । दुविया. मछेछी ।

मत्स्यादनी–स्त्री० मत्स्याक्षी. जलपिप्पली । मछेछी. पनिसगा ।

मथन–पु० गण्डेरीवृक्ष । गणेरीदरखत ।

मथित–न० निर्जलघोल । मही. मट्ठा ।

मदकट–पु० खण्ड. । चीनी ।

मदन–पु० कामदेव. वसन्त. धूस्तर. सिक्थक. मदनफल. भ्रमर. माष. खदिरवृक्ष. वकुलवृक्ष. (स्त्री) (ना) अङ्कुश. सुरा. शारिका. (स्त्री) (नी) मृगनाभि । धत्तूरह. मोम. मयनफल. भौंरा. उड़द. खैर का पेड़. आंकुश. शराब. मयना चिड़िया. कस्तूरी ।

मदनक–न० सिक्थक । मोम ।

मदनकाकूवर–पु० पारावत । कबूतर ।

मदनपाठक–पु० कोकिल । कोइल ।

मदनशलाका–स्त्री० सारकपक्षी. कोकिला । मयना. कोइल ।

मदनालय–पु० भग. पद्म । कुस. कमल ।

मदयन्ती–स्त्री० मल्लिका । चम्बेली ।

मदयित्नु–न० मद्य । शराब ।

मदाढ्य–पु० तालवृक्ष (स्त्री) (ढ्या) लोहितझिण्टी । ताल का पेड़. बांसा ।

मदास्यद–पु० फलकमत्स्य । फलूईमच्छी

मदाह्व–पु० मृगमद । कस्तूरी ।

मदिर–पु० मत्त. खञ्जनपक्षी. (स्त्री) (रा) रक्तखदिर. सुरा । लाल खैरा. मस्त. ममोला पक्षी. शराब ।

मदिष्टा–स्त्री० मदिरा । शराब ।

मदोत्कटा–स्त्री० मदिरा । दारू ।

मद्गुर–पु० मत्स्यविशेष । नाम एक मच्छी का ।

मद्य–न० सुरा । मद ।

मधु–न० मद्य. क्षीर. (पु०) मधुद्रुम. वसन्तऋतु. अशोकवृक्ष. यष्टिमधु (स्त्री) जीवन्तीवृक्ष (त्रि) मिष्ट । शराब. दूध.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मौहे का पेड़. अशोक का पेड़. मीठा. जेठीमधु ।

मधुक–न० यष्टिमधुका. त्रपु । जेठीमधु. टीन ।

मधुकण्ठ–पु० कोकिल । कोइल ।

मधुकर–पु० भ्रमर. भृङ्गराजवृक्ष । भौंरा। घमिरा ।

मधुकर्क्कटी–स्त्री० बीजपूरभेद । चकोतरा, निम्बू ।

मधुकारि } पु० भ्रमर । भौंरा ।
मधुकृत }

मधुगन्ध–पु० वकुलवृक्ष । मौलसिरी का पेड़ ।

मधुगायन–पु० कोकिल । कोइल ।

मधुच्छदा–स्त्री० मयूरशिखा । मोरशिखा बूटी ।

मधुज–न० शिक्थक. (स्त्री) पृथिवी. सिता । मोम. ज़मीन. मिसरी ।

मधुतृण–पु० इक्षु । ऊख ।

मधुदूत–पु० आम्रवृक्ष. (स्त्री) (ती) पाटला । आम का पेड़. पाण्डरि ।

मधुद्रु–पु० भ्रमर । भौंरा ।

मधुधातु–न० स्वर्णमाक्षिका । सोनामक्खी धातु ।

मधुप–पु० भ्रमर । भौंरा ।

मधुपर्णिका–स्त्री० गम्भारी. नीलिका. सुदर्शन । खम्भारि. नील. सुदर्शन ।

मधुपर्णी–स्त्री० गुडूचीलता. गम्भारीवृक्ष. नीलीवृक्ष । गिलोय. गम्भारी का पेड़. नील का पौधा ।

मधुपुष्प–पु० मधूकवृक्ष । मौहा ।

मधुव्रत–पु० भ्रमर । भौंरा ।

मधुमक्षिका–स्त्री० कीटविशेष । शहद की मक्खी ।

मधुमाक्षिक–न० स्वर्णमाक्षिक । सोनामक्खी धातु ।

मधुर–न० विष. वङ्ग (पु) मिष्टरस. जीवकवृक्ष. रक्तेक्षु. गुड़ । ज़हर. टीन. मीठा. जवक का पेड़. लालऊख. गुड़ ।

मधुरसा–स्त्री० मूर्वा. द्राक्षा. अङ्गूर. दुग्धिका. गम्भारीवृक्ष । मुरहरी. दाख. अङ्गूरफल. दूधी. खम्भारी का पेड़ ।

मधुरा–स्त्री० शतपुष्पा. मधुयष्टिका. काकोली. शतावरी. बृहज्जीवन्ती । सौंफ. जेठीमधु. काकोली. छतावरि. बड़ी जीवन्ती ।

मधुरामिसि–स्त्री० शोआ का पौधा ॥

मधुरेणु–स्त्री० कटभी ।

मधुल–न० मद्य । शराब ।

मधुल–न० मद्य । शराब ।

मधुलिका–स्त्री० राजिका । राई ।

मधुलिह }
मधुलेहिन् } पु० अलि । भौंरा. शहद
मधुलोलुप } की मक्खी ।
मधुसूदन }

मधुशेष–न० शिक्थक । मोम ।

मधुश्रेणी–स्त्री० मूर्वा । मुरहरी ।

मधुष्ठीला–स्त्री० वनमधूकवृक्ष । वनमौहा

मधुसिग्रु–पु० वृक्षविशेष । मीठासोहा-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जना. सुनगा का पेड़ ।

मधुस्रवा—स्त्री० जीवन्तीशाकविशेष । जिवई ।

मधूक—पु० वृक्षविशेष । मौहा का पेड़ ।

मधूकका—पु० वनमौहा ।

मधूच्छिष्ट—न० शिक्थक । मोम ।

मधूलिका—स्त्री० ज्येष्ठीमधु. मूर्वा । जेठीमधु. मुरहरी. चूर्णहार ।

मधूली—स्त्री० क्षुद्रगोधूम । छोटा गेहूं ।

मधूषित—न० शिक्थक । मोम ।

मध्यम—न० पु० देहमध्यभाग. (पु) मृगविशेष. (स्त्री) (मा) अङ्गुलिविशेष । कमर. मृगा. बीच की ऊंगुली ।

मध्यस्थल—न० कटिदेश । कमर ।

मनःशिल—पु० मनोगुप्ता । मंछल. मैनशिल

मनीक—न० अञ्जन । काजल ।

मनोगुप्ता } स्त्री० मनःशिल । मंछिल.
मनोज्ञा } „ मैनशिल ।

मनोरमा—स्त्री० गोरोचना । गोलोचन ।

मनोहर—पु० कुन्दवृक्ष. (न) सुवर्ण (स्त्री) (रा) जातीपुष्प । कुन्द की बेल. सोना. चम्बेली की बेल वा फूल ।

मनोह्वा—स्त्री० मनःशिल । मंछल. मैनशिल ।

मन्त्रदीधिति—पु० वह्नि । आग ।

मन्दार—पु० श्वेतार्कवृक्ष. पारिभद्रवृक्ष । सुफेद आक का पेड़. फरहद का पेड़ ।

मन्थ—पु० दिवाकर. नेत्ररोगविशेष । सूरज. आंख की बीमारी ।

मन्थज—न० नवनीत । मक्खन ।

मन्था—स्त्री० वनमेथिका । वनमेथी ।

मन्दट्—पु० पारिभद्रवृक्ष । फरहद का पेड़

मन्दसान—पु० अग्नि. प्राण. निद्रा । आग. जान. नींद ।

मन्दाग्नि—पु० अल्पजठरानल । बदहज़मी

मन्दार—पु० स्वर्गीयवृक्ष । पारिजात ।

मन्मथ—पु० कपित्थवृक्ष । कैथा ।

मन्मन—पु० गद्गदध्वनि. भ्रमर । गुनगुनाना. भौंरा ।

मप(पु)ष्ट(क)—पु० वनमुद्ग । वन के मूंग के पौधे ।

मय—पु० उष्ट्र । ऊंट ।

मयन—न० शिक्थक । मोम ।

मयु—पु० हरिण । मृगा ।

मयूर—पु० स्वनामख्यातपक्षी । मोर ।

मयूरक—न० तुत्थक(पु)अपामार्ग । तूतिया. लटजीरा ।

मयूरविदला—स्त्री० माचिका । केवैया ।

मयूरारि—पु० कृकलास । गिरगट ।

मयूराह्वशिखा—स्त्री० मयूरशिखा । मोरसिखा बूटी ।

मरकत—न० हरिद्वर्णमणिविशेष । पन्ना ।

मरन्द (क) —न० मकरन्द । फूलों का रस ।

मरिच—न० स्वनामख्यातवर्तुलाकारौषधि । मिरच ।

मरिचपत्रक—पु० शालभेद । शालई ।

मरीच—न० स्वनामख्यातकटुद्रव्य । मिरच

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मरु } पु० निर्जलदेश. मरुवक । रे-
मरुन् } गिस्तान. मरुआ का पौधा ।
मरुत्फल—न० घनोपल । ओला ।
मरुन्माला—स्त्री० समुद्रान्ता । लाकोइ-कपुरी. सुगन्धिद्रव्य ।
मरुबक—पु० मरुवृक्ष । मरुआ का पौधा ।
मरुभूमि—स्त्री० निर्जलदेश । रेगिस्तान ।
मरुभूरुह—पु० करीरवृक्ष । करीर का पेड़ ।
मरुल—पु० बक । बगुला ।
मरुसम्भव—न० लघुमूलिका । छोटी मूली ।
मरूक—पु० मृगविशेष. मयूर । खास ह-रिण. मृगा. मोर ।
मरोल—पु० जलजीवविशेष । मकर ।
मर्क—पु० देह. वायु. वानर. भेक । जिसम. हवा. बन्दर. मेंड़क ।
मर्कट—पु० वानर. ऊर्णनाभ. विषविशेष. मत्स्यविशेष. दैत्य । बन्दर. मकड़ी. एक ज़हर. एक खास मछली ।
मर्कटतिन्दुक—पु० कुपीलु । कोचिला का दरखत. मकरतेंदू ।
मर्कटाम्र—पु० आमलकाम्र । रीरीआम ।
मर्कटी—स्त्री० कञ्जीवृक्ष. कपिकच्छु. अ-पामार्ग । कञ्जी का पेड़. किमाच का पेड़. लटजीरा ।
मर्कर—पु० भृङ्गराजवृक्ष । घमिरा का पौधा ।
मर्त्यकदली—स्त्री० कदली भेद । केला का भेद ।

मर्म्मन्—न० सन्धिस्थान । जीवस्थान ।
मर्म्मरी—पु० हरिद्रा । हल्दी ।
मल—पु० न० पाप. विष्ठा. किट्ट. कर्पूर. वात पित कफादि । गुनाह. मयला. मैल. काफूर ।
मलज—न० पूय । पीप ।
मलद्राविन्—पु० जयपाल । जमाल गोटा
मलभुज्—पु० काक । कौआ ।
मलयज—पु० न० चन्दन । संदल ।
मलयू—स्त्री० काकोदुम्बरी । कठूमरिबूटी
मलिन—न० तक्र । मट्ठा छाछ ।
मलीमस—न० लोह । लोहा ।
मलूक—पु० कृमिविशेष ।
मल्ल—पु० कपोल. मत्स्यविशेष (स्त्री)(ल्ली) ल्ला) मालती । गाल. खास मच्छली. मालती की बेल ।
मल्लिक—पु० मलिनचरणचक्षुयुक्तहंस (स्त्री) (का) स्वनामख्यातपुष्पवृक्ष । सुपेदहंस मालती की वेल ।
मल्लिकापुष्प—न० कुटजवृक्ष । कोरैआ ।
मल्लू—पु० ऋक्ष । रीछ ।
मशक—पु० कीटविशेष. चर्म्मनिर्मितज-लाधार. रोगविशेष । मच्छर. मशक. मशा ।
माशपर्णी—स्त्री० माषपर्णी । बनउर्दी ।
मशुन—पु० कुक्कर । कुत्ता ।
म(षि)सि—स्त्री० मसी । स्याही ।
मषिकूपी—स्त्री० मस्याधार । दुआत ।
मसरा—स्त्री० मसूरिका । मसूर की दाल

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मसार(क)-पु० इन्द्रनीलमणि । पन्ना ।
म(सु)सूर-पु० कलापविशेष । मसूर ।
मसूरविदला-स्त्री० कृष्णात्रिवृता । स्याहनिशोथ ।
मसूरिका-स्त्री० वसन्तरोग । चेचक की बीमारी. मसूर. अन्न ।
मसृणी-स्त्री० अतसी । अलसी ।
मस्कर-पु० वंश सरन्ध्रवंश । वांस. सुराखदार बांस ।
मस्त-न० मस्तक । माथा ।
मस्तक-न० प्रधानाङ्ग । माथा ।
मस्तिष्क-न० मस्तकमवघृताकारस्नेह । मज्जा मग़ज़ ।
मस्तु-न० दधिमण्ड. दधिजल. छाछ ।
मह-पु० महिष । भैंसा ।
महती-स्त्री० बृहती । वरहण्टा. बड़ी भटकटैया ।
महाकन्द-पु० रसोनक. मूलक. राजपलाण्ड । लहसन. मूली. पियाज़ ।
महाकपित्थ-पु० बिल्ववृक्ष । बेल का पेड़ ।
महाकरञ्ज-पु० बृहत्करञ्ज । बड़ाकरंजा ।
महाकुमारी-स्त्री० सेवतीगुलाब ।
महाकुसुमिका-स्त्री० गम्भारी । खम्भारि
महाकोशातकी-स्त्री० हस्तिघोषा. महाफला । नेनुआ ।
महागद-पु० ज्वररोग । बुखार की बीमारी ।
महागन्ध-न० हरिचन्दन (पु) कुटजवृक्ष जलवेतस (स्त्री)(न्धा) नागबला केविका पुष्प । संदल. कुरैआ का पेड़. जल वेत. गुरशंकरी ।
महागोधूम-पु० बृहद्गोधूम । बड़ा गेहूं. दाउदखानी गेहूं ।
महाघोषा-स्त्री० कर्कटशृङ्गी । ककड़ाशृङ्गी ।
महाजम्बू-स्त्री० फलेन्दाजम्बू । फरेंद जामुनी ।
महाजाति-स्त्री० वासन्तीलता । माधवी. लता ।
महाजाली-स्त्री० कर्कोटकीलता । खेखशा की बेल ।
महातरु-पु० स्नुहीवृक्ष. बृहद्वृक्ष । सेहुंड़ का पेड़. बड़ा पेड़ ।
महादारु-पु० देवदारुवृक्ष । दियार का दरखत ।
महानिम्ब-पु० विषमुष्टिकावृक्ष । वकाइन का दरखत. नैपाली नीम का पेड़ ।
महानील-पु० गुग्गुलु । गूगल ।
महाप्राण-पु० द्रोणकाक । पहाड़ी कौवा ।
महाफला-स्त्री० ऐन्द्रीलता. फलेन्द्रावृक्ष. हस्तिघोषा. कटुतुम्बी । इन्द्रोरनि. फरेंदजामुनी. नेनुआ. कडुई तोंबी ।
महाबला-स्त्री० सहदेवी । सहदेयिया ।
महामाष-पु० राजमाष । लोविआ ।
महामुनि-पु० अगस्त्य. तुम्बुरुवृक्ष (न) धन्याक । अगस्त्यतुम्बुरुबीज. धनिया ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

महामूल–पु० राजपलाण्डु । बड़ा पियाज. पातालगरुड़ी. छरहटा ।

महामेदा–स्त्री० औषध विशेष ।

महामोही–स्त्री० धूस्तरवृक्ष । धतूरे का पेड़ ।

महायोगेश्वरी–स्त्री० नागदमनीका पौधा।

महारजत–न० सुवर्ण. धूस्तरवृक्ष । सोना. धत्तूरा ।

महारजन–न० कुसुम्भपुष्प. स्वर्ण । कुसुम्भे का फूल. सोना ।

महारस–न० काञ्जिक (पु) रसराज । कांजी. पारा ।

महारसाष्टक–न० अष्टधातुविशेष. तद्यथा । १ दरद. २ पारद. ३ सस्य. ४ वैक्रान्त. ५ कान्त. ६ अभ्रक. ७ माक्षिक ८ विमल ।

महाराज–पु० नख । नाखून ।

महाराष्ट्री–स्त्री० गजपिप्पली। गजपीपरि

महारूप–पु० सर्जरस । राल ।

महारोग–पु० पापरोग अष्टविध यथा– १ उन्माद. २ त्वग्दोष. ३ राजयक्ष्मा. ४ श्वास. ५ मधुमेह. ६ भगन्दर. ७ उदर. ८ अश्मरी ।

महालोल–पु० काक । कौवा ।

महालोह–पु० अयस्कान्त. चुम्बक । मकनातीस ।

महावरा–स्त्री० दूर्बा । दूब ।

महावरोह–पु० प्लक्षवृक्ष । पाकड़ का दरखत ।

महावीरा–स्त्री० औषधिविशेष ।

महाशङ्ख–पु० मनुष्यास्थि. ललाट । इन्सान की हड्डी. माथा ।

महाशतावरी–स्त्री० बृहच्छतावरी । बड़ा शतावरी ।

महाशल्क–पु० मत्स्यविशेष । चिंगड़ा मच्छली ।

महाशालि–पु० ठंढकालीधानविशेष ।

महाशुभ्र–न० रजत । चांदी ।

महाशौषिर–पु० दन्तमांसपकजाने और मुख में पीड़ा हो ।

महाश्रावणिका–स्त्री० मुण्डी । गोरखमुण्डी बूटी ।

महाषष्टिक–पु० गर्भपक्कधान्यविशेष सेढ़धान ।

महासफर–पु० पपतामच्छली ।

महासह–पु० वाणपुष्प(स्त्री)(हा) माषपर्णी. कुब्जक । वाणपुष्प. वनउर्दी. कूजा ।

महिल्या–स्त्री० रेणुकानामगन्धद्रव्य. प्रियङ्गुलता । खुशबूदार चीज (रेणुका) मिरच के सदृश होती है ।

महिलाह्वया–स्त्री० गन्धप्रियङ्गु । खुशबूदार चीज. मेहदी के बीज ।

महिष–पु० स्वनामख्यातपशुविशेख(स्त्री) (षी) औषधविशेष. महिषी । भैंसा. दवाइ का नाम. भैंस ।

महिषमस्तक–पु० ठंढकालीधानविशेष ।

महिषाक्ष–पु० गुग्गुलु । गूगल ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

महिषीदुग्ध–न० भैंस का दूध ।
मही–स्त्री० हिलमोचिका । एक साग-विशेष ।
महीज–न० आर्द्रक । अदरक ।
महेर(रु)णा } स्त्री० शल्लकीक्षवृ ।
महेरुणा } „
महैल्या–स्त्री० स्थूलैला । बड़ी इलाइची
महोत्पल–न० कमल । कवल ।
महोदरी–स्त्री० महाशतावरी । बड़ी छतावरि ।
महोन्नत–पु० तालवृक्ष । ताड़ का पेड़ ।
महोरग–न० तगरमूल । तगर की जड़ ।
महोष्ट्री–स्त्री० बृहती । बड़ी भटकटैया ।
महौषध–पु० शुंठी(न)लशुन (स्त्री)(धि) दूर्वा. लज्जालु लता. महास्नानीय द्रव्यविशेष.(स्त्री) (धी) ब्रह्ममण्डूकी । सोंठि. लहसन. दूब. लाजवन्तीवेल. न्हानेकी दवाई यथाः–१ सहदेवी. २ व्याघ्री. बला. ४ अतिबला. ५ शङ्खपुष्पी. ६ सिंही ७ अष्टमी. ८ सुवर्च्चला. ब्रह्ममण्डूकी बूटी ।
मांस–न० रक्तजधातुविशेष (पु) काल. कीट । मास. गोश्त. वक्त. कीड़ा ।
मांसफला–स्त्री० वृन्ताकी । बैंगन ।
मांसरोहिणी–स्त्री० रोहिणीओषधि ।
मांसशृङ्गाटक–न० किमामगोश्त ।
मांससार(स्नेह)–पु० मेद, मिज्ज । चर्बी ।
मांसिनी–स्त्री० जटामांसी । जटामांसी दवाई ।

मांसौष्ठरोग–पु० मांससम्बधी ओष्ठरोग ।
मांकन्द–पु० आम्रवृक्ष(स्त्री)(न्दी) आमलकी. पीतचन्दन । आम का पेड़. आंमला. जर्दसन्दल ।
माक्षिक–न० मधु । सहद ।
माक्षिकधातु–न० स्वर्णमाक्षिक । सोनामक्खी ।
माक्षिकवान्तपुष्परस–न० मधु । सहद ।
मागधी–स्त्री० यूथिका. पिप्पली. शर्करा. । जूही. पीपल. चीनी ।
मांगल्या–स्त्री० रीठा ।
मार्गविशोधन–न० मूत्रपुरीषसंगेविकर्षणं विगृह्यकर्षणं ।
माचिका–स्त्री० अस्थिका. मक्षिका । केवैआ. मक्खी ।
माणक–न० कन्दविशेष(पु) स्वनामख्यातवृक्ष । मानकन्द. माणक का दरखत ।
माणिक्य–न० मणिविशेष (स्त्री) (क्या) पल्ली । मानकरत. छिपकली ।
माणिक्यकदली–स्त्री० कदलीभेद । बड़ा केला ॥
माणिमन्थ–न० सैन्धवलवण । सेंधानिमक
माण्डूकी–स्त्री० ब्रह्ममाण्डूकी । ब्राह्मी ।
मातुल–पु० व्रीहिविशेष. मदनवृक्ष. धूस्तरवृक्ष । धान. मयनफल. धत्तूरा ।
मातुलपुत्रक–पु० धत्तूरवृक्ष । धत्तूरा ।
मातुलानी–स्त्री० भंगा । भांग ।
मातुलुङ्ग–पु० बीजपूर. दाडिम । बिजौरा निम्बू. अनार ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मादक–पु० दात्यूहपक्षी । पपीहा ।

मादन–न० लवङ्ग. (पु) कामदेव. मदनवृक्ष. धूस्तरवृक्ष. (स्त्री०) (नी) विजया । लौंग. मयनफल का पेड़. धत्तूरे का पेड़. भांग ।

मादिनी–स्त्री० विजया । भांग ।

माधव–पु० वसन्त. मधूक. (स्त्री) (वी) स्वनामख्यातलताविशेष. मदिरा. तुलसी । मोसम वहार. मौहा. माधवी बेल. शराब. तुलसी का पौधा ।

माधुर–न० मल्लिका (स्त्री) (री) मदिरा. माधुर्य्य । मालती. शराब. मिठास ।

माध्याह्निक–पु० जपापुष्प । दुपहरिया ।

माध्वक–न० मधुजातमद्य । मधुकपुष्पों की शराब ।

माध्वी–स्त्री० मद्य. मत्स्य । शराब. मच्छली ।

माध्वीक–न० मद्य. (पु) मधु । शराब. सहत ।

मान–न० मानकन्द ।

मानिका–स्त्री० मद्य । शराब ।

मानुषमूत्र–न० मनुष्यमूत्र । आदमी का मूत्र ।

मान्द्य–न० कुन्दपुष्प ।

मायु–पु० पित्त । धातुविशेष ।

मार–पु० धूस्तर । धत्तूरा ।

मारष–पु० मारसासाग. मरसका साग ।

मारीच–पु० एला । इलायची ।

मारुत–पु० मरुआ ।

मार्कव (र) पु० भृङ्गराज । घमिरा ।

मार्कण्डिका } स्त्री० भूकर्कोटकी ।
मार्कण्डी } भुइखेखसा ।

मार्ग–पु० पथ. गुद. अपान. मृगमद । वाट. गुदा. कस्तूरी ।

मार्ज्जार–पु० रक्तचित्रक. विडाल. (स्त्री) (री) विडाली. मृगमद । बिल्लार. बिल्ली. कस्तूरी ।

मार्ज्जारगन्धिका–स्त्री० मुद्गपर्णी । वनमूंग ।

मार्जित–त्रि० शोधित. तीक्ष्णीकृत (स्त्री) (ता) रसाला । साफ किया हुआ. तेज़ किया हुआ. दही. घी. मिरच. शहद वगैरह चीज़ें मिला. काफूर की खुशबोई देकर बनाई हुई चटनी ।

मार्तण्ड–पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष. शूकर । आफताब. आक का पेड़. सुअर ।

मार्तिक–पु० शराब (त्रि) मृत्तिका निर्मित । प्याला मट्टी का ।

मानसाः–पु० रजस्तमः सम्भूताः कामादयः ।

माष–पु० मारिषशाक । मरसा का साग.

मालक–पु० निम्बवृक्ष. (न०) स्थलपद्म. (स्त्री) (का) । नीम का दरखत. सूर्य्यमुखी का फूल. माला ।

मालती–स्त्री० जाती । चम्बेली ।

मालतीपत्री–स्त्री० जातीपत्री । जलवत्री. जवित्री ।

मालतीफल–न० जातीफल । जायफल ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मालव–पु० शावरलोध्र । शावरलोध ।

मालव्य–पु० चन्दनवृक्ष । सन्दल का वृक्ष

मालातृणक–न० भूस्तृण । खूंब. भूघास. धरती का फूल ।

मालिक–पु० मल्लिकापुष्प । मालती का फूल ।

मालूर–पु० विल्व. कपित्थ । बेल. कैथा ।

मालेया–स्त्री० स्थूलैला । बड़ीइलायची ।

माष–पु० व्रीहिविशेष. परिमाणविशेष । उड़द. मासा ।

माषक–पु० मासक । मासाभर ।

माषपर्णी–स्त्री० माषपर्णी । बनउड़द ।

माषवटी–स्त्री० मेथौरी । बरी ।

मास (स्)–पु० माषकपरिमाण. मासा. महीना ।

मासन–न० सोमराजी । एक दवाई ।

मासर–पु० भक्तसमुद्भवमण्ड । माण्ड ।

मासुरी–स्त्री० श्मश्रू । दाढ़ी ।

माहिष–न० महिषदुग्धघृतादि. (त्रि०) महिषशृङ्गादि । भैंस का दूध वगैरह. भैंस के सींग वगैरह ।

माहिषघृत–न० महिषाज्य । भैंस का घी । माहिषदधि–न० महिषदधि । भैंस का दही ।

माहिषनवनीत–न० महिषनवनीत । भैंस का मक्खन ।

माहेयी–स्त्री० गौ । गाय ।

मिथिनि–स्त्री० मेथिका. वनमेथिका. मेथी. वनमेथी ।

मिषि (का)–स्त्री० जटामांसी । जाटामासी ।

मिष्टनिम्बूफल–न० मिष्टनिम्बू । बताई. मीठानीबू ।

मिष्टान्न–न० मधुरद्रव्य । मिठाई ।

मिश्रपुष्पा–स्त्री० मेथिका. वनमेथिका । मेथी. वनमेथी ।

मिशि–स्त्री० शतपुष्पा । सौंफ ।

मिश्रेया–स्त्री० शतपुष्पा । सोंआ ।

मिहिका–स्त्री० नीहार. पाला । कोरा

मिहिर–पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफताब. आकका पेड़ ।

मीन–पु० मत्स्य । मच्छली ।

मीनाण्ड–न० मत्स्याण्ड (स्त्री) (ण्डी) शर्करा । मच्छली का अण्डा. चीनी ।

मुकन्दक–पु० पलाण्डु । प्याज ।

मुकुन्द–पु० रत्नविशेष. कुन्दुरुवृक्ष. पारद । एक खास जवाहर. कुन्दफूल का दरखत. कुंदुरु यह सुगंधद्रव्यशल्लकी गोंद है. पारा ।

मुकुर–पु० दर्प्पण. बकुलवृक्ष. कोरक. कुलालदण्ड । शीशा. मालती का पौधा. कली. कुम्हार की लकड़ी ।

मुकुष्ट (क)–पु० वनमुद्ग । मोथी. मोठ ।

मुक्तपत्राढ्य–न० तालशीपत्र ।

मुक्तबन्धना–स्त्री० वार्षिकबेलानामकलता । वर्षाती बेला ।

मुक्ता–स्त्री० मौक्तिक । मोती ।

मुक्ताफल–न० कर्पूर. मौक्तिक. लवली-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

फल । काफूर. मोती. मीताफल ।
मुक्तामोदक—न० मिष्टान्नविशेष । मोतीचूर के लड्डू ।
मुक्ताशुक्ति—स्त्री० शीपी । शीप ।
मुख—न० वक्त्र. (पु) लकुच । मुंह. बढ़हल. ढेऊदरखत ।
मुखज—पु० दन्त । दान्त ।
मुखदूषक—पु० पलाण्डु । प्याज ।
मुखपूरण—न० गण्डूष. ग्रास । चुली. लुक्मा ।
मुखप्रिय—पु० नारङ्गी ।
मुखर—पु० काक. शङ्ख । कौआ. शङ्ख ।
मुखरोग—पु० आस्यरोग । मुंह की बीमारी यह ६५ प्रकार की होती है ।
मुखशोधिन्—पु० जम्बीर । जम्भीरीनिम्बू
मुखशोष—न० पिपासा । प्यास ।
मुचक—पु० लाक्षा । लाख ।
मुचुकुन्द—पु० पुष्पवृक्षविशेष । मोतिये का पौधा ।
मुञ्ज, मुञ्जातक—पु० मुञ्जतृणविशेष । मूंज ।
मुण्ड, मुण्डक—न० शिर. मस्तक । न० सर. माथा ।
मुण्डतिका—स्त्री० मुण्डी । मुंडी बूटी ।
मुण्डित—पु० लोह । लोहा ।
मुण्डी—स्त्री० मुण्डी. शृङ्गहीनमृग । मुण्डीबूटी. हरनी ।
मुदिर—पु० मेघ. कामुक. भेक । बादल. अय्याश. मेंढ़क ।
मुद्ग—पु० धान्यविशेष । मूंग ।
मुद्गपर्णी—स्त्री० वनमूंग ।
मुद्गवटका, मुद्गवटी—स्त्री० मूंगबरी । मुंगौरी ।
मुद्गभुज्—पु० घोटक । घोड़ा ।
मुद्गर—न० मल्लिकापुष्पविशेष । मालती का फूल ।
मुद्गल—न० रोहिषतृण । हरद्वारीकुश. ज्वरांकुश ।
मुद्गार्द्रकवटा—स्त्री० अदबरा ।
मुनि—पु० वङ्गसेनवृक्ष. पलाशवृक्ष । अगस्त्यवृक्ष. ढाक का पेड़ ।
मुनिद्रुम—पु० वङ्गसेनवृक्ष । अगस्त्यवृक्ष ।
मुनिनिर्मित—पु० डिंडिश ।
मुनिपित्तल—न० ताम्र । तांबा ।
मुनिपुत्र—पु० दमनक । दवना ।
मुनिपुष्प—पु० अगस्त्यवृक्ष । अगस्त्य का पेड़ ।
मुनिपूग—पु० गुवाकविशेष । रामसुपारी ।
मुनिभेषज—न० अगस्त्य. हरीतकी. लङ्घन । अगस्त्य का पेड़ । हरड़. फाकह
मुरा—स्त्री० मूर्वा । मुरहरी एकाङ्गी ।
मुश(स)ली—स्त्री० तालमूली. गृहगोधिका । मुसली दवाई. छिपकली ।
मुष्क—पु० अण्डकोष. वृक्षविशेष । अण्डकोष. कठ पाडरि बूटी ।
मुष्टि—पु० स्त्री० पलपरिमाण. बद्धपाणि । चार तोले. मुट्ठी ।
मुष्टक—पु० राजसर्षप । राई. सरसों ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मुष्टिप्रमाणबदर–न० सेब ।
मुस्त, मुस्तक –न० मुस्था । नागरमोथा ।
मुस्ताद–पु० शूकर । सुअर ।
मुस्ताभ–न० नागरमुस्था । नागरमोथा ।
मूत्र–न० उपस्थनिर्गतजल । पेशाब ।
मूत्रल–न० त्रपुष (त्रि) मूत्रवर्द्धक (स्त्री) (ला) कर्कटी । भखड़ा. पेशाब बढ़ाने वाली दवाई. खीरा. ककड़ी ।
मूत्राघात–पु० मूत्रकृच्छ्ररोग । पेशाब बन्द की बीमारी ।
मूर्च्छा–स्त्री० सम्मोह । बेहोशी ।
मूर्च्छापह, मूर्च्छापिपासापह –न० जल । पानी ।
मूर्द्धपर्णि, मूर्द्धकर्प्परी –स्त्री० आतपत्र । छाता ।
मूर्द्धज–पु० केश । बाल ।
मूर्द्धन्–न० शिर. मस्तक । सर. माथा ।
मूर्वा–स्त्री० सुरा । सुरहरी ।
मूलक–न० कन्दविशेष । मूली ।
मूलकपत्र–न० मूली के पत्ते ।
मूलकपोतिका–स्त्री० लघुमूली । छोटी मूली ।
मूला–स्त्री० शतावरीलता । शतावरि ।
मूलिन्–पु० वृक्ष (न) मूलक (स्त्री) ज्येष्ठी । पेड़. मूली. छिपकली ।
मूष(षिक)–पु० मूषिक (स्त्री) (का) । मूसा चूही ।
मूषा(षी)–स्त्री० तैजसवर्तिनी. स्त्री मूषिक. गवाक्ष । कुठाली. चूही. झरोखा
मूषीक–पु० स्त्री इन्दुरु चूहा ।
मृक्षण–न० नवनीत । नेनू ।
मृग–पु० पशुमात्र. हस्तिविशेष. मृगनाभि. कुरङ्ग । हैवान. खास हाथी. कस्तूरी. हरिण ।
मृगधूर्त(क)–पु० शृगाल । गीदड़. सियार
मृगनाभि(जा)–पु०स्त्री०मृगमद । कस्तूरी
मृगपालिका–स्त्री० कस्तूरी मृग ।
मृगमद–पु० मृगनाभि । कस्तूरी ।
मृगा–स्त्री० इन्द्रवारुणी । इन्दोरणि ।
मृगाक्षी–स्त्री० इन्द्रवारुणी । इन्दोरणि
मृगाङ्क–पु० चन्द्र. कर्पूर. वायु । चांद. काफूर. हवा ।
मृगाद–पु० व्याघ्र । चीता ।
मृगादिनी–स्त्री० वृहदैन्द्री । बड़ी इन्दोरनि ।
मृगान्तक–पु० चित्रव्याघ्र । चीता बाघ ।
मृगारि–पु० सिंह. व्याघ्र. कुक्कुर. रक्तशिग्रु । शेर. बाघ. कुत्ता. लालसुहांजने का पेड़ ।
मृगी–स्त्री० हरिणी. अपस्माररोग । हरनी सिरगी ।
मृणाल–न० पु० पद्मनाल (न) वीरणमूल । कमल की नाल. खस ।
मृणारभमूल–न० भिसिण्ड । भसेड़ ।
मृणालिन्–पु० कमल (स्त्री)(ली) पद्मिनी
मृत्स्ना–स्त्री० सौराष्ट्रीमृत्तिका । सोरठी मांटी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मृत्तालका–स्त्री० सौराष्ट्रीमृत्तिका सोरठी माटी ।

मृत्तिका–स्त्री० मृदा । मट्टी ।

मृदिनी–स्त्री० सौराष्ट्रीमृत्तिका । सोरठी माटी ।

मृदुच्छद–पु० ककुन्दर (स्त्री) (दा) क्षुद्रखर्जूर । कुकरौंधा. खज्जी ।

मृदुपुष्पा–स्त्री० शिरीषवृक्ष । सिरसा का पेड़ ।

मृदुरेचिनी–स्त्री० मार्कण्डिका । भूइखेखसा ।

मृदुल–न० जल (त्रि) कोमल । पानी मुलायम ।

मृदुला–स्त्री० पिण्डखर्जूरिका । सुलेमानी पिण्डखजूर ।

मृद्र–पु० मत्स्यविशेष । खास मच्छली ।

मृद्वी(का)–स्त्री० कोमलाङ्गी. द्राक्षा । नाजनीन. मुनक्का ।

मृष्ट–न० मिरच (त्रि) शोधित । स्याह मिरच. मांजा हुआ ।

मृष्टि–स्त्री० विदारीकन्द । गेण्डि ।

मेक–पु० अज. स्तम्भ । बकरा. खम्भ ।

मेखला–स्त्री० पृश्निपर्णी । पिठवन ।

मेघकफ–पु० करका । ओला ।

मेघज–त्रि० मेघभववस्तु. बृहन्मुक्ता । बादल से पैदा हुआ बड़ा मोती ।

मेघनाद–पु० पलाशवृक्ष. तण्डुलीय. शाक (स्त्री)(दी) मयूर (न) मेघशब्द । ढांख. चवराई. मोर. बादल की गरज।

मेघपुष्प–न० जल. पिण्डाभ्र. नदीजल । पानी. ओला. दरिया का पानी ।

मेघयोनि–पु० धूम । धुंआं ।

मेघरवा–स्त्री०पु० मयूर । मोर ।

मेघवह्नि–पु० वज्राग्नि । अर्क ।

मेघागम–पु० वर्षाकाल । बरसात ।

मेचक–न० अन्धकार. नीलाञ्जन (पु) धूम. शोभाञ्जन । अन्धेरा. स्याह सुरमा. धुंआं. सोहांजना का पेड़ ।

मेढ(ढ्र)–पु० शिश्न. मेष. मेघ । केर. लिंग. मैढ़ा. बादल ।

मेढ्पुच्छ–पु० दुम्बामेष । दुम्बामेढ़ा ।

मेदा–स्त्री० मेदा औषधविशेष ।

मेदिनी–स्त्री० काश्मरी । खम्भारि. ज़मीन ।

मेदोगला–स्त्री० लज्जालूमेद. अलंबुषा ।

मेदौष्ठरोग–पु० मेदासंवन्धी ओष्ठरोग ।

मेथि–स्त्री० मेथिका बनमेथिका । मेथी. बनमेथी ।

मेथिका–स्त्री० " " । " " ।

मेधाविन्–पु० शुकपक्षी. मदिरा । शुकपक्षी. तोता. शराब ।

मेध्य–पु० खदिर. यव. छाग (त्रि) पवित्र (स्त्री) (ध्या) केतकी. वचा. रोचना. शमी । खैरा. जैं. बकरा. पाक. केवड़ा. बच. गोलोचन. छीकुरि ।

मेरुक–पु० यक्षधूप । राल ।

मेरुदण्ड–न० पृष्ठमध्यस्थितास्थि । कंगरोड़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मेषा–स्त्री० मसी. महानीली. हट्ट । स्याही. नील. दुकान ।

मेष–पु० पशुविशेष (स्त्री) (षी) स्त्रीमेष । मेढा. मेढी ।

मेषवल्ली–स्त्री० मेषशृङ्गी । मेढाशिङ्गी ।

मेषलोचन–पु० चक्रमर्द । चकवड़ का पौधा ।

मेषशृङ्गी–स्त्री० मेषवल्ली । मेढासिंही ।

मेषिका–स्त्री० मेषी । मेढी ।

मेह–पु० प्रमेहरोग. मेष. मूत्र । जरियान की बीमारी. मेढा. मूत ।

मेहन–न० शिश्न. मूत्र. मूत्रोत्सर्ग (पु) मुष्कवृक्ष (स्त्री) (ना) लिङ्ग । मूत. पेशाब-निकलना. नाम एक दरखत का औरत ।

मैरेय–पु० मद्यविशेष । शराब ।

मैलन्द–पु० भ्रमर । भौंरा ।

मोक्ष–पु० मुक्ति. पाटलिवृक्ष. मोचन. मृत्यु । नजात. एक खास दरखत पलाश के सदृश होता है. छुड़ाना. मौत ।

मोक्षक–पु० मोक्षवृक्ष. काष्ठपाटला । मोक्ष का पेड़. कठपाडरि ।

मोघ–न० पुष्पविशेष । खास फूल ।

मोघा–स्त्री० पाटला । पाण्डरि ।

मोच–न० कदलीफल (पु) शोभाञ्जनवृक्ष । केले का फल. सहाञ्जने का पेड़ ।

मोचक–पु० मोक्ष. कदली, शिग्रु. विरागी नजात. केला. सुहांजने का पेड़. वैरागी. नजातदिहन्दा ।

मोचनिर्यास } पु० मोचरस । सिमवल
मोचरस } का गोंद ।

मोचा–स्त्री० शाल्मलीवृक्ष. कदली । सेमरा. केला ।

मोचाट–पु० कृष्णजीर. चन्दन । स्याहजीरा. सन्दल ।

मोचस्राव–पु० मोचरस । सिम्बल का गोंद ।

मोठा–स्त्री० नागदमनी । नागफनी का पौधा ।

मोदक–पु० न० खाद्यविशेष. लड्डुक । लड्डुआ ।

मोदन–न० शिवथक । मोम ।

मोदिनी–स्त्री० अजमोदा. मल्लिका. यूथिका. कस्तूरी. मदिरा । अजवाइन. मालती. जूही. कस्तूरी. शराब ।

मोमाचिका–स्त्री० मत्स्यविशेष । मछली ।

मोरट–न० विकृतदुग्धभवजल । बैठे हुये दूध का पानी ।

मोरटा–स्त्री० मूर्वालता । मुरहरी ।

मोहिनी–स्त्री० वटपत्री ।

मौकुलि–पु० काक । कौआ ।

मौक्तिक–न० मुक्ता । मोती ।

मौद्गलि–पु० काक । कौआ ।

मौलि–पु० चूड़ा. किरीट. मस्तक (पु) अशोकवृक्ष (स्त्री) (ली) भूमि । चोटी. ताज. माथा. अशोक का पेड़. जमीन ।

म्लेच्छ–न० हिङ्गुल । ईंगुरूधातु ।

म्लेच्छकन्द–पु० लशुन. पलाण्ड । लहसन. प्याज ।

म्लेच्छमुख–न० ताम्रधातु । तांबा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

य

य–पु० वायु यव । हवा. जौं ।

यकृत्–न० दक्षिणकुक्षौमांसखण्ड. तद्दुष्टक रोगविशेष । कलेजा. कलेजे की बीमारी ।

यक्षकर्द्दम–पु० कर्पूरागुरुकस्तूरीकक्कोलसमूहमिश्रितसमभाग । काफूर केशर कस्तूरी कंकोल वगैरह से मिला हुआ बटना ।

यक्षधूप–पु० धूप. सर्जरस । राल ।

यक्षामलक–न० पिण्डखर्जूरी । पिण्डखजूर

यक्ष्मघ्नी–स्त्री० द्राक्षा । किसमिस् ।

यक्ष्मन्–पु० राजयक्ष्मा रोग । राजरोग. क्षई की बीमारी ।

यज्ञपशु–पु० घोटक.छाग । घोड़ा.बकरा ।

यज्ञवृक्ष–पु० कण्टकारी । कटाई ।

यज्ञभूषण–पु० कुश । कुशा घास ।

यज्ञाङ्ग–पु० उदुम्बर. खदिरवृक्ष. ब्राह्मणयष्टिका(स्त्री)(ङ्गा) सोमवल्ली । गूलर. खैर का पेड़. भारंगी. बभनेठी. सोमबेल यज्ञिक–पु० पलाशवृक्ष । पलाश का दरखत ।

यज्ञिय–पु० उदुम्बरवृक्ष. खदिरवृक्ष । गुलर का पेड़. खैर का पेड़ ।

यत्तूर–न० बकम् । तूणि ।

यन्त्र–न० शल्याहरणार्थम् । शल्य निकालने (कांटा वा तीर) का यंत्र ।

यमवाहन–पु० महिष । भैंसा ।

यमानी–स्त्री० यमानिका । अजवाइन ।

यव(क)–पु० स्वनामख्यातशूकधान्य. इन्द्रयव । जौ. इन्द्रजौ ।

यवक्षार–पु० यवक्षार । जवाखार ।

यवक्षोद–पु० यवचूर्ण । जौ का आटा

यवज–पु० यवक्षार । जवाखार ।

यवजारोटिका–स्त्री० यवरोटिका । यव की रोटी ।

यवन–पु० अश्व. गोधूम । घोड़ा. गेहूं ।

यवनदेशज–पु० सिलारस । लोहबान ।

यवनेष्टा–स्त्री० लसुन । प्याज. लहसुन ।

यवसक्तव–पु० यवसक्तू । यव के सत्तू ।

यवशा–स्त्री० यवानिका । अजवाइनि ।

यवशाक–न० वास्तूक । बथुई ।

यवस–न० तृण । घास ।

यवसुरा–स्त्री० यवोत्पन्नमद । जौं की शराब ।

यवागू–स्त्री० षड्गुणजलपक्वघनद्रव्यविशेष । कढ़ी ।

यवाग्रज–पु० यवक्षार । जवाखार ।

यवानिका
यवानी } स्त्री० यमानी । अजवाइनि ।

यवास–पु० यासक । जवासा ।

यशोद–पु० पारद । पारा ।

यष्टी–स्त्री० ज्येष्ठीमधु । जेठीमधु ।

यष्टीपुष्प–पु० पुत्रजीववृक्ष । पितौंजिआ

यष्टीमधु–पु०न० मिष्टरसयुक्तमूलविशेष । मुलहटी. मुरेठी ।

यागेष्ट–न० शीशक । शीसा ।

याज–पु० अन्न । उबाले हुये चावल ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

याज्ञिक–पु० रक्तखदिर । लाल खैर ।

यातुघ्न–पु० गुग्गुलु । गूगल ।

यामिनी–स्त्री० रात्रि. हरिद्रा । शब. हल्दी ।

यामुन–न० अंजन । सुरमा ।

याम्य–पु० चन्दनवृक्ष । सन्दल का पेड़ ।

याव–पु० अलक्त (त्रि) यवसम्बन्धी । लाख. जौका ।

यावक–पु० कुल्माष. तुलसी. शालीधान्य. आलक्तक । कुलथ.तुलसी. धोना. लाख ।

यावनाल–पु० धान्यविशेष । जुवार. जोढ़री ।

यावनीशाक–न० यमानीशाक । अजवाइनि का साग ।

यावशूक–पु० यवक्षार । जवाखार ।

यास–यसक । जवासा ।

युक्तरसा–स्त्री० रास्नाभेद । रायस नाई ।

युगपत्र(क) पु० कोविदारवृक्ष (स्त्री) (त्रिका) शमीवृक्ष. कचनार का पेड़. छीकुरि का पेड़ ।

यूक–पु० मत्कुण. केशकीट. (स्त्री) (का) खटमल. जूं ।

यूथिका, यूथी } स्त्री० पुष्पवृक्षविशेष । चम्बेली. जूही ।

यूपद्रु(म)–पु०खदिरवृक्ष । खैरे का पेड़ ।

यूही–स्त्री० यूथिका । जूही फूलोंका पेड़

योगन–न० अगरु. कृष्णागरु । अगर. कालाअगर ।

योग्य–न० ऋद्धि नामौषध ।

योजनगन्धा (न्धिका)–स्त्री० मृगमद । कस्तूरी ।

योजनवल्ली–स्त्री० मञ्जिष्ठ । मजीठ ।

योनल–पु० शस्यविशेष । यवनाल ।

योनि–पु० स्त्री० जल. भग । पानी.कुस ।

योषित्–स्त्री० हरिद्रा । हलदी ।

यौवनलक्षण–न० स्तन । पिस्तान ।

(र)

रक्त–न० कुङ्कुम. ताम्र. प्राचीनामलक. पद्मक. सिन्दूर. शरीरस्य सप्तधात्वन्तर्गत धातुविशेष. (पु) लोहितवर्ण. (त्रि) आसक्त. लोहितवर्णयुक्त. (स्त्री) गुञ्जा. लाक्षा. मञ्जिष्ठा । केसर. तामा. पुराना आमला. सेंदुर. खून. पद्मक. सुरख रङ्ग.आशिक. सुरख़. रत्ती. लाख. मजीठ ।

रक्तकन्द(ल)–पु० राजपलाण्डु । पियाज़

रक्तचन्दन–न० लालचन्दन । सुर्खचन्दन. राक्ताचन्दन ।

रक्तझिण्टी–स्त्री० कुरवक. । सुर्ख कटसरैआ ।

रक्ततिल–पु० सुरखतिल । कठतिल ।

रक्तधातु–न० गैरिक । गेरू ।

रक्तप–पु० राक्षस (स्त्री) (पा) जलौका । दुष्ट. जोंक ।

रक्तपक्षती–स्त्री० रोहित त्स्य । रोहूमच्छली ।

रक्तपाकी–स्त्री० बृहती । बैंगनकापौधा

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

रक्तपात–पु० शोणितपतन. (स्त्री) (ता) जलौका । खून गिरना. जोंक ।

रक्तपादी–स्त्री० लज्जालू । लाजवन्ती बेल

रक्तपायिनी–स्त्री० जलौका । जोंक ।

रक्तपिण्ड–न० जवापुष्प । जवाफूल ।

रक्तपित–पु० हरिलपक्षी ।

रक्तपुनर्नवा–स्त्री० लालगदा पुरैना ।

रक्तमत्स्य–पु०मत्स्यविशेष । तपश्यामछली ।

रक्तपुष्प–पु० पलाश. रक्तार्कवृक्ष. (स्त्री) (ष्पा) रक्तपुनर्नवा. सिन्दुरिआ. शाल्मलीवृक्ष. रक्तकरवीर । ढीडलु. लालमदार. लाल गदापुरैना. सदासोहागिल. सिम्बल का गोंद. लाल कनयर ।

रक्तफल–पु० वट. (स्त्री) (ला) स्वर्णवल्ली. कुन्दुरु । बरगद. सुर्णबेलि. कुंदुरु सुगन्धद्रव्य ।

रक्तमारिष } पु०रक्तामारस । लाल मरसा

रक्तमार्ष } पु०

रक्तमुख–पु० रोहितमत्स्य । रोहूमच्छली

रक्तयष्टिका–स्त्री० मञ्जिष्ठ । मंजीठ ।

रक्तरेणु–पु० सिन्दूर. पलाशकलिका. पुन्नाग । सिन्धूर. पलाश का गुंचह. लौंग ।

रक्तवर्द्धना–स्त्री० कपोत । कबूतर ।

रक्तवात–पु० रोगविशेष ।

रक्तवाप्यक–पु० रक्तमरूसा । लोहित नवड़ा ।

रक्तबीज–पु० दाडिम (स्त्री) (जा) सेन्दुरिआ । अनार. सदासोहागिल ।

रक्तशालि–पु० रक्तवर्ण धान्यविशेष । दाउदखानी धान ।

रक्तशिग्रु–पु० रक्तशोभाञ्जनवृक्ष । सुरख सुहांजना ।

रक्तसञ्ज्ञ–न० कुङ्कुम । केसर ।

रक्तसन्दशिका–स्त्री० जलौका । जोंक ।

रक्तसन्धक–न० कल्हार । कमलविशेष ।

रक्तसार–पु० खदिर । खैर का पेड़ (न) रक्तचन्दन. बकम् । लाल चन्दन । वकम ।

रक्ता–स्त्री० गुञ्जाद्वयम् । लाल और सुपेद घुंघुची ।

रक्ताक्ष–पु० महिष. पारावत. चकोरपक्षी कोकिल. सारसपक्षी । भैंस. कबूतर चकोर. कोइल. सारस. (स्त्री) (क्षी) रोहितमत्स्य. रोहूमच्छली ।

रक्ताकङ्गु–स्त्री० रक्तफलिनी । सुरख कांगुनि ।

रक्ताक्त–न० रक्तचन्दन । सुरखसन्दल ।

रक्ताङ्ग–न० विद्रुम. कुङ्कुम. रक्तचन्दन (पु) कम्पिल्ल. प्रबल. मत्कुण. (स्त्री) (ङ्गी) मञ्जिष्ठ । मूंगा. केसरि. सुरखसंदल. कबीला. पत्ता. खटमल. मंजीठ ।

रक्ताप्रियङ्गु–स्त्री० रक्तकङ्गु । सुरख कांगुनी ।

रक्तार्क–पु० रक्तमदार । लाल आक का पेड़ ।

रक्तालु(क)–पु० रक्तारु । रतालू. सकरकन्द ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

रक्तिका–स्त्री० गुञ्जा. राजिका. रक्तिका परिमाण । रत्ती. राई. रत्तीभर तोल
रक्तोत्पल–न० रक्तपद्म (पु) शाल्मली-वृक्ष । सुरखकमल. सिम्बल का दरखत
रक्तोदर–पु० रक्ताक्षीमत्स्यविशेष । रोहूमच्छली ।
रक्तोपल–न० गैरिक । गेरू मट्टी ।
रक्तौष्ठरोग–रक्तविकार से ओष्ठरोग ।
रक्षणारक–पु० मूत्रकृच्छ्ररोग । पेशाव बन्द की बीमारी ।
रक्षणि(णी)–स्त्री० त्रायमाणलता । लाजवन्ती ।
रक्षा–स्त्री० जतु. परित्राण. भस्म । लाख. हिफाजत. छाई. राख ।
रक्षोघ्न–न० काञ्जिक. हिङ्गु (पु) श्वेतसर्षप । कांजी. हींग सुपेद सरसों ।
रङ्ग–न० धातुविशेष. त्रपु (पु) टङ्कण । राङ्गा. रंग. सोहागा ।
रङ्गद–पु० टङ्कण (स्त्री) (दा) स्फटिका-धातु । सोहागा. फिटकरी ।
रङ्गपत्री–स्त्री० नीलवृक्ष । नील का पौधा ।
रङ्गसदृश–न० पशद । जस्ता ।
रङ्गारि–पु० करवीरपुष्प । कनयर के फूल
रच्छ–पु० गन्धपटेर ।
रज(स्)–न० स्त्री० कुङ्कुम (पु) पराग रेणु । केसरि फूल की तिरी. धूल ।
रजत–न० रौप्य हस्तिदन्त. धवल. शोणित. स्वर्ण । चांदी. हाथी दान्त. सुपेद खून. सोना ।
रजन–न० रञ्जन. (स्त्री) (नी) रात्री. हरिद्रा जतुका । रंगना. शब. हल्दी. लाख. नील का पौधा ।
रजस्वल–पु० महिष. (स्त्री) (ला) रजोयुक्ता । भैंसा. हैयजवाली औरत ।
रञ्जक–न० हिङ्गूल (पु) कम्पिल्लक । ईंगुरू कबीला ।
रञ्जन–न० रक्तचन्दन. बकम्. सन्तुष्टकरण मुञ्जतृण (स्त्री)(नी) शुण्डा. रोचनिका. नीली. मञ्जिष्ठा. हरिद्रा. पर्पटी. । सुरखसन्दल. बकम. खुशकरना. मूंजघास नील. मजीठ. हल्दी. पद्मवती खुशबूदार चीज है ।
रण्ड–त्रि० उपस्थ । लिङ्ग ।
रण्डक–पु० अफलवृक्ष । बेफल का दरखत
रत–न० मैथुन. गुह्य (त्रि) आसक्त । सोहबत. गुदा. आशक ।
रतकील–पु० कुक्कुर । कुत्ता ।
रतनिधि–पु० खञ्जनपक्षी । ममोलाचिड़िया ।
रतव्रण, रतान्दुक –पु० कुक्कुर । कुत्ता ।
रतान्ध्री–स्त्री० कुज्झटिका । कुहासा ।
रतिकुहर–न० योनि । कुस ।
रतोद्वह–पु० कोकिल । कोइल ।
रत्ति(का)–स्त्री० परिमाणविशेष । आठ जौ भर तोल ।
रत्न–न० अश्मजाति. मुक्तादिश्रेष्ठवस्तु

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जवाहर मोती वगैरह ।

रत्नराज–न० माणिक्य. रत्नश्रेष्ठ । मानक हीरा ।

रथ–पु० देह.चरण. पाद. वेतसवृक्ष. युद्धयानविशेष । जिस्म, पांव' बेत का दरखत. जंग की सवारी ।

रथसीत–पु० वेतसवृक्ष । बेत का पेड़ ।

रथाभ्र–पु० वेतसवृक्ष । बेत का दरखत

रद(ना)–पु० दन्त. विलेखन । दान्त चीरना ।

रद(न)च्छद–पु० ओष्ठ । ओठ ।

रन्ध्र–न० दोष. छिद्र. कुक्षि । ऐब. सुराख. कोख ।

रम(क)–पु० कान्त. रक्तअशोकवृक्ष. मैथुन । खाबिन्द. जिमाऽ. शौहर ।

रमठ–पु० हिङ्गू । हींग ।

रमण–न० पटोलमूल. जघन. जृम्भण. क्रीडन (पु) पति. भर्ता. गर्द्दभ. वृषण. परवर की जड़. जाघ. जिह्माव. खेल. खाविंद. शहवत. गधा. बयजा ।

रमाप्रिय–पु० कमल ।

रम्य–न० पटोलमूल. (पु) चम्पकपुष्प. बकवृक्ष. (स्त्री) (म्या) रात्रि । पलवल की जड़. चम्पे का फूल. रात्रि. बकपेड़. वकायन का पेड़ ।

रराटी–स्त्री० ललाट । माथा ।

रल्लक–पु० कम्बल. पद्म. मृगविशेष । भूरा. पलक. खासहरणी ।

रवथ–पु० कोकिल । कोइल ।

रवि–पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफताव. आकका पेड़ ।

रविप्रिय–न० ताम्र । तांबा ।

रविप्रीता–स्त्री० द्वितीयहुरहुर । सूर्य्यमुखी ।

रविरत्नक–न० माणिक्य । मानक ।

रविलोह–न० ताम्र । तांबा ।

रसना–स्त्री० जिह्वा । जीभ ।

रश्मि–पु० किरण. पक्ष्म । शुआ. पलक ।

रस–न० जल. (पु) रसनाग्राह्यगुण षड्विध.यथाः–मधु १ अम्ल २ लवण ३ कटु ४ तिक्त ५ कषाय ६ विष. वीर्य्य. गुण. गन्धरस. जल. पारद. सुवर्ण. शुक्रधातु । पानी. जायकह. मीठा. तुरस. सलोना. कड़वा. तीखा. कसैला. जहर. मनी. पारा. सोना. ।

रसक–न० खर्परधातु । खपरिया ।

रसकर्पूर–न० कर्पूर रस. पारद । रसकाफूर. पारा ।

रसगर्भ–न० रसाञ्जन । रसवत ।

रसघ्न–न० टङ्कण । सोहागा ।

रसज–न० रक्त. (पु) गुड़. मद्य । खून. गुड़. शराब ।

रसज्ञा–स्त्री० जिह्वा । जीभ ।

रसधातु–पु० पारद । पारा ।

रसना–स्त्री० रास्ना. जिह्वा । रहसनि. जीभ ।

रसनालिह–पु० कुक्कुर । कुत्ता ।

रसनेन्द्रिय–न० जिह्वा । जीभ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

रसराज } –पु० पारद । पारा ।
रसलेह }

रसशोधन–न० टङ्कण । सोहागा ।

रसा–स्त्री० पृथिवी. रसना. शल्लकी. कङ्गु. द्राक्षा. काकोली. पाढ़ा । ज़मीन. ज़बान. रहसनि. कंगनी. दाख. काकोलीबूटी . पाढ़ा ।

रसाञ्जन–न० रसवत । रसौत ।

रसाम्ल–न० चूक । चूका ।

रसायन–न० कटि. मेखला. तक्र. विष. जराव्याधिनाशौषध. विडङ्ग नामौषध । (स्त्री) (नी) मञ्जिष्ठा. गुडूची । कमर. तगाड़ी. छाछ. ज़हर. बुढ़ापा-दूर करने की दवाई. वायविडंग मजीठ. गिलोय ।

रसायनतन्त्र–न० रसानां रसरक्तादीनामयनमाप्यायनं रसायनं तदर्थं तन्त्रं रसायनतन्त्रं । अथवा रसानां रसवीर्यविपाकादीनां आयुःप्रभृतिकारणानामयनं विशिष्टलाभोपायो रसायनं तदर्थं तन्त्रं रसायनतन्त्रं ।

रसायनफला–स्त्री० हरीतकी । हरीड़ ।

रसाल–पु० इक्षु. आम्र. पनस. गोधूम (न) सिल्हक (स्त्री) (ला) रसना. दूर्वा. द्राक्षा. मूरनी । ऊख. आम. कटहर. गेंहू. एकखुशबूदारचीज. जबान. दूब. दाख. किसमिस. मूरनि ।

रसास्वादिन्–पु० भ्रमर । भौंरा ।

रसिक–पु० सारसपक्षी. तुरङ्ग. हस्ती. (स्त्री) (का) जिह्वा. इक्षुरस । सारस. घोड़ा. हाथी. ज़बान. ऊख का रस ।

रसेन्द्र–पु० पारद । पारा ।

रसोत्तम–पु० मुद्ग । मूंग ।

रसोन } –पु० लशुन । लहसन ।
रसोनक }

रहस–न० निर्जन. तत्व. रति. गुह्य । तनहाई. सोहबत. गुदा ।

रहस्या–स्त्री० लताविशेष । खाशबेल ।

राका–स्त्री० कच्छूरोग. नूतनऋतुमती स्त्री । एक बीमारी. नईहैज़ वाली स्त्री

राक्षा–स्त्री० लाक्षा । लाख ।

रागाढ्या–स्त्री० मञ्जिष्ठालता । मञ्जीठ ।

राजकसेरुक–न० कसेरुक । कस्यार ।

राजकोषातकी–स्त्री० हस्तिपर्णिका । घिया तोरई ।

राजजम्बू–स्त्री० पिण्डखर्जूरिका. फलेन्द्राजम्बू. पिण्डखजूर. फरेंदजामुन का पेड़ ।

राजताल–पु० गुवाकवृक्ष । सुपारी का पेड़

राजदन्त–पु० उपरिश्रेणीस्यमध्यवर्तीदन्तद्वय । सूएदान्त ।

राजनील–न० रत्नविशेष. मरकतमणि. । नीलमरत्न. पन्नारत्न ।

राजन्य–पु० अग्नि(स्त्री)(न्या) क्षीरिकावृक्ष । आग. खिरनी का पेड़ ।

राजपुत्रक–पु०राजाम्र(स्त्री)(का) जाती । कलमीआम. चम्बेली ।

राजपुत्री–स्त्री० मालती. कटुतुम्बी.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

रेणुका। मालती. करुई तोंबी. रेणुका यह मरिच के सदृश होती है।

राजवल्लभ–पु० राजादनी. राजाम्र. राजबदर। खिरनी. राजआम. प्योंदीबेर।

राजभद्रक–पु० कुष्ठ. निम्ब. पारि–द्रकवृक्ष। कूट्ठ. नीम का पेड़. खासदरखत।

राजबला–स्त्री० गन्धप्रसारणी। गन्धपसारनि।

राजवृक्ष–पु० आरग्वधवृक्ष। अमिलतास का पेड़।

राजमाष–पु० लोबिआ।

राजरीति–न० कांची पीतल।

राजशिम्बी–स्त्री० भेंटवास। भंटवास।

राजश्टङ्ग–पु० मद्गुरमत्स्य। मागुरमछली

राजसर्षप–पु० सर्षपविशेष। राई सरसों।

राजस्कन्ध–पु० घोटक। घोड़ा

राजहंस–पु० रक्तवर्णचञ्चुचरणविशिष्टहंस. कदम्ब. कलहंस।

राजादन–न० क्षीरिका. प्रियाल. किंशुक (स्त्री) (नी) पिण्डखर्जूरिका। खिरनी. चिरौंजी. टेशू का पेड़. पिण्डखजूर।

राजाम्र–पु० राजआम। कलमी आम।

राजार्ह–न० अगरुचन्दन (त्रि) राजयोग्य (स्त्री)(र्हा) जम्बू। अगरसन्दल. पादशाह के लायक. जामुन का पेड़।

राजाहि–पु० द्विमुखसर्प। दुमुखा सांप।

राजावर्त–न० रेवटी। रावटी।

राजिका–स्त्री० राजसर्षप. कृष्णसर्षप। राई. सरसों।

राजिमत्फला–स्त्री० राजकोषातकी। घिया तोरई।

राजिल–पु० जलव्याल। जलसाप।

राजी–स्त्री० राजिका। राई।

राजीफल–पु० पटोलवल्ली। परवर।

राजीव–न० पद्म.(पु०) शृङ्गमृग. बृहन्मीनविशेष. हस्ती. सारसपक्षी। कमल. सींगवाले हरिण. बड़ी मच्छली. खाश किसम की हाथी. सारस चिड़िया।

राजेय–पु० पटोलवल्ली। परवर।

राज्ञी–स्त्री० राजपत्नी. कांस्य. नीली। रानी. कांसा. नील।

राज्यक्ता–स्त्री० दधिलवणमिश्रितसूक्ष्मालाबुखण्डादि। राइता।

राटि–स्त्री० युद्ध. (पु०) शरारिपक्षी। जंग. शरालपंखी।

रात्रि(त्री)–स्त्री० हरिद्रा. निशा। हल्दी. शब।

रात्रिमणि–पु० निशाकर। चांद।

रात्रिहास–पु० श्वेतोत्पल। सुफैदकमल. काकाबेल।

राम–न० वास्तूकशाक. कुष्ठ. तमालपत्र. (स्त्री) (रामा) उत्कृष्टास्त्री. हिङ्गू. हिङ्गुल. श्वेतकण्टकारी. गोरोचना। वथुई का साग. कुट्ठ दवाई. तमाल का पत्ता. दिल के खुश करने वाली औरत. हींग. ईंगुर. सुपेद कण्टियारी बूटी. गोरोचन. गेरू।

रामठ–पु० हिङ्गु (स्त्री) (ठी) नाड़ी।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

हींग. रग ।

रामण—पु० गिरिनिम्ब. तिन्दुकवृक्ष । पहाड़ी नीम. तेंदू का पेड़ ।

रामदूतिका—स्त्री. नागपुष्पी । नागकेशर

रामदूती—स्त्री० तुलसीविशेष । रामातुलसी ।

रामशर—पु० शरवृक्षविशेष । रमशर का पेड़ ।

रामसेनक—पु० किरात । चिरायता ।

रायण—न० पीड़ा. रोग । दर्द. बीमारी ।

राल—पु० धूप । राल ।

रालतैल—न० राल का तेल ।

राश—त्रि० विलेशयपशुनाम ।

राष्ट्रिका—स्त्री० बरहण्टा । बड़ीभटकटैया

रासभ—पु० गर्द्दभ । गधा ।

रास्ना—स्त्री० स्वनामख्यात लताविशेष । रासनबेल ।

राहुरत्न—न० रत्नविशेष । गोमेदरत्न ।

राहुस्पृष्ट, राहूच्छिष्ट } पु० लशुन । लहसुन ।

रिरी—स्त्री० पित्तल । पीतल ।

रिश्य(ष्य) पु० मृग. हरिण । हन्ना ।

रीढक—पु० पृष्ठवंश । पीठ की हड्डी. कंगरीड़ ।

रीति—स्त्री० पित्तल. स्यन्द. लोहकिट्ट । पीतल. चूना. लोह की कीट ।

रीतिहेतु—पु० पशद । जस्ता ।

रुक्म—न० काञ्चन. धूस्तर. लोह. नागकेशर । सोना. धत्तूरह. लोहा. नागकेशर ।

रु(रू)क्ष—त्रि० निस्नेह । रूषा. रूखा ।

रुचक—न० स्वर्जिकाक्षार. सौवर्चल. रोचना. लवण. (पु) बीजपूर. दन्त. कपोत । राल. सज्जी. सोहागा. कालानिमक. निमक. बिजौरा निम्बू. दान्त. कबूतर ।

रुचि—स्त्री० गोरोचना । गोलोचन ।

रुचिर—न० मूलक. लवङ्ग. कुंकुम (स्त्री) (रा) गोरोचना । मूली. लौंग. केशरि. गोलोचन ।

रुच्य—न० सौवर्च्चल (पु०) शालीधान्य । कालानिमक. शालीधान ।

रुज्—स्त्री० व्याधि. पीड़ा. रोग. (स्त्री) (जा) भङ्ग. मेषी । बीमारी. दर्द. भांग. मेंढ़ी ।

रुद्रजटा—स्त्री० लताविशेष । शंकरजटा बेल ।

रुद्रप्रिया—स्त्री० हरीतकी । हरीड़ ।

रुद्राक्ष—पु० स्वनामख्यातवृक्षविशेष । रुद्राक्ष ।

रुधिर—न० शरीरस्थ रसभवधातु । खून ।

रुरु—पु० मृगविशेष । कस्तुरिआ हरिण ।

रुवथु—पु० शब्द. कुक्कुट । आवाज. मुर्ग ।

रुवु(वू)क—पु० एरण्डवृक्ष । एरण्ड का पेड़ ।

रुमेटि—स्त्री० धूम । धुआं ।

रूप्य—न० रौप्य । चांदी ।

रेक—पु० विरेचन. भेक । जुलाब. मेंढक ।

रेकनस्—न० काञ्चन । सोना ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

रेचक—न० कङ्कुष्टमृत्तिका (पु) यवक्षार. जयपालवृक्ष । कंकरवालीमट्टी. जवाखार. जयपाल का दरखत ।

रेचन—न० मलभेदन(स्त्री)(ना)काम्पिल्ल-(स्त्री)(नी) वटपत्री. श्वेतात्रिवृता । मुसहिल. सुपेद निशोथ ।

रेणु—पु० स्त्री० धूलि (पु) पर्प्पट. रेणुका. पांशु । धूड. पित्तपापड़ा. खुशबूई ।

रेणुका—स्त्री० मरिचाकृति सुगन्धिद्रव्यविशेष ।

रेतजा—स्त्री० बालू ।

रेतना } न० शुक्र. पारद । पारा. मनी ।
रेतस }

रेत्य—न० पित्तल । पीतल ।

रेप—न० शुक्र । मनी ।

रेवट—पु० शूकर. विष. वैद्य. (न) दक्षिणावर्तशङ्ख । सुअर. ज़हर का तबीब. दहिनावर्त्ती शंख ।

रेवतस—पु० जम्बीर । जम्भीरी निम्बू ।

रेवा—स्त्री० नर्मदानदी. रति. नीलीवृक्ष । नील का पौधा ।

रै—पु० धन. स्वर्ण । दौलत. सोना ।

रोज—पु० ऋष्यमत्स्यविशेष ।

रोग—पु० कुष्ठौषधि. देहभङ्गकारक । कुट्ठ. बीमारी ।

रोगाह्वय—पु० कुष्ठौषधि । कुट्ठ. कूट ।

रोगिनी—स्त्री० यासक । जवासा ।

रोग्य—त्रि० अपथ्य । बीमार करने वाली चीज़ ।

रोचक—पु० क्षुधा । भूख ।

रोचन—पु० कम्पिल्ल. कूटशाल्मली । कबीला. कूटशिमरा का पेड़ ।

रोचनक—पु० जम्बीर । निम्बू ।

रोचनफल—पु० बीजपूरक. दाड़िम । बिजौरा निम्बू. अनार ।

रोचना—स्त्री० रक्तकम्बल. हरिद्रा. गोरोचना. । सुरख कम्बल. हल्दी. गोलोचन ।

रोचनिका—स्त्री. वंशलोचना । तवाशीर ।

रोचनी—स्त्री० आमलकी. चुक्र. गोरोचना. मनःशिला. श्वेतत्रिवृता । आंवला. चूक. गोलोचन. मंळल. सुपेद निशोथ ।

रोटिका—स्त्री० पिष्टकविशेष । रोटी. कचौरी ।

रोधित—पु० लोध्रवृक्ष । लोध का दरखत

रोमन्—न० जल. लोम । पानी. रोंआं ।

रोमक—न० शाकम्भरिलवण. पांशुलवण. अयस्कान्तमणि । सांभरनिमक. कलरीनिमक. आतशीशीशा ।

रोमकूप—पु० लोमविवर । रोंएकासुराख.

रोमभूमि—स्त्री० त्वच्. चर्म्म । खाल. चमड़ा ।

रोमश—पु० मेष. चन्द्र. पिण्डालुकुम्भी. शूकर । मेढ़ा. चांद. डिंडिसफल. सुअर.

रोमशफल—पु० पिण्डालुकम्भी । पिडारु. डिंडिश ।

रोमहर्षण—न० रोमाञ्च (पु) विभीतक-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वृक्ष । रोंआं फूटना. बहेरा का पेड़ ।

रोमा(व)ली–स्त्री० नाभेरूर्ध्वरोमराजी । नाभि के ऊपर पिस्तान तक रोंआं की कतार ।

रोलम्ब–पु० भ्रमर । भौंरा ।

रोषण–पु० पारद । हेमघर्षणोपल. । पारा. कसौटी ।

रोह–पु० अङ्कुर । अंगूर ।

रोहिण–पु० भूस्तृण. वटवृक्ष. रोहितकवृक्ष । खुंब. बरगद. रोहितक ।

रोहिणी–स्त्री० स्त्रीगवी. तडित. कटुम्भरा. सोमवल्क. काश्मरी. हरीतकी. मञ्जिष्ठा लता. । गाय. अर्क. कुटकी. कायफरा. घोराकरञ्ज. खम्भारि. हरीड़. मंजीठ ।

रोहितक, रोही, रोहीतक – पु० स्वनामख्यातवृक्षविशेष । हरद्वारीकुश ।

रौद्र–पु० सूर्य्यतेज. हेमन्तऋतु(स्त्री)(द्री) रुद्रजटा । धूप. ठंढकाल. रुद्रजटाबूटी

रौम–न० शाम्भरीलवण । सांभरनिमक ।

रौहिणेय–न० मरकतमणि(त्रि)गोवत्स । पन्ना. बछरा ।

रौहिष–न० कटण(पु)मृगविशेष. रोहितमत्स्य(स्त्री)(षा)मृगी. दूर्वा । हरद्वारीकुश. खास हरिण. रोहूमछली. हरणी दूब ।

ल

लक–न० ललाट. धान्यशीर्षक. माथा । धानका सिर भुट्टा ।

लक(कु)च–पु० वृक्षविशेष । बड़हर का पेड़

लक्षा–स्त्री० लक्ष । लाख ।

लक्ष्मणा–स्त्री० श्वेतकण्टकारी । छोटी भटकटैया सुपेद फूल वाली ।

लक्ष्मी–स्त्री० स्थलपद्मिनी. हरिद्रा. शमीवृक्ष. मुक्ता. ऋद्धिवृद्धीऔषध. सेवती. हरिद्रा. हल्दी. छीकुरि. मोती. ऋद्धिवृद्धिबूटी ।

लक्ष्मीगृह–न० रक्तोत्पल । सुरख कमल फूल ।

लक्ष्मीपति–पु०पूग.गुवाक् । लौंग.सुपारी

लगुड़–पु० रक्तकरवीर । सुरख कनयर ।

लघु–न० शीघ्र. कृष्णागरु(स्त्री) स्पृक्का (त्रि)अगरु. वीरण । जल्द. स्याहअगर. लङ्कोड्कपुरी खुशबूदार चीज. अगर. खस्स के सदृश पीली छविवाला तृण ।

लघुदन्ती–स्त्री० द्रुदन्तीवृक्ष । छोटी दत्तूनिया ।

लघुद्राक्षा–स्त्री०काकलीद्राक्षा । किशमिश्

लघुपुष्पा–स्त्री० स्वर्णकेतकी । जर्द्केवड़ा

लघुपञ्चमूल–न० शरिवन. पिठवन. बड़ी भटकटैया. छोटी भटकटैया. गुखुरू ।

लघुमूलक–न० क्षुद्रमूलक । छोटी मूली ।

लङ्का–स्त्री० धान्यविशेष ।

लङ्कापिका, लङ्कारिका – स्त्री० स्पृक्काशाक । पिडीशाग ।

लङ्कोयिका–स्त्री० लङ्कोड्कपुरीसुगन्धद्रव्यविशेष ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

लज्जा, लज्जालु — स्त्री० लज्जालुलता । लाजवन्ती बेल ।

लट्वा—स्त्री० ग्रामचटक. कुसुम्भवृक्ष । गरगवा. कुसुम्भ का पेड़ ।

लड्डुक—पु० पिष्टकविशेष । लड्डुआ ।

लता—स्त्री० गंधप्रियंगु. अस्पृक्का । सुगन्धद्रव्य का नाम विशेष. लड्डोइकपुरी ।

लतामणि—पु० विद्रुम । मूंगा ।

लतायष्टि—स्त्री० मञ्जिष्ठा । मञ्जीठ ।

लतार्क—पु० हरित्पलाण्डु । हरापयाज ।

लतास्फीता—स्त्री० गोरिआसांक । सुपेद दुधउरु ।

लत्तिका—स्त्री० गोधा । गोह ।

लपिसका—स्त्री० खाद्यविशेष । लप्सी, लपसी ।

लम्बकर्ण—पु० अङ्कोटवृक्ष. छाग. शशा । अकोहर का पेड़. बकरा. खरगोश ।

लय—न० वीरणतृण । उशीरसदृशपीतछवितृणविशेष ।

लाक्षा—स्त्री० जतु । लाख ।

लाक्षाप्रसादन—पु० लोध्र । पठानीलोध ।

लाङ्गलिक—पु० स्थावरविषविशेष (स्त्री) (का) लाङ्गलीवल्ली । करिहारी का विष. करियारीबेल ।

लाङ्गलिन्—पु० नारिकेलवृक्ष. सर्प । नारियल का पेड़. सांप ।

लाङ्गली—स्त्री० करिहारीवल्ली । करियारी बेल ।

लाङ्गूलिन्—पु० वानर. ऋषभनामौषध ।

लाज—न० उशीर. (पु) आर्द्रतण्डुल. लज्जा (स्त्री) (जा) अक्षत (पु) भृष्टधान्य । खस. भूंजेचावल. खील. लाई ।

लांजाशूक—न० कमलमूल । भिसिण्ड ।

लामज्जक—न. वीरणमूल । खस्स. उशीरवत्पीतछवितृणमूल ।

लाला—स्त्री० मुखजातजल । लाल. थूक. लार ।

लालिक—पु० महिष । भैंसा ।

लाव—पु० स्त्री० पक्षिविशेष । लवा ।

लावु(वू)—पु० स्त्री० अलावु । कद्दू. तूंबा ।

लिक्षा—स्त्री० यूकाण्ड । लीख ।

लिङ्गिता—स्त्री० शिवलिंगि । पचगुरिआ ।

लिम्पाक—न० निम्बुकविशेष । (पु) जम्बीरी. गर्दभ । कागजीनिम्बू. जम्बीरीनिम्बू. गधा ।

लीक्षा, लीक्षा — स्त्री० यूकाण्ड । लीख

लुण्टक—पु० शाकविशेष । खासशाग ।

लुण्ठक—पु० काक । कौवा ।

लुलाय—पु० महिष । भैंसा

लूता—स्त्री० कीटविशेष. रोगविशेष ।

लेखनी—स्त्री० खटिकामृत्तिका । खरिया ।

लेखपत्र—पु० तालवृक्ष । तालका पेड़ ।

लेहन—न० वेसन ।

लोचक—पु० मांसपिण्ड. अक्षितारा. कज्जल. कदली. निर्मोक । मांस का टुकड़ा. आंखकीपुतली. काजल. केला. सांपकी केंचुली ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

लोचन–न० चक्षु । चश्म ।

लोचिका–स्त्री० दधिघृतमर्द्दितसउष्णोदकसहितदलितमण्डलाकारनिर्मितघृतभृष्टसमिता । पेराक. लुच्ची ।

लोणा
लोणी } –स्त्री० लोणी । लोनी ।

लोणार–न० क्षारविशेष । एकखार

लोध्र–पु०स्वनामख्यातरक्तवर्णवृक्षविशेष। लोध का दरखत ।

लोध्रपुष्पक–पु० धान्यविशेष । ठंढकाली धानविशेष ।

लोयाक(यक)–पु० शृगाल (स्त्री)(यिका) शृगाली । सिआर. सिआरी ।

लोमकर्ण–पु० शशा । खरगोश. चौगड़ा ।

लोमशा–स्त्री० बच । बच ।

लोयत्री–स्त्री० जलमर्द्दितमण्डलाकारनिर्मितसमिता । लोई ।

लोहकर्ष–पु० चुम्बकप्रस्तर । चुम्बकपत्थर

लोहसिंहानिका–स्त्री० लोहकिट्ट । लोहकी कीटी ।

लोहित–न० माणिक्य ।

लोहितपुष्पक–पु०दाडिमवृक्ष । अनार का दरखत ।

(व)

वंश–पु० पुत्रपौत्रादि. तृणजातिविशेष. पृष्ठावयव. इक्षु. शालवृक्ष । नसल. बांस. कंगरोड़. पौंड़ा. सालका पेड़ ।

वंशक–पु० इक्षुभेद. मत्स्यविशेष (स्त्री) (का) वड़ौखा ऊख । मच्छलीखास ।

वंशकर्परलोचना
वंशक्षीरी
वंशना } –स्त्री० तां । वंसलोचन. तवाशीर ।

वंशपत्री–स्त्री० बांसपात्री ।

वंशभवयव–पु० बांस के चावल ।

वंशरो (लो) चना
वंशशर्करा } –स्त्री० वंशलोचना तवाशीर ।

वंशिक–न० अगरु । अगर ।

वंशी–स्त्री० कर्षचतुष्टय । ६४ मासे ।

वक–पु० स्वनामख्यातपक्षी । बगला ।

वकु (कू) ल–पु० स्वनामख्यातपुष्पवृक्ष (स्त्री) (ली) काकोलिनामौषधिविशेष । कचनारवृक्ष. काकोली ।

वक्त्र–न० मुख. तगरमूल । मुह. तगर की जड़ ।

वक्त्रखुर–पु० दन्त । दान्त ।

वक्रा–स्त्री० कर्कटशृङ्गी । ककरासिंगी ।

वक्र–पु० पर्पट । पित्तपापरा ।

वक्रतुण्ड–पु० शुकपक्षी । तोता ।

वक्रवक्त्र–पु० शूकर वराह । सुअर ।

वक्षोरुह–पु० स्तन । पिस्तान ।

वङ्ग–पु० धातुविशेष. त्रपु. वृन्ताक. कर्पास । राङ्गा. सीसा. बेंगन. कपास ।

वङ्गज–न० सिन्दूर । सिन्धूर ।

वङ्गन–पु० वृन्ताक । वेगन ।

वङ्गसेन–पु०अगस्त्यवृक्ष । अगस्ति का पेड़ ।

वङ्गारि–पु० आल । हरिताल ।

वच–पु० कीरपक्षी. षड्ग्रन्था । तोता. वच बूटी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वचण्डी–स्त्री० शारिकापक्षिणी । मयना

वचन–न० शुण्ठी । सोंठि ।

वज्र–पु० न० रत्नविशेष (न) धात्री काञ्जिक. वज्रपुष्प. लौहविशेष. अभ्रविशेष । हीरा. आंमला. कांजी. सेहुंड़पुष्प. खेड़ीलोहा. अभ्रक ।

वज्रचर्म्मन्–पु० खड्ग । गैंड़ा ।

वज्रदन्त–पु० शूकर. मूषिक । सूकर. मूसा

वज्रद्रुम–पु० सेहुण्डवृक्ष । सेंहुड़ का पेड़ ।

वज्ररद–पु० शूकर । सुअर ।

वज्राङ्गी } –स्त्री० सेंहुण्ड । सेहुड़ का पेड़ ।
वज्री }

वञ्जुल–पु० तिनिशवृक्ष. अशोकवृक्ष. वेतसवृक्ष. वकुलवृक्ष. पक्षिविशेष. स्थलपद्मवृक्ष (स्त्री) (ला) बहुदुग्धा गौ ।

वट–पु० वटवृक्ष. कपर्द्द । वर का पेड़. कौड़ी ।

वटक–पु० पिष्टकविशेष. अष्टमाषकपरिमाण(स्त्री) (टका. टिका) । वड़ा. आठ मासा. गोली ।

वटपत्रा–स्त्री० वर्वरी । ववई ।

वटपत्री–स्त्री० वटपत्री ।

वटर–पु० कुक्कुट । मुर्गा

वटि–स्त्री० उपजिह्विका । काकली ।

वड़वा–स्त्री० घोटकी । घोड़ी ।

वडवाक्षीर–न० घोटकीदुग्ध । घोड़ी का दूध ।

वत्सक–न० पुष्पकासीस. सीसा. (पु०) कुटज. इन्द्रयव. वत्स । हीराकशीश. सीसा. कुरैआ. इन्द्रयव. वछड़ा ।

वत्सनाल–पु० विषवृक्षविशेष । वच्छनागज़हर ।

वत्सादिनी–स्त्री० गुडूची । गुरच. गिलोय

वदर–न० कर्पासफल. सेविफल. (स्त्री) (रा) वराहक्रान्ता.कार्पासी.एलापर्णी. विष्णुक्रान्ता (स्त्री) (रि) कोलिवृक्ष । वेनवर. सेवि. विदारीकन्द. कपास. रहसनि. विष्णुक्रान्ता. बेरि का पेड़ ।

वदाम–न० फलविशेष । बदाम ।

वदाल–पु० मत्स्यविशेष ।

वधू–स्त्री० गन्धपलाशी. लङ्कोइकपुरी । गंधपलाशी. लंकोइकपुरी. शाग ।

वध–न० सीसक । सीसा ।

वन–न० स्त्री० अटवी. (न) जल । जंगल. पानी ।

वनकोद्रव–पु० वनकोद्रव । कोदंव ।

वनज–न० अम्बुज. (पु) मुस्तक. गज. तुम्बुरु । कमल. मुस्था. हाथीः तुम्बुरुवीज ।

वनद–पु० मेघ । बादल ।

वनमुच् (मूत)–पु० मेघ । बादल ।

वनमुद्ग–पु० मोठधान्य । मोथी ।

वनशृङ्गाट–पु० गोक्षुरु । गुखुरु ।

वनस्पति–पु० विनापुष्पफलयुक्तवृक्ष. स्थालीवृक्ष. वटवृक्ष । नवातात. वर का वृक्ष ।

वनहरिद्रा–स्त्री० अरण्यजातहरिद्रा । वनहल्दी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वनहास–पु० काशतृण. कुन्दपुष्प । काहीघास. कुन्दका फूल. काशघास ।

वनाखु–पु० शशक । खर्गोश ।

वनाहिर–पु० शूकर । सुअर ।

वन्दनीय–त्रि० स्तवनीय (पु) पीतभृङ्गराजवृक्ष (स्त्री) (या) गोरोचना । तारीफ के लायक. पीलाघसिरा. गोलोचना ।

वन्द्या–स्त्री० गोरोचना । गोलोचना ।

वन्ध्याकर्कोटकी–स्त्री० कर्कोटकी । बांझखेखसा ।

वन्धुजीव–पु० जपा । दुपहरिया फूल का पेड़ ।

वन्धूक } पु० असन । विजैसार ।
वन्धूकपुष्प }

वन्य–न० त्वच (पु) वनशूरण (स्त्री) (न्या) मुद्गपर्णी. गुञ्जा. भद्रमुस्ता. गन्धपत्रा. चमड़ा. जंगलीशूरण. वनमूंग. रत्ती. मुत्था. नागरमोथा ।

वह्निज्वाला–स्त्री० धातकी । धवई. धौके फूल ।

वह्निवक्त्रा–स्त्री० लाङ्गली । कलिहारी ।

वह्निशिख–न० कुसुम्भ । कुसुम ।

वनौक–पु० वानर ।

वपुस्–न० शरीर । जिसम ।

वप्र–न० सीसक (स्त्री) (प्रा) मञ्जिष्ठालता. (स्त्री) (प्री) वल्मीक । सीसा. मञ्जीठ. बेंबउरु ।

वमन–न० छर्द्दन. (पु०) सन. (स्त्री०) (नी) जलौका । कै. सन. जोंक ।

वम्भ–पु० वंश । बांस ।

वम्भर–पु० मधुमक्षिका । शहदकीमक्खी.

वम्भराली–स्त्री० मक्षिका । मक्खी ।

वम्री–स्त्री० वल्मीक । बेंबउरि ।

वयस्था–स्त्री० आमलकी । हरीतकी. गुडूची. काकोली. सूक्ष्मैला. शाल्मली । आंमला. हरीड़. गुरच. काकोली. छोटी इलायची. सिम्बल का पेड़ ।

वर–न० कुंकुम. त्वच. आर्द्रक. (पु०) गुग्गुल । केसर. छाल. अदरक. गूगल ।

वरट–न० कुन्दपुष्प. (पु) हंस, (स्त्री) (टा) (टी) हंसी. गन्धोली. कुसुमबीज । कुन्द का फूल. हंसी. वर्रै ।

वरट्टिका–स्त्री० कुसुम्भबीज । कुसुम के बीज ।

वरण–पु० वरुणवृक्ष । वरुण का पेड़ ।

वरण्ड–पु० मुखरोग. (स्त्री) (ण्डा) सारिका । मुंह की बीमारी. मयना ।

वरतिक्त–पु० कटुजवृक्ष. किरातवृक्ष. दवनपापरा । कौरैया का पेड़. चिरायते का पेड़ । पित्तपापरा ।

वरतिक–पु० पाढ़ा । पाढ़ा ।

वरदा } स्त्री० सूर्यभक्ता. अश्वगन्धा ।
वररा } हुरहुर. असगन्ध ।

वरवर्णिनी–स्त्री० अत्युत्तमा स्त्री. लाक्षा. हरिद्रा. रोचना । नेक औरत. लाख. हल्दी. गोलोचन ।

वराङ्ग–न० मस्तक. गुह्य. योनि. तज.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

कङ्कुष्ट. (स्त्री) (ङ्की) हरिद्रा. श्रेष्ठाङ्गयुक्ता। माघा. गुदा. कुश. तज. मुर्दाशङ्ख. हल्दी. उमदः उजववाली।
वराट(क) पु० कपर्दक. रज्जु. पद्मबीज. (स्त्री) (का) कपर्दिका। कौड़ा. रस्सी. कमलवीज. कौड़ी।
वरारक–न० हीरक। हीरा।
वराशि–पु० स्थूलवस्त्र। मोटा कपड़ा।
वरासन–न० ओड्रपुष्प। जवापुष्प। दुपहरिया का फूल॥
वराह–पु० शूकर. मुस्ता. शिशुमार(स्त्री) (ही) भद्रमुस्ता। सूकर. मोथा. मगर. नागरमोथा।
वराहकर्णी–स्त्री०लघुदन्ती। छोटीदन्तूनि
वरिष्ट–न० ताम्र. मरिच. (पु) तित्तिरिपक्षी। तांवा. स्याह मरिच. तीतर।
वरी–स्त्री० शतावरी। छतावरि।
वरी(ली)वर्द्द–पु० वृष। बैल।
वरुण–पु० वरुणवृक्ष। वरुन का दरखत।
वरेण्य–न० कुंकुम। केसरि।
वर्कर–पु० मेषशावक. छाग। मेंढ़े का बच्चा. बकरा।
वर्चस् } न० रूप. विष्ठा. दीप्त।
वर्चस्क } हुसन. गूह. जर।
वर्ण–न० कुङ्कुम। केसरि।
वर्णक–न० हरिताल. चन्दन। हरताल. सन्दल।
वर्णपुष्प–पु० वाणपुष्प। यह गौड़देशमें प्रसिद्ध है।

वर्णरे(ले)खा–स्त्री० कठिनी। खड़ियामट्टी।
वर्णसि––पु० जल। पानी।
वर्णा–स्त्री० आढकी। पैमाना।
वर्णि–न० स्वर्ण। सोना।
वर्णिका–स्त्री कठिनी. मसि। खड़िया. स्याही।
वर्णिनी–स्त्री० हरिद्रा। वनिता।
वर्तक–पु० वर्तीकपक्षी। बटेर. पेढ़की।
वर्तन–न० विवृत्तस्य वर्तुलीकरणं।
वर्ताकु–पु० वृन्ताक। भांटा।
वर्तिचटक–पु० बगेरापक्षी।
वर्तिक } –पु० पक्षिविशेष। बेगेरा. बवर्तीक } टेर. पंडुकी।
वर्तुल–पु० कलाय। मटर।
वर्तुलातुम्बी–स्त्री० गृहतुम्बी। लौकी।
वर्तुली–स्त्री० जलपिप्पली। जलपीपरि
वर्द्धन–पु० हवालगने से मसूढ़े में बड़ा दर्द हो।
वर्द्धमान–पु० श्वेतएरण्ड। सुपेद एरण्डा
वर्म्मि–पु० मत्स्यविशेष। मच्छली।
वर्व्वट–पु० राजमाष (स्त्री) (टा) व्रीहिविशेष। पहाड़ी उरद. खासधान।
वर्व्वणा–स्त्री० नीलमक्षिका। स्याह मक्खी
वर्व्वर–न० हिङ्गुल पीतचन्दन (पु) केश. वृक्षविशेष(स्त्री)(रा) पुष्पविशेष. शाकविशेष. मक्षिकाविशेष. क्षुद्रवृक्षविशेष. इंगुरु. जर्द्दसन्दल. वाल. ववई. वरैया।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वर्बरी, वर्बरा — स्त्री० क्षुद्रवृक्षविशेष । न्य जबू. बवई ।

वर्व्वि—पु० घस्मर । भक्षक पेट ।

वर्षवर—पु० षण्ड । हिजड़ा ।

वर्षाभू—पु० भेक (स्त्री) भेकी पुनर्नवा । मेढ़क. मेढ़की. गदापुरैना बूंट ।

वर्षामद (मोद) —पु० मयूर । मोर ।

वर्षोपल—पु० करका । ओला. पत्थर ।

वर्ष्मन्—न० देह । जिस्म ।

वर्ह—न० मयूरपुच्छ. अग्नि । मोर. आगि

वर्हण—न० पत्र । पत्ता ।

वर्हिस्—पु० अग्नि. चित्रकवृक्ष (पु०न०) कुशतृण (न) ग्रन्थिपर्ण । आग. चित्रा का दरखत. कुसघास. गठिवन ।

वर्हिशुष्मन्—पु० अग्नि । आग ।

वर्हिण—न० तगर । तगर ।

वर्हिवर्ह—न० स्थौलेय । स्थौणेयघने ।

वर्हिष्ट—पु० वालक । सुगंध वाला ।

वलय—पु० रोगविशेष । गले की बीमारी

वला(स)—पु० श्लेष्मा । कफ ।

वला—स्त्री० नागदमनी । वरिआरी ।

वलाचतुष्टय—न० (वला. अतिवला. नागवला. सहदेवी) । वरिआरी. ककई. गुरशंकरी. सहदेयी ।

वलासक—पु० कोकिल. भेक । कोइल. मेढक ।

वलाह—न० वारि । पानी ।

वलाहक—पु० मेघ. मुस्तक । वादल. नागरमोथा ।

वलि—न० गन्धक ।

वल्क—पु० लोध्र । पठानी लोध ।

वल्गु—पु० छाग । वकरा ।

वल्गुक—न० चन्दन । सन्दल ।

वल्वल—पु० तृणविशेष ।

वल्मि(ल्मी) क (कि)—पु० वामलूर । वैंबउरि ।

वल्ल—पु०गुञ्जत्रयपरिमाण । तीनरत्ती भर

वल्लक—पु० भटवांसु (स्त्री) सालई ।

वल्लर—न० कृष्णागरु (स्त्री)(रि) चित्रमूललता । स्याह अगर. चीता ।

वल्या—स्त्री० धात्रीवृक्ष । आमले का दरखत ।

वशिका—स्त्री० अगरु । अगर ।

वशिर—न० सामुद्रलवण (पु) गजपिप्पली अपामार्ग. वचा । समुन्दरी निमक. गजपीपली. लटजीरा. वच ।

वश्य—न० लवङ्ग । लौंग ।

वसन्त—पु० अतिसार. ऋतुविशेष. रोगविशेष । दस्तहाल. वसन्त ऋतु चैत्र और वैशाख को कहते हैं शीतला की बीमारी ।

वसन्ततेत—पु० आम्रवृक्ष. कोकिल. (स्त्री) (ती) माधवीलता. पिकी । आम का पेड़. कोइल. माधवी वेल. कइली ।

वसा—स्त्री० मांसोद्भवधातुविशेष । चरबी

वसिर—न० सामुद्रलवण. गजपिप्पली । सामुन्दरी निमक. गजपिपरि ।

वसिरा—स्त्री० रक्तापामार्ग । सुर्खलटजीरा

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वसु–न० रत्न. धन. वृद्ध्योषधि. जल (पु) वकुलवृक्ष. अनल । रत्न. जवाहर. वृद्धिदवाई. पानी. बड़ी मौलसिरी. आग ।

वसुक–पु० न० श्वेतार्कवृक्ष. (न) साम्भरी लवण. पांशव. वास्तूक(पु) शिवमल्ली. पुष्पविशेष । सुपेद मदार. साम्भरनिमक. खारीनिमक. वथुई का साग. खास फूल ।

वसुच्छिद्रा–स्त्री० महामेदौषधि । महामेदा बूटी ।

वसुधा, वसुन्धरा, वसुमती – स्त्री० पृथिवी । ज़मीन ।

वस्य–छाग(न) गृह । बकरा. घर ।

वस्त–पु० छाग । बकरा ।

वस्तक–न० कृत्रिमलवण । बनावटी निमक ।

वस्ति–पु० स्त्री० नाभेरधोभागः । नाफ का निचला हिस्सा ।

वस्त्ररञ्जक–न० कुसुम्भ । कुसुम का पेड़ ।

वस्त्ररञ्जिनी–स्त्री० मञ्जिष्ठा । मज्जीठ ।

वहला–स्त्री० स्थूलैला । बड़ी इलायची ।

वहुलवल्कल–पु० प्रियालवृक्ष. भूर्ज्यपत्रवृक्ष । चिरौंजी का पेड़. भोजपत्ते का दरखत ।

वह्नि–पु० चित्रक. भल्लातक. निम्बक. अग्नि । चित्रा. भिलावा. नीम. आगि ।

वह्निगर्भ–पु० वंश(स्त्री)(र्भा) शमीवृक्ष । बांस. जड़ी अर्थात् छीकुरि का दरखत ।

वह्निनी–स्त्री० जटामांसी । जटामासी बूटी ।

वाः–न० जल । पानी ।

वाकुची–स्त्री० सोमराजी । बकुची का दरखत ।

वागुण–पु० वार्ताकु । बैंगुन. भांटा ।

वाचस्पतिवल्लभा–स्त्री० पुषराजरत्न ।

वाज–न० अन्न. जल. घृत । अनाज़. पानी. घी ।

वाजिदन्ता–स्त्री० वासक । रूसा. रुसाह

वाजिन्–पु० घोटक (स्त्री) अश्वगन्धा । घोड़ा. असगंध ।

वाजिन–न० आमिक्षानिःसृतजल । खिरणी से निकसा हुआ जल ।

वाजिभक्ष–पु० चणक । चना. लहिला बूंट ।

वाजीकरण–न० वीर्य्यवृद्धिकारकऔषधि । मनी को बढ़ाने वाली दवाई ।

वाजीकरणतन्त्र–न० येन नरः स्त्रीषु विषये वाजीव सामर्थ्यं प्राप्नोति तद्वाजीकरणम् । येनात्यर्थमुच्यज्यते स्त्रीषु तद्वाजीकरणं व्यञ्जनं वाजो वेगः प्रसरत्वात् शुक्रस्य स विद्यते येषां ते वाजिनः अवाजिनो वाजिनः क्रियन्तेऽनेनेति वाजीकरणम् । अन्ये तु वाजिशब्देन शुक्रमभिधीयते तेन शुक्ररहितस्य वाजि शुक्रं क्रियतेऽननेनेति वाजीकरणम् तदर्थं तन्त्रं वाजीकरणतन्त्रम् ।

वाटवा–स्त्री० वृक्षविशेष । बैडियाला–पौधा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वाटवाल(क)–पु० वृक्षविशेष(स्त्री)(ली)।

वाण–पु० गोस्तन. वह्नि. भद्रमुञ्ज। गाई के थन. आग. मूंज।

वातक–पु० असनपर्णी। जार।

वातघ्नी–स्त्री० शालपर्णी. अश्वगन्धावृक्ष। सरिवन. असगन्ध।

वातज्वर–पु० शरीर कांपे. ज्वर का वेग विषम हो. कण्ठ ओष्ठ और मुख सूखे. निद्रा न पड़े. छींक न आवे.गात्र रूखा रहे. शिर हृदय गात्र में पीड़ा रहे. मुंह फीका. कब्जियत रहे पेट में गुड़२ बोले जम्भायी आवें।

वातपित्तज्वर–पु० जृंभा. आध्मान.कम्प. पर्वभेद. तृट्प्रलाप. अभिताप।

वातपित्तकफज्वर–पु० सर्वज्वर। सान्निपातिकज्वर। जिसमें निद्रा नाश.भ्रम. प्रवास. तन्द्रा,सुप्तांगता. अरुचि. तृष्णा. मोह. मद. स्तम्भ. दाह. शीत. हृदिव्यथा. उन्माद. श्यावदन्तता. रसनापरुषाकृष्णा. सन्धिमूर्द्धास्थिजा रुजः. निर्भुग्ने कलुषे नेत्रे.कर्णौ शब्दरुगन्वितौ प्रलापः. स्रोतसां पाकः. कूजनं. चेतनाच्युतिः. स्वेदमूत्रपुरीषाणामल्पशः।

वातश्लेष्मज्वर–पु० शूल. काश. कफोत्क्लेश. शीत वेपथु. पीनस। गौरव. अरुचि विष्टंभ।

वातपोथ–पु०पलाशवृक्ष। पलाशका पेड़।

वातवैरी–स्त्री० बादाम।

वातरक्त–पु०रोगभेद। गठिया की बीमारी

वातरायण–पु० करपत्र. सरलद्रुम। आरा. शाल का पेड़।

वातश्लेष्महरा–स्त्री० हड़.संघार का वृक्ष

वातहर–पु० पलाशवृक्ष। पलाश का दरखत।

वाताद–पु० फलवृक्षविशेष। बदाम का दरखत।

वातामोदा–स्त्री० कस्तूरिका। कस्तूरी।

वातायु–पु० हरिण। हन्ना. हरना।

वातारि–पु० एरण्डवृक्ष. शतमूली. सेफालिका. यवानी. भार्गि. स्नुहि. विडंग. शूरण. भल्लातक. जतुका। एरंड. महाछतावरि. सम्भालू का पेड़. अजवाइन. भारंगी. सेहुण्ड. वायविडंग. सूरन. भेलावा. लाख।

वातौष्ठरोग–पु० वायुसंबन्धीओष्ठरोग।

वात–पु० वायु। हवा।

वातिङ्गण–पु० वार्ताकु। बैंगन।

वातीय–न० काञ्जिक। कांजी।

वादर–न० कर्पास(स्त्री)(रा) कार्प्पासी। कपास।

वाट्या
वाट्यालका
वाट्यालिका } स्त्री० वरियारी।

वानर–पु० कपि(स्त्री) (री) शूकशिम्बी. वानरयोषित्। बन्दर.भटंवासु.बन्दरी. किमांच. सिंगी।

वानप्रस्था–स्त्री० वनमधूकवृक्ष। वनमोहा का दरखत।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वानीर पु० वेतसवृक्ष वञ्जुलवृक्ष । वेत. मौलसिरी. अशोक ।

वानेय–न० कैवर्तीमुस्तक । कवर्ती मोथा. नागरमोथा ।

वापीह–पु० चातक । पपीहा ।

वाप्य–न० कुष्ठौषधि । कुट्. कूट ।

वाप्यजल–न० बृहत्कूपोद्भवजल । बावड़ी का पानी ।

वामन–पु० अङ्कोटवृक्ष । अंकोहर का दरखत ।

वामलूर–पु० वल्मीक । वल्मी. वेवंडरि ।

वामाचार–पु० पीलुवृक्ष । पीलू का दरखत ।

वामी–स्त्री० अश्वी. शृगाली. रासभी । घोड़ी. सिआरि. गधी ।

वायस–त्रि० काक. अगरुवृक्ष. श्रीवासवृक्ष । कौव्वा. अगर. संदल. सुपेद चन्दन ।

वायसी–स्त्री० कञ्जिका. काकमाची । कंजी केवैया का पौधा ।

वायसोली–स्त्री० काकोली ओषधि ।

वायु–पु० अदृश्यमूर्ति प्रकटक्रिय, खरस्पर्श, तिर्य्यग्गामी, शीतस्पर्शगुण, रजोबहुल ।

वायुनुत्–स्त्री० मेथिका । मेथी ।

वायुवाह–पु० धूम । धूंआं ।

वायुसख–पु० अग्नि । आग ।

वार्–न० जल । पानी ।

वारङ्ग–न० ग्रहणस्थल । पकड़ने की जगह ।

वारण–पु० गज (स्त्री) (णा) कदली । हाथी. केला ।

वारणमूल–न० उशीर । खस ।

वारणबुषा (सा) } स्त्री० कदली ।
वारणवल्लभा } केला ।

वाराह–पु० महापिण्डीतकवृक्ष । बड़ा मयनफल का दरखत ।

वाराहवदना–स्त्री० विदारीकन्द । बिलारीकन्द ।

वाराहाङ्गी–स्त्री० लघुदन्ती । छोटीदन्ति ।

वाराहीकन्द–पु० क्षीरविदारी । विदारीकन्द. गेठ़ि ।

वारि–न० जल. ह्रीवेर । पानी. सुगन्धवाला ।

वारिकण्टक–न० पु० शृङ्गाटक । सिंघाड़ा ।

वारिज–न० पद्म. लवङ्ग. (पु) शङ्ख. शम्बुक । कमलफूल. लौंग. शंख. घोंघा

वारिद–न० मेघ. मुस्तक । बादल. नागरमोथा ।

वारिदनामक–न० मुस्तक । नागरमोथा ।

वारिपर्णी–स्त्री० जलकुम्भी । सेवार ।

वारिबदरा–स्त्री० प्राचीनामलक ।

वारिरुह–पु० पद्म । कमल ।

वारिवर–न० करमर्द्दक । चकवड़ ।

वारुण–पु० वरुणवृक्ष । (स्त्री) (णी) इन्द्रवारुणी. सन्धानभेद । वरुण का पेड़. इन्द्रोरणि. ताड़ी

वार्तक–पु० वार्ताकु । बैंगनी भांटा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वार्ताकी–स्त्री० बृहती । बरहंटा. बड़ी भटकटैया ।

वार्ट्टर–न० दक्षिणावर्तशंख. बीज. काकचिञ्चा शाक. भारती. कृमिज. जल. आम्रबीज । दहिनावर्ती शंख. बीज. केवैंआ का शाक. घुंघची. रत्ती. सरस्वती. रेशम. पानी. आम की गुठली।

वार्ध्रीणस–पु० खड्गपशु. पक्षिविशेष । गैंड़ा. खासपरिंदः ।

वार्श्वटीर–पु० त्रपु. आम्रास्थि. अङ्कुर । टीन. आम की गुठली. अंकूर. अंगूर ।

वार्हत–न० बृहतीफल । बड़ी भटकटैया का फल ।

वालीक–पु० वगेरापक्षी ।

वाशी–स्त्री० वंशलोचन । तवाशीर ।

वाष्प (स्प)–पु० ऊष्मा. लोह. अश्रु । भाफ. आंसू. लोहा ।

वाष्पक–पु० मरूमाशाक । मरसा का शाक ।

वास } –पु० रूसक । रूसा रूसाह ।
वासक }

वासत–पु० गर्द्दभ । गधा. खर ।

वासन्त–पु० उष्ट्र. कोकिल (स्त्री) (न्ती) माधवीलता । ऊंट. कोइल. वेला की वेल ।

वासपुष्पा–स्त्री० चन्द्रसूर । चंदसुर ।

वासा } स्त्री० वासकवृक्ष ।
वासिका } रूसा. रूसाह ।

वासिष्ठ–न० रुधिर । खून. वसिष्ठक ।

वास्तु (क)–न० वास्तूकशाक । बथुई का शाक ।

वास्तुकाकारा–स्त्री० पालक्यशाक । पलाकी का साग. पालक का शाक ।

वास्प(ष्प)–पु० ऊष्मा. लोह. अश्रु । गर्मी. भाफ. आंसू. लोहा ।

वाह–पु० अश्व परिमाणभेद, घोड़ा । १।)१≡। या ४०७६ तोले ।

वाहस–पु० अजगरसर्प । अजदहासांप ।

वाहु–पु० भुज. रेखाभेद । वाजू. खत ।

वाहुवारक–पु० वहुआर ।

वाहुमूल–न० कक्ष । कांख ।

वाल्हि (ल्ही) क–न० कुङ्कुम. हिङ्गु । केशरि. हींग ।

वाल्हिका–स्त्री० मत्स्याक्षी. मछेछी ।

वि–पु० विहग । पक्षी ।

विकङ्कत–पु० कण्टाईवृक्ष ।

विचक–त्रि० केशशून्य । गञ्जा ।

विकट–पु० विस्फोटक । फोड़ा

विकण्टक–पु० यवासवृक्ष । जवासा का पौधा ।

विकन्तक–पु० कण्टाईवृक्ष ।

विकर्त्तन–पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफताव. आकका पेड़ ।

विकषा–स्त्री० मञ्जिष्ठा । मञ्जीठ ।

विकर्षण–न० विगृह्याकर्षण । पकड़ के खींचना ।

विकार–पु० रोग. मत्स्य । बीमारी. मछली ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

विकिर—पु० विहग. कुशतृण । पक्षि. कुशाघास ।

विकिरण—पु० अर्कवृक्ष । आकका पेड़ ।

विकीरण—पु० रक्तार्क । सुर्ख आक का पेड़ ।

विक्षीरिणी—स्त्री० दुग्धिका । दूधी. दुधियाबूटी ।

विग्रह—पु० देह । जिस्म।

विघस—पु० आहार (न) सिक्थक । खुराक. मोम ।

विघ्न—पु० कृष्णपाकफला । करौंदा का पेड़ ।

विचक्षणा—स्त्री० नागदन्ती । खासलता ।

विचित्र—पु० भूर्जपत्र । भोजपत्ता ।

विजया—स्त्री० मञ्जिष्ठा. शमी. अग्निमन्थ. भङ्गा । मंजीठ. छीकुरि. रणि. भांग ।

विट—पु० लवणभेद. खदिरभेद. नारङ्गवृक्ष. मूषिक । खारनिमक. खैरादरखत. रियां का पेड़. नारङ्गी का पेड़. मूसा ।

विटखदिर—पु० दुर्गन्धखदिर । रियां का पेड़ ।

विटि (टी)—स्त्री० पीतचन्दन । जर्द सन्दल ।

विड—न० सौवर्चललवण । सोंचरनिमक ।

विडंग—पु० न० वायुभृङ्ग । वायविडंग ।

विडाल—पु० मार्जार. नेत्राञ्जनविशेष. नेत्रडिम्ब (स्त्री) (ली) विदारीकन्द. (न) हरताल । विल्ली. सुरमा. आंख का डेला. विलारीकंद. हड़ताल ।

विडुल—पु० वेतसवृक्ष । वेत का पेड़ ।

विड्वराह—पु० ग्राम्यशूकर । गांव का सुअर ।

वितुन्नक—न० धन्याक. मुस्ताकृतिशुकाभतृणविशेष. तुत्थक । धनिया. सोथाघास तूतिया. नीलाथोथा ।

विदिल—न० द्विधाभूतदाडिम. (पु) त्रिवृत । फटाअनार. तेवड़ी. निशोथ ।

विदारण—पु० कर्णिकारवृक्ष । कनयर का पेड़. अमिलतास का पेड़ ।

विदारी—स्त्री० विदारीकन्द । विलारीकंद ।

विदारीगन्धा—स्त्री० शालिपर्णी । शरिवनवृक्ष ।

विदुल—पु० वेतस. (स्त्री)(ला) शातला । वेत का पेड़. पीले फूल के सुहुण्ड की जड़ ।

विदूरज—न० वैडूर्य्यमणि । नीलम ।

विद्रुम—पु० प्रवालरत्न. पल्लव । मूंगा का पेड़ नये किल्ले ।

विद्रुमलता—स्त्री० नलिका । पवारी ।

विध—पु० चन्द्र. कर्प्पूर. वायु । चांद. काफूर. हवा ।

विनमन—न० निम्नीकरण । नीचाकरना।

विनीत—पु० मदनवृक्ष । दवना का पेड़ ।

विन्दुपत्र—पु० भूर्जपत्र । भोजपत्ता ।

विपर्णक—पु० पलाशवृक्ष । पलास का दरखत ।

विपुलास्रवा—स्त्री० घृतकुमारीवृक्ष । घीकुवार ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

विफला—स्त्री० केतकी । केवड़ा का पौधा ।

विबन्ध—पु० रोगभेद । कब्जियतकी बिमारी ।

विभाकर—पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफताब. आक का पेड़ ।

विभावरी—स्त्री० रात्रि. हरिद्रा । शब. हल्दी ।

विभावसु—पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष. वह्नि. चित्रकवृक्ष । आफताब. आक का पेड़ । आग. चीता. चित्रा का दरखत ।

विभीतक—पु० भूतवासवृक्ष । बहेड़े का दरखत ।

विभीषण—पु० जलतृण । नरई ।

विमर्द्द—पु० वृक्षविशेष ।

विमला—स्त्री० शातला । पीले फूल के सेहुंड़ की जड़ ।

विमान—पु० अश्व । घोड़ा ।

विमुक्ता—स्त्री० माधवीलता । बेला की बेल ।

विम्बट—पु० सर्षप । सरसों का पौधा ।

विम्बिका } स्त्री० विम्बाफलवल्ली ।
विम्बी } कुंदुरू की बेल ।

वियोगिन्—पु० चक्रवाकपक्षी । चकवा परिन्दह ।

विरजा—स्त्री० दूर्वा । दूब घास ।

विरण—न० उशीर । खस ।

विराल—पु० विडाल । बिल्ली ।

विरेचन—न० रेचन (पु०) पीलुवृक्ष । जुलाब. पीलू का पेड़ ।

विरोचन—पु० सूर्य्य. चन्द्र. अर्कवृक्ष । आफताब. चांद. आक का पेड़ ।

विल—न० घोटकोत्तम (पु) वेतस वस्त्रः घोड़ा. बेद ।

विलसा—स्त्री० श्वेतवला । सीसाकबूटी. सुपेद बरियारी ।

विल(ले)शय—पु० सर्प्प. मूषिक. गोधा । सांप. मूसा. गोह ।

विलेपनी—स्त्री० यवागू । जव की मांड़ ।

विलेप्य—पु० यवागू । मांड ।

विलोचन न० नेत्र । आंख ।

विलोडित—न० तक्र । छाछ ।

विल्व—पु० श्रीफलवृक्ष (न) परिमाण । नारियल का दरखत. पैमाना. बेलका दरखत ।

विल्वकर्कटी } स्त्री० आमविल्वफल ।
विल्वपेशिका } कच्चा बेल का फल ।

विवरण—प्रकाशन । प्रकाश करना ।

विवर्त्तन—न० कर्णवायोः निष्काशयितुमिष्टस्य कर्णलग्नस्य पुनर्निवर्त्तनम् ।

विवस्वत्—पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफताब. आक का पेड़ ।

विश—पु० कमलनाल । कमल की नाली ।

विशप्रसून—न० कमल । कमल का फूल ।

विशल्या—स्त्री० गुडूची. लाङ्गली. लघुदन्ती । गुरच. करियारी. छोटीदन्ती ।

विशाखा—स्त्री० कठिल्लक । करेला की बेल ।

विशारद—पु० वकुलवृक्ष. क्षुद्रदुरालभा । मौलसिरी का पेड़. जवासा का पौधा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

विशाल–पु० मृगभेद (स्त्री) (ला) इन्द्रवारुणी । हरिण. इन्दोरणिकी बेल ।

विशालत्वक्–पु० छतिवन ।

विशालाक्षी–स्त्री० नागदन्ती ।

विशोक–पु० अशोकवृक्ष । अशोक का पेड़

विशोधिनी–स्त्री० नागदन्ती ।

विश्व–न० जगत. शुंठी. अतिविषा (स्त्री) (श्वा) शुंठी. अतिविषा । दुनिया. सोंठि. अतीश ।

विश्व(ष्व)क्सेना–स्त्री० प्रियङ्गुवृक्ष । मेहदी ।

विश्वदेवा–स्त्री० गोरखकर्कटी । विश्वभेषज–न० शुंठी । सोंठि ।

विष्–स्त्री० विष्ठा । गूह ।

विष–न० जल. पद्मकेशर. मृणाल. (पु०न०) गरलमन्त्र. यथाः–वत्सनाभ. हारिद्र. सक्तुक. प्रदीपन. सौराष्ट्रिक. शृङ्गिक. कालकूट. हालहल ।

विषकण्टकिनी–स्त्री० वन्ध्याकर्क्कोटकी । बांझखेखसा ।

विषघातिन्–पु० शिरीषवृक्ष । शरीह का दरखत. सिरसा का पेड़ ।

विषघ्न–पु० शिरीषवृक्ष. यवास. विभीतक. चम्पक. हिलमोचिका. इन्द्रवारुणी. वर्वरा. भूम्यामलकी. रक्तपुनर्नवा. हरिद्रा. तण्डुलीय (त्रि) विषनाशक । सिरसा का पेड़. जवासा. वहेरा. चम्पा की वेल. हुरहुर. इन्दोरनि. ववई. भूआमला. सुरख गदापुरैना. हल्दी. चवराई. जहरनाश करने वाली

विषघ्नी–स्त्री० ह्रीवेर. देवदाली । हाऊबेर. वंदाल. सोनैया ।

विषज्वर–पु० महिष । भैंसा ।

विषण्ड–न० मृणाल । कमलफूल की डंडी. भिस ।

विषतिन्दुक–पु० कुपील । मकरतेंदू. कोचिला का दरखत ।

विषद–न० पुष्पकाशीश । हीराकशीश ।

विषदन्तक } पु० सर्प्प । सांप ।
विषधर }

विषनाशिनी–स्त्री० रास्नाभेद । नाईबूटी ।

विषपुष्पक–न० पु० मदनफल । मयनफल

विषमच्छद–पु० विशालत्वक् । तपेदिक्क.

विषमा–स्त्री० क्षुद्रकोलि । झरवेरिया ।

विषमुष्टिका–स्त्री० महानिम्ब । वकायन का दरखत ।

विषा–स्त्री० अतिविषा । अतीश ।

विषाण–न० पशुशृङ्ग. हस्तिदन्त. वराहकन्द. ऋषभकौषध । सींग. हाथीदान्त. वाराहीकंद. ऋषभबूटी. (स्त्री) (णी) मेषशृंगी । मेढ़ासिंगी ।

विषापहा–स्त्री० नागदमनी ।

विषाराति–पु० कृष्णधूस्तर । स्याह धत्तूरा

विषास्य–पु० सर्प्प. भल्लातक । सांप. भेलांवा ।

विष्किर–पु० विहग । परिंदह ।

विष्ठा–स्त्री० पुरीष । गूह ।

विष्णुक्रान्ता–स्त्री० अपराजिता । श्वेत

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तथा रक्त फूलवाली विष्णुक्रान्ता की वेल ।

विष्वक्सेना–स्त्री० प्रियङ्गूसुगन्धितबूटी महदी के बीज ।

विस–न० मृणाल । कमलफूल की डंडी ।

विसकुसुम–पु० पद्म । कमलफूल ।

विसङ्कट–इङ्गुदीवृक्ष । हिङ्गोट का दरखत

विसार } पु० मत्स्य । मच्छली ।
विसारिन् }

विसूचिका–स्त्री० रोगविशेष । हैजा ।

विस्त–पु० न० स्वर्ण. कर्ष । सोना. अस्सी रत्तीभर ।

विस्फोट(क)–पु० स्फोटविशेष । फोड़ा. फुनसी. चेचक. दुम्बल ।

विस्रगन्धा–स्त्री० त्रपुषा. ह्रीवेर । लाख. हाहुबेर. सुगन्धवाला ।

विस्रगन्धि–पु० हरिताल । हड़ताल ।

विस्रा–स्त्री० लघुमूलिका । छोटी सूली ।

विहग } पु० पक्षी मेघ. चन्द्र. सूर्य्य ।
विहङ्गम } " "

विहार–पु० स्कन्ध । कन्धा ।

वीङ्गा–स्त्री० शूकशिम्बी. कपिकच्छूलता भटवांसु. किमाच की वेलि ।

वीजक–पु० असनवृक्ष । विजैसार ।

वीजगर्भ पु० पटोलवल्ली । परवरकी बेल ।

वीजन–न० व्यजन. चामर । पंखा. चौरी । चँवर ।

वीजपूर–पु० जम्बीरभेद । विजौरानिम्बू

वीजफलक–पु० जम्बीर । जम्भीरीनिम्बू

वीतशोक–पु० अशोकवृक्ष (त्रि) शोकरहित । अशोकदरखत. वेग़म ।

वीतिहोत्र–पु० अग्नि. अनल. सूर्य्य । आतिश. हवा. आफताब ।

वीर–न० मरिच. पद्ममूल. काञ्जिक. उसीर (पु०) अर्जुनवृक्ष. (स्त्री०) (रा) श्रृङ्गी. सुरानाम. काकोली. आमलकी. रम्भा. विदारी. दुग्धिका । स्याहमिरच. भसेंड़. कांजी. खस्स. अर्जुनहरा. काकरासिंघी. मदिरा. काकोलीबूटी. आंमला. केला. बिलारीकन्द. दूधिया ।

वीरण–न० उशीर । खस्स ।

वीरतरु–पु० उशीर. वरवेल । खस्स. वरवेल ।

वीरपत्रा–स्त्री० विजया । भंग ।

वीररजस–न० सिन्दूर । सेन्दुर ।

वीरवती–स्त्री० रोहिणी औषधि ।

वीरवृक्ष–पु० भल्लातक. अर्जुनवृक्ष । भेलांवा. अर्जुनहरा ।

वीरसेन–पु० अरुपिडारुकन्द ।

वीर्य्य–न० देहस्थ चरमधातु । नुत्फा. वीर्य्य ।

वुक–पु० बृहन्नीलशिरीवृक्ष । बड़ी नीलसिरी का दरखत ।

वृक–पु० हिंस्रकपशुविशेष । भेड़िया ।

वृकदंश–पु० कुक्कुर । कुत्ता ।

वृकधूर्त पु० शृगाल । गीदड़. सियार ।

वृक्षधूप–पु० सालद्रुम । तारपीनवृक्ष ।

वृक्षधूपक–पु० सालनिर्य्यास । गुग्गुलु ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वृक्षनाथ } पु० वटवृक्ष । वर का पेड़ ।
वृक्षपाक } "
वृक्षभक्ष्या—स्त्री० वन्दा । बान्दा ।
वृक्षमर्कटिका—स्त्री० वनविड़ाल । रूखी. वनविलार ।
वृक्षमार्जार—पु० वनविड़ाल । रूखी. वनविलार ।
वृक्षरुहा } स्त्री० वन्दा । बान्दा ।
वृक्षादनी }
वृक्षामय न०—लाक्षा । लाख ।
वृक्षाम्ल—न० विषाम्ल । विषामिल ।
वृजन—पु० केश । बाल ।
वृतकोश—पु० देवदालीलता । बन्दाल. सौनैश्रा ।
वृतपुष्प—न०पु० कदम्बवृक्ष । कदमका पेड़
वृतफला—स्त्री० रक्तापामार्ग । सुरखलटजीरा ।
वृत्ता—स्त्री० रोहिणी ।
वृद्ध—न० शैलज नाम गन्धद्रव्य. (पु) वृक्षविशेष । शिलाजीत. छरीला. भूर ।
वृद्धदारुक—पु० विधारावृक्ष विधारा का पौधा ।
वृन्ताक—न० वार्ताकु । बैंगन. भांटा ।
वृष—पु० वासा । रूसाह. बैल ।
वृषकेतु—स्त्री० पु० रक्तपुनर्नवा । लालगदापुरैना ।
वृषभ—पु० ऋषभौषध. वृष । ऋषभबूटी. बैल ।
वृषा—स्त्री० गो । गाय ।
वृष्या—स्त्री० कपिकच्छू । किमाचबेल ।
वृहज्जीरक—पु० कालम्बी । कलौंजी ।
वृहत्पत्र—पु० लोध्र । पठानीलोध ।
वृहत्पञ्चमूल—न० यथाः—बेल १. खम्भारि २. पाडरि ३. रणि ४. पाढ़ा ५ ।
वृहत्पुष्प—पु० कुब्जक । कूजाफूल का वृक्ष।
वृहती—स्त्री० कण्टकारीद्वय । बड़ी और छोटी भटकटैया ।
वृहदेलिका स्त्री० स्थूलैला । बड़ी इलायची ।
वृहल्लोणी—स्त्री० वृहल्लोणिका । बड़ी लोनी ।
वेणी—स्त्री० देवदाली । सौनैश्रा. बन्दाल
वेणु—न० वंशतृण । बांस
वेणुपत्री—स्त्री० वंशपत्री । बांसपाती ।
वेण्ड—पु० वंश । बांस ।
वेखडन—न०कटुरसयुक्तद्रव्यविशेष. मिरच । स्याहमिरच ।
वेतस्—पु० वेत्र । वेत का दरखत ।
वेतस—पु० लताविशेष । बांस ।
वेत्र—पु० स्वनामख्यातवृक्ष । वेत ।
वेदण्ड—पु० हस्ती । हाथी ।
वेदना—स्त्री० चर्म्म । चमड़ा ।
वेदि—न० अम्बष्ठा केवैया. पाढा. जूही ।
वेदोदय—पु० सूर्य्य ।
वेधक—न० धन्याक(पु)कर्पूर. अम्लवेतस । धनियां. काफूर. अमिलवेत ।
वेधमुख्य—पु० कर्चूर (स्त्री) (यथा) कस्तूरिका । कचूर. कस्तूरी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वेधस–न० ब्रह्मतीर्थ । अंगुष्ठे का मूल ।
वेधस्–पु० श्वेतार्कवृक्ष । सुपेद आक का पेड़ ।
वेधिद्रु–पु० अश्वत्थवृक्ष । पिप्पल का पेड़
वेर–न० शरीर. वार्ताकु. कुङ्कुम । जिस्म. वेंगन. केशरि ।
वेरक–न- कर्पूर । काफूर ।
वेल–न० श्रीफल. विल्ववृक्ष । नारियल. वेल का पेड़ ।
वेल्ल–न० कृमिघ्न । वायविडंग ।
वेल्लन–न० रोटिकानिर्माणार्थस्थूलवर्तुल यन्त्र । वेलन ।
वेशन–न० गृह. मुद्गादिचूर्ण । मकान. मूंगवगैरः का आटा ।
वेशनवटिका–स्त्री० मुद्गादिचूर्णनिर्मित-वटिका । पकौरी. फुलौरी ।
वेश्यकलिङ्ग–पु० चटक । चिड़िया ।
वेष्ट–पु० निर्य्यास । गोंद ।
वेष्टक–न० निर्य्यासश्रीवेष्ट(पु)कूष्माण्ड । गूंद. तारपीन. पेठा. कुह्मड़ा ।
वेष्टन–न० कर्णशष्कुली. गुग्गुलु । कान का सुराख. गूगल ।
वेसवार–पु० उपस्कर । गर्मसमाला ।
वैक्रान्त–न० मणिविशेष गोनस. चुम्बक ।
वैजयन्तिका–स्त्री० जयन्ती का पौधा. रणि ।
वैडूर्य्य–न० रत्नविशेष । वैडूर्य्यरत्न. पन्ना ।
वैणव–न० वेणुफल(स्त्री)(वी)वंशलोचन । बांस का फल. तवाशीर ।
वैतस–पु० अम्लवेतसवृक्ष । अमिलवेद का पेड़ ।
वैदल–पु० शिम्बीधान्य । छीमी का अनाज ।
वैदूर्य–न० कृष्णपीतवर्णमणिविशेष । पन्ना
वैदेही–स्त्री० पिप्पली. रोचना. हरिद्रा । पीपली. हल्दी ।
वैद्य–पु० वासकवृक्ष. आयुर्वेदवेत्ता(स्त्री) (द्या) काकोली । रुसाह. तबीब. काकोलीबूटी ।
वैधात्री–स्त्री० ब्राह्मी ओषधि । ब्राह्मी बूटी ।
वैराट–पु० इन्द्रगोपकीट । वीरवहूटी कीड़ा ।
वैल्व–न० विल्वफल । बेल का फल ।
वैश्रवण–पु० वटवृक्ष. कुवेरदेवता । वर का पेड़. कुवेर ।
वैश्रवण(लय)(वास)(णोदय)–पु० वट-वृक्ष । वर का पेड़ ।
वैश्वानर–पु० अग्नि. चित्रकवृक्ष । आतिश. आग ।
वैष्णवी–स्त्री० अपराजिता. तुलसी । विष्णुकान्तवेल. तुलशी ।
वैसारिण–पु० मत्स्य । मच्छली ।
वोड–पु० गुवाक । सुपारी ।
वोड्र–पु० गोनससर्प्प. मत्स्यविशेष । गोह सांप. खास मच्छली ।
वोद–त्रि० आर्द्रकृष्णवर्णतरलमृत्तिका । स्याह रंग की पतली मट्टी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वोदाल–पु० मत्स्यविशेष । एक खास मच्छली ।

वोधिनी–स्त्री० मेथिका । मेथी ।

वोरट–पु० कुन्दपुष्प । कुन्द फूल ।

वोल–पु० बोलौषधि ।

व्यङ्ग–पु० भेक. हीनाङ्ग. मुखरोगविशेष (स्त्री) (ङ्गा) किमाच वल्ली । मेढक. अंगहीन. मुंह की बीमारी. खजोहरा की बेल ।

व्यज(न)–पु० न० व्यजन । पंखा ।

व्यञ्जन–न० सूपशाकादि. चिन्ह. श्मश्रु. अवटाव. दिन. उपस्थ. । तरकारी दाल आदि. निशान. दाढ़ी. अंग केर लिंग ।

व्यवहारिका–स्त्री० लोकयात्रा. सम्मार्जनी इङ्गुदिवृक्ष । कारखाई. झाडू. हिंगोट का दरखत ।

व्यवाय–न० तेज.(पु)मैथुन । तेज. जिना ।

व्याघ्र–पु० जन्तुविशेष (स्त्री) (घ्री) एरण्डवृक्ष. करञ्जवल्ली । बाघ. एरण्डी का पेड. कञ्ज की बेल ।

व्याघ्रदल–पु० रक्तएरण्डवृक्ष । सुरख एरण्ड का दरखत ।

व्याघ्रनख–न० नखनखी । बघनखी सुगन्धद्रव्य ।

व्याघ्रपात्(द्)–पु० विकङ्कतवृक्ष । कटाई दरखत ।

व्याघ्रपुच्छ–पु० रक्तैरण्ड । सुरख एरण्ड का पेड़ ।

व्याघ्राट–पु० भरद्वाजपक्षी । चण्डूल ।

व्याघ्रायुध–न० नखनखी सुगन्धद्रव्य विघनखी खुशबूदार चीज़ ।

व्याघ्रास्य–पु० विडाल । बिल्ली ।

व्याघ्री–स्त्री० क्षुद्रबृहती. बृहती । छोटी भटकटैया बड़ी भटकटैया ।

व्याधाम–पु० वज्र । हीरा ।

व्याधि–पु० कुष्ठरोग. पुरुष दुःखसंयोग-व्याधयः । बीमारी. कोढ़ ।

व्याधिघात–पु० आरग्वधवृक्ष । अमिलतास का पेड़ ।

व्यान–पु० कृत्स्नदेहचरोव्यानः । संपूर्ण देह में फिरने वाला वायु. रससंवहनोद्यतः । सदुष्टः ज्वरातीसार रक्तपित्तप्रभृतीन् व्याधीन् कुरुते ।

व्याप्य–न० कुष्ठौषधि । कुष्ठ. कूट ।

व्यामपीर–न० रोहिषतृण । सींधिया. हरद्वारीकुश ।

व्याल–पु० सर्प. श्वापद. दुष्टगज. चित्रक. व्याघ्र । सांप. शिकार. खराब हाथी. चीता. बाघ ।

व्यालमृग–पु० चित्रव्याघ्र । चित्ताबाघ ।

व्यालम्ब–पु० रक्तैरण्ड । सुरख एरण्डी का पेड़ ।

व्यूहन–न० ऊर्द्ध्वीकरणं ।

व्योकार–पु० लोहकार । लोहार ।

व्योष–न० त्रिकटु. त्रिकुटा. आमला । (सोंठ मिरच. सुंठी. पिपली)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श

शंवर—न० जल । पानी ।

शकट—पु० न० द्विसहस्रपलपरिमाण. तिनिशवृक्ष । दो हज़ार पलभर वज़न. पसही का वृक्ष. तिरच्छ का पेड़ ।

शकुटाल—पु० दात्यूहपक्षी । पपीहा ।

शकलिन्—पु० मीन । मच्छी ।

शकुनाहृत—पु० ठंढ. कालीधान ।

शकुल—पु० मत्स्य । मछली ।

शकुलाक्षक—पु० गाण्डारि । दुबिआ ।

शक्कर(रि)—पु० वृष. खण्ड । बैल. चीनी ।

शक्तु—पु० न० भर्जितयवादिचूर्ण । सत्तू ।

शक्तुक—न० विषविशेष । खास जहर ।

शक्तुफला—स्त्री० शमीवृक्ष । छीकुरि का पेड़ ।

शक्र—पु० कुटजवृक्ष. अर्जुनवृक्ष । कुरैआ का पेड़. अर्जुन का पेड़ ।

शक्रपुष्पी—स्त्री० लाङ्गली । करियारी ।

शक्रशाखी—स्त्री० कुटजवृक्ष । कोरैआ का पेड़ ।

शङ्करी—स्त्री० मञ्जिष्ठा. शमी । मंजीठ. छीकुरि ।

शङ्कव—पु० साकुचमत्स्यविशेष ।

शङ्कित—पु० रोचकनामगन्धद्रव्य ।

शङ्कु—पु० मत्स्यविशेष. मेढ्र । खास मच्छली. लिंग ।

शङ्कुकर्ण—पु० गर्द्दभ । गधा ।

शङ्कुतरु—पु० शालवृक्ष । साल का पेड़ ।

शङ्कुला—स्त्री० उत्पलपत्रिका. पूगकर्तनी । कमल का पत्ता. सरौता ।

शंङ्कोच (चि)—पु० मत्स्यविशेष । खास मच्छली ।

शङ्ख—पु० न० समुद्रजातजीवविशेष. रत्नविशेष (पु) ललाटास्थि । शंख. खास-जवाहर. माथेपर की हड्डी ।

शङ्खधरा—स्त्री० हिलमोचिका । हिंचाशाग. हुरहुर ।

शङ्खनखी—स्त्री० क्षुद्रशंखी । छोटीशंखी ।

शङ्खपुष्पी—स्त्री० शंखाहूली । कौड्याला-बूटी ।

शङ्खालुक—न० शंङ्खारु । सखारुकन्द ।

शङ्खाह्वा—स्त्री० शंखपुष्पी । कौड्याला ।

शङ्खिनी—स्त्री० चोरपुष्पी. श्वेतपुन्नागवृक्ष. श्वेतवृन्दा. श्वेतचुक्रा । खासबूटी. सुपेदकमल. सुपेदवांदा. सुपेदचूक ।

शट—त्रि० अम्लरसविशेष. (स्त्री) (टा) जटा. केशर (स्त्री) (टी) कर्चूरौषधि । तुरश जायकह. जड़. फूल की तिरी. कचूरदवाई ।

शठ—न० तगरपुष्पवृक्ष. कुङ्कुम. लोह.(पु) धूस्तरवृक्ष । तगर का पेड़. केशर. लोहा. धतूरह का पौधा ।

शठी—स्त्री० गन्धपालाशी । गन्धपसारणि. गन्धपलाशी ।

शण—न० भङ्गा (पु) सणवृक्ष । भांग. सन का पौधा ।

शणपुष्पिका—स्त्री० आढकी । अरहरि ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शणपुष्पी–स्त्री० चहुली । यह बूटी सण के फूल के सदृश होती है ।
शण्डिल्य–पु० विल्ववृक्ष । वेल का पेड़ ।
शतकुन्द–पु०करवीरवृक्ष ।कनयरका पेड़ ।
शतकुम्भ–पु० श्वेतकरवीरवृक्ष (न) स्वर्ण (स्त्री) वृक्षविशेष. सुपेद कनयर का पेड़. सोना ।
शतखण्ड–न० स्वर्ण । सोना ।
शतघ्नी–स्त्री० वृश्चिक. कण्ठरोग । बिच्छू. गले की बीमारी ।
शतधा–स्त्री० दूर्वा । दूव ।
शतधामन्–पु० विष्णु । नारायण ।
शतपत्र–न० पद्म (पु) मयूर. सारसपक्षी (स्त्री) (त्रा) स्त्री (स्त्री) (त्री) सेवती पुष्प कमल. मोर. सारस. औरत. सेवतीगुलाब ।
शतपदी–स्त्री० कनकोल. शतावरी । कानखजूरा. छतावरी ।
शतपद्म–न० श्वेतकमल । सुपेद सौ दल का कमल ।
शतपर्वन्–पु० वंश. इक्षुविशेष (स्त्री) (र्वा) दूर्वा. वचा । बांस. पैंड़ा. दूब. वच ।
शतपर्वा–स्त्री० वंश (स्त्री) (र्वी) कालम्बीशाक । वांस. कलौंजी का साग ।
शतपर्विका–स्त्री० वच. नीलदूर्वा । वच. स्याहदूब ।
शतपुष्प–पु० गर्भ में परिपक्व होने वाला वार्षिकधान. (स्त्री) (ष्पा) शाकविशेष । सेढ़धान. सोये का साग ।
शतपोरक–पु०पौण्ड्रइक्षुक । मतिना ऊख ।
शतफली–स्त्री० वंश । बांस ।
शतवल्ली–स्त्री० नीलदूर्वा । नीलदूब ।
शतवीर्य्या–स्त्री० श्वेतदूर्वा. शतावरी । सुपेददूब. छतावरि ।
शतवेधि–स्त्री० अम्लवेत । अमिलवेत ।
शतवेधिनी–स्त्री० चुक्र । चूक ।
शतमूली–स्त्री० महाशतावरी । महाछतावरि ।
शतारुस्–न० कुष्ठविशेष । कोहड़ ।
शतावरी–स्त्री० शतवीर्य्या । शतावरि
शताह्वा–स्त्री० शतपुष्पा । सौंफ ।
शत्रि–पु० हस्ती । हाथी ।
शफ–न० गोखुर. वृक्षमूल । गायखुर. वेख ।
शफर–मत्स्यविशेष (स्त्री) (री) अमिलोणी । मछली. आंम्बिलोना ।
शमिर–पु० शमीवृक्ष । जंडी का पेड़. छीकुरि का पेड़ ।
शमी–स्त्री० शमीवृक्ष । जंडी का पेड़. छीकुरि का दरखत ।
शमीज, शमीधान्य } न० माषादिसस्य । उड़द वगैरह अनाज ।
शमीपत्रा–स्त्री० लज्जालुलता । लाजवन्ती का पौधा ।
शमीर–पु० शमी । छीकुरि का पेड़ ।
शम्पात–पु० आरग्वध वृक्ष । अमिलतास का पेड़ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शम्बर—पु० मत्स्यविशेष. लोध्रवृक्ष. अर्जुन वृक्ष. । मछली. पठानी लोध. अर्जुन हर्रे का पेड़ ।

शम्बु(क)—पु० जलजन्तुविशेष । घोंघा ।

शम्बूक—पु० स्त्री० जलजन्तुविशेष. शङ्ख. क्षुद्रशङ्ख (स्त्री) (का) जलशुक्ति । घोंघा. संख. संखी. सीपी ।

शर—न० जल. रामशर । पानी. रमसर ।

शरट—पु० कुसुम्भशाक. कृकलाश । कुसुम का साग. गिरगट ।

शरणी—स्त्री० प्रसारणी लता । गन्ध प-सारणी ।

शरत(द्)(दा)—स्त्री० ऋतु विशेष । मौ-सम खिज़ां ।

शरपुंखा—स्त्री० बाणपुङ्खावृक्ष । सरफोंका का पौधा ।

शरारि—पु० पक्षिविशेष । "सारी" चि-ड़िया ।

शराव—पु० न० मृत्पात्रविशेष. परिमाण विशेष । सरवा. ऽ॥ साढ़े छः छ-टांक तौल ।

शरीर—न० देह । जिस्म ।

शरीरावरण—न० चर्म्म । जिस्म का चमड़ा ।

शर्कर—पु० वालुका. शिलाखण्ड. (स्त्री) (रा) खण्ड । बालू. चीनी, कंकर. खांड ।

शर्करोदक—न० शरबत ।

शर्द्ध(न)—पु० अपानोत्सर्ग । वायु त्याग ।

शर्म्मेरा—स्त्री० दारुहरिद्रा । दारुहल्दी ।

शर्व्वर—न० कन्दर्प (स्त्री) (री) हरिद्रा । वीर्य्य. हल्दी ।

शलाका—स्त्री० शल्य. शारिका पक्षिणी. शल्लकी. शर. शूली. अस्थि. काण्डक. अङ्कुर । सलाई. मयना. स्याही का कांटा. तीर. नक्काश की कलम. हड्डी. कांटा ।

शलाकायन्त्र—न० अठाइस प्रकार के श-लाका यन्त्र ।

शल्क—न० खण्ड. वल्कल. मत्स्यत्वक् । टुकड़ा. छिलका. मछली का कांटा ।

शल्कलिन्—पु० मत्स्य । मछली ।

शल्मलि—पु० शाल्मलि वृक्ष (स्त्री)(ली) । सिम्बल का पेड़ ।

शल्य—न० अस्थि (पु) मदनवृक्ष. शलाका. विल्ववृक्ष. मत्स्य विशेष. (पु० न०) अस्त्र विशेष. शजारुपशु । हड्डी. मय-नफल. वेल का पेड़. खास मछली. बरछी. स्याही मछली ।

शल्यक—पु० मदनफल वृक्ष. शजारुपशु । मयनफल का पेड़. स्याही ।

शल्यतन्त्र—न० शल्याहरणप्रधानं तन्त्रं शल्यतन्त्रम् ।

शल्यपर्णी—स्त्री० मेदौषधि । मेदाओषधि ।

शल्ल—न० त्वक् (पु) भेक । छाल. मेंड़क ।

शल्लक—न० त्वक्. शोणवृक्ष (स्त्री) (की) सलइवृक्ष. जीवविशेष । छाल. सोना-दरखत. सलइ का पेड़. स्याहीजीव ।

शव—न० जल. पानी ।

शवर—पु० जल । पानी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शबल–पु० कर्बुरवर्ण. जल । चितकबरा. पानी ।

शरारिका–स्त्री० सीधु । शारी ।

शश(क)–पु० मृगविशेष.लोध्रवृक्ष । खर्गोश. पठानीलोध ।

शशघातक–पु०श्येनपक्षी । बाज.शशारि ।

शशधर–पु० चन्द्र.कर्पूर । चांद. काफूर ।

शशिप्रभ–न० नीलकमल. (स्त्री) (भा) कौमुदी । नीलोफर. चांदनी ।

शशिलेखा–स्त्री० चन्द्रकला. गुडूची. सोमराजी । गुरच. बाकुची ।

शष्कुल–पु० छिति. (स्त्री) (ली) कर्णछिद्र. मत्स्यविशेष. घृतपक्व रोटिका ।

शष्प–न० नीलदूर्वा । नीलदूब ।

श(स्य)ष्प–न० नूतनघास । नयाघास ।

शस्त्र, शस्त्रक – न० लोह । लोहा ।

शस्य–न० अन्न । अनाज ।

शस्यसम्बर–पु० शालवृक्ष । साखु का पेड़ ।

शाक–न० पत्रपुष्पादि. शिरीषवृक्ष. (स्त्री) (का) हरीतकी । सब्जी. शिरीस का दरखत. हरीड़ का पेड़ ।

शाकट–पु० श्लेष्मान्तक वृक्ष । बहुआर का पेड़. शेलु का पेड़ ।

शाकम्भरीय–न० अजमेराख्यदेशान्तर्गतसाम्भरनगरीयजलाशयोत्पन्नलवण । साम्भर निमक ।

शाकराट–पु० वास्तूक शाक । बथुई ।

शाकश्रेष्ठ-पु०जीवन्तीशाक । जिबाई साग ।

शाखोट–पु० पिशाचद्रुम । सिहोरे का पेड़ ।

शाण्डिल्य–पु० विल्ववृक्षविशेष । बेल का पेड़ ।

शातकुम्भ–न० स्वर्ण । सोना ।

शातला–स्त्री० चर्मकशा. पीतसेहुण्डमूल । चाबुक. पीला सेहुण्ड ।

शान–पु० शाण. कर्षपट्टिका. परिमाणविशेष. करपत्र । सन का कपड़ा. कसौटी. चार मासे. आरा. सान ।

शान्ता–स्त्री० शमीवृक्ष । छीकुरि का पेड़ ।

शापटिक–पु० मयूर । मोर ।

शाम्भव–न० देवदारुवृक्ष (पु) कर्पूर. गुग्गुलु । देवदारु का पेड़. काफूर गूगल ।

शार–पु० पवन (स्त्री) (री) भग । हवा. भग ।

शारद–न० श्वेतकमल. छतिवन । सुपेद कमल. छतवन ।

शारिका–स्त्री० पक्षिणीविशेष । मयना चिड़िया ।

शारिवा–स्त्री० श्यामालता । दुधजरु की बेल ।

शारीरा–पु० वातादिवैषम्यनिमित्ता ।

शार्क–पु० शर्करा । चीनी. खाण्ड ।

शार्कक(र)–पु० दुग्धफेन. शर्करापिण्ड । दूध की झाग. चीनी वा मिसरि का ढेला ।

शार्ङ्ग–न० आर्द्रक । अदरक ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शार्दूल—पु० चित्रकवृक्ष । चीता का पेड़
शाल—पु० मत्स्यविशेष. वृक्षविशेष । खास मच्छली. साखु का पेड़ ।
शालनिर्य्यास—पु० सर्ज्जरस । राल ।
शालपर्णिका—स्त्री० मुरा । मुरहरी ।
शालपर्णी—स्त्री० वृक्षविशेष । सरिवन ।
शालमर्कटक—न० क्षुद्रमूली । छोटीमूली
शाल्मलनिर्य्यास—पु० मोचरस । मोचारस
शाल्मली—स्त्री० सिम्बलवृक्ष । सेमरे का पेड़ ।
शाल्मलीपुष्प—न० सिम्बालपुष्प । सेमरे का फूल ।
शाल्मलीवेष्टक—पु० शाल्मलीनिर्य्यास । सिमरे का गोंद ।
शालाक्य—न० शलाकायाः. कर्मशालाक्यमेतत् प्रधानं तन्त्रमपि शालाक्यम् ।
शालावृक—पु० वानर. कुक्कुर. शृगाल. मृग. विडाल. । वानर. कुत्ता. गीदड़ हरिण. बिल्ली ।
शालामुख—पु० वार्षिकधान्यविशेष । वर्षाती धान ।
शालामृग—पु० शृगाल । सिआर ।
शालार—न० हस्तिनख । नाखून ।
शालि—पु० गन्धमार्जार. तण्डुल । कस्तूरी. चावल. कोंना ।
शालिका—स्त्री० शालपर्णी । सरिवन ।
शालिपिष्ट—न० स्फटिक । बिल्लौर ।
शालिसक्तवः—पु० धान्यसक्तू । धान के सत्तू ।
शालिहोत्र—पु० घोटक । घोड़ा ।
शाली—स्त्री० शालवृक्षभेद । सखुई का पेड़ ।
शालीन—पु० शतपुष्प । सोआ ।
शालु(लू)क—पु० मण्डूक(न) कुमुदादिमूल कसेरुककन्द. शृङ्गाटक. जातीफल । मेंढक. कसेरु. सिंघाड़ा. भसेड़. जायफल ।
शालूर—पु० भेक । मेंढक ।
शालेय—पु० मधुरिका. शालीनवृक्ष । सौंफ का पेड़. सोआ का पौधा. (न) क्षुद्रमूलिका । छोटीमूली ।
शाल्मल—पु० शाल्मलिवृक्ष (स्त्री) (ली) सिम्बल का पेड़ ।
शावर—पु० लोध्र । शावरलोध
शष्कुलिक—न० शष्कुलिसमूह । समोसे
शिंशपा—स्त्री० वृक्षविशेष । शीशम का पेड़ ।
शिक्य(क)—न० मधुजातद्रव्य । मोम ।
शिखरणी—स्त्री० मूरनि ।
शिखण्डक—पु० मयूरपुच्छ । मोर की पूछ ।
शिखण्डिक—पु० कुक्कुर(स्त्री)(का)शिखा । मुर्ग. चोटी. वोड़ी ।
शिखण्डिन्—पु० मयूरपुच्छ. मयूर. कुक्कुट. (स्त्री) (नी) गुञ्जा. स्वर्ण. यूथिका । मोर की पूंछ. मोर. कुकुरु. घुंघची. सोना. जूही ।
शिखर—पु० न० कक्ष. रक्तवर्णमणि । कांख. सुरख मानक ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शिखरिन्–पु० पर्वत. वृक्ष (स्त्री) (णी) इन्द्रवारुणी. मल्लिका. रोमावली. द्राक्षा मूर्वालता । पहाड़. पेड़. इन्दोरणि की बेल. मालती. रोंआ की कतार. दाख. मुरहरी ।

शिखा–स्त्री० शिराआरीवृक्ष । सुरवारि का पेड़ ।

शिखामूल–न० गृञ्जन । गाजर. शलगम ।

शिखिन्–पु० मयूर. अग्नि. चित्रकवृक्ष । मोर. आग. चित्ता का पेड़ ।

शिखिशिखा–स्त्री० अग्निशिखा. मयूर चूड़ । आग का शोलह. मोर की चोटी ।

शिग्रु–पु० शाकवृक्षविशेष । मोरङ्गा दरखत. मुनगा का पेड़. सोहाजने का पेड़

शिग्रुतीक्ष्ण–पु० कटुशिग्रु । कटू सुहांजने का पेड़ ।

शिङ्घान(क)–पु० न० नासिकामल. (पु) श्लेष्मा. लोहमल । नाकमैल. बलगम. लोहे की जंग ।

शिण्डाकी–स्त्री० सन्धानविशेष । संधान का भेद ।

शितशूक–पु० यव. गोधूम । जौ. गेहूं ।

शितिकण्ठ–पु० दात्यूहपक्षी । पपीहा. मोर ।

शितिच्छद(पक्ष)–पु० हंस ।

शितिवर } –पु० शिखा । सुतआरि का
शितिवार } पेड़ ।

शिपविष्ट–पु० रोगविशेष. दुश्चर्मा । गञ्जचर्म रोग ।

शिफ–न० वृक्षस्यजटाकारमूलं(स्त्री)(फा) शतपुष्पा. हरिद्रा. पद्मकन्द । दरखत की जड़. सौंफ. हल्दी. भसिंड ।

शिम्बि–स्त्री० शिम्बि । शेंभि. शेवि ।

शिम्बिक–पु० कृष्णमुद्ग (स्त्री)(का) शमी । काली मूंग. सेम की फली ।

शिम्बिज–पु० धान्य । सेमी हुये धान्य ।

शिम्बी–स्त्री० शिम्बि । शेंभि की बेल ।

शिम्बीभव–पु० शिम्बिजधान्य । सेमी का अनाज ।

शिर–पु० पिप्पलीमूल । पिपलामूड़ ।

शिरस्–न० शिखर. मस्तक(र)शिर(स्त्री) (रा) धरणी । चोटी. सर. रग ।

शिरि–पु० शलभ । टिड्डी ।

शिरीष–पु०स्वनामख्यातवृक्षविशेष । सेरसा का पेड़. सिरीस का दरखत ।

शिरीषिका–स्त्री०जलशिरीष । टिटिणि ।

शिरोरुह्(ह)–पु० केश । सिर के वाल ।

शिल–न०पु० करका. प्रस्तर (स्त्री)(ला) द्रवत्. मनःशिला. कर्पूर । ओला. पत्थर. मनशिल. मैनशिल. काफूर ।

शिलाजतु–न० पर्वतजातउपधातुविशेष । शिलाजीत ।

शिलाटिका–स्त्री० रक्तपुनर्नवा । सुरख गदापुरैना ।

शिलासार–पु० लौह । लोहा ।

शिलि–पु० भूर्जपत्रवृक्ष । भोज पत्ते का दरखत ।

शिलीन्ध्र–न० कदलीपुष्प (स्त्री) (न्ध्री)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

विहंगीविशेष. भेकी. शुक्तिका. कारक. (पु) मत्स्यविशेष । केले का फूल चिड़िया. मेढ़की. सट्टी. खुंब. धरती. का फूल ।

शिलीमुख–पु० भ्रमर । मधुमक्खी ।

शिव–त्रि० शुभ (न) जल. सुख. सैन्धवलवण (स्त्री)(वा) शृगाली. दूर्वा. हरिद्रा । नेकी. पानी. आराम. सेंधानिमक. गिदड़ी. सिआरि. दूब.हरीड़ ।

शिवप्रिय–पु० धूस्तरवृक्ष । धत्तूरे का पेड़ ।

शिववीर्य्य–न० पारद । पारा ।

शिवमल्ली–स्त्री० वकुलवृक्ष । बड़ी मौलसिरी का पेड़ ।

शिवा–स्त्री० हरीतकी । हरीड़. हर्रे ।

शिवालया–स्त्री० रक्ततुलसी । लालतुलसी ।

शिवाह्वय–न० पारद । पारा ।

शिवि–पु० हिंस्रपशु (स्त्री) मेथिका । दरिन्दह. मेथी ।

शिशिर–पु० हिम (पु० न०) ऋतुविशेष. (त्रि) शीतल । कोरा. मोसम. सर्द ।

शिशुक–पु० जलजन्तुविशेष. उपल. मत्स्यविशेष. वालक. वृक्षविशेष । शूशिकोरक. खासमछली. लड़का. खास पेड़ ।

शिशुगन्धा–स्त्री० मधुमल्ली । मालती ।

शिशुमार–पु० जलजन्तुविशेष । सूसत्रचोंमार ।

शिश्न–पु० मेढ्र । केर. लिंग ।

शिषरी–स्त्री० अपामार्ग । लटजीरा ।

शिल्हू–पु० सिल्हक । लोबान ।

शीघ्रा–स्त्री० लघुदन्ती । छोटीदन्तूनि ।

शीत–न० हिमगुण. जल. त्वच् (पु) वेतसवृक्ष. पर्प्पट. निम्ब. कर्प्पूर. हिमऋतु । शर्दी. पानी. खाल. वेत का दरखत. पित्तपापरा. नीम. काफूर. सर्दमोसिम ।

शीतचम्पक–पु० दर्पण । आइनह ।

शीतप्रभ–पु० चन्द्र. कर्प्पूर । चांद. काफूर

शीतफल–पु० न० पीलुवृक्ष । पीलू का दरखत ।

शीतभीरु–स्त्री० मल्लिका । मोतियाफूलवेलि ।

शीतरश्मि–पु० चन्द्र । चांद ।

शीतल–न० पुष्पकाशीश. चन्दन. कर्प्पूर. मौक्तिक. शैत्य. वीरणमूल (पु) असनपर्णी. चन्द्र. चम्पक. (स्त्री) (ला) रोगविशेष । नीलाथोथा. कशीश. काफूर. संदल. मोती. शर्दी. खसखस. विजैसार. चांद. चम्पा. शीतला की बीमारी ।

शीतशिव–न० सैंधवलवण । सेंधानिमक ।

शीताद–पु० दुर्गन्धितकृष्णरुधिर. मसूढ़ों से निकले और मसूढ़े फटजावे और पकजावे ।

शीताश्मन्–पु० चन्द्रकान्तमणि ।

शीधु–पु० न० मधुविशेष । पकेहुवे फलोके रस की शराब ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शीर्णरोम—न० स्थौणेय । स्थौणेय नाम बूटी ।
शीर्ष—न० मस्तक । सिर. सर ।
शीश—न० शीशाधातु । सीसा ।
शीशज—न० सिन्दूर । सेंदुर ।
शीशोपधातु—न० सिन्दूर । सेंदुर ।
शुक—न० ग्रन्थिपर्ण (पु) शिरीषवृक्ष । गठिवन. सिरसा का पेड़. स्थौणेय ।
शुकच्छद—न० ग्रन्थिपर्ण । गठिवन. स्थौणेय ।
शुकतरु—पु० शिरीषवृक्ष । सेरसा का पेड़ ।
शुकनासा—स्त्री० स्योनाकवृक्ष । सोनापाढ़ा ।
शुकप्रिय—पु०शिरीषवृक्ष । सेरसा का पेड़ ।
शुकपुष्प—न० ग्रंथिपर्णभेद । स्थौणेय । (पु) शिरीषवृक्ष । सिरस का पेड़ ।
शुकवर्ह—न० ग्रन्थिपर्णभेद । स्थौणेय ।
शुक्त—न० मांस. काञ्जिक. सन्धानविशेष शंख. नखनखी. सुगंधद्रव्य । गोश्त. कांजी. तेज शराब. संख. नखनखी. खुशबूदार चीज. सीपी ।
शुक्तिका—स्त्री० सिप्पी । सीपी ।
शुक्र—न० मज्जाजातधातुविशेष. वीर्य्य. नेत्ररोग (पु) अग्नि. चित्रकवृक्ष. ज्येष्ठमास । मनी. आंख की वीमारी. आग. चीता का पेड़. जेठ का महीना ।
शुक्रभुज—पु० मयूर । मोर ।
शुक्ल—० रजत. नवनीत. चक्षुरोगविशेष. काञ्जिक. चुक्र (स्त्री) (क्ला) शर्करा. काकोलीनामकौषध. विदारीकन्द. खुरसानिकवच । चांदी. मक्खन. आंख की वीमारी. कांजी. चूक. खण्ड. काकोली । विदारीकन्द. खुरासानीवच ।
शुक्लकन्दा—स्त्री० अतिविषा । अतीस ।
शुक्लफल—पु० रक्तार्कवृक्ष । लाल मदार का पेड़ ।
शुक्लैरण्ड—पु० श्वेत एरंडवृक्ष । सुपेद एरंड का दरखत ।
शुक्लोपला—स्त्री० शर्करा. मिश्रि (पु) श्वेतप्रस्तर । चीनी. मिसिरी. सुफेदपत्थर ।
शुक्लोपाङ्ग—पु० मयूर । मोर ।
शुङ्ग—पु० वटवृक्ष (स्त्री) (ङ्गी) प्लक्षवृक्ष । वर का पेड़. पाकर का पेड़ ।
शुण्ठि (ण्ठी)—स्त्री० शुष्कआर्द्रक । सोंठ ।
शुद्ध—न० सैन्धवलवण. मरिच । सेंधानिमक. स्याहमिर्च ।
शुद्धजङ्घ—पु० गर्द्दभ । गधा ।
शुद्धमांस—न० पक्वमांस । खाद्य पकाया मांस ।
शुन } —पु० श्वा । कुत्ता (स्त्री)
शुनि } (नी) कुत्ती ।
शुभ—न० मङ्गल. पद्मकाष्ठ (स्त्री) (भा) वंशरोचना । भलाई. पद्माक. वंशलोचन ।
शुभ्र—न० अभ्रक. गड़लवण. रौप्य. कासीस (पु) शुक्लवर्ण. चन्दन (स्त्री) (भ्रा) गंगानदी. स्फटिका. वंशरोचना. स्फटिक । अभरक. शीशानिमक. सेम.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

चांदी. हीराकशीश. सुपेदरङ्ग. चन्दन. गङ्गादरिया. फटकरी. वंसलोचन. बिल्लौर ।

शुभ्रांशु—पु० चन्द्र. कर्पूर । चांद. काफूर ।

शुभ्रालु—पु० महिषकन्द ।

शुल्ब } न० रज्जु. ताम्र ।
शुल्व } रस्सी. तांम्बा ।

शुषिर—पु० मूषिक. अग्नि (स्त्री) (रा) नलीनामगन्धद्रव्य । मूसा. आग. एक खुशबूदार दवाई ।

शुष्कमत्स्य—पु० सूर्यतापशोषितमत्स्य । सूखी मच्छली ।

शुष्किल—पु० वायु । हवा ।

शूक् (क)—पु० यव । जौ ।

शूकर—पु० पशुविशेष (स्त्री०) (रा) वराही । सुअर. सुअरी ।

शूकशिम्बी—स्त्री० कपिकच्छु । किमाच की वेल ।

शून्य—न० आकाश. विन्दु (स्त्री) (न्या) नली. वन्ध्या । नरकुल. वांझ ।

शून्यमध्य—पु० नलकुल । नरकुल ।

शूर—पु० वीर. सूर्य्य. सिंह. शूकर. चित्रकवृक्ष. सालवृक्ष. मसूर । बहादुर. आफताब. शेर. सुअर. चीता का दरखत. साल का पेड़. मसूर ।

शूरण—पु० मूलविशेष. श्योनाकवृक्ष । सूरन. जमीकंद. सोनापाढा का पेड़ ।

शूल—पु० न० रोगविशेष । दर्द शिकम ।

शूलघ्नी—स्त्री० तुलसीद्वयम् । दोनों तुलसी का पौधा ।

शूलद्विष्—पु० हिङ्गु । हीङ्ग ।

शूल्य—त्रि० शूलाकृत । कबाब ।

शूलिक—न० शूलाकृत (पु) शशक । कबाब. खर्गोश ।

शृकाल—पु० शृगाल (स्त्री) (ली) पलायन. विदारी. भूमिकूष्माण्ड. शृगालपत्नी । सिआल. भागना. विलारीकन्द. कुम्हड़ा. शालपर्णी का पौधा. गिदड़ी ।

शृङ्ग—न० पद्म (पु) जीवकौषध (स्त्री) (ङ्गी) मत्स्यविशेष. स्वर्ण. अतिविषा. वटवृक्ष. कर्कटशृङ्गी । कमल. जयकदवाई. सींगमच्छली. सोना. अतीस. बर का पेड़. ककरासिंगी ।

शृङ्गक—पु० जीवकौषधि । जीवकदवाई ।

शृङ्गवेर (क)—न० आर्द्रक. शुण्ठी (स्त्री) (रा) गन्धपटेर । अदरक. सोंठ. गन्धपटेरदवाई ।

शृङ्गाट (क)—न० चतुष्पथ (पु) जलकण्टक । चौरास्ता. सिंघाड़ा. कामाख्यादेश का पर्वत ।

शृङ्गार—न. लवङ्ग. सिन्दूर. चूर्ण. आर्द्रक. कालागुरु । लौङ्ग. सेंदुर. चूरा. अदरक. स्याहसंदल ।

शृङ्गारक—न० सिन्दूर । सेन्दुर ।

शृङ्गिन्—पु० हस्ती. वृक्ष. पर्वत. (स्त्री) (ङ्गी) मत्स्यविशेष. प्लक्ष. वटवृक्ष. विष. गौ । हाथी. पेड़. पहाड़. सींगी मछली. पिलखन. अर्थात् पाकरि का दरखत. बर का दरखत. ज़हर. गाय ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शृङ्गिक–पु० विषविशेष । सिंगियाज़हर ।

शृत–त्रि० पक्कदुग्ध घृतादि. क्वथित. पक्क । पका दूध वगैरः. काढ़ा. पका ।

शेधु–पु० बुद्धि. गुह्यद्वार । अकल. गुदद्वार

शेखर–न० लवङ्ग. शिग्रुमूल । लौङ्ग. सुहांजने की जड़ ।

शे(प)फ(स)–पु० शेफ । केर. लिङ्ग ।

शेफलि(ली)–स्त्री० सिंदुवारवृक्ष । मेंहदी संभालू का पेड़ ।

शेलु–पु० बहुआरवृक्ष । बहुआर का पेड़ ।

शेव–पु० लिङ्ग. सर्प्प । केर. सांप ।

शेव(वा)ल–न० शैवाल । शिवाल. शिवार

शैत्य–न० शीतलत्व । सर्दी ।

शैल–न० शैलजनामकगन्धद्रव्य । शिलाजीत ।

शैलज–न० अश्मन्तपुष्प (स्त्री) (जा) शेहलीलता. गजपिप्पली । एक खास फूल. खासलता. गजपीपल ।

शैलधातुज, शैलनिर्य्यास } न० शिलाजतु । शिलाजीत ।

शैलभवपीलु–पु० पीलुवृक्ष । पीलू का दरखत. अखरोट का पेड़ ।

शैलभित्ति–स्त्री० प्रस्तरछेदकास्त्र. टङ्क । छयनी. सुहागा ।

शैलसुता–स्त्री० पार्वती गङ्गा. ज्योतिष्मतीलता । मालकंगुनीबेल ।

शैलूष–पु० बिल्ववृक्ष । बेल का पेड़ ।

शैलेय–न० भूर । छरीलादवाई ।

शैवल, शैवाल } न० पु० सिवाल । सेवार ।

शोचिष्केश–पु० अग्नि । आग ।

शोण–न० सिन्दूर. रुधिर (पु) अग्नि । सेन्दुर. खून. आग. सुरख घोड़ा ।

शोणपुष्पक–पु० करवीर । सुरख कनयर का पेड़ ।

शोणरत्न–न० माणिक्यरत्न ।

शोणित–न० रक्त. कुङ्कुम. (त्रि) रक्तवर्ण । खून. केशर. सुरख ।

शोणिताभिध–न० कुङ्कुम । केसर ।

शोथघ्न–पु० श्वेतपुनर्नवा (स्त्री) (घ्नी) सुपेद गदापुरैना ।

शोथ(क)–पु० रोगविशेष । सोजश ।

शोथजित्(हृत्)–पु० भल्लातकवृक्ष । भिलावे का पेड़ ।

शोधन–न० परिष्करण. विष्ठा. कासीस (पु) निम्बुक. (त्रि) शुद्धिकारक. (स्त्री) (नी) सम्मार्जनी । साफ़करना. गूह. हरीकसीस. कागजीनिम्बू. शुद्धकरने वाला. झाडू ।

शोफ–पु० शोथ । सोजश ।

शोफकृत–पु० भल्लातकवृक्ष । भिलावें का दरखत ।

शोभन–न० पद्म (स्त्री) (ना) हरिद्रा गोरोचना । कमल का फूल. हल्दी. गोलोचन. गोरोचन ।

शोभा–स्त्री० हरिद्रा. गोरोचना । हल्दी. गोरोचन ।

शोभाञ्जन–पु० वृक्षविशेष । सुहांजना दरखत ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शोष—पु० यक्ष्म रोग. शोषण। तपेदिक्क. सुखाना. सूखी ।

शोषण—न० रसाकर्षण. शुण्ठी (पु) श्योनाकवृक्ष । सोंठ. सोना पाढ़ा का पेड़ ॥

शौक्तिक, शौक्तिकेय — न० मौक्तिक । मोती ।

शौक्तिकेय—न० विष (पु) सर्प्पविशेष । जहर. सांप ।

शौषिर—पु० खुजली तथा पीडा युक्त सुज हुये मुसकुर हो और लार बहै ।

शौण्डी—स्त्री० पिप्पली. मद्य । पीपली. मद्य. शराब ।

शौनिका—स्त्री० धान्यविशेष । कंगुनी. काकुनि ।

शौभ—पु० गुवाक । सुपारी ।

श्मशान—न० शवदाहस्थान । मरघट ।

श्मश्रु—न० पुरुषमुखवर्द्धितलोम । दाढ़ी

श्याम—न० मरिच. सिन्धुलवण. (पु) धूस्तर. श्यामाक. (स्त्री) (मा) गन्धप्रियङ्गु. सारिवा. शिंशिपावृक्ष । स्याहमिरच. सेंधानिमक. धत्तूरे का पेड़. सुआंक. मेहदी के बीज. दुधरू दोनों तरह का. शीशम का पेड़ ।

श्याम—(मा) क—न० तृणविशेष. रोहिष तृण. (पु) धान्यविशेष । हरद्वारीकुश. घास. सांवां अनाज ।

श्यामकण्ठ—पु० मयूर । मोर ।

श्यामला—स्त्री० अश्वगन्धा (त्रि) कृष्णवर्ण. (पु) वटवृक्ष । असगन्ध. स्याह. वर का पेड़ ।

श्यामा—स्त्री० गन्धप्रियङ्गु. अप्रसूतास्त्री. नीलिका. गुग्गुलु. कृष्णा. गुडूची. कस्तूरी. पिप्पली. हरिद्रा. नीलदूर्वा. तुलसी. गौ. स्त्री. छाया. शिंशिपावृक्ष. पक्षीविशेष । गन्धप्रियंगू. नील का पौधा. गूगलु. पिपली. गुरच. कस्तूरी. हल्दी. नीलदूब. तुलसी. गाय. औरत. साया. शीशम का पेड़. स्यामाचिड़िया ।

श्यावदन्तक—पु० दान्तनीले होजावें ।

श्येन—पु० पक्षिविशेष । बाज ।

श्येनघण्टा—स्त्री० लघुदन्ती । छोटीदन्तूनि

श्रमणा—स्त्री० सुदर्शना. मांसी. मुण्डीरी. शबरीविशेष ।

श्रमनाशन—पु० जल । पानी ।

श्रव—पु० कर्ण । निर्झर । कान. झरना ।

श्रवण—पु० कर्ण । कान ।

श्रवणशीर्षका, श्रवणाह्वा — स्त्री० मुण्डी । गोरखमुण्डी ।

श्राण——त्रि० घृतदुग्धजलभिन्नपक्वद्रव्य. (स्त्री०) (णा) यवागू । भुजे हुये जौ की कढ़ी. मांड ।

श्राद्धशाक—न० नाडिकशाक । कालशाक. करेंबू का साग ।

श्राव—पु० निर्झर । झरना ।

श्रावक—पु० काक । कौवा ।

श्रावणी—स्त्री० मुण्डी । गोरखमुण्डी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्री–स्त्री० लक्ष्मी. लवङ्ग. कमल. विल्व-वृक्ष. श्वेतचन्दन । हश्मत. लौंग. कमल. बेल का पेड़. सुपेद सन्दल ।

श्रीकर–न० रक्तोत्पल । सुरख़ कमल का फूल ।

श्रीखण्ड–न० श्वेतचन्दन । सुपेदसन्दल ।

श्रीघन–न० दधि । दही ।

श्रीपंदी–स्त्री० वर्षातीबेला । बेला ।

श्रीपर्ण–न० पद्म. अग्निमन्थवृक्ष (स्त्री) (र्णी) गम्भारी. कटुफल. खम्भारी. अग्निमन्थ. शाल्मलिवृक्ष । कमलपुष्प रनिका पेड़. कायफर. सेमरे का दरख़्त ।

श्रीपुत्र–पु० अश्व. कामदेव । घोड़ा. काम

श्रीप्रसूनक–न० लवङ्ग । लौंग ।

श्रीफल–न०पु० विल्ववृक्ष. (स्त्री) (ला) नीलीवृक्ष. क्षुद्रकारबेली. विल्ववृक्ष. (स्त्री) (ली) आमलकी. नीलीवृक्ष । विल्व का दरखत. नील का पौधा. करेले की बेल. आमला. नरियल ।

श्रीभद्रा–स्त्री० भद्रमुस्तक । नागरमोथा ।

श्रीमत्–पु० तिलकवृक्ष. अश्वत्थवृक्ष । तिलकदरख़त. पीपल का दरख़त ।

श्रीमत्पुरुषछिन्नपुष्क–न०पु० तिलपुष्प । तिल के फूल ।

श्रीरस–पु० सरलनिर्यास । राल. तारपीन ।

श्रीवारक–पु० शिरीआरी । सुरुआरि का साग ।

श्रीवास–पु० सरजवृक्षरस. शल्लकी रस. पद्म । राल. गुग्गुलु. कमल ।

श्रीवासक–पु० श्रीवारकशाक । सुरुआरि का साग ।

श्रीवे(श)ष्ट–पु० सरलनिर्यास. (स्त्री०) (ष्टी) गुग्गुलु । राल. गूगुलु ।

श्रीसंज्ञ } न० लवङ्ग । लौंग ।
श्रीसंज्ञपुष्प }

श्रुवा–स्त्री. मूर्वा लता । मुरहरी ।

श्रेयसी–स्त्री० हरीतकी. गजपिप्पली । रास्ना. हरीड़. गजपीपरि. रहनबेल ।

श्रेष्ठ–न० गोदुग्ध (स्त्री०) (ष्ठा) स्थलपद्मिनी. औषधविशेष । गाय का दूध. सूरजमुखी फूल. खासदवाई ।

श्रोण–पु० पङ्गु. (स्त्री) (णी) काञ्जिक. लुञ्ज । कांजी ।

श्रोणि(णी)–स्त्री० कटिदेश. नितम्ब. पन्था । कमर. चूतड़. बाट ।

श्रोतस् } –न० कर्ण । कान ।
श्रोत्र }

श्रौत्र–न० कर्ण. श्रोत्रियकर्म्म । कान ।

श्लेष्मक–पु० कफ । बलगम ।

श्लेष्मण(ल)–त्रि० कफी (स्त्री) (णा) वृक्षविशेष । बलगमी ।

श्लेष्मन्–पु० (ष्मा)(स्त्री) कफ. पलाण्डु बलगमी. बलगम. पियाज ।

श्लेष्मान्तक–पु० बहुआरवृक्ष । लसूड़े का दरखत ।

श्लेष्मौष्ठरोग–पु०कफसम्बन्धी ओष्ठरोग ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्वफल–पु० बीजपूर । अनार. नारङ्गी. विजौरा निम्बू ।

श्वयथु–पु० शोफ । सोजश ।

श्वसन–न० श्वसित. जीवन (पु) वायु. मदनवृक्ष । सांसलेना. जान. हवा. मयनफल का पेड़ ।

श्वसित–न० श्वास । सांस ।

श्वन् } पु० (श्वा) कुक्कुर । कुत्ता ।
श्वान } कुक्कुर(स्त्री)(नी) कुक्कुरी ।

श्वदंष्ट्रा–स्त्री० गोक्षुर । गुखुरुओषधि ।

श्वाविन्–स्त्री० शल्लकीपशु । स्याही ।

श्वित्र–न० श्वेतकुष्ठ । सुपेद कोहढ़ ।

श्वेत–न० रूप्य. (पु) शङ्ख । रुपिया. संख ।

श्वेतक–न० रूप्य. (पु) वराटक । सीशा. कौड़ी ।

श्वेतधामन्–पु० चन्द्र. कर्पूर. समुद्रफेन । चांद. काफूर. समुन्द्र की झाग ।

श्वेतपद्म–न० सिताम्भोज । सुपेदकमल का फूल ।

श्वेतपिंग(ल)–पु० सिंह । शेर ।

श्वेतपुष्प–पु० सेंदुवारवृक्ष. श्वेतकुरवटक. (स्त्री०) (ष्पा) नागपुष्पी. श्वेतार्क । सम्भालू का पेड़. सुपेद कटसरैआ. नागपुष्पी. सुपेद आक का पेड़ ।

श्वेतभद्रा–स्त्री० श्वेतापराजितालता । सुपेद विष्णुक्रान्ता की बेल ।

श्वेतमरिच–न० श्वेतशिग्रुबीज । सुपेद सुहांजने के बीज ।

श्वेतमारषा } स्त्री० श्वेतमरुसा । सुपेद
श्वेतमारिषा } मरसा ।

श्वेतमूला–पु० मेघ. धूम । बादल. धुंआ ।

श्वेतमाला–स्त्री० पुनर्नवा । सुपेद गदा-पुरैना ।

श्वेतवाष्पक–पु० श्वेतमारिषशाक । सुपेदमरुसा. मरसा ।

श्वेतशिम्बिक–पु० भेंटवांसु । भटवांसु ।

श्वेतसारखदिर–पु० श्वेतखदिर । पापरी खैर ।

श्वेता–स्त्री० व्याघ्री. श्वेतस्फटिका । भटकटैया. सुपेद फटकरी ।

श्वेतात्रिवृता–स्त्री० श्वेतनिःशोथ । सुपेद तिउड़ी. निशोथ ।

श्वे(त्य)त्र–न० श्वित्र । सुपेद कोढ़ ।

ष

षट्चरण–पु० भ्रमर. यूका । भौंरा. जूं ।

षट्पद–पु० भ्रमर. यूका (स्त्री) (दी) मधुमक्षिका । भौंरा. जूं. शहद की मक्खी ।

षडङ्ग–न० शरीरावयव । दोनों जांघ २ दो हाथ ४ सिर ५ कमर ६ ।

षड्ग्रन्था–स्त्री० वच. गन्धपलाशी. करञ्जी. बच. गंधपलाशी. अरारि. कंजी ।

षट्पदा–स्त्री० वार्षिकवेला । बरसाती बेला ।

षड्विध शाक–न० यथाः–पत्र १ पुष्प २ फल ३ नाल ४ कन्द ५ संस्वेदज ६ ।

षडङ्घ्रि–पु० भ्रमर । भौंरा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

षड्तु–पु० छयऋतु यथाः—१ शरद्. २ हिमन्त. ३ शीत. ४ वसन्त. ५ ग्रीष्म. ६ वर्षा ।

षड्ग्रन्थि–न० पिप्पलीमूल । पिपलामूल. मूढ़ ।

षड्रस–पु० मधुरादिषट् रसाः यथाः—१ मधुर. २ लवण. ३ तिक्त. ४ कषाय. ५ अम्ल. ६ कटु ।

षड्रूषण–न० षट्औषधिसमवाय यथाः- १ पिपली. २ पिपलीमूल. ३ चाभ. ४ चित्रा. ५ सोंठि. ६ मिरच ॥

षण्डाली–स्त्री० तौलमान । छटांक ।

षण्डर–न० पक्वान्नभेद । ऋकवच्छ ।

षष्टिक–पु० धान्यविशेष (स्त्री) (का) साठी धान ।

षष्टिमत्त–त्रि० हस्ती । हाथी ।

षष्टिहायन—पु० हस्ती. धान्यविशेष । हाथी. साठी धान ।

षहसानु–पु० मयूर । मोर ।

षोडशार न० षोड़शदलपद्म । सोलहदल वाला कमल ।

ष्ठीवन–न० फूत्कार । थूक ।

स

संवर–न० जल (पु) हरिणविशेष (स्त्री) (रा) गवय । पानी. खासहरिण. लीलगाव ।

संवर्तिका–स्त्री० नूतनकमलदल । नया कमल का दल ।

संवाटिका–स्त्री० शृङ्गाटक । सिंघाड़ा ।

संय–पु० कङ्कालु. अस्थि । हाड़ ।

संयाव–पु० पिष्टकविशेष । पेराकमिठाई

संस्फाल–पु० मेष । मेढ़ा ।

संहिता–स्त्री० शतपुष्पा । सौंफ ।

सकलप्रिय–पु० चणक । चना. छोला ।

सकलम–पु० ठंढकालीधान ।

सकुनि–त्रि० पक्षी । पखेरु ।

सकुल(ली)–पु० मत्स्यविशेष । खास मच्छली ।

सकुलादिनी–स्त्री० कट्वी. जलपिप्पली । कुटकी. कड़वी. मुनिसगा ।

सकृत्–पु० एकवार ।

सकृत्फला–स्त्री० कदलीवृक्ष । केला का पेड़ ।

सक्तव } पु० न० भृष्टयवचूर्ण ।
सक्तु(क) } सक्तू । सत्तू.

सक्थि–न० अस्थि । हड्डी ।

सङ्कोच–न० कुङ्कुम (पु) मत्स्यविशेष । केशर. मच्छली ।

सङ्कोचनी–स्त्री० लज्जालु लता । लाजवन्तीवेल ।

सङ्कर–न० शमीवृक्षफल । छीकुरि के फल ।

सङ्ग्रहणी–स्त्री० रोगविशेष । वीमारी खास ।

सङ्गपुष्पी–स्त्री० धातकी । धव के फूल. धव का वृक्ष ।

सङ्घाटिका–स्त्री० जलकण्टक । सिंघाड़ा ।

सङ्घात–पु० कफ । बलगम ।

सचिव–पु० मन्त्री. कृष्णधत्तूर । वजीर. स्याहधतूरे का पौधा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सचेष्ट–पु० आम्रवृक्ष । आम का पेड़ ।

सञ्चारा–स्त्री० हरिद्रा । हल्दी ।

सञ्चारिणी–स्त्री० हंसपदी । करँबू ।

सञ्जा–स्त्री० छागी । बकरी ।

सञ्ज–न० पीतकाष्ठ । जर्दचलकड़ी ।

सण्ड–पु० वृष । सांढ़ ।

सततज्वर–पु० जो रात्रिदिन में दो वार चढ़े ।

सतिन–पु० कलाय । मटर । केराव ।

सदापुष्प–पु० नारिकेलवृक्ष. कुन्दपुष्प (स्त्री) (ष्पी) रक्तार्कवृक्ष । नारियल का पेड़. कुन्द का फूल. सुरख मदार का पेड़ ।

सदाफल–पु० नारिकेलवृक्ष । नारियल का पेड़ ।

सधि–पु० अग्नि । आग ।

सनस्–न० विष्ठा । गूह ।

सन्ततज्वर–पु० जो ज्वर रात्रिदिन न उतरे ।

सन्तानिका–स्त्री० साढ़ी । मलाई ।

सन्दंशयन्त्र–न० दोप्रकार के संदंशयन्त्र विशेष ।

सन्धान–न० स्त्री० मद्यसज्जीकरण. कांजिक.मदिरा । शराबनिकालना.कांजी मदिरा ।

सन्ध्याराग–न० सिन्दूर । सिंधूर ।

सन्न–पु० प्रियालवृक्ष । चिरौंजी का पेड़ ।

सन्नकद्रु–पु० " " ।

सन्यास–पु० जटामांसी । जटामासी ।

सन्निपातौष्ठरोग–पु० सन्निपातसंबन्धी ओष्ठरोग ।

सपीतक–पु० बब्बूल । बबूर का पेड़ ।

सप्तजिह्व
सप्तज्वाल } अग्नि । आग ।
सप्तदीधिति

सप्तधातु–न० स्वर्ण १ रौप्य २ ताम्र ३ राङ्गा ४ जस्ता ५ शीशा ६ लोहा ७ ।

सप्तपर्ण–पु० सप्तच्छद । छतिवन ।

सप्तला–स्त्री० शातला. वासन्ती । पीले सेहुण्ड की जड़. नेवारी की वेलि ।

सप्तसप्ति–पु० सूर्य्य । आफताब ।

सप्तार्चिस्–पु० अग्नि. चित्रकवृक्ष । आगि. चीता का पौधा ।

सप्तालुक–न० दीर्घसुथनी । बड़ीसुथनी ।

सप्ताश्व (वाहन)–पु० सूर्य्य । आफताब ।

सप्ति–पु० अश्व । घोड़ा ।

सप्तोपधातु–न० सोनामक्खी १ रूपामक्खी २ तूतिया ३ कांसा ४ पीतल ५ हिंगुलू ६ शिलाजीत ७ ।

सप्रय–पु० अश्व । घोड़ा ।

सफर–पु० मत्स्यविशेष (स्त्री) (री) एक खास मच्छली ।

सबर्य्यतिल–पु० अल्प तिल । छोटे तिल ।

सबालार्क–पु० श्वेतार्क । सुपेद मदार का पेड़ ।

समगन्धिक–पु० उशीर । खस्स ।

समङ्गा–स्त्री०मञ्जिष्ठालता.लज्जालु लता । मञ्जीठ. लाजवन्ती ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

समन्तदुग्धा—स्त्री० सेहुण्डवृक्ष । सेहुड़ का पेड़ ।
समस्तका—स्त्री० अजमोदा । अजमोद ।
समा—स्त्री० वत्सर । वर्ष ।
समान—पु० आमपक्वाशयचरोवायुः । पच्यमानाहाराशयः सदुष्टःगुल्माग्निसङ्गातीसारप्रभृतीनूगदानूकुरुते । आमपक्वाशय में रहने वाला वायु ।
समास्—पु० संवत्सर । वर्ष ।
समिता—स्त्री० गोधूमचूर्ण । गेहूं का आटा मैदा ।
समितावर्त्तिका—स्त्री० गोधूमचूर्णनिर्मितवर्ती । सेवई ।
समिद्वर—पु० पलाशवृक्ष । छीउल का पेड़
समीद—पु० गोधूमचूर्ण । मैदा ।
समीर—पु० वायु. शमीवृक्ष । हवा. छीकुरि का पेड़ ।
समीरण—पु० वायु. मरुबक । मरुआ. हवा
समुद्रफेन—पु० समुद्रफेन । सामुन्दरीफाग ।
समुद्रशोक—पु० वृक्षविशेष । समुद्रफल का पेड़ ।
समुद्रान्ता—स्त्री० स्पृक्का. कर्पासी. यासक । लंकोइकपुरी. कपास. जवासा ।
सरज—न० नवनीत । नेनू ।
सरणी—स्त्री० गन्धप्रसारणी । गन्धपसारणि ।
सरवीज—पु० चारुक । सरवीज ।
सरल—पु० धूप. (स्त्री) (ला) श्वेतात्रिवृता । राल. सुपेद निशोथ. सुफेदतिउड़ी ।
सरलस्राव—पु० शाल्लकीनिर्य्यास । गुग्गुलु
सरसा—स्त्री० रास्नाभेद । रायसनाई का पौधा ।
सरसीरुह—न० पद्म । कमल ।
सरस्वती—स्त्री० ब्राह्मी ओषधि । बरमी बूटी ।
सर्ज्जक—पु० शालभेद. असनवृक्ष । सांखो का भेद. विजैसार का पेड़ ।
सर्ज्जकर्श्या—स्त्री० शालवृक्ष । सांखो का पेड़ ।
सर्ज्जरस—पु० धूप । राल ।
सर्प्पाक्षी—स्त्री० गण्डाली. नाड़ीक. पालक । सरहटीबूटी. गंडिनीबूटी. सहदेया ।
सर्प्पाङ्गी—स्त्री० रास्नाभेद । रायसनाई का वृक्ष ।
सर्प्पिस्—न० घृत । घी ।
स(र्पि)र्प्पोष्ठ—न० श्रीखण्ड । सन्दल ।
सर्वतोभद्र—पु० निम्बवृक्ष । नीम का पेड़
सर्वभक्ष—पु० अग्नि(स्त्री) (क्षा) छागी । आग. बकरी ।
सर्वमूषक—पु० काल. यम । वक्त. मलकुलमौत ।
सर्वरस—पु० धूमक. लवणरस । राल. नमकीन जायकह ।
सर्वरी—स्त्री० रात्रि. हरिद्रा । रात. हल्दी
सर्वसङ्गत—पु० षष्टिकधान्य । साठीधान ।
सर्वानुभूति—पु० स्त्री० श्वेतात्रिवृता ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सुपेदनिशोथ. सुफेद तिउड़ी ।

सर्षप—पु० शस्यविशेष. (स्त्री) (पी) पक्षी विशेष । सरसों. एक चिड़िया ।

सर्षपनाल—पु० शाकविशेष । सेरसों के कांड़र का साग ।

सल—न० वारि । पानी ।

सलिल—न० जल । आब. पानी ।

सलोहित—पु० रक्तसौभांजनवृक्ष । लाल सुहांजने का पेड़ ।

सल्लकी—स्त्री० स्वनामख्यातवृक्ष । खास-दरखत ।

सष्कुली—स्त्री० मत्स्यविशेष. पिष्टकविशेष । सौरीमच्छली. पूरी कचौरी ।

ससत्वा—स्त्री० गर्भिणी । हामिला ।

सस्य—न० धान्य । धान ।

सहकार—पु० आम्र । आम ।

सहचर—पु० स्त्री० पीतझिण्टी. श्वेतकुरण्टक । पीला या सुपेद करसैला ।

सहण्डुक—न० मांसव्यञ्जनविशेष । कबाब

सहदेवी—स्त्री० सर्पाक्षी । सहदेयाबूटी ।

सहस्य—पु० पौषमास । पूस का महीना ।

सहस्रकिरण—पु० सूर्य्य । आफ़ताब ।

सहस्रद—पु० पाठीन । पढ़िना मच्छली ।

सहस्रनुत—पु० अम्लबेतस । अमिलबेत ।

सहस्रपत्र—न० पद्म । हजार पत्तों वाला कमलफूल ।

सहस्रवीर्य्या—स्त्री० नीलदूर्वा. महाशतावरी । श्यामदूब. बड़ी छतावरि ।

सहस्रवेधि—न० हिङ्गु । हींग ।

सहस्रवेधिन्—पु० अम्बुवेतस. कस्तूरी । आवीवेत. कस्तूरी. मुश्क ।

सहस्रवेधी—स्त्री० चुक्र । चूक. रुआ की जड़ ।

सहस्रभित्—स्त्री० कस्तूरी । मुश्क ।

सहस्रा—स्त्री० माचिका । केवैआ ।

सहस्रांघ्रि } स्त्री० मयूरशिखा. मोर-
सहस्रांह्रि } शिखा ।

सहा—स्त्री० मुद्गपर्णी । वनमूंग का पौधा

सहाचर—पु० श्वेतकुरण्टक । सुपेद फूल का कसरैला ।

सहार—पु० आम्रवृक्ष । आम का दरखत ।

सहद्रेक—पु० सेहुण्डवृक्ष । सेंहुड़ का पेड़ ।

सागरज—न० सामुद्रलवण । पांगा निमक ।

सातला—स्त्री० क्षुद्रवृक्ष विशेष । पीतदुग्धसेहुंड़ ।

सादनी—स्त्री० कटुकी । तबाह सानिका. कुटकी ।

साधिका—स्त्री० नीवार । तिना. पसहीं. धान ।

सानसि—पु० सुवर्ण । सोना. ज़र ।

सानुज—पु० तुम्बुरु । तुम्बुरुबीज ।

सान्नाय्य—न० हवि । घी ।

सामुद्र } —न० समुद्रलवण ।
सामुद्रज } सामुन्दरी निमक ।
सामुद्रलवण } —न० " "

साम्बर—पु० गडलवण । (स्त्री) (री) रक्तलोध्र । गुड़ारी निमक. सुरख़लोध ।

सार—न० जल. धन. न्याय्य. नवनीत.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

लौह. विपिन. (पु०) बल. वायु. (स्त्री) (रा) शातला । पानी. दौलत. इंसाफ. मक्खन. लोहा. जंगल. ज़ोर. हवा. बीमारी. पीतदुग्धसेहुण्डवृक्ष ।

सारक–पु० जयपालबीज । जमालगोटा ।

सारघ–पु० मधु । शहद ।

सारङ्ग–पु० चातकपक्षी. हरिण. हस्ती. भृङ्ग. राजहंस. चित्रमृग. वस्त्र. मयूर. कामदेव. धनुः. केश. स्वर्ण. आभरण. पद्म. शङ्ख. चन्दन. कर्पूर. रागविशेष. पुष्प. कोकिल. मेघ. पृथिवी. रात्रि. दीप्ति. सिंह. (त्रि) सरल. नानावर्ण ।

सारज–न० नवनीत । माखन. नैनू ।

सारण–न० गन्धविशेष. दोषशुद्धि. अपसारण (पु) अतीसाररोग (स्त्री०) (णी) गन्धप्रसारणी । खुशबूई ।

सारखड–पु० सर्पाखड । सांप का अखडा ।

सारतरु–पु० कदलीवृक्ष । केले का पेड़ ।

सारदा–स्त्री० स्थलकमल । सूर्य्यमुखी ।

सारदी–स्त्री० जलपिप्पली । पनिसगा ।

सारमेय–पु० कुक्कुर । कूकुर ।

सारलोह–न० लोहसार । खेढ़ी ।

सारस–न० पद्म. (पु०) चन्द्र. (पु० स्त्री) हंस. पक्षिविशेष । गुलेसौसन. चांद. हंस. सारसचिड़िया ।

सारसजल–न० तड़ागजल । झील. तालाब का पानी ।

साराल–पु० तिल । सारयुक्त ।

सारिका, सारी – स्त्री० पक्षिविशेष । मयना-चिड़िया ।

सारुणा–स्त्री० जपा । वोडहुल का फूल. सांफी ।

साल–पु० शालमत्स्य ।

सालन–न० सर्जरस । राल ।

सालरसपु० सालनिर्य्यास । राल ।

सालिपर्णी–स्त्री० स्थिरा । सरिवन ।

सालूर–पु० मण्डूक । मेढ़क ।

साल्पिका–स्त्री० शमीवृक्ष । छीकुरि का पेड़ ।

सालवेष्ट–पु० धूनक । राल. तारपीन ।

सावर–पु० लोध्र । लोध ।

सावरी–स्त्री० बृहद्दन्ती । बड़ी दत्तून का पेड़ ।

सिंह–पु० स्वनामख्यातपशु. रक्तशिग्रु (स्त्री)(हा) नाड़ी । सिंह शेर. सुरख सुहांजने का पेड़. रग ।

सिंहकेशरक–पु० वकुलवृक्ष । मौलसिरी का पेड़ ।

सिंहतुण्ड–पु० सेहुण्डवृक्ष । सेहुण्ड का पेड़ ।

सिंहपर्ण–पु० वासावृक्ष । रूसा. अरूस. रुसाह ।

सिंहपुच्छी–स्त्री० पृश्निपर्णी । पिठवन. पिथवन ।

सिंहविक्रान्त–पु० अश्व । घोड़ा ।

सिंहल–न० रङ्ग. रीति. त्वच् । रांग. पीतल ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सिं(घा)हा(ण)न–न० लौहमल. नासिकामल. लोहेकीजंग. वलग़म. सीढ़ ।

सिंहास्या, सिंहिका } त्रि०– वासा । रूसाह का पेड़. अरूसा ।

सिंही–स्त्री० बृहती । वरहण्टा. बड़ी भटकटैया ।

सिकतास्–पु० बालुका । रेत ।

सिक्थ–न० मधूच्छिष्ट. रोम. नीलीवृक्ष (पु) भक्त । मोम. बाल. नील का पौधा. भात ।

सिग्रुकुसुम–न०सौभांजनवृक्ष का फूल । सुहांजने का फूल ।

सित–न० रौप्य. मूलक. चन्दन । चांदी. मूली. संदल ।

सितकण्ठ–पु० दात्यूहपक्षी । पपीहा ।

सितकर–पु० कर्प्पूर. चन्द्र । काफूर ।

सितच्छद–पु० हंस (स्त्री)(दा) श्वेतदूर्बा । हंस. सुपेद दूब ।

सितछत्रा–स्त्री० शतपुष्पा । सौंफ ।

सितपाटला–स्त्री० पाटला । पाण्डरि ।

सितप्रभ–न० रौप्य । चांदी ।

सिता–स्त्री० शर्करा. मल्लिका. श्वेतकण्टकारी. श्वेतदूर्वा. चन्द्रिका. मद्य. पिङ्गा. त्रायमाणा. पर्वतजातअपराजिताल ता । चीनी. मालती. सुपेद भटकटैया. सुपेददूब. चांदनी. शराब. त्रायमाण. लज्जालू. सुपेद विष्णुक्रांता वेल. गुड़हल ।

सिताकङ्गु–स्त्री० श्वेतकङ्गुनी । सुपेद-कांगुनी ।

सितांशु–पु० चन्द्र. कर्पूर । चांद. काफूर ।

सिताङ्ग–पु० रोमसितकमत्स्य । रोहूमछली

सितादि–पु० गुड़. शर्करा । गुड़. खांड़. चीनी ।

सिताप्रियङ्गु–स्त्री० श्वेताकङ्गुनी । सुपेद कंगुनी. कांकुनि ।

सिताभ्रा(क)–पु० न० कर्पूर । काफूर ।

सिताम्भोज–न०श्वेतपद्म । सुपेद कमल ।

सितालक–पु० श्वेतमन्दारक ।

सितावर–पु० शाकविशेष (स्त्री) (री) वाकुची ।

सितिवार–पु० वृक्षविशेष. सुनिषण्णक । शाक खास ।

सितेतर–पु० श्याम. कुलत्थ कलाय । स्याहकुलथी की दाल ।

सितोद्भव–पु० श्वेतचन्दन (त्रि) शर्करा. जात । सुपेद संदल. चीनी ।

सितोत्पल–न० कठिनी (पु) स्फटिका (स्त्री)(ला) शर्करा । खड़िया. विल्लोर-मिसिरी. चीनी ।

सिद्ध–न० सैन्धवलवण (पु) कृष्णधूस्तर. गुड़ (स्त्री)(द्धा) ऋद्धिओषधि । सेंधानिमक. स्याहधत्तूरे का पौधा. गुड़. ऋद्धिबूटी ।

सिद्धधातु–न० पु० पारद । पारा ।

सिद्धरस–पु० पारद. पारा । सीमाव ।

सिद्धसाधन–न० गौरसर्षप । सेतीसरसों सुपेद सरसों ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सिद्धार्थ–पु० श्वेतसर्षप । सुपेदसरसों ।
सिद्धि–स्त्री० ऋद्धिनामकौषधि ।
सिध्मन्–न० सिध्मरोग । सेहुंआं की बीमारी ।
सिध्मल–त्रि० किलासरोगी (स्त्री) (ला) मत्स्यविकृति । कोढ़ी. कोढ़ ।
सिध्व–पु० वृक्षविशेष । खास दरखत ।
सिन्दुवारक–पु० सिन्दुवार । सेउढ़ीवृक्ष सम्भालू का पेड़ ।
सिन्दुक } पु० सिन्दुवारवृक्ष । सम्भालूका पेड़. सेउढ़ीका पेड़ ।
सिन्दुवार }
सिन्दूर–न० सिन्धुर (पु०) वृक्षविशेष । (स्त्री) (री) सिन्दुरिआ । सेंदुरु. सदा सोहागिनी फूल का पौधा ।
सिन्धु–पु० श्वेतटङ्कण । सुपेदसोहागा ।
सिन्धुज–न० सैन्धवलवण । सेंधानिमक ।
सिन्धुवार(क) } पु० ऐन्द्रीलता । इन्द्राणी बूटी ।
सिन्धुवारित }
सिम्बा–स्त्री० शमी. शुराठी । जंडी का दरखत. सोंठ. छीकुरि का पेड़ ।
सिर–पु० पिप्पलीमूल (स्त्री) (रा) नाड़ी । पिपलामूल. रग ।
सिवितिकाफल–न० सेव । सेब ।
सिलायुष्क–न० भूर । छरीला ।
सिह्ल–पु० सिह्ला । हीराकसीस ।
सिल्हक–पु० सिलारस । लोबान ।
सिहान–न० लोहकिट्ट । लोह की कीट ।
सीधु–पु० मद्य. कदम्बपुष्पजातमद्य । शराब. कदम के फूल की शराब ।
सीधुरस–पु० आम्रवृक्ष । आम का पेड़ ।
सीधुशीतरसा–स्त्री० रस का सिरका । ऊख के रस का सिरका ।
सीध्र–न० गुह्यद्वार । गुदा ।
सीमन्त–पु० केशवीथी (पु० न०) शिर. मांग शिर ।
सीमन्तक–न० सिन्धूर. सिन्दूर । सेंदुर ।
सीमा–स्त्री० मर्य्यादा. क्षेत्र. तीर. अण्डकोष । हद्द. खेत. किनारा. बयजा ।
सीर–पु० सूर्य्य. हल. अर्कवृक्ष । आफताब. आक का पेड़ ।
सीस(क)–पु० सीसक । सीसाधातु ।
सुकन्दक–पु० पलाण्डु । प्याज ।
सुकाण्डिन्–पु० भ्रमर । शहद की मक्खी
सुकामला–स्त्री० सदासोहागिनीफूल का पौधा ।
सुकुन्दक–पु० पलाण्डु । पियाज ।
सुकुमार–पु० वनचम्पक. श्यामाक । वन का चम्पा. सुआंक. सांवां ।
सुकोमला–स्त्री० सेंदुरिआ पुष्पवृक्ष । सदासोहागिनी ।
सुकोशक–पु० कोशाम्र । कोशाम ।
सुख–न० ऋद्धिनामौषधि ।
सुखदा–स्त्री० शमीवृक्ष । जंडी का पेड़. छीकुरि का पेड़ ।
सुखमोदा–स्त्री० सल्लकीवृक्ष ।
सुखवर्च्चक–पु० सर्जिकाक्षार । सज्जीखार
सुखवी–स्त्री० कालम्बिका । कलौंजी ।
सुग–न० विष्ठा । गूह ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सुगन्ध–न० क्षुद्रजीरक. शल्लकीनिर्य्यास. गन्धतृण. नीलोत्पल. चन्दन. ग्रन्थिपर्ण. (पु) रक्तशिग्रु. गन्धक. चणक. भूतृण. (स्त्री) (न्धा) शटी. रुद्रजटा. वन्ध्याकर्क्कोटकी. पृक्का. माधवी. अनन्ता. वचा. कुलिञ्जन. रास्ना. कृष्णाशारिवा । स्याहजीरा. कुंदुरू. खुशबूदार चीज़. नीलोफर. खस्स. सन्दल. गठिवन. सुरख सुहांजना. गंधक. चना. खुब. कचूर. रुद्रजटा. वांझ. खेखसा. लं...पुरी सुगंधचीज. मालती. दूब. बच. कुलीजन. रहस्रनि. स्याहदुधउरु ।

सुगन्धक–पु० ठंढ़. कालीधान ।

सुगन्धमूला–स्त्री० हरफारीवृक्ष । लवली. हरफारेवरी का पेड़ ।

सुगन्धि–पु० सुगन्धयुक्ताम्र (न) एलावालुक. मुस्ता । खुशबूदार आम. एलुआ. मुस्था. नागर मोथा ।

सुगन्धिक–न० कह्लार पुष्करमूल. गौरसुवर्ण. उशीर (पु) महाशालि. तुरुष्कगन्धक । गुलेसौसन. कुट्ठ. गन्धशाक. सन्दल. खस्स. खुशबूदार चावल. शिला रस. खुशबूई. गन्धक ।

सुगन्धिनी–स्त्री० स्वर्णकेतकी । ज़र्द्द केवड़ा ।

सुगन्धिमूल–न० उशीर । खस्स ।

सुचुटी–स्त्री० अग्न्याद्युद्धारणार्थलौहयन्त्र । चिमटा ।

सुतत्री–स्त्री० शतद्रु नदी । सतलज दरिया

सुजल–न० कमल. सुन्दरसलिल । गुलेसौसन. उम्दहपानी ।

सुतर्द्दन–पु० कोकिल. पिक । कोइल ।

सुतिक्तक–पु० पारिभद्र. भूनिम्ब । नीम का दरखत. चिरायता ।

सुतीक्ष्ण–पु० शोभाञ्जनवृक्ष (त्रि) अतिखर । सुहांजना का पेड़. निहायत तीखा ।

सुतुङ्ग–पु० नारिकेलवृक्ष । नारिएल का दरखत ।

सुतेजन–पु० धन्वङ्गवृक्ष । धाम्निनिका पेड़ ।

सुदण्ड–पु० वेत्र । बेत ।

सुदर्शन–पु० मत्स्य । मच्छली ।

सुदर्शनचूर्ण–न० ज्वरौषधविशेष । बोखार की दवाई ।

सुदर्शना–स्त्री० मधुपर्णिका. सोमवल्ली । सुदर्शन का पौधा. सोमलता ।

सुधा–स्त्री० अमृत. लेपन. चूर्ण. मूर्वा. स्नुही. गङ्गा. इष्टका. विद्युत. रस. जल. धात्री. हरीतकी. मधु. शालपर्णी । घी. लेपन. चून. सुराहरी. गङ्गानदी. ईंट. विजुली. रस. पानी आंमला. हरीड़. सहद. सरिवनबूटी. सेहुण्डवृक्ष ।

सुधांशु–पु० चन्द्र. कर्पूर । चांद. काफूर ।

सुधांशुरत्न–न० मौक्तिक । मोती ।

सुधाकर–पु० चन्द्र. कर्पूर । चांद. काफूर ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सुधापाणि–पु० धन्वन्तरि । देवताओं का तबीब ।

सुधाभूति–पु० चन्द्र. पद्म. यज्ञ । चांद. कमल. फूल ।

सुधावास–पु० लघुत्रपुस् । वालमखीरा. छोटाखीरा ।

सुधोद्भव–पु० धन्वन्तरि (स्त्री)(वा) हरीतकी । खासतबीब. हरीड़ ।

सुनन्दा–स्त्री० गोरोचना. अर्कपत्रीवृक्ष । गोरोचन. आकपत्ती ।

सुनार–पु० शुनीस्तन्य. सर्प्पाण्ड. मलविंक । कुत्ती का दूध. सांप के अंडे अबाबील ।

सुनाल–न० वीरणतृण । ज़र्दखस्स के माफक घास ।

सुनिष्णक–पु० शिरीआरी । सुरुआरि का साग ।

सुनिर्य्यास–पु० झिङ्गिनी । जिङ्गिनी ।

सुनील–पु० दाड़िम (स्त्री)(ला) अतसी. विष्णुक्रांता । अनार. अरसी. विष्णु कांता की वेलि ।

सुन्दर–पु० वृक्षविशेष (स्त्री) (रा) हरिद्रा । खास दरखत. हल्दी ।

सुपक्क–पु० आम्र । आम ।

सुपत्र–न० तेजपत्र (पु) आदित्यपत्र. पल्लिवाहतृण (स्त्री) (त्रा) रुद्रजटा. शतावरी. पालक्य. शमी. शालपर्णी । तेजपात. आक के पत्ते. पल्लिवाह. रुद्रजटा. सतावरी. पलाकी ।

सुपद्म–पु० शोभनपद्म (स्त्री)(द्मा) वचा । उम्दा कमल. बच ।

सुपर्ण–पु० स्वर्णचूड़पक्षी (स्त्री)(र्णी) पद्मिनी । मुर्ग़. कमलिनी ।

सुपर्णाख्य–पु० नागकेशर । नागकेसर ।

सुपर्णिका–स्त्री० सोमराजी । बकुची ।

सुपर्व्वल–पु० वंश (स्त्री) श्वेतदूर्वा । बांस. सुपेद दूब ।

सुपार्श्व–पु० प्लक्षवृक्ष । पिलखन का दरखत. पकरिया ।

सुपार्श्वक–पु० साखोटकवृक्ष. ग... । सहोरा का पेड़ ।

सुपूर–पु० बीजपूर । विजौरानिम्बू. नारङ्गी ।

सुप्रतिष्ठित–त्रि० उदुम्बरवृक्ष । गूलर का पेड़ ।

सुफल–पु० कर्णिकार. दाड़िम. बदर. मुद्ग. कपित्थ (स्त्री)(ला) इन्द्रवारुणी. कूष्माण्डी. काश्मरी. कदली. कपिद्राक्षा. । कनेर. अनार. बेर. मूंग. कैथा. इन्द्रोरनि. कुम्हड़ा. खम्भारि. केला. सुपेद दाख ।

सुभग–पु० टङ्कण. चम्पक. अशोक. (स्त्री) (गा) हरिद्रा. नीलदूर्वा. तुलसी. मृगमद. प्रियङ्गु. पतिप्रिया । सुहागा. चंपा. अशोक का पेड़. हल्दी. दूब. तुलसी. कस्तूरी. कंगुनी. शौहर की प्यारी. मेहदी के बीज ।

सुभङ्ग–पु० नारिकेलवृक्ष । नारियल का पेड़

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सुभद्रा—स्त्री० श्यामलता. घृतमण्डा. काश्मरी । स्याह दुधवरु. पेराक. खम्भारि ।

सुभिक्षा—स्त्री० वृक्षविशेष । सुभिक्ष पेड़ ।

सुम—न० पुष्प. (पु) चन्द्र. नभ. आकाश. फूल. महताब. आसमान ।

सुमधुर—पु० जीवकशाक । जिवई साग ।

सुमन—पु० गोधूम. धूस्तर (स्त्री) (ना) जातीपुष्प । गेंहू. धत्तूरा. चंबेली ।

सुमनस्—न० पुष्प (पु) (ना) गोधूम । फूल. गेहूं ।

सु[illegible]—न० नखक्षतविशेष । नखून का ज़खम ।

सुमुष्टिका—स्त्री० विषमुष्टि । करेरुआ. कोचिला ।

सुमेखला—स्त्री० मुंज । मूंज ।

सुर—पु० सूर्य्य (स्त्री) (रा) मद्य । आफताब. शराब ।

सुरङ्ग—न० पतङ्ग. हिंगुल (पु) नागरङ्ग. (स्त्री) (ङ्गा) गैरिक । पतंगा. पांखी. इंगुर. रांगा. गेरूमाटी. पतंग. वकम् ।

सुरञ्जन—पु० गुवाकवृक्ष । सुपारी का पेड़ ।

सुरतारका—स्त्री० कर्पूरहल्दी । कपूरकचरी ।

सुरधूप—पु० सर्ज्जरस । राल ।

सुरप्रिय—पु० अगस्त्यपुष्पवृक्ष (स्त्री)(या) जाती. स्वर्णरम्भा । अगस्त का पेड़. चम्बेली. सोना केला ।

सुरभि—न० स्वर्ण. गन्धाश्म. (पु) मुरा. सुगन्धिद्रव्य. चम्पक. वसन्तऋतु. जातिफलवृक्ष. शमीवृक्ष. गन्धतृण. वकुलवृक्ष. राल (स्त्री) शल्लकी. सुरा. गौ. रुद्रजटा. वनमालिका. तुलसी । सोना गन्धक. चंपा. मोसिमबहार. जायफल. छीकुरि. खस्स. मुरहरी. मौलसिरी. राल. शराब. गाय. रुद्रजटा. मालती. तुलसी का पौधा ।

सुरभिदारुक—पु० धूपसरल । राल ।

सुरभित्वच्—न० बृहदेला । बड़ी इलाइची ।

सुरभिपत्रा—स्त्री० फलेंद्राजम्बू । फरेंदा-जामुनी ।

सुरभिवल्कल—न० गुडत्वच् । दारचीनी ।

सुरभी—स्त्री० गो । गाय ।

सुरभीदारु—स्त्री० कर्पूरहरिद्रा । कपूरकचरी ।

सुरभीरसा—स्त्री० शल्लकी । सालई ।

सुरभूरुहा—स्त्री० देवदारु । दियार ।

सुरमृत्तिका—स्त्री० सौराष्ट्रीमृत्तिका । सोरठी माटी ।

सुरस—न० त्वच् गन्धतृण. तुलसी (पु) मोचरस (स्त्री)(सा) रास्ना. तुलसी । खाल. खस्स. तुलसी. मोचरस. सेमर का गोंद. रहसनि ।

सुरा—स्त्री० मद्य । मदिरा ।

सुराकर—पु० नारिकेलवृक्ष । नारियल ।

सुरापान—पु० न० सन्धानविशेष ।

सुराभत्—स्त्री० कर्पूरहरिद्रा । कपूर कचरी ।

सुराष्ट्रज—न० तुम्बरिका (पु) कृष्णमुद्ग. विषविशेष (स्त्री)(जा) सौराष्ट्रीमृत्तिका

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तूम्बा. स्याहसूंग. जहर. सोरठी माटी ।
सुरीक्षवा–स्त्री० राजिका । लाही. राई ।
सुरुङ्ग–पु० शोभाञ्जनवृक्ष । सुहांजना ।
सुरूप–न० तूल (स्त्री) (पा) शालपर्णी. सुन्दरीस्त्री । रुई. सरवन. खूबसूरत औरत ।
सुरेज्या–स्त्री० तुलसी । तुलसी ।
सुलभा–स्त्री० माषपर्णी. धूम्रपत्रा. तुलसी । वनउरद. तुलसी ।
सुलेमानी–स्त्री० पिण्डखर्जूरिका । सुलेमानीपिंडखजूर ।
सुलोमसा–स्त्री० काकजङ्घा । मसी. चिकचोहनी का पौधा ।
सुवर्चला–स्त्री० सूर्य्यभक्ता । हुरहुर का पौधा ।
सुवर्चिक–पु० सर्जिकाक्षर. जतुका । सज्जीखार. लाख ।
सुवर्ण–न० स्वर्ण. हरिचन्दन. धन. नागकेशर. कर्ष. (पु) धूस्तर (स्त्री) (र्णा) हरिद्रा. स्वर्णक्षीरी. कृष्णागरु । सोना. सुपेद चन्दन. दौलत. नागकेशर. ८० रत्तीभर. धतूरा. हल्दी. सोनाखीरी. चोक. स्याहअगरु ।
सुवर्णक–न० पित्तल (पु) आरग्वधवृक्ष । पीतल. अमिलतास ।
सुवर्णकदली–स्त्री० कदलीविशेष । चंपाकेला ।
सुवर्णकेतकी–स्त्री० स्वर्णकेतकी । ज़र्द्दकेवड़ा ।
सुवर्णवर्णी–स्त्री० हरिद्रा । हल्दी ।
सुवर्णा–स्त्री० हरिद्रा. कृष्णागरु. स्वर्णक्षीरी । हल्दी. स्याह अगरु. एलुआ. करुआ चोक ।
सुवर्तुल–न० कालिन्दक । कलींदा. हिन्दोना ।
सुवहा–स्त्री० रास्ना. सिन्दुवारवृक्ष. शल्लकी । रहसनि. सम्भालू का पेड़. सालई ।
सुवासरा–स्त्री० चन्द्रसूर[illegible] चन्दसुरु ।
सुवीज–पु० उशीरबीज । ख[illegible] ।
सुवृक्ष–पु० कण्टकी । कण्टाई ।
सुव्रता–स्त्री० गन्धप्रसारणी । गन्धपसारणि
सुशविनू–स्त्री० कारवेल्ला. कृष्णजीरक । करेला. स्याहजीरा ।
सुशाक–न० आर्द्रक (पु) चञ्चु. भिण्डा. तण्डुलीय । अदरक. चचेंड़ा. भिंडी. चौराई ।
सुशीत–न० पीतचन्दन. अतिशीत । ज़र्द्द सन्दल. बड़ी शर्दी ।
सुशीतल–न० लघुत्रपुषी । बालमखीरा. छोटा खीरा ।
सुश्रुत–पु० चिकित्साशास्त्रकर्ता. विश्वामुनिपुत्र । विश्वामित्र का बेटा जिसने इलमतिब को बनाया है ।
सुषणिका–स्त्री० श्यामात्रिवृता । स्याहनिशोथ. स्याह तिउरी ।
सुषिरा–स्त्री० नलिका । पसारी. (खुशबूदार चीज़) ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सुषुम्णा—स्त्री० नाडीविशेष । कंगरोड़के बीच की खास एक रग ।

सुषेण—पु० मरमर्द्दक. वेतसवृक्ष । करौंचा करौंदा. वेत का दरख़्त. (स्त्री)(णी) त्रिवृत्‌ तिउरी. निशोथ. ।

सुष्म—न० रज्जु । रस्सी ।

सुसार—पु० रक्तखदिर(त्रि)अतिसारविशिष्ट(स्त्री)कारवेल्ल। सुरखखैरे. असहाल की बीमारी वाला करेला ।

सुस्वादु—त्रि० मिष्ट । ज़ायकेदार ।

सूक—पु० बाण. वात. उत्पल। तीर. हवा. कमल ।

सूकर—पु० वराह. मृगविशेष. कुम्भकार। सूअर. कुम्हार. खासहरिण ।

सूक्ता—स्त्री०शारिकापक्षी। मैनाचिड़िया।

सूक्ष्मपत्रा—स्त्री० नदीजामुनी । जमुनि का पेड़ ।

सूक्ष्मैला—स्त्री० क्षुद्रैला। छोटी इलायची

सूच—पु० दाभकीमूल (स्त्री) (ची) सुई. कुश की जर ।

सूचक—पु० कुक्कुर. बिड़ाल. काक. सूक्ष्मशालिधान्य । कुत्ता. बिल्ली. कौव्वा एक क़िस्म के जंगली धान ।

सूचिपत्रा—स्त्री० शिरीआरिशाक । सुरुआरि का साग ।

सूचिपुष्प—पु० केतकी । स्वर्णकेतकी ।

सूचिवदन—पु० नकुल. मशक । नेवला. मच्छर ।

सूचीमुख—न० हीरकरत्न। हीरा ।

सूचीपत्र पु० वृक्षभेद । खास पौंड़ा।

सूचीरोमन्—पु० सूकर । सुअर ।

सूच्यग्रा—स्त्री० कुशतृण । कुशा घास ।

सूच्यास्य—पु० मूषिक । मूसा. घूंस ।

सूत—पु० पारद. सूर्य्य. (पु० न०)पारद । पारा. आफ़ताब ।

सूत—पु० पारद. सूर्य्य. (पु०न) पारद । पारा. आफ़ताब ।

सूत्रकण्ठ—पु० विप्र. खञ्जरीट. कपोत । ब्राह्मण. ममोला. कबूतर ।

सूत्रिन्‌—पु० काक । कौव्वा ।

सूनु—पु० पुत्र. अनुज. सूर्य्य. अर्कवृक्ष (स्त्री) (नू) पुत्री । बेटा. छोटाभाई. आफ़ताब. आक का पेड़. बेटी ।

सूप—पु- व्यञ्जनविशेष । दाल ।

सूपाङ्ग—न० हिङ्गू । हीङ्ग ।

सूम— न० क्षीर. आकाश. जल । दूध. आसमान. पानी ।

सूर—पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफ़ताब. आक का पेड़

सूरण—पु० सूरणविशेष । सूरन ।

सूरिन्‌—स्त्री० राजसर्षप । राई. सरसों ।

सूर्प्प—पु० न० शूर्प्प. द्विद्रोणपरिमाण । छाज. ॥५४॥-॥ तौल

सूर्य्य—पु० अर्कपर्ण. दिवामणि । आक-का पात. आफ़ताब ।

सूर्य्यक—पु०तिन्दुकवृक्ष। तेंदू का दरख़्त।

सूर्य्यकान्त—पु० स्फटिक. मणिविशेष. पुष्पवृक्षविशेष । बिल्लौर. आतशी-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शीशा. सूरजमुखी फूलों का पेड़ ।

सूर्य्यपर्णी—स्त्री० मुद्गपर्णी. माषपर्णी । वनमूंग. वनउरद ।

सूर्य्यपर्यायनामक—न० ताम्र । तांबा

सूर्य्यभक्ता—स्त्री० सुवर्च्चलावृक्ष । हुरुहुरु का पौधा ।

सूर्य्या—स्त्री० इन्द्रवारुणी । इन्दोरणि की वेलि. शिम्बीधान्य. छीमी का अनाज ।

सूर्य्यावर्त्ता—स्त्री० सूर्य्यभक्ता । सूर्य्यमुखी का पौधा. हुरुहुरु का पौधा ।

सूर्य्याश्मन्—पु० सूर्य्यकान्तमणि । आतशी शीशा ।

सूल्म—पु० माष । उरद. माह ।

सूल्म—न० कैतव (पु०) कतकवृक्ष (स्त्री) (ल्मा) क्षुद्रैला । छल. निर्मली का पेड़. छोटी इलायची ।

सूल्मपत्र—पु० धन्याक. वनजीरक. देवसर्षप. लघुवदर. वनबर्वरी (स्त्री) (त्रिका) (त्रा) शतपुष्पा. दुरालभा. आकाशमांसी. लघुब्राह्मी । धनिया. वनजीरा. सरसों. झलबेर. बंबई. सौंफ. जवासा. आकाशमांसी. छोटी ब्राह्मी ।

सूल्मपर्णी—स्त्री० रामदूतीवृक्ष ।

सूल्मफला—स्त्री० भूम्यामलकी । भुइंआमला ।

सूक्ष्मैला—स्त्री० क्षुद्रैला । गुजराती इलायची ।

सृक—पु० वाण. पद्म. वायु. स्पृक्का सुगन्धद्रव्य । तीर. कमल. लङ्कोइकपुरी ।

सृक्कन्—न०
सृक्क(क्कि)—न०
सृक्क(क्कि)णी.स्त्री०
सृक्कण (णी)
सृक्कि(णी)न०स्त्री० } ओष्ठद्वय प्रान्त भाग गलफर जवाड़ा ।

सृगाल—पु० जम्बुक (स्त्री) (ली) । गीदड़. गिदड़ी ।

सेकपात्र—न० जलसेचनाधार । बोका. डोल ।

सेकिम—न० मूल । मूली ।

सेट—पु० कालिंदकफल । तरबूज ।

सेतु—पु० वरुणवृक्ष. प्रणव । वरुन का पेड़. ओम् ।

सेधा—स्त्री० स्याहीपशु ।

सेव्य—न० वीरणमूल (पु) अश्वत्थवृक्ष (स्त्री) (व्या) वृन्दा । खसखस. पीपल का पेड़. तुलसी ।

सेव—पु० सवितकाफल । सेबफल ।

सेवकलड्डुका
सेवनमोदका
सेविकमोदिका } स्त्री० सेवकलड्डुका । सेवके लड्डू. मोतीचूर के लड्डू ।

सेहुण्ड—पु० स्नुहीवृक्ष । सेहुंड का पेड़ ।

सैरेय
सैरेयक } पु० श्वेतकुरण्टक । सुपेदकरवैला ।

सैंहली—स्त्री० सिंहपिप्पली ।

सैन्धव—न० लवण विशेष (पु०) घोटक । सेंधा नमक. घोड़ा ।

सैमन्तिक—न० सिन्दूर । सिंधूर. सेंदुर ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शोभाञ्जन–पु० कृष्णशिग्रु । सुहांजने का पेड़ ।

सोम–न० काञ्जिक. (पु०) चन्द्र. कर्पूर. वायु. जल. सोमलतौषधि । कांजी. महताब. कापूर. हवा. पानी. सोमलता ।

सोमक्षीरी–स्त्री० सोमलता ओषधि ।

सोमज–न० दुग्ध (पु०) चन्द्रमा । दूध. चांद ।

सोमराजी–स्त्री० वाकुची । वकुचीबूटी ।

सोमलता–स्त्री० स्वनामख्यात ओषधिविशेष । सोमलता ।

सोमललिता–स्त्री० गुडूची । गिलोय. गुरच ।

सोमवल्क–पु० कटुफर. पूतीत । कायफर. घोराकरञ्जुआ ।

सोमवल्कल–पु० श्वेतखदिर । सुपेदखैर ।

सोमवल्ली–स्त्री० सोमराजी. गुडूचीलता. ब्राह्मी ओषधि. सुदर्शन. सोमलता । वाकुची. गुरच. वरभी. सुदर्शन का पौधा. सोमलता बूटी ।

सोमा–स्त्री० वाकुची । वकुचीदवाई ।

सौगन्धिक–न० गन्धाश्म । (न०) कह्लार. रोहिषतृण । कल्हार. हरद्वारी कुश. गंधक ।

सौवर्ची–स्त्री० पिप्पली । मद्य. पिपली ।

सौपर्ण–न० मरकतमणि । शुण्ठी. सोंठि. पन्ना रत्न ।

सौभाग्य–न० सिन्दूर. टङ्कण । सिंधूर. सोहागा ।

सौमेचक–न० सुवर्ण । सोना ।

सौमेरुक–न० सुवर्ण । सोना ।

सौम्य–पु० उदुम्बर. सोमभूताधिदैवतस्य भावः सौम्यः । (स्त्री०) शालपर्णी । सरिवन. गूलर. सरिवन. शीतभाव ।

सौर–पु० तुम्बुरुफल । तुम्बुरुबीज ।

सौरभ–न० कुङ्कुम । केसर. खुशबू. (पु) तुम्बुरुफल । तुम्बुरुबीज ।

सौरभेय–पु० वृषभ (स्त्री०) (यी) गो । बैल. गाय ।

सौरि–पु० अशनवृक्ष । बिजैसार का पेड़ ।

सौराष्ट्रिक–न० विषविशेष । खासजहर

सौराष्ट्री–स्त्री० सोरठीमट्टी । सोरठीमाटी ।

सौवर्चल–न० चौहारलवण । कालानिमक ।

स्कन्द–पु० पारद । पारा ।

स्कन्ध–अंस । कन्धा ।

स्कन्धज–पु० वटवृक्ष । बर का पेड़ ।

स्कन्धरुह–पु० नारिकेलवृक्ष. वटवृक्ष । नारियल का पेड़. बड़ का पेड़ ।

स्कन्धफला–स्त्री० क्षुद्रखर्जूरिका । छोटी खजूरि ।

स्कन्धशृङ्ग–पु० महिष । भैंसा ।

स्कन्धस्–न० वृक्षमूल. स्कन्ध । बेखदरख्त. कन्धा ।

स्तन–पु० अवयवविशेष । पिस्तान ।

स्तनमुख–पु० स्तनाग्रभाग । चूंची ।

स्तनयित्नु–पु० मेघ. मुस्तक. विद्युत.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मृत्यु. रोग । अबर. मुस्था. नागरमोथा. बिजली. मौत. बीमारी ।

स्तन्य–न० दुग्ध । दूध ।

स्तरी–स्त्री० धूम । धुंआं ।

स्तोक(क) पु० चातकपक्षी. जलबिन्दु । पपीहा. पानी का कतरा ।

स्तोमन–न० मस्तक. शस्य । माथा. अनाज ।

स्तोरम्बन–न० ताम्बूल । पान ।

स्थलपद्म–न० बकुल. कदम्ब । गुलाब. मौलसिरी. कदम ।

स्थावर–पु० एकही स्थान टिकने वाला ।

स्थाली–स्त्री० कटाह । कढ़ाई ।

स्थालीवृक्ष–पु० पिप्पलभेद । वेलियापीपल ।

स्थिर–पु० धातकी (स्त्री) (रा) शालपर्णी. धव के फूल ।

स्थिरायुस्–पु० मोचवृक्ष । सेमरा का पेड़ ।

स्थूल–त्रि० उपचितावयव. (न.) समूह. (पु०) पनस. सहतूतवृक्ष. (स्त्री) (ला) गजपिप्पली. बृहदेला । मोटा. मजमह. कटहर. तूत. गजपीपल. बड़ी इलायची ।

स्थूलकणा–स्त्री० स्थूलजीरक । मोटा जीरा. गजपीपल ।

स्थूलग्रन्थि–स्त्री० वचा । महाभरी बच ।

स्थूलदर्भ–पु० मुञ्ज. कुश । मूंज. कुशा (स्त्री) (भा) मुंज. मूज ।

स्थूलनास–पु० शूकर । सुअर ।

स्थूलपद–पु० कर्प्पास । कपास ।

स्थूलवल्कल–पु० लोध्र । पठानीलोध ।

स्थूलास्य–पु० सर्प्प । सांप ।

स्थूलिन्–पु० उष्ट्र । ऊंट. सुतर ।

स्थूलैला–स्त्री० एलाविशेष । बड़ी इलायची ।

स्थौणेयक–न० ग्रन्थिपर्णभेद । गठिवन का भेद ।

स्नायु–स्त्री० वायुवाहिनी नाड़ी । रग ।

स्नायुर्म्मन्–न० नेत्ररोगविशेष । आंख की बीमारी ।

स्निग्ध–पु० वयस्य. रक्तैरण्ड. सरलवृक्ष. (स्त्री) (ग्धा) मेदा । हमउमर. सुरखएरण्डी. सरल का पेड़ ।

स्नु–पु० सानु (स्त्री) वायुवाहिनी नाड़ी ।

स्नुक्–पु० सेहुण्डवृक्ष । सेहुंड का पेड़ ।

स्नुषा } स्त्री० वृक्षविशेष । सेहुस्नुहि(ही) } ण्ड का पेड़ ।

स्नेह–पु० प्रेम. तैलादिरसविशेष । मुहब्बत. तेल घी वगैरह ।

स्नेहन्–पु० रोगविशेष ।

स्नेहभू–पु० श्लेष्मा । कफ ।

स्परिश–पु० वायु । हवा ।

स्पृक्का–स्त्री० सुगन्धद्रव्यविशेष । लंकोइकपुती ।

स्फटिक–पु० सूर्य्यकान्तमणि । आतशीशीशा ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

स्फटिका
स्फटिकारि (का)
स्फटी } स्त्री० श्वेतवर्णिग्-द्रव्यविशेष। फटकरी।

स्फा(टी)क–पु० स्फटिक(न) जलविन्दु। बिल्लौर. पानी का कतरा।

स्फुतकर–पु० अग्नि। आग।

स्फोट–पु० स्फोटक. फोड़ा. रक्तार्कवृक्ष। लाल आक का पेड़. (स्त्री)(टा) श्वेतशाखि. सुपेद दुधजरु. गोरिआ सांज

स्फोता स्त्री० श्वेतसारिवा। गोरिआ-सांज. सुपेद दुधजरु।

स्मन्तक–पु० कञ्चनारभेद। कचनार की किस्म।

स्मरकूपक–पु०भग(स्त्री)(पिका)योनि भग.

स्मरगृह
स्मरचक्र } न० योनि। भग।

स्यन्दनि–पु० तिनशवृक्ष (स्त्री) (नी) मूत्रनाड़ी।

स्यमन्तक–पु० सूर्यकान्तमणि।

स्यनीक–पु० वृक्षविशेष. वल्मीक। खासपेड़. वल्मी।

स्योनाक–पु० वृक्षविशेष। सोनापाढ़ा।

स्रंसी–स्त्री० पीलुवृक्ष। पीलू का दरखत

स्रवण–न० मूत्र. घर्म्म। मूत. पसीना।

स्रवा–स्त्री० मूर्वा। मुरहरी. चूर्णहार।

स्रोतोञ्जन–पु० अञ्जनविशेष। यमुना के प्रवाह से निकला हुआ सुरमा।

स्वच्छ–न० निर्मलोपरस।

स्वधिति–पु० स्त्री० ठाकुर। कुल्हाड़ी।

स्वरच्छद–पु० भूमीसह। भुईंसहा का पेड़

स्वरमञ्जरी–स्त्री० अपामार्ग। लटजीरा।

स्वरस–पु० कषायविशेष। कूटी दवा का निचोड़ा हुआ रस।

स्वरसा–स्त्री० लाक्षा। लाख।

स्वर्जिका–स्त्री०स्वर्जिकाक्षार। सज्जीखार

स्वर्ण–न० सुवर्ण. धूस्तर. नागकेशर। सोना. धतूरा. नागकेशर।

स्वर्णगैरिक–न० स्वर्णरक्तमृत्तिकाविशेष। सोनागेरू।

स्वर्णजातिका–स्त्री. स्वर्णजाती। जर्द-चम्बेली।

स्वर्णद्रु–पु० आरग्वधवृक्ष। अमिलतास का पेड़।

स्वर्णपाठक–पु० टङ्कण। सोहागा।

स्वर्णपुष्पा–स्त्री० कलिकारी करखेला।

स्वर्णभूषण–पु० व्याधिघातवृक्ष। अमिलतास।

स्वर्णमाक्षिक–न० माक्षिक। सोनामक्खी उपधातु।

स्वर्णवर्णा–स्त्री० हरिद्रा। हल्दी।

स्वर्णवल्ली–स्त्री० आकाशवल्ली। अम्बर-बेलि. अमर बेलि।

स्वर्णाङ्ग–पु० आरग्वधवृक्ष। अमिलता-स का पेड़।

स्वल्पकेशी–स्त्री० कचनारभेद। कचनार की किस्म।

स्वल्पजम्बीरक–पु० क्षुद्रजम्भीर। छोटा जम्भीरीनिम्बू।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

स्वल्पनखी–स्त्री० नखनखीसुगन्धद्रव्य । वघनखी ।

स्वल्पयव–पु० यवशस्य । जौ अनाज ।

स्वस्तिक–पु० शिरीआरिशाक । सुरुआरि का साग ।

स्वस्तिकयन्त्र–न० २४ प्रकार के स्वस्तिक यन्त्र ।

स्वाद्वी–स्त्री० क्षुद्रखर्जूरिका । छोटी खजूर. खजनी ।

स्वादु–पु० मधुररस. गुड़. सुगन्धितद्रव्यविशेष, (स्त्री) द्राक्षा । मज़ादार. एक खुशबू. दाख ।

स्वादुकण्टक–पु० कण्टकी. गोक्षुर । कण्टाई. गुखुरु ।

स्वादुकन्द–पु० विदारीकन्द । गेड़ि. क्षीरविदारी ।

स्वादुपर्णी–स्त्री० दुग्धिका । दूधी का पौधा. दूधिया पौधा ।

स्वादुपुष्प–पु०कटुम्भरा । कटभीका पेड़ ।

स्वादुफला–स्त्री० द्राक्षा । दाख ।

स्वादुमस्तका–स्त्री० क्षुद्रखर्जूरिका । छोटीखजूर ।

स्वादुमूल–न० गर्ज्जर । गाजर ।

स्वादुरसा–स्त्री० काकोली. आम्रातकफल. मदिरा. शतावरी. द्राक्षा । काकोलीबूटी. आम की क़िस्म. शराब. सतावरि. दाख ।

स्वाभाविक–पु० स्वभावेन जातः । कुदरती

स्वेद–पु० घर्म्म. स्वेदन. ऊष्मा. ताप । पसीना. घाम. भाफ ।

स्वेदज–पु० भुवःशरीरस्य च संस्वेदादूष्मणो जाताःस्वेदजाः। पसीने से पैदा हो।

स्वेदनिका–स्त्री० कन्दु. भर्जनपात्र । कढ़ाई ।

(ह)

हंस–पु० पक्षिविशेष. निर्लोभनृप. सूर्य्य. परमात्मा. ।

हंसपदी } –स्त्री० हंसपदी । करैंबू
हंसपादी } साग ।

हक्षि–पु० क्षुत । छींक ।

हट्टविलासिनी–स्त्री० हरिद्रा । हलदी ।

हठी–स्त्री० वृक्षविशेष ।

हड्ड–न० अस्थि । हड्डी ।

हतौजस्–त्रि० दुर्बल (पु) ज्वर । कमजोर. बुखार ।

हनु–पु० स्त्री० कपोलद्वयोपरिभाग (स्त्री) हरिद्रा. रोग नखनखी । जबढ़ा हल्दी. बीमारी. वघनखी. औषध ।

हनुमोक्ष–पु० हड्डीकीसंधिविघटितहो ।

हन्तु–पु० मृत्यु. वृष । मौत. बैल ।

हवि–न० घृत । घी ।

हवषा–स्त्री० हौहवेर. यह दो प्रकार का होता है एक मच्छली के सदृश फल. मांस की सी गंध. दूसरा पीपल के फल के सदृश मच्छली की सी गन्ध वाला होता है ।

हय–पु० घोटक । घोड़ा ।

हयपुच्छिका–स्त्री० माषपर्णी । वनउर्दी

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh, Funding by IKS-MoE

हयाह्वया–स्त्री० अश्वगन्ध । असगन्ध ।
हरण–न० यौतकादिदेयद्रव्य: भुज. शुक्र स्वर्ण. कपर्द्दक. उष्णोदक. भागग्रहण. (पु०) हस्त । दहेज़. बाजू. लुतफ़ह. ज़र.कौड़ी.गरमपानी. तक्सीम. हाथ।
हरताल–न० हरताल। उपधातु हरताल
हरविग्रहा–स्त्री० यासक । जवासा ।
हरि–पु० विष्णु. सिंह. शुक: सर्प्प. वानर. भेक. चन्द्र. सूर्य्य. वायु. अश्व. यम. शिव. ब्रह्मा. किरण. इन्द्र. म-.... कोकिल. हंस. अग्नि. हरिद्वर्ण। शेर.तोता. सांप. वन्दर. मेढ़क.चांद. हवा. घोड़ा. शुआ. मोर. कोइल. आतिश. जर्द्दरंग।
हरिक–घोटकविशेष । मुशकी घोड़ा ।
हरिचन्दन–न० पीतचन्दन । कलब. जर्द्दसन्दल ।
हरिण–पु० मृग । हाहू ।
हरित(त्)–पु० हरिद्वर्ण. सिंह. (स्त्री) (ता) दूर्वा. हरिद्रा. नीलदूर्वा । हरासा. सब्जदूब. हल्दी ।
हरिताल(क)–न० पीतवर्णधातुविशेष । हरताल ।
हरिताल–न० हड़ताल ।
हरिदश्व–पु० सूर्य्य. अर्कवृक्ष । आफ़ताब. आक का पेड़. मदारे का पेड़।
हरिद्रा–स्त्री० हट्टविलासिनी । हल्दी ।
हरिद्रु–पु० वृक्षविशेष. दारुहरिद्रा । दारुहल्दी ।

हरिमणि–पु० मरकतमणि । पन्नारत्न ।
हरिप्रिय–न० पीतचन्दन. (न०) कक्कचन्दन. (स्त्री०) (या) तुलसी । कलम्बक. स्याहसन्दल. तुलसी का पौधा
हरिबालुक–न० एलावालुक । एलुआ ।
हरिमन्थ(क)–पु० चणक । चना. छोला. लहिला ।
हरीतकी–स्त्री० अभया । हरीड़. हर्र ।
हरीसा–स्त्री० पक्कमांसभेद । आसा. पके गोश्त की क़िस्म ।
हरेणुक–पु० कलाय । केराव. मटर ।
हरेणुका–स्त्री० रेणुका सुगन्धद्रव्य । रेणुका. खुशबूदार चीज़ ।
हर्म्मन्–न० जृम्भण । जिम्भाई ।
हर्म्मुट–पु० सूर्य्य. कच्छप । आफ़ताब. कछुआ ।
हर्षयित्नु–पु० पुत्र(न) स्वर्ण। बेटा. सोना
हलद्दी–स्त्री० हरिद्रा । हल्दी ।
हल्लक–न० कल्हार । नीलकमल ।
हलिनी–स्त्री० लाङ्गली उपविष। करिहारी. बरियारी ।
हलिप्रिय–पु० कदम्बवृक्ष। कदम का पेड़
हलीमक–पु० पाण्डुरोग । क्यांवर की बीमारी ।
हविष्य–न० घृत । घी. चावल ।
हव्यवाह(न) } पु० अग्नि । आग ।
हव्याश(न) }
हसन्तिका–स्त्री० अंगीठी ।
हस्त–पु० कर । हाथ ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

हस्तालुक–न० हस्तालुकन्द । अरारू ।
हस्तिकन्द–पु० बृहत्कन्दविशेष । बड़ा कन्द. पेड़ारू ।
हस्तिकक्ष्य–पु० सिंह. व्याघ्र । शेर. बाघ ।
हस्तिघोषा स्त्री० नेनुआ ।
हस्तिनीदुग्ध न० हथिनी का दूध ।
हस्तिपर्ण–पु० हस्तिघोषा । नेनुआ ।
हस्तिवारुणी–स्त्री० कञ्जीवृक्ष । अरारि. कञ्जी ।
हहल–न० गरलविशेष । एकखास ज़हर ।
हार–पु० मत्स्यविशेष । तेंदुआ ।
हाटक–न० स्वर्ण. धूस्तर. । सोना. धत्तूरा
हान्द्र–न० मरण । मौत. मरना ।
हापुत्री(त्रिका)–स्त्री० ममोला ।
हायन–पु० ठंढकालीधान ।
हारहूरा–स्त्री० गोस्तनी । मुनक्का ।
हारिकण्ठ–पु० कोकिल । कोइल ।
हारिद्र–पु० विषविशेष । खास ज़हर ।
हारी–स्त्री० मुक्ताफल । मोती ।
हारीत–पु० पक्षिविशेष । हरिलचिड़िया
हार्य्य–पु० बिभीतकवृक्ष । बहेड़े का पेड़
हाला–स्त्री० मद्य. तालरस । शराब. ताड़ी ।
हालाहल–न० विषविशेष(स्त्री) (ली) मद्यविशेष । खास ज़हर. तारी ।
हालु–पु० दन्त । दान्त ।
हिंस्रा–स्त्री० जटामांसी । जटामासी ।
हिक्का–स्त्री० रागोपसर्गविशेष । हिचकी
हिङ्गु–न० रामठ । हीङ्ग ।
हिङ्गुनिर्य्यास–पु० निम्ब । नीम ।
हिङ्गुपत्री–स्त्री० हिङ्गुआ ।
हिङ्गुल(लि)–पु० न० रागद्रव्यविशेष । शिङ्गरफ़. ईंगुर ।
हिङ्गुली स्त्री० बृहती । वरहण्ट. बड़ी भटकटैया ।

हिङ्गुशिवा–स्त्री० वंशपत्री । बांसपाती ।
हिण्जल–पु० समुद्रफेन । सामुन्दरीझाग ।
हिण्डिर–पु० समुद्रफेन । समुन्दरझाग ।
हिण्डीर–पु० समुद्रफेन. वार्त्ताकु । समुंदरझाग । बैंगन. भांटा ।
हिम–त्रि० शीतगुणविशिष्ट(न) आकाशवाष्प. चन्दन. मौक्तिक. नवनीतः(पु) चन्दनवृक्षः. चन्द्रकर्पूरः । हेमन्तऋतु (स्त्री) (मा) गन्धद्रव्यविशेष । सर्द्द. बरफ़. संदल. मोती. मक्खन. सन्दल का पेड़. चांद. काफ़ूर. सर्द्दमौसिम ।
हिमकर–पु० कर्पूर. चन्द्र । काफ़ूर. चांद ।
हिमवालुक } पु० कर्पूर । काफ़ूर ।
हिमनाम } ”
हिमांशु–पु० चन्द्र. कर्पूर । चांद. काफ़ूर.
हिमावती–स्त्री० चुक्र । चूक. चोक ।
हिरण्य–न० स्वर्ण वराट. अकूप्य. तरज धन (पु) गुग्गुलु । सोना. कौड़ी चांदी दौलत. गुग्गुलु. गूगर ।
हिरण्यरेतस्–पु० अग्नि. चित्रक । आग चित्रा. चीता का पौधा ।
हिलमोचिका–स्त्री० सूर्य्यभक्ता । हुरहुर ।
हिल्ल–पु० शरारीपक्षी । टटिहरी ।
हीहिविद–पु० ओदन । पके चावल. भात ।
हीरक–पु० रत्नविशेष । हीरा ।
हीरा–स्त्री० काश्मरी । खम्भारि ।
हील–न० शुक्र । नुतफ़ह ।
हुड्डी–स्त्री० मेढ़ा ।
हुतभुज्–पु० अग्नि. चित्रकवृक्ष । आग चीता ।
हुतवह, हुताश, हुताशन } –पु० अग्नि । आग. आतिश. चीता ।
हृद्य–न० गुड़त्वच् (स्त्री)(द्या) वृद्धिना-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मकौषधि । दालचीनी ।

हृद्रोग–पु० हृदयपीड़ा । छाती की बीमारी ।

हृल्लास } –पु० हिक्का । हिचकी ।
हेक्का } –स्त्री०

हेतु–स्त्री० महाशतावरी । बड़ीशतावरी

हेम–न० स्वर्ण. धूस्तर (पु) माषकपरिमाण । सोना. धत्तूरा. माषाभर तौल ।

हेमकन्दल–पु० प्रवाल । मूंगा ।

हेमक्षीरी–स्त्री० चुक्र । चूक ।

हेमगौर–पु० किकिरात ।

हेम[illegible]–न० तुत्थक । तूतिया. नीलाथोथा

हेमदुग्ध–पु० उदुम्बरवृक्ष । गूलर का पेड़ ।

हेमन्त–पु० न० ऋतुविशेष । जाड़े का मोसिम ।

हेमपुष्प(क)–पु० चम्पकपुष्प. लोध्र. अशोक । चम्पे का फूल. लोध का दरखत. अशोक का पेड़ ।

हेमबल–पु० मौक्तिक । मोती ।

हेमाह्वा–स्त्री० चुक्र । चूक. करुआ की जड़

हैम–पु० भूनिम्ब (स्त्री)(मि) पीतचम्पक । चिरायता. जर्द्दचम्पा की वेल ।

हैमजल–न० प्रातर्हिमोद्भवजल । शबनम. ओस ।

हैमवती–स्त्री० हरीतकी. चुक्र । हरीड़. खुरासानी वच. चूक. चोक ।

हैयङ्गवीन–न० नवनीत । ताज़ामक्खन. नेनू ।

होत्र–न० घृत । घी ।

होमि–पु० अग्नि. घृत. जल । आग. घी. पानी ।

हौम्य–न० घृत (त्रि) होमीयद्रव्य । घी. होम की चीज़ ।

होलक–पु० हूारा । होरहा ।

हौस्य–न० घृत (त्रि) होमीयद्रव्य । होम की चीज. घी ।

ह्रस्व–न० परिमाणविशेष (स्त्री) (स्वा) मुद्गपर्णी. नागवला. भूमिजम्बु । एकपैमाना. वनमूंग. गुरशंकरी. भूमिजामुनी ।

ह्रस्वाङ्ग–पु० जीवकौषधि । जीवक ।

ह्रीवेर–पु० वालक । सुगन्धवाला ।

ह्लाद } –पु० आह्लाद । खुशी ।
ह्लादन }

गुणनिगमनवेन्दौ वैक्रमेऽब्देऽर्कजेन्हि,
सितदलजदशम्यां सत्तपस्येर्हणीयम् ।
द्विनिगमपुरि गङ्गाप्राक्प्रसादो द्विजाग्र्यो,
व्यरचयदिह पाण्डेयोपदः कोषमेतम् ॥ १ ॥

इति श्रीमच्चिकित्सकवर्य्य पाण्डेयोपपदगुरुदीनलालशर्म्मसूनुविद्वद्वरश्रीयुतगङ्गाप्रसादशर्म्मविरचित आयुर्वेदशब्दार्णवाख्यः कोषः समाप्तिमगात् ॥

ओ३म्–शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection.

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सदा के लिये मूल्य घटा दिया ॥

मनुस्मृतिभाष्य की भूमिका २) से १॥) पुस्तक रायल पुष्ट कागज़ में ३६४ पेज का छपा है । डाकव्यय =)॥ ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय ये ७ उपनिषद् सरल संस्कृत तथा देवनागरी भाषा में टीका लिखी गयी है कि जो कोई एक बार भी इस को नमूना (उदाहरण) मात्र देखता है उस का चित्त अवश्य गड़ जाता है । ३॥) से ३) ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ये छः उपनिषद् छोटे गुटकाकार में बहुत शुद्ध मूल भी छपे हैं मूल्य =) तैत्तिरीय ऐतरेय, श्वेताश्वतर, और मैत्र्युपनिषद् ये चार उपनिषद् द्वितीय गुटका में बहुत शुद्ध तथा दर्शनीय छापे गये हैं मूल्य ≡) गणरत्नमहोदधिः २) से १॥) आर्यसिद्धान्त ६० अङ्क ३) ७२ अङ्क का ३॥।) ऐतिहासिक निरीक्षण ≡) ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दु परागे प्रथमोंशः -)॥ द्वितीयोंशः -)॥। विवाहव्यवस्था =) तीर्थविषय -)॥ द्वैताद्वैतसंवाद -)॥ सद्विचारनिर्णय =) ब्राह्मनमतपरीक्षा ≡) अष्टाध्यायी मूल ≡) न्यायदर्शनमूलसूत्रपाठ ≡) कुमारी-भूषण -) देवनागरी की वर्णमाला)। यज्ञोपवीतशङ्कासमाधि -) संस्कृतप्रवेशिका =)॥ संस्कृत का प्रथम पुस्तक)॥। द्वितीय पुस्तक -)। तृतीय पुस्तक ≡) नवरत्नभूषण =) गणितारम्भ =)॥ विदुरनीति मूल =) जीवसान्तविवेक -) भर्तृहरिनीतिशतक भाषाटीका ≡) चाणक्यनीति मूल ॥) पाखण्डमतकुठार ≡) जीवनयात्रा ≡) किरानीलीला-वेश्यालीला)॥। नीतिसार =)॥ द्वितीयपुस्तक ।) शास्त्रार्थखुर्जा -) शास्त्रार्थकिराणा =) भजनामृतसरोवर =)॥ सत्यसंगीत)। उपदेशभजनावली)। सदुपदेश)। भजनेन्दु -) वनिताविनोद =) संगीतरत्नाकर =) सत्यार्थप्रकाश २) भूमिका २॥) पञ्चमहायज्ञ ≡)॥ आर्याभिविनय ।) निघण्टु ।=) धातुपाठ ।=) गणपाठ ।-) संस्कारविधि १।) निरुक्त १) सीताचरित्र नाविल प्र० भाग ॥=) वर्णोच्चारणशिक्षा -) नारीसुदशाप्रवर्त्तक ४ भाग १)

आर्यसमाज के नियम ≡)। सैकड़ा २) हज़ार अच्छे कागज़ पर । वा निकृष्ट कागज़ पर =)॥। सैकड़ा १॥।) हज़ार व्याख्यान देने का सामान्य विज्ञापन जिस में चार जगह खाना पूरी कर लेने पर सब का काम निकलता है मूल्य प्रति सैकड़ा =), हज़ार का १।) डांक महसूल सब का मूल्य से पृथक् लिया जायगा ॥

भीमसेन शर्मा सम्पादक आर्यसिद्धान्त

सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Bhakta Ram Sharma Lahore

ओ३म्

"आयुर्वेदशब्दार्णव" वैद्यक कोष जिन्हों ने प्रथम से ग्राहक होने को पत्र भेज दिये थे उन को तथा जून जुलाई अगस्त ९५ तक लेने वालों को ॥।) पर मिलेगा पश्चात् १) पर मिलेगा ॥

ग्राहकों को शीघ्रता करनी चाहिये इन ३ मास के भीतर मंगालेवें अन्यथा जैसे उपनिषदों का २॥) मूल्य किया था उस अवधि में न मंगा कर पीछे लोगों की चिट्ठियां आईं कि २॥) में दीजिये परन्तु अब ३) से न्यून में नहीं पा सके ऐसे ही आर्य्यसिद्धान्त, ६० अङ्क, मनुभूमिका, गणरत्नमहोदधि के लेने वालों को अब पछताना पड़ता है । परन्तु उन के सन्तोषार्थ अब भी कुछ न्यूनता मूल्य में सदा के लिये की है देखो विज्ञापन दूसरे पृष्ठ का सूचीपत्र ॥

प्रबन्धकर्त्ता सरस्वतीयन्त्रालय-प्रयाग

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C). Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Om

Bhakta Ram Sharma Lahore

ओ३म्

भक्तरामशर्मा

This Book belongs to Bhakta Ram Sharma

Lahore

29-[illegible]-19[illegible]

Bhakta Ram Sharma Vaidya

Kucha Daibhol Lahore

BRS

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Bhikha Ram Sharma

श्रीः ।

नाडीदर्पणः ।

पाठकज्ञातीयमाथुरश्रीकृष्णलालतनयदत्तरामेण

सङ्कलितः स्वकृतभाषाटीकाविभूषितः संशोधितश्च ।

स च

श्रीकृष्णदासात्मज गङ्गाविष्णुना

स्वकीये

लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर

मुद्रायन्त्रालयेऽङ्कितम् ।

कल्याण—(मुम्बई)

संवत् १९५० शके १८१५

अस्य ग्रन्थस्य पुनर्मुद्रणाद्याधिकारः १८६७ तमाब्दिकराजनियमानुसारेण प्रकाशकाधीनः ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नाड़ी विज्ञान

ओ३म्

यद् क्रोमपः पञ्च संख्या गतेभ्यो, वेद जानात्वरगंगजः स्नाम
१ रूपाः । सायुर्वेदः ऽथर्ववेदस्य तस्मिन्, आत्मांश मग्नौ श्रीकाणादस्याम्
आत्रेयः पञ्चमो वैद्यकस्योः, वेत्ताकश्चित् तत्र नारेशमहेश्वरः
२ तस्माद्ध्यानाऽऽनेक तस्माद् गुरावाक् तस्मात् स्वात्वा तत्कुमाहो विश्वासम्

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

१ श्रीमद्गोस्वामितुलसीदासकृत रामायण (सटीक)

पंडित-ज्वालाप्रसादकृतटीका।

लीजिये रामायण सटीकभी लीजिये असल पुस्तक श्रीगुसाईंजीकी लिपिके अनुसार व सम्पूर्ण क्षेपकों सहित जिसमें शंका समाधान अद्यपर्य्यंत विस्तारपूर्वक लिखें हैं इसके टीकाकी रचना ऐसी उत्तम और अपूर्व मनभावन सुखउपजावन रामयशपावन है कि, पढते २ कदापि तृप्ति नहीं होती तुलसीदासजीका जीवनचरित्र रामवनवास तिथिपत्रं माहात्म्यभी सम्मिलितहै कीमत ८ रु० डाकमहसूल २ रु०

२ रामायण बडा।

सहित श्लोकार्थ गूढार्थ छन्दार्थ स्तुत्यर्थ शंकासमाधान और तुलसीदासजीका जीवनचरित, रामवनवासतिथिपत्र, रामाश्वमेध लवकुशकाण्ड, माहात्म्य और बरवारामायणके जिस्में पंचीकरणका बडा नक्शा और ३८०० कठिन २ शब्दोंके अर्थ लिखेहैं अक्षर अत्यंत मोटा ग्लेजकागजका की० ६रु०रफ् कागजका४रु०

३ रामायण मझोला।

ऊपरके सब अलंकारोंसहित इसका सांचा छोटा है अक्षर सामान्यहै कीमत २॥ रु० रफ् १॥। रु.

४ रामायण गुटका।

यहभी पूर्वोक्त सब अलंकारोंसे पूरितहै साधु तथा देशाटनकरनेवालोंको अत्यंत उपयोगीहै कीमत बहुतही थोडी केवल१रु०है.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शाक्तप्रमोद ।

दशमहाविद्याओंका और पञ्चदेवोंका पञ्चांग ।

सम्पूर्ण भारतनिवासि द्विजोत्तमोंपर विदित हो कि, यह अलभ्य क्लिष्टतासे प्राप्त परमगुप्त अत्युत्तम नवीन ग्रंथ हमारे यहां छपा है इसमें आदिशक्ति जगन्माताके दशोस्वरूप अर्थात् काली, तारा, त्रिपुरसुंदरी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुरभैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी, कमलात्मिका, तथा पंच देवता दुर्गा, शिव, गणेश, सूर्य, विष्णु, और वेदोक्त, शास्त्रोक्त मंत्रोक्त, तंत्रोक्त, विस्तारपूर्वक लिखीहै जिनके चित्र (स्तबीरें) भी फोटूग्राफानुसार यथावत् खींचीगईहैं इस ग्रंथका मूल्य ५ मुद्रा.

मनुस्मृतिः ।

सान्वय अत्युत्तम सरल हिंदिभाषाटीकासहित छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुतहै ऐसा उत्तम ग्रंथ अद्यावधिपर्य्यंत कहीं नहीं छपाथा भारतवर्षके राजा महाराजा तथा विप्रगण ऋषीके अनुसार राजनीति और प्रजापालन धर्मशासन करते हैं यहाँतक कि श्रीमन्महाराज अंग्रेज बहादूरभी इसका अवलम्ब लेते हैं यहग्रंथ परमसुंदर मोटे टैप् और जाडे विलायती कागजपर छपाहै की. ३ रु०

श्रीमद्भागवत संस्कृत तथा भाषाटीका सहित ।

श्रीवेदव्यासप्रणीत श्रीमद्भागवत अठारहों पुराणोंमेसें श्रीमद्भागवत सबसे कठिनहै और इसका प्रचार भारतखण्डमें सबसे अधिक है यह ग्रंथ क्लिष्टताके कारण सर्व साधारण लोगोंको टीका होनेपरभी अच्छीरीतीसे समझना कठिनथा कोई २ स्थलमें बडे २ पण्डितोंकी बुद्धि चक्करमें उडजातीथी इसलिये विनासंस्कृत पढे सर्व साधारण पण्डित व स्वल्पविद्या जाननेवाले भगवत्भक्तोंके लाभार्थ संस्कृतमूल अतिप्रिय ब्रजभाषाटीका सहित जोकि हिन्दी भाषाओंमे शिरोमणि और माननीयहै उसी भाषामें टीका बनवाकर प्रथमावृत्ती छपायाथा ओ श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकंदकी कृपाकटाक्षसें बहुतही जल्दी हाथोंहाथ बिकगई अब इस्की द्वितीयावृत्ती प्रथमावृत्तीकी अपेक्षा अच्छीतरह शुद्ध करवाके मोटे अक्षरमें छपायाहै और संबंधित कथाओंके शिवाय उत्तमोत्तम भक्तिज्ञानमार्गी १०० अतीव मनोहरदृष्टांत दिये हैं कि जिनके श्रवणसे श्रोताओंका मन भावनानुसार मग्न होजाता है कागज विलायती बढियां लगायाहै माहात्म्यषष्ठाध्यायी भाषाटीका सहित इस्के साथही है प्रथमावृत्तीमें मूल्य १५ रुपयाथा इस आवृत्तीमें केवल १२ बाराही रुपया रक्खाहै ज्यादा प्रशंसा बाहुमूल्यमात्रहै (दोहा) एकघडी आधीघडी, ताहूकी पुनिआध ॥ नेमसहित जो नितपढे, कटैकोटि अपराध ॥ १ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C). Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

श्रीः ।

नाडीदर्पणस्यानुक्रमणिका ।

विषय	पत्र
मंगलाचरण	१
वाग्भट	२
रोगोंके आठस्थान	,,
वैद्योंके सुखार्थ ग्रंथनिर्माण	,,
नाडीको मुख्यतत्व	,,
नाडीज्ञानकी आवश्यकता	३
नाडीज्ञानविना वैद्यकी अप्रतिष्ठा....	,,
नाडीज्ञानाविना वैद्यको अधमत्व....	,,
सर्व रोगमें प्रथम नाडी देखना	,,
नाडी ज्ञानके विना धन धर्म और यशकी अप्राप्ति	,,
नाडी मूत्रादि ज्ञानके पश्चात् औषध देना	४
नाडी देखनेमें वीणा तन्तुका दृष्टांत	,,
नाडी ज्ञानविना निदानद्वारा रोग निर्णय कर्त्ता वैद्यको अधमत्व	,,
निदान और नाडीके लक्षण मिलाकर चिकित्सा करनेकी आज्ञा	,,
वैद्यके प्रति आज्ञा	,,
नाडीपरीक्षाकथन	,,
नाडीज्ञानकी परिपाटी	५
नाडीज्ञानकी उत्कृष्टता	,,
नाडीदर्पण पढनेका कारण	,,
परीक्षाको मुख्यत्व	,,
नाडीपरीक्षामें अभ्यासकारण	,,
योगाभ्यासके तुल्य नाडीज्ञानकथन	६

विषय	पत्र
जल स्थल जीवोंकी गतिके अनुसार नाडीकी गति परीक्षणीय	६
सद्गुरुद्वारा नाडीकी गति पठनीय....	,,
नाडीको कालपरत्व विलक्षणता	,,
वैराग्य और स्वस्थावस्थामें नाडीको विलक्षणत्व	७
नाडीकी अवस्था सर्वदा ज्ञातव्यत्व	,,
नाडीके स्पन्दनका कारण	,,
नाडीके नाम	८
नाडीके भेद	,,
सुषुम्ना नाडीका वर्णन	९
नाभिमें गोपुच्छसमान नाडीयोंका कथन	,,
साडेतीनकरोड नाडी	,,
नाडियोंके साडेतीनकरोड मुख	,,
तिनमें एकहजार और बहत्तर स्थूल नाडी	,,
सातसौ नाडी और उनके कर्म	,,
यह देह नाडीयोंसैं मृदंगके तुल्य मढाहे	१०
चोवीस नाडियोंको मुख्यत्व	,,
देहधारियोंके कूर्मकी स्थिति और धमनी नाडियोंकी गणना	,,
स्त्रीके वामभागकी और पुरुषोंके दक्षिणभागकी नाडी देखना....	११
छः नाडी द्रष्टव्य....	,,
नाभि आदिकी नाडी देखना	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C.), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सोलह नाडीन्के देखनेकी आज्ञा.... १२
कंठनाडी .... ,,
नासानाडी .... ,,
उक्तनाडियोंका प्रमाण .... ,,
जीवको नाडीके आधीनत्व कथन १३
परीक्षणीय .... ,,
नाडीज्ञानका समय .... ,,
निषिद्ध काल .... ,,
नाडी देखनेयोग्य वैद्य १४
मूढ वैद्य .... ,,
नाडी देखनेयोग्य रोगी .... ,,
नाडी दर्शनमें अयोग्य १५
परीक्षा प्रकार .... ,,
दूसरा प्रकार १६
जीवनाडी .... ,,
स्त्रियोंके वामहाथ पैरकी और पुरुषोंके दहनेहाथ पैरकी नाडी रत्नके समान परीक्षा करे .... ,,
अंगुष्ठमूलकी नाडी परीक्षणीयहै १७
स्वस्थप्राणीकी नाडीपरीक्षा .... ,,
स्पर्शनादिको मुख्यत्व होनेसैं उनका वर्णन .... ,,
गुरुद्वारा नाडीके परीक्षाका प्रकार १८
शास्त्र और पवनप्रवाहके अनुसार तथा गुरूकी आज्ञानुसार नाडी परीक्षा .... ,,
त्रिवार नाडीपरीक्षा करनेकी आज्ञा ,,
तीन उंगलियोंसैं नाडी परीक्षाका क्रम .... ,,
रोगरहित मनुष्यकी नाडी .... ,,
नाडीके देवता १९
नाडीन्के वर्ण .... ,,
नाडीन्का स्पर्श .... ,,
कालपरत्व नाडीकी गति .... ,,
वातादि स्वभावक्रम १९
उक्तश्लोकका विरोधी वचन २०
नाडीचक्र.... .... ,,
उक्तश्लोकका पुष्टिकर्त्ता दृष्टांत ... २१
ग्रंथकारका मत .... ,,
वादातिकोंकी क्रमसैं गति २४
वातादिकोंकी विशेष गति .... ,,
द्वंद्वज नाडीकी चाल .... ,,
प्रकारान्तर २५
त्रिदोषकी नाडी २६
सामान्यतापूर्वक सुखसाध्यत्व .... ,,
असाध्यत्व .... ,,
असाध्यत्वमें प्रमाणान्तर.... .... ,,
असाध्य नाडीका परिहार.... .... २८
प्रसंगवश कालनिर्णय २९
मासांतमें मरणकी नाडी .... ,,
सातदिवसमृत्यु ज्ञान .... ,,
चतुर्थदिवस मृत्युज्ञान .... ,,
तृतीयदिवस मृत्युज्ञान ३०
एकदिवसमें मृत्यु.... .... ,,
तथा .... ,,
असाध्य नाडी .... ,,
द्वितीयदिवस मृत्युका ज्ञान .... ,,
सप्तरात्रिमें रोगीकी मृत्युका ज्ञान ,,
एकपक्षमें मरणका ज्ञान ३१
त्रिरात्रि जीवनका ज्ञान .... ,,
नाडीद्वारा अन्य असाध्य लक्षण .... ,,
एकप्रहरमें मृत्युका ज्ञान.... .... ,,
द्वितीयदिन मृत्युका ज्ञान ३२
बारेप्रहरमें मृत्युका ज्ञान.... .... ,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ज्वालावधि जीवनका ज्ञान	,,
अर्द्धप्रहरमें मृत्यु....	,,
एक प्रहरमें मृत्यु....	,,
तीसरे दिन मृत्यु	,,
पंचमदिवस मृत्यु....	३३
नाडीद्वारा आयुका ज्ञान....	,,
नाडीद्वारा भोजनका ज्ञान	,,
नाडीद्वारा रसोंका ज्ञान	३४
मांसादि लक्षणकी नाडी	३५
उपवास और संभोगकी नाडी	,,
कुपथ्यवस नाडीकी चाल....	,,
ज्वरके पूर्वरूपमें नाडीकी चाल	,,
ज्वरके रूपमें	३६
वातज्वरमें	,,
पित्तज्वरमें	,,
कफज्वरमें	,,
द्वंद्वज नाडीकी गति	३७
रुधिरकोपजा नाडी	,,
आगंतुक रूपभेद	,,
तथा विषमज्वरमें	,,
ज्वर उद्वेग क्रोध काममें नाडीकी गति	३८
प्रसंगवसव्यायाम भ्रमणादिकी नाडी	,,
पक्काजीर्ण रुधिरपूर्ण और आमवातकी नाडी....	,,
दीप्ताग्नि मंदाग्नि क्षीणधातु और नष्ट अग्निमें नाडीकी गति	३९
ग्रहणीरोगे	,,
ग्रहणी अतिसार विलंबिका और अतिसार रोगमें नाडीकी गति	,,
विषूचिकाज्ञान	,,
आनाहमूत्रकृच्छ्रमें	,,
शूलरोगमें	४०
प्रमेहरोगमें	,,
विषविष्टंभगुल्मज्ञान	,,
गुल्मरोगमें	,,
भगंदररोगमें	,,
वान्तादि ज्ञान	४१
नाडीस्पन्दन संख्या	४१
प्राण फल दंड आदि संज्ञा	४२
मतांतरसैं स्पन्दन संज्ञा	,,
नाडीस्पन्दनमें कारण	४३
अति क्षीणनाडीका कारण	४४
तेजपुंजादि नाडीकी गति	,,
चंचला और तेजपुंजा गति	,,
दुर्बला और क्षीण नाडी....	,,
सुखीपुरुषकी नाडी	,,
युक्ति और अनुमानादिद्वारा नाडीको जानना	४५
नाडी दर्शनानंतर हस्तप्रक्षालन....	,,
तथाच	,,

यूनानीमतानुसार नाडीपरीक्षा.

हयवानी नप्सानी नाडी....	४६
सुरियान् नाडी	,,
असव नाडी	,,
चार उंगलियोंसैं नाडी परीक्षण....	४७
नाडीकी गिजाली गति	,,
मौजी गति	,,
दूष्टि गति	,,
उमली गति	,,
मिन्शार गति	४८
जन्वल्फार गति....	,,
माली गति	,,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

जुल्फिकरत् गति....	,,
मुर्त्तइद गति सौदावी	,,
मुर्त्तइस (सौदासफरा विशिष्ट) नाडी	४९
मुस्तिला गति	,,
मुनूखफिज गति....	,,
शाहक् बुलन्द गति	,,
दराज और तवील गति....	,,
कसीर अमीक और अरीज गति	४९
गल्वे कसूर अरखात	,,
वाकियुत्वस्त नाडी	५०
यूनानीमतानुसार नाडीचक्र	,,
नब्ज कहनेका कारण	,,
नाडी देखनेके नियम	५१
इम्वसात और इन्कि वाजगतियोंका वर्णन और चक्र	,,
खिल्त वर्णन	,,
प्रत्येक दोषमें दो दो गुण	,,
चक्रद्वारा इम्वसातके भेद	५२
दूसरा चक्र	,,
कुतर अर्थात् प्रस्तार	,,
नाडीन्का प्रस्तार चक्र	,,
अथैंग्लंडीयमतेन नाडीपरीक्षा.	
पल्ससंज्ञा और उसका भेद	,,
उठने बैठने आदिमें नाडीका विचार	५५
अफीम आदि उष्णभोजनमें नाडीकी गति	,,
नाडी देखनेकी विधि	,,
आरोग्यावस्थाकी नाडी	५७
अवस्थानुसार नाडीगतिचक्र	,,
रोगावस्थाकी नाडी	५८
इंग्रजी संज्ञा.	
फ्रीक्वैंट गति	,,
इन् फ्रीक्वैंट गति	,,
रेग्यूलर गति	,,
इर्रेग्यूलर गति	,,
इन्टरमिटेंट गति....	५९
लार्ज्गति....	,,
इस्माल गति	,,
थ्रेडीपल्स गति	,,
हार्ड गति	,,
साफ्ट गति	,,
क्वीक गति	,,
स्लो गति	६०
नाडीदर्शक यंत्र अर्थात् स्फिग्मोग्राफका वर्णन	,,
स्फिग्मोग्राफ लगानेकी विधि	६१
डाक्टरी मतानुसार नाडीचक्रम्	,,

इति नाडीदर्पण विषयानुक्रमणिका समाप्ता.

पुस्तकमिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना

कल्याण—मुम्बई.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

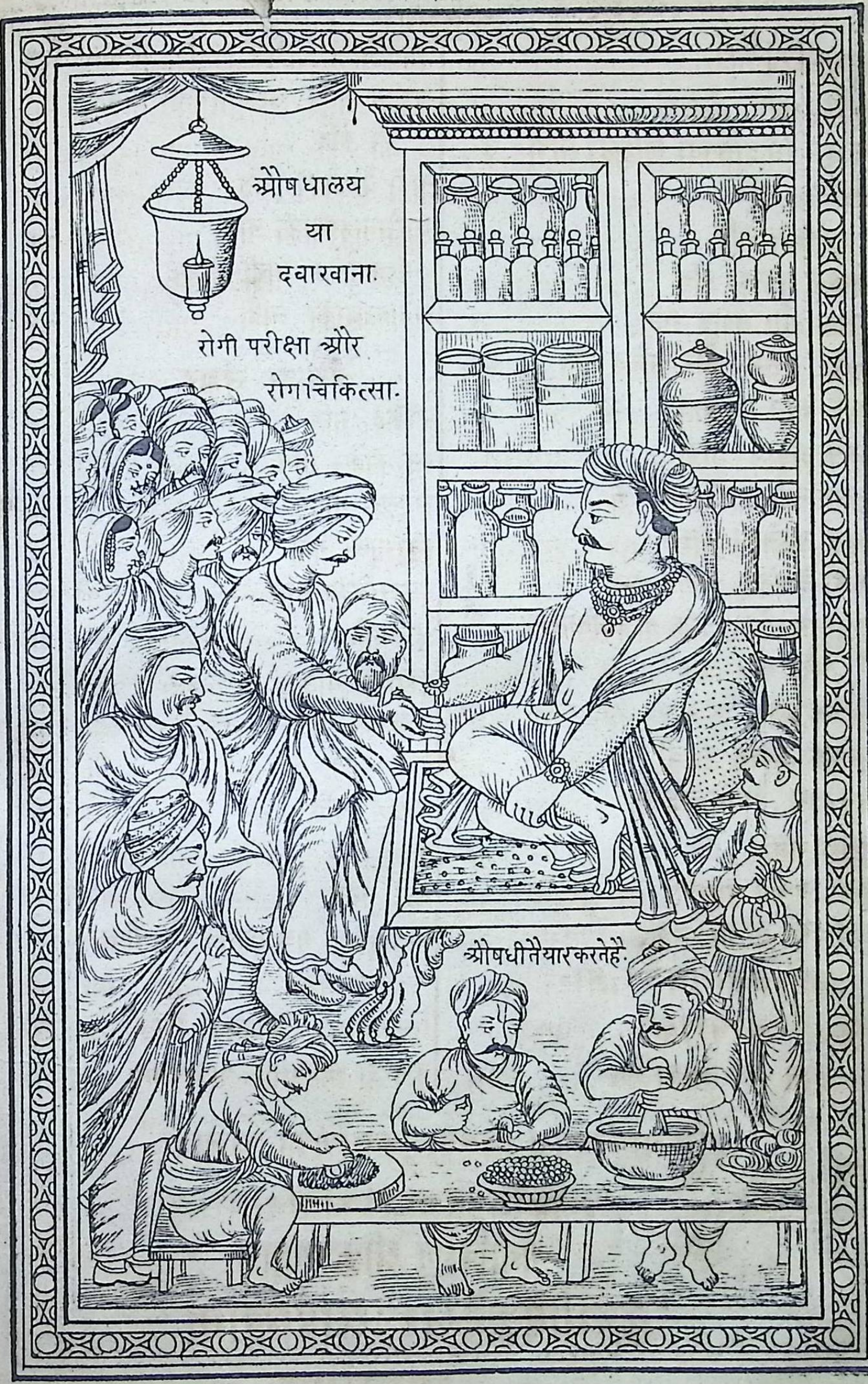

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

स्फिग्मोग्राफ यंत्रका स्वरूप.

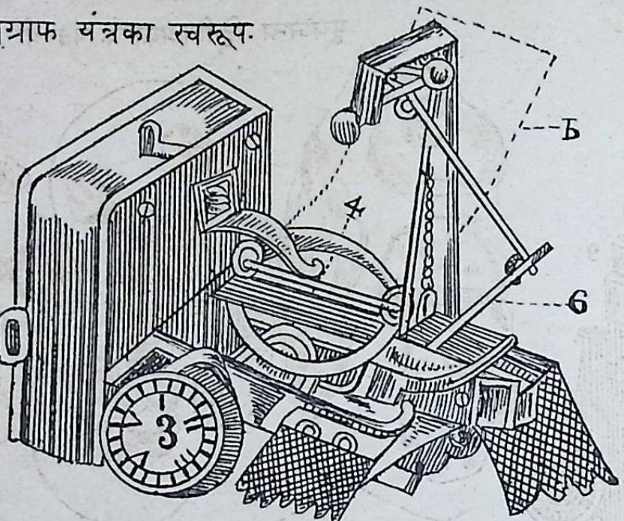

नाडीकी अक्स पडनेका स्वरूप.

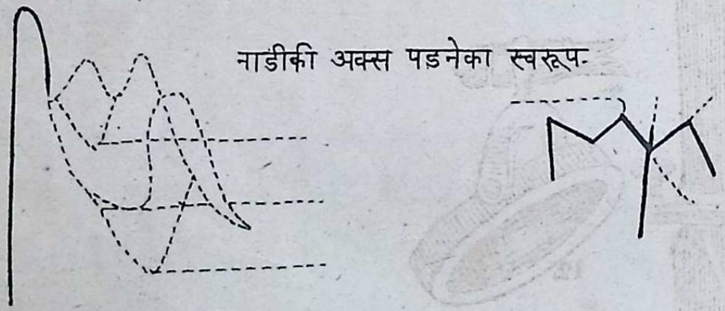

मूत्रजन्य पदार्थ.

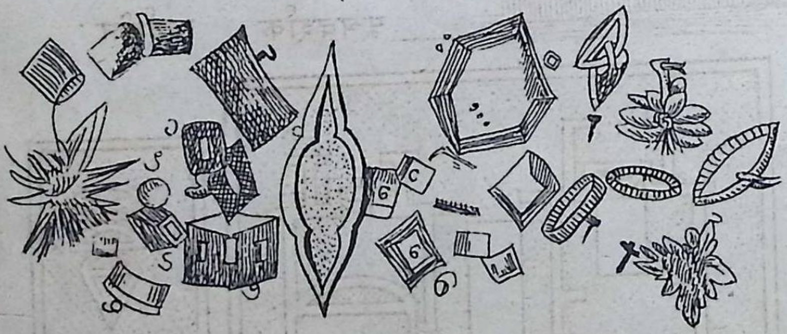

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मूत्रजन्य द्वितीय प्रकारके पदार्थ.

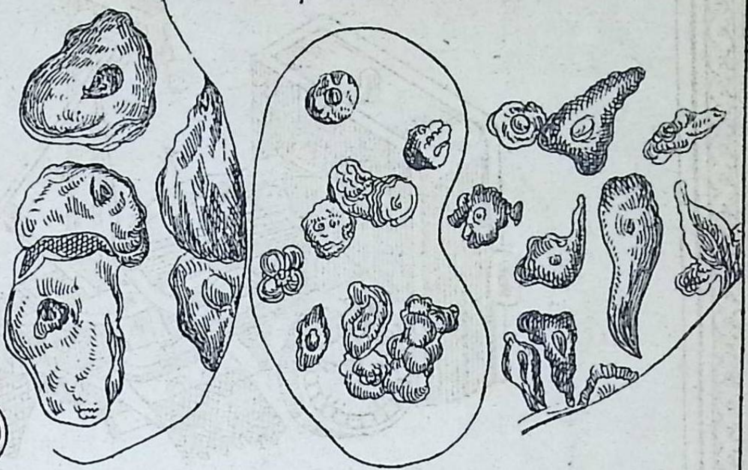

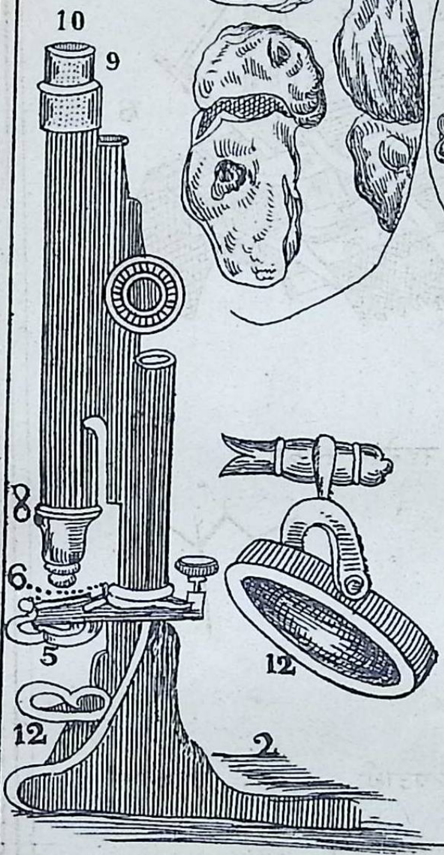

मूत्रदर्शक खुर्दबीन

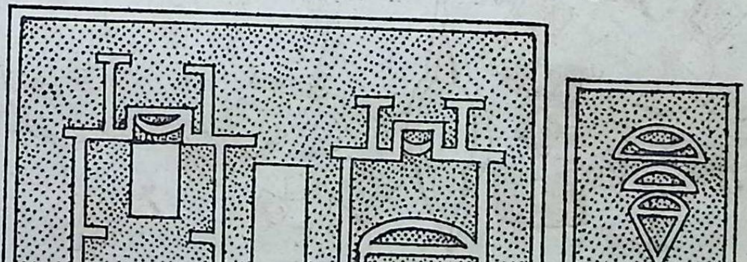

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

धमनी प्रदर्शक चित्र.

इस धमनी प्रदर्शक चित्रमें खग धमनी मूल यह अर्ध्वाभिमुखी, पश्चाद्गामी तथा निम्नमुखी ये तीन अंशोंमें विभक्त हैं.

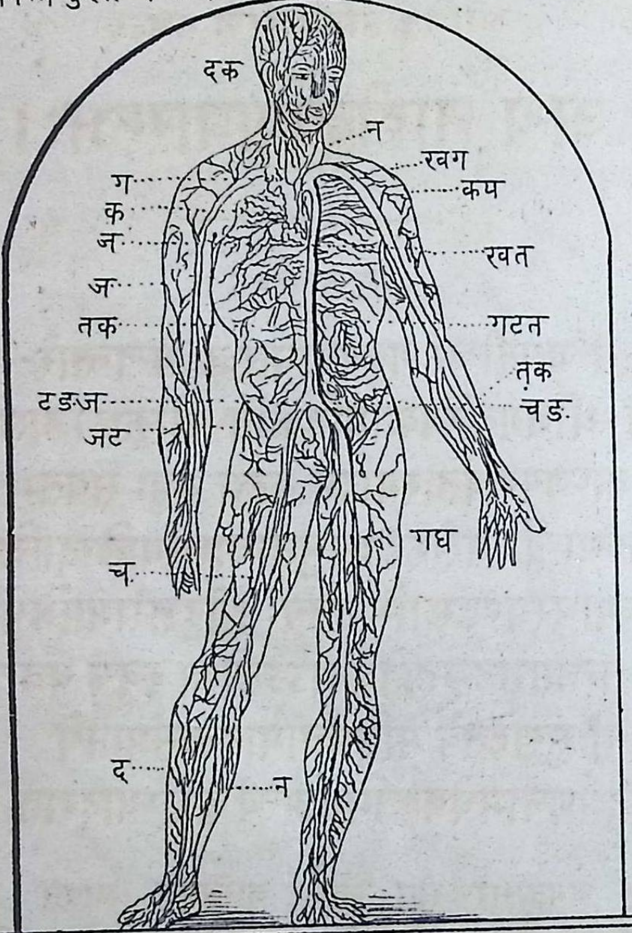

दक	कपालस्थ धमनी.	च	उदरस्थ नाडी.
भन	गलस्थ धमनी.	द	नलकास्थीय धमनी.
ग	कंठस्थ धमनी.	न	जानुपश्चात् धमनी.
क.	कक्ष नाडी	व	जानुस्थ सन्मुख नाडी.
ज	धमनी स्कंध वा वक्षःस्थ मूल नाडी.	खत	पर्शुकाभ्यंतर धमनी.
तङ.	उदरस्थ मूल नाडी.	हक	प्रगंडीय नाड़ी.
टङ. ज	अभ्यंतर (भीतरकी) बस्तिनाडी	तक	मणिबंधस्थ नाडी.
जट	बाह्य (बाहरकी) बस्तिनाडी.	गध	प्रकोष्ठीय धमनी.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Bhakta Ram Sharma Lahore

ॐ

श्रीशंवन्दे ।

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

अथ नाडीदर्पणप्रारम्भः ।

मङ्गलाचरणम् ।

श्रीमन्तं जगदीश्वरं गदगदाधारञ्च धन्वन्तरि-
मम्बां श्रीजगदम्बिकाप्रतिकृतिं श्रीकृष्णलालाभिधम् ।
तातं कृष्णपरावतारमहिमं नत्वा मुहुः संयतः
श्रीकृष्णाङ्घ्रिसरोरुहद्वयसुधाधारामिलिन्दायितः ॥ १ ॥
श्रीमन्माथुरमण्डलाभिजननः श्रीदत्तरामाभिधो
दृष्ट्वा तन्त्रसमूहमूहविधयाऽऽलोड्य स्वयं यत्नतः ।
बालानां सुखहेतवे मतिमतामानन्दसंप्राप्तये
नाडीदर्पणनामधेयकमिमं ग्रन्थं करोम्यादरात् ॥२॥ युग्मम् ।

अर्थ-श्रीमान् जगदीश्वर रोग और आरोग्यके आधार ऐसे श्रीधन्वंतरि भगवान् तथा जगन्माता (लक्ष्मी) के तुल्य रमा नामक अपनी माताको तथा कृष्णका परावतार ऐसे श्रीकृष्णलाल (कन्हैयालाल) नामक अपने पिताको वारंवार यत्नपूर्वक नमस्कारकर श्रीकृष्णचरणकमलयुगलामृतधाराको पानकरता भ्रमर और श्रीमधुपुरीमंडल अथवा माथुरद्विज (चौबे) नको मंडल कहिये समूह तामें निवास जाको, अथवा जन्म जाको ऐसा जो दत्तराम संज्ञक में सो अनेक शास्त्रसमूहको देख और स्वयंविधिपूर्वक यत्नसैं मथनकर बालकोंके सुखकेलिये और पंडितोंके आनन्दकी प्राप्तीकेअर्थ इस नाडीदर्पण नामक ग्रंथको परमआदरसैं करताहूं । यहग्रंथ यथानाम तथा गुणोंमेंभी है अर्थात् जैसें दर्पणसैं इसप्राणीके संपूर्ण गुणदोष प्रकटहोतेहै उसीप्रकार इसग्रंथसैं नाडियोंके संपूर्ण गुणदोष उत्तम रीतिसैं प्रगटहोतेहै ॥ १ ॥ २ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वाग्भटः ।

रोगमादौ परीक्षेत तदनन्तरमौषधम् ॥
ततः कर्म भिषक् पश्चाज्ज्ञानपूर्वं समाचरेत् ॥ ३ ॥

अर्थ–वाग्भट ग्रंथमें लिखाहै वैद्यको उचितहै कि प्रथम रोगकी परीक्षा करे रोगजाननेके अनंत्तर औषधकी परीक्षा करे रोग और औषध दोनों जाननेके पश्चात् ज्ञानपूर्वक अर्थात् सावधानीकेसाथ चिकित्साकरे यानी औषध देवे ॥ ३ ॥

लक्षयित्वा देशकालौ ज्ञात्वा रोगबलाबलम् ॥
चिकित्सामारभेद्वैद्यो यशः कीर्तिमवाप्नुयात् ॥ ४ ॥

अर्थ–देश और कालका लक्ष करके और रोगको बली और निर्बलित्व जानके जो वैद्य चिकित्साका प्रारंभ करताहै वह यश, और कीर्तिको पाताहै ॥ ४ ॥

रुग्णावस्थां ततो नाडीं भेषजं पथ्यमेव च ॥
देशं कालश्च पात्रञ्च यो जानाति स वैद्यराट् ॥ ५ ॥

अर्थ–जो रोगीकी अवस्था, नाडी, औषध, पथ्य, देश, काल, और पात्रको जानताहै । उसको वैद्यराज कहतेहै ॥ ५ ॥

रोगोंके आठस्थान ।

रोगाक्रान्तशरीरस्य स्थानान्यष्टौ परीक्षयेत् ॥
नाडीं मूत्रं मलं जिह्वां शब्दस्पर्शदृगाकृतिम् ॥ ६ ॥

अर्थ–वैद्य रोगी मनुष्यके आठ स्थानोंकी परीक्षाकरे, जैसे कि नाडीपरीक्षा, मूत्रपरीक्षा, मलपरीक्षा, जिह्वापरीक्षा, शब्दपरीक्षा, स्पर्शपरीक्षा, नेत्रपरीक्षा और रोगीकी आकृतिकी परीक्षा ॥ ६ ॥

नानाशास्त्रविहीनानां वैद्यानामल्पमेधसाम् ॥
नाड्याद्यष्टपरीक्षाश्च सुखार्थं प्रभवन्ति हि ॥ ७ ॥

अर्थ–अनेक शास्त्र पढनेकरके रहित अल्प बुद्धि वैद्योंके लिये यह नाडी आदि अष्टविधपरीक्षा सुखके अर्थ होवेगी ॥ ७ ॥

आद्यं तावन्नाडिकाविज्ञानादेव वातपित्तकफजनितानामातङ्कानां साध्यासाध्यकष्टसाध्यसभेदकविज्ञानं सुकरत्वेन भिषग्भिरवाप्यतेऽत एव तावन्निरूप्यते ॥ ८ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अर्थ-तहां प्रथम वैद्योंको नाडीके देखनेसेंही वात, पित्त, और कफजनित रोगोंका साध्यासाध्य और कष्टसाध्य सभेदविज्ञान सहजमें प्राप्त होसक्ताहै; अतएव प्रथम उसी नाडीपरीक्षाका वर्णन करतेहै। प्रथम नाडीदेखनेकी आवश्यकता दिखाते है ॥ ८ ॥

नाडीज्ञानकी आवश्यकता।

नाडीज्ञानं विना वैद्यो न लोके पूज्यतां व्रजेत् ॥
अतश्चातिप्रयत्नेन शिक्षयेद्बुद्धिमान्नरः ॥ ९ ॥

अर्थ-नाडीज्ञानके विना वैद्य संसारमें पूज्य (माननीय) नहीं होता अतएव बुद्धिमान् मनुष्यको उचितहै कि नाडीज्ञानको सद्गुरुसें अति यत्नपूर्वक सीखे अर्थात् नाडी देखनेका अनुभव करे ॥ ९ ॥

बोधहीनं यथा शास्त्रं भोजनं लवणं विना ॥
पतिहीना यथा नारी तथा नाडीं विना भिषक् ॥ १० ॥

अर्थ-जैसें बोधविना शास्त्रपढनकी शोभा नहीं, विना लवण भोजनके पदार्थ प्रियनहीं, और पतिके विना स्त्रीकी शोभा नहीं, उसीप्रकार नाडी ज्ञानके विना वैद्यकी शोभा नहींहै ॥ १० ॥

नाडीजिह्वार्त्तवादीनां लक्षणं यो न विन्दति ॥
मारयत्याशु वै जन्तून्स वैद्यो न च शोभनः ॥ ११ ॥

अर्थ-जो नाडीपरीक्षा, जिव्हापरीक्षा, और स्त्रीके आर्त्तवकी परीक्षा नहीं जाने वह मूढवैद्य तत्काल रोगीयोंको मारताहै इसीकारण ऐसा मूढवैद्य उत्तम नहींहै ॥ ११ ॥

आदौ सर्वेषु रोगेषु नाडीजिह्वाग्रनेत्रकम् ॥
मूत्रार्त्तवं परीक्षेत पश्चाद्रुग्णं चिकित्सयेत् ॥ १२ ॥

अर्थ-वैद्य प्रथम संपूर्ण रोगोंमें नाडी, जिह्वा, नेत्र, मूत्र, और आर्त्तवकी परीक्षा कर फिर रोगीकी चिकित्सा करे ॥ १२ ॥

नाडीज्ञानं विना यो वै चिकित्सां कुरुते भिषक् ॥
स नैव लभते लक्ष्मीं न च धर्मं न वै यशः ॥ १३ ॥

अर्थ-जो वैद्य विना नाडीपरीक्षाके जाने चिकित्सा करताहै वह धन, धर्म, और यशको नहीं प्राप्तहोता परंच उसको अपयशकी प्राप्ती और मूर्ख कहलाताहै ॥ १३ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नाड्या मूत्रस्य जिह्वायाः कुरु पूर्वं परीक्षणम् ॥
औषधं देहि तज्ज्ञाने वैद्य रुग्णसुखावहम् ॥ १४ ॥

अर्थ–हे वैद्य! प्रथम नाडी, मूत्र, और जिन्हाका परीक्षण कर जब नाडी मूत्र और जिन्हाको परीक्षाद्वारा रोगका निश्चय करलेवे तब रोगीको सुखकारी औषधी दे ॥१४॥

यथा वीणागता तन्त्री सर्वान्रागान्प्रभाषते ॥
तथा हस्तगता नाडी सर्वान्रोगान्प्रकाशते ॥ १५ ॥

अर्थ–जैसैं वीणाका तार संपूर्ण रागोंको सूचना करताहै, उसी प्रकार हाथकी नाडी सर्वरोगोंको प्रकाशित करतीहै इस श्लोकका तात्पर्य यह है वीणाका तारभी जो वजानेवालेहै उन्हीको उस तारके रागकी प्रतीत होती है उसीप्रकार हाथकी नाडीभी जो नाडीके जानने वाले है उन्हीको रोगप्रकाशित करतीहै जैसे मूर्खके वास्ते तारद्वारा राग नहींमालुमहो उसीप्रकार मूर्खवैद्यको नाडीदेखना निष्प्रयोजनहै ॥ १५ ॥

नाडीलक्षणमज्ञात्वा निदानग्रन्थवाक्यतः ॥
चिकित्सामारभेद्यस्तु स मूढ इति कीर्त्यते ॥ १६ ॥

अर्थ–जो वैद्य नाडीके लक्षण विना जाने केवल निदानग्रंथके वाक्योंसैं रोगपरीक्षा कर चिकित्सा करताहै वह मूढ (मूर्ख) ऐसा कहलाता है ॥ १६ ॥

निदानपञ्चकादीनां लक्षणं वैद्यसत्तमः ॥
नाडींतु संवलीकृत्य चिकित्सामाचरेत्खलु ॥ १७ ॥

अर्थ–इसीकारण उत्तमवैद्य निदान पंचकादिके लक्षण जानके और उनमें नाडीके लक्षणभी मिश्रित (सामिल) करके चिकित्साका प्रारंभ करे ॥ १७ ॥

कियत्स्वपि च चिह्नेषु ज्ञातेष्वपि चिकित्सितम् ॥
निष्फलं जायते तस्मादेतच्छृणवेकचेतसा ॥ १८ ॥

अर्थ–अब कहते है कि बहुतसे चिन्ह जानने परभी चिकित्सा निष्फल होजाती है अतएव इसनाडीदर्पणग्रंथमें जो कहा जाताहै उसको हेवैद्य! तू एकाग्र चित्तसैं सुन १८

तत्रादौ प्रोच्यते नाडीपरीक्षातिप्रयत्नतः ॥
नानातन्त्रानुसारेण भिषगानन्ददायिनी ॥ १९ ॥

अर्थ–तहां प्रथम अनेक ग्रंथोंके अनुसार वैद्योंको आनंददायिनी यत्नपूर्वक नाडीपरिक्षा कहतेहै ॥ १९ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

क्वचिद्ग्रन्थानुसंधानाद्देशकालविभागतः ॥
क्वचित्प्रकरणाच्चापि नाडीज्ञानं भवेदपि ॥ २० ॥

अर्थ–अब नाडीज्ञानकी परिपाटी कहतेहै कि कहींतो नाडीज्ञान ग्रंथ पढनेसैं होताहै, कहीं देश कालके जाननेसैं, और कहीं प्रकरण वशसें नाडीका ज्ञान होता है, तात्पर्य यहहै कि वैद्य केवल ग्रंथकेही भरोसैं न रहै, किंतु कुछ अपनीभी बुद्धिसें विचारे यह कौन स्थानहै, कौनसा कालहै, और ये रोगी क्या आहार विहार करके आयाहै, इसप्रकार अच्छी रीतिसैं विचारकर नाडीको कहे ॥ २० ॥

सद्गुरोरुपदेशाच्च देवतानां प्रसादतः ॥
नाडीपरिचयः सम्यक् प्रायः पुण्येन जायते ॥ २१ ॥

अर्थ–अब नाडीज्ञानकी उत्कृष्टता दिखातेहै कि सद्गुरु अर्थात् सद्वैद्यके बतानेसैं और देवताओंकी प्रसन्नतासैं तथा पूर्वजन्मके पुण्यकरके नाडीपरिचय होताहै, किंतु अपने आप पढनेसैं और विनादेव कृपाके तथा अधर्मी नास्तिकको नाडी देखनेका ज्ञान नहीं होताहै, अतएव जिसको नाडीज्ञानकी आवश्यकता होवे वो सद्गुरु और देवसेवा तथा धर्ममें तत्पर होय ॥ २१ ॥

नाडीपरिचयो लोके न च कुत्रापि दृश्यते ॥
तेन यत्कथ्यते चात्र तत्समाधेयमुत्तमैः ॥ २२ ॥

अर्थ–नाडीका परिचय अर्थात् नाडीदेखनेका ज्ञान इससंसारमें कहीं नहीं दीखता. इसीकारण जो इसग्रंथमें कहाजाताहै वो उत्तमपुरुषोंको अवश्य जानना चाहिये ॥ २२ ॥

परीक्षणीयाः सततं नाडीनां गतयःपृथक् ॥
न चाध्ययनमात्रेण नाडीज्ञानं भवेदिह ॥ २३ ॥

अर्थ–वैद्यको उचितहै कि निरंतर नाडीकी गतिकी परीक्षा कराकरे क्योंकि केवल पढनेहीसैं नाडीका ज्ञान नहीं होता ॥ २३ ॥

न शास्त्रपठनाद्वापि न बहुश्रुतकारणम् ॥
नाडीज्ञाने मनुष्याणामभ्यासः कारणं परम् ॥ २४ ॥

अर्थ–नाडीके ज्ञानमें शास्त्रपठनेसैं अथवा बहुतनाडी संबंधी वार्त्ताओंके सुननेसैं नाडीका ज्ञान नहीं होता, किंतु नाडीज्ञानमें मनुष्योंको केवल अभ्यासही परम कारणहै इस्सैं अभ्यासकरे ॥ २४ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नाडीगतिमिमां ज्ञातुं योगाभ्यासवदेकतः ॥
शक्यते नान्यथा वैद्य उपायैः कोटिशैरपि ॥ २५ ॥

अर्थ-वैद्यको इस नाडीकी गती जाननेमें समर्थहोना केवल योगाभ्यासके सदृश नाडीदेखनेके अभ्याससैंही होसकताहै, अन्य करोंडो उपायोंसैंभी नाडी ज्ञान नहीं होता।

जलस्थलनभश्चारिजीवानां गतिभिः सह
गतयो ह्युपमीयन्ते नाडीनां भिन्नलक्षणाः ॥ २६ ॥

अर्थ-जल, स्थल, और आकाशमें विचरनेवाले जीवोंकी गति (चाल) करके भिन्न लक्षणा नाडियोंकी गति अनुमान करीजातीहै, अर्थात् जलचर जीव (जोंक, मेंडक आदि) स्थलचरजीव (सर्प, हंस, मोर आदि) और आकाश चारीजीव (लवा, वटेर, आदि) ए जैसें चलतेहै इनके सदृश नाडी चलती है, इनमें जिस दोषकी जैसी चाल नाडीकी लिखीहै उसको उसी प्रकारकी देखकर वैद्य नाडीको वातपित्तादिककी नाडी बतावे, अन्यथा नाडीका ज्ञानहोना कठिनहै ॥ २६ ॥

कस्य कीदृग्गतिस्तत्र विज्ञातव्या विचक्षणैः ॥
अध्येतव्यं च तच्छास्त्रं सद्गुरोर्ज्ञानशालिनः ॥ २७ ॥

अर्थ-वैद्यहोनेवाले प्राणीको उचितहै कि उत्तम ज्ञानवान् शास्त्रके ज्ञाता गुरूसैं किस जीवकी कैसी गतिहै इसको सीखे और जो इसनाडी विषयके ग्रंथहै उनको पढे, किसी जगे हमने ऐसा लिखा देखाहै कि दशवर्षतो वैद्यकके ग्रंथ पढे, और गुरूके आगे अनुभव (आजमायस) करे, क्योंकि यह विद्या पढनेका समय बहुत उत्तमहै, इस समय ग्रंथहै और रोगीदोनो उपस्थितहै जो ग्रंथमें पढे उसको गुरूके आगे रोगीपर परीक्षा करे, यदि जो बात समझमें न आवे तो उसको उसीसमय गुरूसैं पूछलेय तो संदेह निवृत्त होजावे, फिर दशवर्ष वनमें रहकर वनवासियों सैं अर्थात् माली, काछी, भील, ग्वारिया, आदिसैं औषधका नाम और उसके गुण तथा परीक्षा सीखे तब इसको वैद्यक करनेका अधिकार होताहै ॥ २७ ॥

कल्याणमपि वारिष्टं स्फुटं नाडी प्रकाशयेत् ॥
रुजां कालिकवैशिष्ट्याद्भवेत्सापि विलक्षणा ॥ २८ ॥

अर्थ-कल्याण (शुभ) और अरिष्ट (अशुभ) इन दोनोंको नाडी प्रत्यक्ष प्रकाशित

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

करेहै। तथा कालके वैशिष्ट्य करके रोगके समय नाडी विलक्षण होजाती है ॥ २८॥

यल्लक्षणा तु नैरुज्ये नोदितायां तथा रुजि ॥
वयः कालरुजां [१]भेदैर्भिन्नभावं बिभर्त्ति सा ॥ २९ ॥

अर्थ–जैसी आरोग्य पुरुषकी नाडी होती है ऐसी रोगावस्थामें नहीं रहती इसका यह कारणहै कि अवस्था, काल, और रोगोंके भेदकरके नाडी भिन्न भावकों धारण करती है। अर्थात् विपरीतता ग्रहण करती है ॥ २९ ॥

तदवस्थामतः प्राज्ञः सर्वथा सार्वकालिकीम् ।
ज्ञातुं यतेत मतिमान् लक्षणैः सुसमाहितः ॥ ३० ॥

अर्थ–इसीसें चतुर वैद्यको उचितहै कि उस नाडीके सर्वकालकी सदैव लक्षणोंके जाननेका यत्न सावधानता पूर्वक करता रहै ॥ ३० ॥

नाडीके स्पंदनकाकारण ।

परिव्याप्याखिलं कायं धमन्यो हृदयाश्रयाः । वहन्त्यः शोणितस्रोतः शरीरं पोषयन्ति ताः ॥ ३१ ॥ हृदयाकुञ्चनाद्रक्तं कियदुत्प्लुत्य धामनीम् । तत्सञ्चितं तदुत्थञ्च प्रविश्य चापरास्वपि ॥ ३२ ॥ व्रजित्वा निखिलं देहं ततो विशति फुप्फुसम् । फुप्फुसाद्धृदयं याति क्रियैवं स्यात्पुनः पुनः ॥ ३३ ॥ रुधिरोत्प्लववेगेन धमनी स्पन्दते मुहुः । उत्प्लवप्रकृतेर्भेदाद्भेदः स्यात्स्पन्दनस्य च ॥ ३४ ॥ स्थौल्यादिकं धमन्याश्च तत्प्रकृत्यैव जायते। तत्प्रकारान्समासेन ब्रुवे वत्स! निशामय ॥ ३५ ॥

अर्थ–अब नाडीके चलनेका कारण कहतेहै कि हृदयके आश्रित धमनी नाडी सं-

---

१ [वयःकाल रुजाभेदैः] इस लिखनेका यह प्रयोजनहै कि जैसी नाडी बाल्यावस्थामें होतीहै ऐसी यौवन अवस्थामें नहीं और जैसी यौवन अवस्थामें होतीहै ऐसी वृद्धावस्थामें नहीं होती इसीप्रकार प्रातःकाल, मध्यान्ह और सायंकालमें पृथक् पृथक् भावसें चलतीहै तथा प्रत्येक रोगोंमें नाडीकी गति विलक्षण होतीहै। अर्थात् जैसी ज्वरवान्की नाडी होतीहै ऐसी अतिसारवान्की नहीं होती और जैसी अतिसारीकी होतीहै ऐसी ग्रहणीरोगवालेकी नहींहोती इत्यादि।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पूर्णदेहमें व्याप्तहो रुधिरको स्रोतके द्वारा वहन करतीहै । उसी रुधिरके वहनेसैं शरीरको पोषण करती है । उन संपूर्ण धमनी नाडियोंका आश्रय हृदयस्थ रक्ताधार यंत्रहै, रक्ताधार यह एक स्थूलमांसनलिका ऊपरकी तरफ कुछ उठीहुईहै । यह नली समुदाय धमनी नाडीका मूलभागहै । इसी स्थानसैं धमनी नाडियोंकी अनेक शाखा प्रशाखा निकलीहै ये संपूर्ण देहमें व्याप्तहै । इस समस्त सूक्ष्म नलाकृति मांसनलीका नाम धमनी है धमनी मार्गसैं हृदयका संचित रुधिर सकलदेहमें परिभ्रमण करके देहका पोषण करता है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

हृदययंत्र स्वभावसैंही सदैव खुलता मुदता रहताहै, जैसे भिस्तीकी सछिद्र जलपूर्ण मसकको ऊपरसैं दाबनेसैं उस मुसकके भीतरका जल जैसें छिद्रमें होकर बडे वेगसैं निकलताहै, उसीप्रकार हृदयके मुदनेसैं हृदयस्थ रुधिरका कितनाही अंश उछलकर तत्संलग्न स्थूल धमनीमें प्रवेश करे है । यह आकुंचन अर्थात् हृदयका मुदना जितनी देरमें होताहै उतने कालमें वहउत्प्लुत रुधिर धमनियोंके द्वारा समस्त देहमें परिभ्रमण करके फुप्फुसमें जायकर प्राप्त होताहै, फुप्फुससैं फिर दूसरीवार हृदयमें आताहै, और उसीप्रकार जाता है, जीतेहुए देहमें इसीप्रकार यह क्रिया एक नियमके साथ वारंवार होती रहती है, इस रुधिरके उत्प्लव (उछलने) सैं संपूर्ण धमनी स्पन्दन कहिये फडकती है । रुधिर हृदयमेंसैं वारंवार उछलकर धमनीके छिद्रमें प्रवेश होकर वेगके साथ चलताहै, इसी कारण धमनी नाडीभी वारंवार तडफतीहै । यह रुधिरके उत्प्लव प्रकृति भेदसैं धमनीके तडफमें भेद होताहै । [अर्थात् यदि रुधिर मंदवेगसैं उछले तो नाडी मंद प्रतीत होतीहै, और रुधिर शीघ्र उछले तो नाडीभी शीघ्र चारिणी होती है] एवं रुधिरके स्वभावानुसार नाडीमें स्थूलता, सूक्ष्मता, और कठिनत्वादि धर्म उत्पन्न होतेहै । अब जो जो अवस्था नाडीसैं जैसे जैसे लक्षण होतेहै उन सबको मैं आगे कहताहूं ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

नाडीके नाम ।

हिंस्रा स्नायुर्वसा नाडी धमनी धामनी धरा ।
तन्तुकी जीवितज्ञा च शिरा पर्यायवाचकाः ॥ ३६ ॥

अर्थ–हिंस्रा, स्नायु, वसा, नाडी, धमनी, धामनी, धरा, तंतुकी, जीवितज्ञा, और शिरा, ये नाडीके पर्यायवाचकशब्द है, अर्थात् ए नाडीके नामांतर है ॥ ३६ ॥

नाडीके भेद ।

तत्र कायनाडी त्रिविधा । एका वायुवहा । अन्या ।
मूत्रविडस्थिरसवाहिनी । अपरा आहारवाहिनीति ॥ ३७ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अर्थ–तहां देहकी नाडी तीन प्रकारकी है, एक पवनको वहती है दूसरी मल, मूत्र, हड्डी, और रसको वहती है । तीसरी आहारको वहती है ॥३७॥

कन्दमध्ये स्थिता नाडी सुषुम्नेति प्रकीर्त्तिता ।
तिष्ठन्ते परितः सर्वाश्चक्रेस्मिन्नाडिकास्ततः ॥ ३८ ॥

अर्थ–नाभीके मध्यमें सुषुम्ना नाडी स्थितहै, इसी नाभिचक्र और सुषुम्ना नाडीके चारोंतरफ संपूर्ण नाडी स्थितहै ॥३८॥

नाभिमध्ये स्थितानाडी गोपुच्छाकृतिसर्वतः ॥
तिष्ठन्ते परितः सर्वास्ताभिर्व्याप्तमिदं वपुः ॥ ३९ ॥

अर्थ–संपूर्ण नाडी नाभिके बीचमें गोपुच्छके सदृश स्थितहो सर्वत्र फैल रही हैं । जिनसैं यह देह व्याप्त होरहांहै जैसैं गौकी पूछ ऊपरके भागमें मोटी होती है और नीचेको क्रमसैं पतली होती है, उसीप्रकार नाडीनको जानना ये सब नाभीसै निकलकर चारोंतरफ फैल गई है ॥३९॥

सार्द्धास्त्रिकोट्यो नाड्योहि स्थूलाः सूक्ष्माश्च देहिनाम् ॥
नाभिकन्दनिबद्धास्तास्तिर्यगूर्ध्वमधःस्थिताः ॥ ४० ॥

अर्थ–इन मनुष्योंके देहमें छोटी और बडी सब मिलकर ३५००००० साडेतीन करोड नाडी है, वो सब नाभिसैं बंधीहुई तिरछी, ऊपर, और देहके अधोभागमें स्थितहै ॥ ४० ॥

तिस्रः कोट्योऽर्द्धकोटी च यानि लोमानि मानुषे ॥
नाडीमुखानि सर्वाणि घर्मबिन्दून्क्षरन्ति च ॥ ४१ ॥

अर्थ–ऊपरके श्लोकमें जो साडेतीन करोड नाडी कही है, वो मनुष्यके देहमें जितने रोमहै वो सब उन नाडियोंके मुखहै, उनसैं पसीना झडता रहता है ॥ ४१ ॥

द्विसप्ततिसहस्रन्तु तासां स्थूलाः प्रकीर्तिताः ॥
देहे धमन्यो धन्यास्ताः पञ्चेन्द्रियगुणावहाः ॥ ४२ ॥

अर्थ–उन साडेतीन करोड नाडियोंमें १०७२ एकहजार और बहत्तर स्थूल नाडी है, वो धमनी देहमें पवनको धमाती है । और पंचेन्द्रियोंके गुण (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) को वहती है ॥ ४२ ॥

तासांच सूक्ष्मसुषिराणि शतानि सप्त
स्वच्छानि यैरसकृदन्नरसं वहद्भिः ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

आप्यायते वपुरिदं हि नृणाममीषा-
मम्भः स्रवद्भिरिव सिन्धुशतैः समुद्रः ॥ ४३ ॥

अर्थ–उन पूर्वोक्त नाडीयोंमें छोटे छिद्रवाली स्वच्छ ७०० सातसौ नाडी है वो सब अन्नरसके वहनेवालीहै, उस रसमैं संपूर्ण देहका पोषण होताहै जैसें सैंकडों नदियोंके जलसैं समुद्र तृप्त होताहै ॥ ४३ ॥

आपादतः प्रततगात्रमशेषमेषा-
मामस्तकादपि च नाभिपुरःस्थितेन ॥
एतन्मृदङ्ग इव चर्मचयेन नद्धम्
कायं नृणामिह शिराशतसप्तकेन ॥ ४४ ॥

अर्थ–नाभिस्थानस्थित सातसौं नाडीन्सैं मस्तकसैंले पैरोंतक संपूर्ण देह व्याप्त है जैसें मृदंगमें सर्वत्र चर्मकी रस्सी खिचीहुई होतीहैं, उसीप्रकार मनुष्यकी देह इन सातसौं नाडियोंसैं बद्ध होरही है ॥ ४४ ॥

सप्तशतानां मध्ये चतुरधिका विंशतिः स्फुटास्तासाम् ॥
एका परीक्षणीया दक्षिणकरचरणविन्यस्ता ॥ ४५ ॥

अर्थ–पूर्वोक्त सातसैां नाडीयोमें २४ चोवीस नाडी मुख्यहै, उनमेभी पुरुषके दहने हाथ और पैरमें स्थित मुख्य एक नाडीकी परीक्षा करनी चाहिये "चतुरधीका" इसपदके कहनेसैं यह प्रयोजनहै कि धमनी नाडी चोवीसहै जैसें लिखाहै ॥ ४५ ॥

तिर्यक्कूर्मो देहिनां नाभिदेशे
वामे वक्रं तस्य पुच्छन्तु याम्ये ॥
ऊर्ध्वे भागे हस्तपादौ च वामौ
तस्याधस्तात्संस्थितौ दक्षिणौ तौ ॥ ४६ ॥
वक्रे नाडी द्वयं तस्य पुच्छे नाडी द्वयन्तथा ॥
पञ्च पञ्च करे पादे वामदक्षिणभागयोः ॥ ४७ ॥

अर्थ–मनुष्योंके नाभिदेशमें तिरछा कूर्म (कछवा) स्थितहै, वांई तरफ उसका मुखहै और दहनी तरफ पूंछहै, ऊपरके भागमें वांईतरफ हाथहै, और नीचे दक्षिण

१ शतानि सप्त नाड्यस्तु कथिता याः शरीरिणाम् । संभयांगुष्ठमले तु शिराभेकामधिष्ठिता ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पैरहै उस कच्छपके मुखमें दोनाडी, पूंछमें दो, और हाथ पैरोंमें दहनी और वांई तरफ-पांच पांच नाडी जाननी ॥ ४६ ॥

फिर उसी श्लोककी व्याख्या करतेहै "तासांमध्ये एकेति" इस पदलिखनेका यह प्रयोजनहै कि यद्यपि हाथ पैरोमें पांच पांच नाडीहै परंतु उनमेंभी पुरुषके दहने हाथ पैरकी एक एक नाडी मुख्यहै और स्त्रीके वाम हाथ पैरकी एक एक नाडी मुख्यहै यह अर्थाशसें जाना जाताहै अतएव वैद्यकों इन्हीकी परीक्षा करनी चाहिये जैसे लिखाहै ४७

वामे भागे स्त्रिया योज्या नाडी पुंसस्तु दक्षिणे ॥
इति प्रोक्तो मया देवि सर्वदेहेषु देहिनाम् ॥ ४८ ॥

अर्थ–स्त्रीके वामभागकी और पुरुषके दहने भागकी नाडी देखे हेदेवि ! यह सर्व-देहधारियोंमें देखनेकी विधि मेने कहीहै, परंतु जो नपुंसक है उनमें प्रथम यह परीक्षा-करे कि यह स्त्री षंढ है या पुरुषषंढ पश्चात् स्त्री षंढकी वामहाथकी और पुरुष षंढके दहने हातकी नाडी देखे इनमें समानता सर्वथा नहीं होसकती, और कृत्रिम (बनेहुए) हिजडे होतेहै उनकी नाडी यथा प्रकृतिमें स्थित होतीहै और "चरणेति" इस पदके धरनेसें कोई कहताहै कि वाम पैरकी नाडीको दहनी गांठके पिछाडीके पार्श्व-भागमें देखनी और दहने पैरकी नाडी वाई ग्रंथिके पिछाडीके पार्श्वमें देखनी यह श्रेष्ठपुरुषोंकी आज्ञाहै कोई छः स्थानोंकी नाडी देखना लिखताहै यथा ॥ ४८ ॥

अङ्गुष्ठमूले करयोः पादयोर्गुल्फदेशतः ॥
कपालपार्श्वयोः षड्भ्यो नाडीभ्यो व्याधिनिर्णयः ॥ ४९ ॥

अर्थ–हाथोंकी नाडी अंगूठेकी जडमें देखे, और पैरोंकी नाडी टकनाओंके नीचे देखे, मस्तककी नाडी दोनो कनपटीयोंमें देखे, इस प्रकार इन छः स्थानकी नाडी देखनेसें व्याधिका यथार्थ निर्णय होताहै ॥ ४९ ॥

नाभ्योष्ठपाणिपात्कण्ठनासोपान्तेषु याः स्थिता ॥
तासु प्राणस्य सञ्चारं प्रयत्नेन विभावयेत् ॥ ५० ॥

अर्थ–नाभी, होंठ पैर, हाथ, कंठ, और नासिकाके समीप भागमें जो नाडी स्थितहै उनमें प्राणोंका संचारको यत्नपूर्वक जाने, अर्थात् इन स्थानोंमें सदैव प्राण पवनका संचार होताहै, इसीसें अत्यंत उपद्रवमें इन स्थानोंकी नाडी देखनी चाहिये ॥ ५० ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पाणिपात्कण्ठनासाक्षिकर्णजिह्वान्तमेढ्रगाः ॥
वामदक्षिणतो लक्ष्याः षोडश प्राणबोधकाः ॥ ५१ ॥

अर्थ–हात, पैर कंठ, नासिका, नेत्र, कान, जिव्हाका अंत्यभाग और मेढ्र (योनि लिंग) इनके वामभाग और दक्षिणभागमें नाडी देखनी क्योंकि ए १६ नाडी प्राणबोधकहै ऐसा जानना ॥ ५१ ॥

कण्ठनाडी ।

आगन्तुकं ज्वरं तृष्णामायासं मैथुनं क्रमम् ॥
भयं शोकं च कोपञ्च कण्ठनाडी विनिर्दिशेत् ॥ ५२ ॥

अर्थ–आगंतुकज्वर, तृषा, परिश्रम, मैथुन, ग्लानि, भय, शोक, और कोप इतने रोगोंको कंठनाडी देखकर कहे ॥ ५२ ॥

नासानाडी।

मरणं जीवनं कामं कण्ठरोगं शिरोरुजाम् ॥
श्रवणानिलजान् रोगान्नासानाडी प्रकाशयेत् ॥ ५३ ॥

अर्थ–मरण, जीवन, कामबाधा, कंठरोग, मस्तकरोग, कानके, और पवनके रोगोंको नासिकाकी नाडी प्रकाशित करती है ॥ ५३ ॥

उक्त नाडियोंका प्रमाण ।

हस्तयोश्च प्रकोष्ठान्ते मणिबन्धेऽङ्गुलिद्वयम् । पादयोर्नाडिकास्थानं गुल्फस्याधोऽङ्गुलिद्वयम् ॥ ५४ ॥ कण्ठमूलेऽङ्गुलिद्वन्द्वं नासायामङ्गुलिद्वयम् । एवमप्यङ्गुलिद्वन्द्वमग्रतः कर्णरन्ध्रयोः ॥ ५५ ॥

अर्थ–अब अन्यनाडी किस किस भागमेंहै और वो कितनी बडी है यह कहते है । तहां दोनो हाथके प्रकोष्ठान्तमें जहां मणिबंध अर्थात् पहुचाहै उसजगे दो अंगुल नाडी देखनेका स्थानहै और पैरोंमें टकनाके नीचे दो अंगुल नाडीका स्थान है तथा कंठकी जडमें अर्थात् हसलीमें दो अंगुल एवं नासिकामें दो अंगुल नाडीका स्थानहै । इसीप्रकार दोनो कर्णके छिद्रके अग्रभागमें भी दो दो अंगुल नाडीके परीक्षाका स्थानहै । तात्पर्य यहहै कि जब हाथकी नाडी प्रतीत नहोवे तब इन स्थानोकी नाडी देखनी५५

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

निस्तुषयव एकस्तत्प्रमाणाङ्गुलं स्यात्
तदुभयमितसद्मन्येव नाडीप्रचारः ॥
न भवति यदि तस्मिन् गेहिनी गेहमध्ये
कथमिह गृहमेधी तत्र जीवस्तदा स्यात् ॥ ५६ ॥

अर्थ–छिलका रहित एक यवके प्रमाण इस जगे अंगुल माना है । ऐसें दो अंगुल प्रमाण स्थानमें नाडी रहती है यदि देहरूप घरमें नाडीरूप स्त्री न होवे तो जीवरूप जो गृहस्थी है सो क्याकरे, अर्थात् यावत्काल देहमें नाडी रहतीहै तबतक जीवहै विना स्त्रीके घरमें रहना निंदितहै "धिग्गृहं गृहिणीं विन" तात्पर्य यहहैकी जीव पुरुष, नाडी स्त्री अन्योन्यएकके विना दूसरा नहीं रहसकता ॥ ५६ ॥

परीक्षणीय।

वातं पित्तं कफं द्वन्द्वं सन्निपातं तथैव च ।
साध्यासाध्यविवेकञ्च सर्वं नाडी प्रकाशयेत् ॥ ५७ ॥

अर्थ–वात पित्त कफ द्वंद्वज दोष और सान्निपात एवं साध्यासाध्य (चकारसैं कष्टसाध्य) इनकी संपूर्ण विवेचनाको नाडी प्रकाशित करती है ॥ ५७ ॥

इति श्रीमाथुरकृष्णलालसूनुना दत्तरामेण सङ्कलिते नाडीदर्पणे प्रथमावलोकः ।

नाडीज्ञानसमय।

प्रातः कृतसमाचारः कृताचारपरिग्रहम् ।
सुखासीनः सुखासीनं परीक्षार्थमुपाचरेत् ॥ १ ॥

अर्थ–अब नाडी देखनेका समय कहते हैं कि चिकित्सक प्रातःकालमें प्रातःकृत्य-समाप्तिके अनंतर नाडीपरीक्षार्थ रोगीके समीप प्राप्तहो रोगीके प्रातःकृत्य समाप्तिके पश्चात् उसको सुखपूर्वक बैठाकर इसीप्रकार स्वयं आप सुखपूर्वक बैठकर यथाविधान नाडी परीक्षा करे । इसजगे प्रातःकालका तो उपलक्षण मात्रहै किंतु मध्यान्ह और सायंकालमेंभी नाडीपरीक्षा करे जैसै लिखाहै "मध्यान्हे चोष्णतान्विता" इत्यादि ॥ १ ॥

निषिद्धकाल।

सद्यःस्नातस्य भुक्तस्य क्षुत्तृष्णातपसेविनः । व्यायामक्रान्त-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

देहस्य सम्यङ्‌ नाडी न बुध्यते ॥ २ ॥ तैलाभ्यक्ते[1] रतेरन्ते भोजनान्ते तथैव च। उद्वेगादिषु नाडी च न सम्यगवबुध्यते॥३॥

अर्थ–तत्काल स्नान करा हो, तत्काल भोजन करा हो, अथवा "सुप्तस्य" अर्थात् निद्रित, क्षुधित, तृषार्त्त, गरमीसैं घबडाया हुआ, तथा व्यायामद्वारा थकित देह जिसका ऐसे मनुष्यकी नाडी भलेप्रकार प्रतीत नहीं हो उसीप्रकार जिसने तेल लगाया हो; मैथुनान्तमें भोजनके मध्यमें उद्वेग आदि समयमें नाडीकी यथार्थगति निश्चय नहीं हो अतएव वैद्य इन समयोंमें नाडी परीक्षा न करे किंतु रोगीका चित्त जिससमय स्वस्थहोय तब नाडी देखे परंतु वातमूर्च्छादिक क्षणिक रोगोंमे यह उक्तनियम नहींहै ॥ २ ॥ ३ ॥

नाडीदेखने योग्य वैद्य ।

स्थिरचित्तः प्रसन्नात्मा मनसा च विशारदः ।
स्पृशेदङ्गुलिभिर्नाडीं जानीयाद्दक्षिणे करे ॥ ४ ॥

अर्थ–अब नाडी देखने योग्य वैद्य कहते है कि जो स्थिरचित्त और प्रसन्न आत्मा तथा मनकरके चतुर ऐसा वैद्य तीन उंगलीयोंसैं दहने हाथकी नाडीका स्पर्श करके उसकी गतीकी परीक्षा करे ॥ ४ ॥

मूढवैद्य ।

पीतमद्यश्चञ्चलात्मा मलमूत्रादिवेगयुक् ।
नाडीज्ञानेऽसमर्थः स्याल्लोभाक्रान्तश्च कामुकः ॥ ५ ॥

अर्थ–जिसने मद्य पीरक्खाहो, और चंचलचित्त, मल मूत्र बाधा लग रहीं हो, लोभी और कामीहो ऐसे वैद्यको नाडी न दिखावे, क्योंकि यह नाडीके जाननेमें असमर्थ है ॥ ५ ॥

नाडी देखने योग्य रोगी ।

त्यक्तमूत्रपुरीषस्य सुखासीनस्य रोगिणः ।
अन्तर्जानुकरस्यापि नाडी सम्यक् प्रबुद्ध्यते ॥ ६ ॥

अर्थ–अब नाडी देखनेके योग्य रोगी कहतेहै, कि जो मलमूत्रका परित्याग

---

१ तैलाभ्यंगे च सुप्ते च तथा च भोजनान्तरे । तथा न ज्ञायते नाडी यथा दुर्गतरा नदी इति पाठान्तरम् ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

करचुकाहो, और सुखपूर्वक घोंटुओंके भीतर हाथको करे सावधानीसें बैठाहो, ऐसे रोगीकी नाडीको वैद्य देखे, क्योंकि ऐसे मनुष्यकी नाडी भली रीतिसें जानी जाती है ॥ ६ ॥

नाडीदर्शनमें अयोग्य ।

धूर्त्तमार्गस्थविश्वासरहिताज्ञातगोत्रिणाम् ।
विनाभिशंसनं वैद्यो नाडीद्रष्टा च किल्बिषी ॥ ७ ॥

अर्थ—अब कहते हैं ऐसे मनुष्योंकी नाडी वैद्य न देखे, किं जो धूर्त है तथा मार्गमें चलते चलते दिखाने लगे, और जिनको विश्वास नहींहै तथा जिसकी जात पाँति वैद्य नहीं जाने, और विनकहे अर्थात् जबतक रोगी अथवा उस रोगीके बांधव न कहे तबतक वैद्य नाडी न देखे, यदि उक्तमनुष्योंकी वैद्य नाडी देखे तो पापभागी होताहै ॥ ७ ॥

परीक्षाप्रकार ।

सव्येन रोगधृतिकूर्परभागभाजा-
पीड्याथ दक्षिणकराङ्गुलिकात्रयेण ।
अङ्गुष्ठमूलमधिपाश्चिमभागमध्ये
नाडीं प्रभञ्जनगतिं सततं परीक्षेत् ॥ ८ ॥

अर्थ—अब नाडी परीक्षाका प्रकार लिखते हैकी रोगके धारण करने वाली जो पहुचेमें नाडीहै उसको दहने हाथकी तीन उंगली (तर्जनी, मध्यमा और अनामीका) सें दाबकर तथा रोगीके हाथकी कोहनीको दुसरे हाथसें अच्छी रीतिसें पकडकर उसके अंगूठेकी जडके नीचे वातगती नाडीकी वारंवार परीक्षा करे तात्पर्य यह है कि प्रथम दहने हाथसें कोहनीको पकडे फिर वाहसें हाथको हटाय नाडीको दावे, और वाऐ हाथसें रोगीके हाथको साधकर नाडीकी परीक्षा करे ।

इसजगे " दक्षिणकराङ्गुलिकात्रयेण " यह पद केवल उपलक्षण मात्रको धराहै किंतु नाडी वामहाथसें भी देखे यदि ऐसा न मानोंगे तो फिर अपनी नाडीका देखना किसप्रकारहोगा । और वाजे वैद्य दहने हाथकी नाडी वामहाथसें और वामहाथकी दहनेसें देखतेहै यह ठीकहै ।

कदाचित् कोई शंकाकरे कि एकही हाथकी नाडी देखनेसें रोग जानाजाताहै फिर दोनो हाथकी देखना व्यर्थहै इसलिये कहतेहै कि बहुतसें मनुष्योंके वाम-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अंगही चेष्टावाले होतेहै, अतएव ऐसे मनुष्योंके वामअंगकी जबतक नाडी नहीं देखीजाय तबतक यथार्थ ज्ञान नहीं होता। दूसरे दोषोंके भेदसैं नाडीके वाम दक्षिण में भेद होजाताहै अथवा यह परंपराहै इसीसैं लोकविरुद्धभयसैं देखते है ॥ ८ ॥

दूसरा प्रकार ।

ईषद्विनामितकरं विततांगुलीकं
बाहुप्रसाररहितं परिपीडनेन ।
ईषद्विनम्रकृतकूर्परवामभाग-
हस्ते प्रसारितसदङ्गुलिसन्धिके च ॥ ९ ॥
अङ्गुष्ठमूलपरिपश्चिमभागमध्ये
नाडीं प्रभञ्जनगतिं प्रथमं परीक्षेत् ॥ १० ॥

अर्थ—वैद्य रोगीके हाथको किंचिन्मात्र नवायकर और हाथकी उंगलीयोंको एकत्र कर तथा भुजाको बहुत लंबी न होनेदे और हाथ पट्टी आदिसैं बंधा न हो क्योंकी पट्टिआदिके बंधनसे नाडीकीगति रुकजातीहै फिर रोगीके कूर्पर (कोहनीके वामभाग) को पकड अंगुली और उनकी संधिसहित हाथको पसार रोगीके अंगूठेके पिछलेभागमें प्रथम वातकी परीक्षा करे, कारण यहहै कि आदिमें वातका स्थानहै अतएव प्रथम वातकी परीक्षा करनी चाहिये ॥ ९ ॥ १० ॥

प्रदर्शयेद्दोषनिजस्वरूपं
व्यस्तं समस्तं युगलीकृतं च
मूकस्य मुग्धस्य विमोहितस्य
दीपप्रभावा इव जीवनाडी ॥ ११ ॥

अर्थ—यह जीवनाडी गूंगेके मूढके और मोहितपुरुषके पृथक् पृथक् और मिले तथा द्वंद्वज दोषोंका जो निजस्वरूप है उसको दिखाती है, जैसैं दीपक अपने प्रकाशसैं घरमें स्थित पदार्थोंको दिखताहै ॥ ११ ॥

स्त्रीणां भिषग्वामहस्ते वामे पादे च यत्नतः । शास्त्रेण संप्रदायेन तथा स्वानुभवेन च ॥ परीक्षेद्रत्नवच्चासावभ्यासादेव जायते ॥ १२ ॥

अर्थ—वैद्य स्त्रियोंके वामहाथ और वामपैरमें शास्त्रकी संप्रदायसैं और अपने अनुभवद्वारा रत्नके समान नाडी परीक्षाकरे, यह परीक्षा केवल अभ्याससाध्यहै

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तात्पर्य यह है कि जैसें जोंहरी रत्नपरीक्षामें अभ्यास करनेसें रत्नकी परीक्षा करताहै उसीप्रकार इस नाडीका देखनाभी रत्नपरीक्षाके समानहै, अतएव इसके देखनेमें वैद्य अभ्यासकरे ॥ १२ ॥

करस्याङ्गुष्ठमूले या धमनी जीवसाक्षिणी।
तच्चेष्टया सुखं दुःखं ज्ञेयं कायस्य पण्डितैः ॥ १३ ॥
प्रभञ्जनगतिर्यत्र इति नाड्यन्तरनिरासः सततम् इति सुस्थदशायामपि परीक्षणीया।

अर्थ–तहां नाडीदेखनेका स्थान कहतेहै, जैसैंकि हाथके अंगूठेकी जडमें जो जीवसाक्षिणी धमनी नाडीहै उसकी चेष्टा करके इसप्राणीके देहका सुख दुःख वैद्यजन जाने, ८ के श्लोकमें "प्रभञ्जनगतिर्यत्र" इस लिखनेसें यह सूचनाकरी कि अंगूठेके संनिकट नाडीको देखनी अन्य नाडियोंको न देखना तथा "सततं" इस पदके धरनेसें यह प्रयोजनहै कि वैद्य रोगावस्थाहीमें नाडी न देखे किंतु स्वस्थ दशामेंभी नाडीकी परीक्षाकरे. कारणकि जिसकी नाडी स्वस्थावस्थामें देखीहै यदि उसके रोग प्रगटहोनेवाला होवेतो उस रोगका निश्चय नाडीद्वारा बहुत सुगमतासें होसकताहै इसीसें लिखाहै यथा ॥ १३ ॥

भाविरोगाववोधाय सुस्थनाडीपरीक्षणम् ॥ १४ ॥

अर्थ–अर्थात् होनहार रोगज्ञानके अर्थ वैद्यको स्वस्थ (रोगरहित) मनुष्यकी नाडीपरीक्षा करनी चाहिये ॥ १४ ॥

स्पर्शनादिभिरभ्यासान्नाडीज्ञो जायते भिषक्। तस्मात्परामृशेन्नाडीं सुस्थानामपि देहिनाम् ॥ १५ ॥ स्पर्शनात्पीडनाद्घाताद्वेदनान्मर्दनादपि। तासु जीवस्य सञ्चारं प्रयत्नेन निरूपयेत् ॥ १६ ॥

अर्थ–ग्रन्थान्तरोंमें लिखाहै कि स्पर्शनादिके अभ्याससें अर्थात् प्रत्येककी नाडीं देखनेसें यह वैद्य नाडीका ज्ञाता होताहै अतएव यह वैद्य स्वस्थ मनुष्योंकीभी नाडी देखाकरे उस नाडीके स्पर्शसें, पीडन (दावने) सें, घातसें (ऊंगलियोंमें लगनेसें

१ यद्यस्ति नाडी सर्वत्र शरीरे धातुवाहिनी। तथाप्यङ्गुष्ठमूलस्था करस्था सुवंशोभना ॥१॥ विलसति मणिरन्ध्रे ग्रन्थिरङ्गुरष्ठमूले तदधरणमिताभि स्त्र्यङ्गुलीभिर्निपीड्य। स्फुरणमसकृदेषा नाडिकायाः परीक्षा पदमनुघुटिकाधोऽङ्गुष्ठमूले तथैव ॥ २ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वेदन (तडफ) सें और मर्दनकरना इन कारणोंसें वैद्य उन नाडियोंके जीवसंचार-को निरूपण करे ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥

गुरुतोऽत्र प्रयत्नेन वैद्येन शुभमिच्छता ।
ज्येष्ठेनाङ्गुष्ठमूलेन नाडीपुच्छं परीक्षयेत् ॥ १७ ॥

अर्थ–यशेच्छु वैद्य यत्नपूर्वक गुरुसें अर्थात् गुरुद्वारा अंगुठेकी जडमैं नाडीपुच्छकी परीक्षाकरे, तात्पर्यार्थ यहहै कि जो वैद्य अपने हितकी चाहना करे वो गुरुद्वारा नाडीपरीक्षा सीखे स्वयंही न देखनेलगे ज्येष्ठ कहनेसैं अंगूठेका बृहन्निम्नभाग जानना ॥ १७ ॥

नाडीं वायुप्रवाहेन शास्त्रं दृष्ट्वा च बुद्धिमान् ।
गुरूपदेशं संस्मृत्य परीक्षेत मुहुर्मुहुः ॥ १८ ॥

अर्थ–बुद्धिवान् वैद्य पवनके संचारकरके और शास्त्रके अनुसार तथा गुरूके उपदेश-को स्मरणकर बारबार नाडीकी परीक्षा करे ॥ १८ ॥

वारत्रयं परीक्षेत धृत्वा धृत्वा विमुच्य च ।
विमृश्य बहुधा बुद्ध्या रोगव्यक्तिं तु निर्दिशेत् ॥ १९ ॥

अर्थ–बारबार नाडीपर उँगलिरखे और हटायले अर्थात् नाडीको कुछ दबाय-के ढीली छोडदेवे इसप्रकार करनेसैं नाडीकी सबलता और निर्बलता चौडाव लंबा-व तथा शीघ्रता और मंदताका ज्ञान होताहै । इस प्रकार तीनवार परीक्षाकर संपूर्ण नाडीकी व्यवस्था अपने मनमें विचारकर फिर रोगव्यक्ति कहे अर्थात् इसरोगीके देहमें अमुक रोगहै ऐसै विना विचारे न कहे ॥ १९ ॥

अङ्गुलित्रितयैः स्पृष्ट्वा क्रमाद्दोषत्रयोद्भवैः ।
मन्दां मध्यगतां तीक्ष्णां त्रिभिर्दोषैस्तु लक्षयेत् ॥ २० ॥

अर्थ–नाडीको तीनउँगलियोंके स्पर्शसैं तीनोदोषोंकरकै मन्द, मध्य, और तीक्ष्ण गति जाननी, अर्थात् प्रथम उँगलीमें मध्यस्पर्शहोनेसैं वातकी, और बीचकी उँगलीमें तीक्ष्णस्पर्श होनेसैं पित्तकी, और अंतकी उँगली (अनामिका) में मंदस्पर्श होनेसैं कफकी नाडी जाननी ॥ २० ॥

रोगरहितमनुष्यकीनाडी ।

भूलता भुजगप्राया स्वच्छा स्वास्थ्यमयी शिरा ।
सुखितस्य स्थिरा ज्ञेया तथा बलवती मता ॥ २१ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अर्थ-स्वस्थ अवस्थाकी नाडी केंचुआ और सर्पके समान टेढीगतिसैं और पुष्ट तथा जडता रहित होतीहै यह नैरोग्य पुरुषकी नाडीके लक्षणहै तथा सुखी पुरुषकी नाडी स्थिर और बलवान् होतीहैं ॥ २१ ॥

नाडीके देवता ।

वातनाडी भवेत् ब्रह्मा पित्तनाडी च शंकरः ।
श्लेष्मनाडी भवेद्विष्णुस्त्रिदेवा नाडीदेवताः ॥ २२ ॥

अर्थ--वातनाडीका ब्रह्मा, पित्तनाडीका शंकर, और कफनाडीका पति विष्णुहै।२२।

नाडीन्के वर्ण ।

वातनाडी भवेन्नीला पित्तनाडी तु पाण्डुरा ।
श्वेता तु कफनाडी स्यादेवं वर्णानि संवदेत् ॥ २३ ॥

अर्थ-वातकी नाडीका वर्ण नीलहै, पित्तकी नाडीका पीला, कफनाडीका श्वेत, इसप्रकार नाडीके वर्ण कहने चाहिये ॥ २३ ॥

नाडीन्का स्पर्श ।

पित्तनाडी भवेदुष्णा कफनाडी तु शीतला ।
वातनाडी भवेन्मध्या एवं स्पर्शविनिर्णयः ॥ २४ ॥

अर्थ-पित्तकी नाडी स्पर्शकरनेसैं गरम प्रतीत होतीहै, कफकी नाडी शीतल, और वातकी नाडीका स्पर्श मध्यम होताहै इसप्रकार नाडीका स्पर्श जानना ॥ २४ ॥

कालपरत्व नाडीकी गति ।

प्रातः स्निग्धमयी नाडी मध्याह्ने चोष्णतान्विता ।
सायाह्ने धावमाना च रात्रौ[1] वेगविवर्जिता ॥ २५ ॥

अर्थ-स्वभावसैंही नाडी प्रातःकाल स्निग्ध, मध्यान्हमें उष्ण, और सायंकालमें वेगवती, तथा रात्रिमें वेगवर्जित होतीहै ॥ २५ ॥

अथ वातादिस्वभावक्रम ।

आदौ च वहते वातो मध्ये पित्तं तथैव च ।
अन्ते च वहते श्लेष्मा नाडिकात्रयलक्षणम् ॥ २६ ॥

अर्थ-अब वातादिकका स्वभाव क्रम कहतेहै, जिससमय वैद्य कोहनीको पकडताहैं। उसके द्वितीयक्षणमें प्रथम वातकी नाडी फिर मध्यमें पित्तकी और अंतमें कफकी नाडी

१ चिराद्रोगविवर्जितेति पाठान्तरम् ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

चलतीहै । यह द्वितीयादिक्षणोंमें जाननी कोई कहताहै कि आदिमें वातकी बीचमें पित्तकी और अंतमें कफकी नाडी चलती है यह बात सर्वथा निर्मूलहै क्योंकि स्थानका नियम किसी जगे नहीं करा, विशेष आगे कहते हैं यथा ॥ २६ ॥

उक्तश्लोकका विरोधीवचन ।

आदौच वहते पित्तं मध्ये श्लेष्मा तथैव च ।
अन्ते प्रभञ्जनो ज्ञेयः सर्वशास्त्रविशारदैः ॥ २७ ॥

अर्थ—आदिमें पित्तकी मध्यमें कफकी और अंत्यमे वातकी नाडी सर्वशास्त्रज्ञाता वैद्योंकरके जाननी ॥ २७ ॥

नाडीचक्रमिदम्

वात	पित्त	कफ	नाडीके नाम
श्याम हरित	पीत लाल नील	सपेद	नाडीके वर्ण
ब्रह्मा	शिव	विष्णु	नाडीके देवता
न गरम न शीतल किंतु मध्यम	गरम	शीतल	नाडीका स्पर्श
विषम	दीर्घ	ह्रस्व	नाडीमाप
गंधहीन	तीव्रगंध	मध्यमगंध	नाडीका गंध
तिर्यग्गमन	ऊर्ध्वगमन	अधोगमन	नाडीका गमन
हलकी	हलकी	भारी	नाडीका गुरुता और लघुता
रात्रिदिवाबली	दिवाबली	रात्रिबली	नाडीके बलवा न होनेका समय

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C). Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

उक्तश्लोकका पुष्टिकर्त्ता दृष्टान्त।

तृणं पुरःसरं कृत्वा यथा वातो वहेद्बली। शेषस्थं च तृणं गृह्य पृथिव्यां वक्रगो यथा ॥ २८ ॥ एवं मध्यगतो वायुः कृत्वा पित्तं पुरस्सरम्। स्वानुगं कफमादाय नाड्यां वहति सर्वदा ॥ २९ ॥

अर्थ-इस वाक्यको दृष्टान्त देकर पुष्ट करतेहैं कि जैसै प्रबलवात अर्थात् आंधी. तिनकाओंको अगाडी करके और कुछ पिछाडीके तिनकाओंको लेकर आप बीचमें टेढी होकर चलती है। इसीप्रकार मध्यगत वायु पित्तको अगाडीकर और अपने पिछाडी कफको करके बीचमें आप टेढी होकर चलती है ॥ २८ ॥ २९ ॥

अतएव च पित्तस्य ज्ञायते कुटिला गतिः। वक्रा प्रभञ्जनस्यापि प्रोक्ता मन्दा कफस्य च ॥ ३० ॥ पित्ताग्रेऽस्ति गतिः शीघ्रा तृणस्येति विदृश्यताम्। मन्दानुगस्य वक्रा वै मारुतो मध्यगस्य ह ॥ ३१ ॥ तथात्रैव च ज्ञातव्या गतिर्दोषत्रिकोद्भवा। नान्यथा ज्ञायते स्नायुगतिरेतद्विनिश्चितम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-इसीसैं नाडीमें पित्तकी गति कुटिलहै, और वातकी गति टेढी एवं कफकी मन्दगति प्रतीत होतीहै। पित्तकी शीघ्रगति सो आंधीमें तृणके देखनेसैं प्रत्यक्ष होती है। और जैसैं आंधीमें पिछाडीके तृणकी मंदगति होतीहै उसीप्रकार नाडीमें पिछाडी कफकी मंदगति है। और जैसैं आंधीके बीचमें पवनकी गति टेढी तिरछी होती है। उसीप्रकार इसनाडीके बीचमें वातकी गति टेढी तिरछी प्रतीत होती है इस प्रकार ही नाडीकी गति प्रतीत होती है। अन्यप्रकारसैं नहीं ॥ ३० ॥

परंतु हमको शंकाहैकि नाडीका और आंधीका क्या संबंधहै, क्योंकि आंधीमें आगे पीछे और बीचमें पवनही कहाती है, परंतु नाडीमे तो न्यारे न्यारे दोषहै, जैसें वात पित्त, तथा कफ, और पवनका एकहीकर्महै परतु इन तीन्यो दोषोंके कर्म पृथक् पृथक् है इस कारण यह दृष्टान्तही असंभवहै हमारे मनको हरण कर्ता नहींहै ॥ ३१॥३२ ॥

ग्रंथकर्त्ताका मत

इदानीं कथयिष्यामि स्वमतं शास्त्रसंमतम्। मिथ्यारोपित-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वादस्य खण्डनं लोकरञ्जनम् ॥ ३३ ॥ वातमग्रे वदन्त्येके पित्तमग्रे च केचन । हास्यास्पदमिदं सर्वं नतु सत्यं मनागपि ॥ ३४ ॥

अर्थ–अब हम शास्त्रसंमत तथा मनुष्योंकी रंजना (प्रसन्नता) को और मिथ्यारोपित वादका खंडनरूप अपने मतको कहतेहै । जैसें कोईतो वातकी, और कोई पित्तकी नाडीको आगे बतलाताहै यह केवल उनके हास्यका स्थानहै किंतु किंचिन्मात्रभी सत्य नहींहै इसप्रकार माननेसें बडाभारी अनर्थ होताहै जैसें आगे लिखतेहै ॥ ३४ ॥

सति पित्तभवे व्याधौ बुद्ध्यतिक्रमतो यदि । वातकोपवशादेवमादौ ज्ञात्वा धरागतिम् ॥ ३५ ॥ प्रदद्भेषजं ह्युष्णं तद्दोषविनिवृत्तये । तदा नूनं भवेन्मृत्युः पित्तकोपेन भूयसा ॥ ३६ ॥

अर्थ–कदाचित् किसीरोगीके पित्तकी व्याधिहोवे और वैद्यबुद्धिभ्रमसें वातकोपकी नाडी अग्रभागमें समझकर उस रोगीको दोष दूर करनेको उस उष्ण (शुंठ्यादि) औषध देय तो कहो एकतो पित्तदोषकी गरमी और दूसरे गरम ही दीनी औषध अब कहो वह रोगी पित्तकी गरमीके मारे मरेगा कि बचेगा? किंतु अवश्यही मरेगा ॥

सति वातभवे व्याधौ बुद्ध्यतिक्रमतो यदि । नाडीगतिं पित्तवशादादौ ज्ञात्वा ततो भिषक् ॥ ३७ ॥ प्रदद्भेषजं शीतं तद्दोषविनिवृत्तये । तदा नूनं भवेन्मृत्युर्वातकोपेन भूयसा ॥ ३८ ॥

अर्थ–इसीप्रकार रोगीके देहमें वातजन्य रोगहोय और वैद्यबुद्धिके भ्रमसें पित्तकी नाडी जानकर यदि उसरोगीको पित्तनाशक शीतल उपचार करे तो कहो अत्यंत शरद औषधसें रोगी सरदीके मारे मरेगा या बचेगा? किंतु अवश्यही मरेगा ॥ ३७–३८ ॥

अत्याश्चर्यमिदं लोके वर्त्तते दृश्यतां यथा । वदन्त्येके दिनं रात्रिं केऽपि रात्रिं दिनं तथा ॥ ३९ ॥ एवं स्वेच्छाभिलाप-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

न स्वल्पलोभेन मानवाः । रोगिणां सुप्रियान् प्राणान्हरन्ति ज्ञानवर्जिताः ॥ ४० ॥

अर्थ-इस संसारमें अत्यंत आश्चर्यहै देखो कोई दिनको रात्रि और कोई रात्रिको दिन कहताहै । इसप्रकार अपनी अपनी इच्छानुसार बकतेहै और ए मूर्ख वैद्य थोडेसें लोभके कारण रोगियोंके परमप्रिय प्राणोंको हरण करते है । कहो इनसें बढकर कौन पामरहै जो विना विचारे अनर्थ करते है भाई यह वैद्यविद्या खेल नहीं है ॥ ४० ॥

अत एवं मया चित्ते सर्वमानीय तत्त्वतः । कथ्यते नास्ति नास्तीह नाडीस्थानविचारणा ॥ ४१ ॥ किन्तु नाडीगतिः श्रेष्ठा शास्त्रकारैः प्रकीर्तिता । न च तत्रहि सन्देहो लेश मात्रोऽपि विद्यते ॥ ४२ ॥ तत्प्रकारोप्ययं ज्ञेयः सावधानतया किल । यथा सर्पजलौकादिगतिर्वातस्य गद्यते ॥ ४३ ॥ न तत्र कुरुते कोऽपि पित्तश्लेष्मभवं भ्रमम् । कुलिङ्गकाकमण्डूकगतिः पित्तस्य कीर्त्यते ॥ ४४ ॥ न तत्र कोऽपि कुरुते वातश्लेष्मभवं भ्रमम् । कपोतानां मयूराणां हंसकुक्कुटयोरपि ॥ ४५ ॥ या गतिः सा च विज्ञेया कफस्यैव गतिर्नृभिः । न तत्र कोऽपि कुरुते वातपित्तभवं भ्रमम् ॥ ४६ ॥

अर्थ-इन ऊपरकहेहुए सर्वकारणोंको अपने चित्तमें भलेप्रकार विचारकर हम कहते है कि नाडीके जो आदि मध्य और अंत्य ये स्थान किसीने कहे हैं सो नहीं हैं नहीं हैं । तो क्याहै? इसलिये कहते हैं कि नाडीकी जो गति है वो सत्यहै क्योंकि इसमें सर्वग्रंथकर्त्ताओंकी संमतिहै और इसमें लेशमात्रभी संदेह नहीं है, उसप्रकारको तुम सावधानताकरके सुनो, जैसें सर्प और जोंककी गति वातकी है इसमें कोई भ्रम नहीं करे कि यह पित्तकी नाडीहै या कफकी उसीप्रकार कुलिंग काक और मंडूककी गति पित्तकी है इसमें वात तथा कफकी नाडीका कोई भ्रम नहीं करता, इसीप्रकार कपोत, मोर, हंस, और कुक्कुट इनकी जो गतिहै वह कफकी है इसमें कोई यह नहीं कहे कि ये गति कफकी नहीं है वातपित्तकी है, इसीसें हमारातो यही सिद्धांतहै कि नाडीके स्थान असत्य और गति सत्यहै ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वातादिकोंकी क्रमसैं गति ।

वाताद्वक्रगता नाडी चपला पित्तवाहिनी ।
स्थिरा श्लेष्मवती ज्ञेया मिश्रिते मिश्रिता भवेत् ॥ ४७ ॥

अर्थ-वात तिरछी वहती है, अतएव वातकी नाडी टेढी चलतीहै, अग्नि चंचल हो ऊपरको जाती है अतएव पित्तकी नाडी ऊपरकी तरफ वहती है और चपलहै, जल नीचेको जाताहै, इसीसै प्रवल नहींहै अतएव कफकी नाडीभी स्थिरहै और जो मिश्रित नाडी है उनकी गतिभी मिली हुई होती है । इस्सै यह दिखाया कि द्विदोषजमें दोदोषके चिन्ह होतेहै, त्रिदोषमें तीनो दोषोंके चिन्ह होते है, कदाचित् कोई प्रश्नकरेकि एकही नाडी चपल और स्थिर कैसैं होसकती है ? इस्सैं कहतेहै कि समय भेद होनेसैं दोनो गति होसक्तीहै ॥ ४७ ॥

वातादीकी विशेषगति ।

सर्पजलौकादिगतिं वदन्ति विबुधाः प्रभञ्जने नाडीम् ।
पित्ते च काकलावकभेकादिगतिं विदुः सुधियः ॥ ४८ ॥
राजहंसमयूराणां पारावतकपोतयोः ।
कुक्कुटादिगतिं धत्ते धमनी कफसंवृता ॥ ४९ ॥

अर्थ-सर्प और जोखकी गति पंडितजन वातकी नाडीकी गति कहते, हैं अर्थात् जैसैं सर्प और जोख टेढे तिरछे होकर चलते है उसीप्रकार वादीकी नाडी चलती है । आदि शब्दसे विछूकी गतिका ग्रहणहै । उसी प्रकार पित्तमें काक कौआ लावक (लवा) और भेद (मैंडका) की गतिके सदृश नाडी चलतीहै अर्थात् जैसैं कौआ, लवा, और मेंडका भुदकते उछलते चलतेहै उसी प्रकार पित्तकी नाडी चलतीहै । आदिशब्दसैं कुलिंग और चिडा आदिकी गतिका ग्रहणहै । एवं राजहंस (वतक) मोर, खबुतर, कपोत (पिंडुकिया) और मुरगा इन पक्षियोंकीसी अर्थात् ए पक्षी जैसैं मंदमंद गति चलतेहै इसप्रकार कफकी नाडी चलती है । आदिशब्दसैं हाथी और उत्तम स्त्रीकी चालका ग्रहण है अर्थात् जैस हाथी और उत्तम स्त्री झूमती हुई मंद मंद चलती है उसी प्रकार कफकी नाडी चलतीहैं ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

द्वंद्वजनाडीकी चाल ।

मुहुः सर्पगतिं नाडीं मुहुर्भेकगतिं तथा । वातपित्तद्वयोद्भूतां प्रवदन्ति विचक्षणाः ॥ ५० ॥ भुजगादिगतिश्चैव राज-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

हंसगतिं धराम् । वातश्लेष्मसमुद्भूतां भाषन्ते तद्विदो जनाः ॥ ५१ ॥ मण्डूकादिगतिं नाडीं मयूरादिगतिं तथा । पित्तश्लेष्मसमुद्भूतां प्रवदन्ति महाधियः ॥ ५२ ॥

अर्थ–बारबार सर्पगति (टेढी) और बारबार मेंडकाकी गति (उछलती) नाडी चले उसको चतुरवैद्य वातपित्तकी नाडी कहतेहैं । तथा कभी सर्पगति और कभी राजहंसकी गतिसैं नाडी चले उसको पंडितजन वातकफकी नाडी कहतेहै । एवं कभी मेडक और कभी मोरकी चाल चले उस नाडीको पित्तकफकी बुद्धिवान् वैद्य कहतेहैं ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

प्रकारान्तर ।

वातेऽधिके भवेन्नाडी प्रव्यक्ता तर्जनीतले । पित्ते व्यक्ता मध्यमायां तृतीयाङ्गुलिगा कफे ॥ ५३ ॥ तर्जनीमध्यमामध्ये वातपित्ताधिके स्फुटा । अनामिकायां तर्जन्यां व्यक्ता वातकफे भवेत् ॥ ५४ ॥ मध्यमानामिकामध्ये स्फुटा पित्तकफेऽधिके । अङ्गुलित्रितयेऽपि स्यात्प्रव्यक्ता सान्निपाततः ॥ ५५ ॥

अर्थ–वाताधिक्य नाडी तर्जनीके नीचे चलतीहै । पित्तकी नाडी मध्यमा ऊंगलीके नीचे । और कफकी नाडी तीसरी ऊंगली अर्थात् अनामिकाके नीचे चलती है । वातपित्तकी नाडी तर्जनी और मध्यमाके नीचे चलती है । वातकफकी नाडी अनामिका और तर्जनीके नीचे चलती है । मध्यमा और अनामिकाके नीचे पित्तकफाधिक नाडी चलतीहै । और तीनो ऊंगलियोंके नीचे सन्निपातकी नाडी गमन करती है ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

वक्रमुत्प्लुत्य चलती धमनी वातपित्ततः । वहेद्वक्रश्च मन्दश्च वातश्लेष्माधिके त्वचः ॥ ५६ ॥ उत्प्लुत्य मन्दं चलति नाडी पित्तकफेऽधिके ।

अर्थ–वातपित्ताधिक्यसैं नाडी टेढी और उछलती हुई चलतीहै । वातकफसैं टेढी और मन्दगमनकरतीहै पित्तकफाधिक्यमें नाडी उछलीहुई मंद गमन करती है ॥ ५६ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

त्रिदोषकीनाडी ।

**उरगादिलावकादि हंसादीनाञ्च बिभ्रती गमनम् ॥ ५७ ॥
वातादीनाञ्च समं धमनी सम्बन्धमाधत्ते ।**

अर्थ–वातादि त्रिदोषके समान होनेसैं नाडी सर्प, लवा, और हंस आदि पक्षियोंके समान गमन करतीहै । समके कहनेसैं न्यूनाधिक्यका त्यागहै यदि नाडी तीनो दोषोंकी क्रमसैं चले तो असाध्य नहीं है ॥ ५७ ॥

लावतित्तिरवार्तीकगमनं सन्निपाततः ॥ ५८ ॥ कदाचिन्मन्दगमना कदाचिच्छीघ्रगा भवेत् । त्रिदोषप्रभवे रोगे विज्ञेया हि भिषग्वरैः ॥ ५९ ॥

अर्थ–लवा तीतर और वटेरकी चाल नाडी संनिपातके कोपसैं करतीहै कभी मंदगमन करे, और कभी शीघ्रगमनकरे, ऐसी नाडी त्रिदोषजन्य रोगमें वैद्योंको जाननी चाहिये इस त्रिदोषमें पित्तके क्रमसैं साध्यासाध्य और कृच्छ्रसाध्य जानना अर्थात् अधिकपित्तसैं साध्य, मध्यसैं कष्टसाध्य, और पित्त सर्वथा नाडीमें न होयतो वह रोगी असाध्यहै ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

सामान्यतापूर्वकसुखसाध्यत्व ।

**यदा यं धातुमाप्नोति तदा नाडी तथागतिः ।
तथा हि सुखसाध्यत्वं नाडी ज्ञानेन बुध्यते ॥ ६० ॥**

अर्थ–नाडी जिससमय जिसधातुमें प्राप्तहोय उससमय यदि उसका प्रकृति अनुसार चलना होय तो पीडा सुखसाध्य ऐसे नाडीज्ञानकरके जानी जातीहै इसका निष्कृष्टार्थ यहहै कि अपराह्णादि कालमें वातोल्बणा नाडी प्रथम वातकी गति करके चले, फिर क्रमसैं पित्त और कफकी चालचले, किंतु पित्तोल्बणा वातगतिसैं न चले तो सुखसाध्य जाननी यदि इससै विपरीतहोय तो विपरीत अर्थात् असाध्य जाननी जैसै किसीने कहाहै “ नाडी यथा कालगतिस्त्रयाणां प्रकोपशान्त्यादिभिरेव भूयः” ॥ ६० ॥

असाध्यत्व ।

**मन्दं मन्दं शिथिलशिथिलं व्याकुलं व्याकुलं वा
स्थित्वा स्थित्वा वहति धमनी याति नाशं च सूक्ष्मा ।**

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नित्यं स्थानात्स्खलति पुनरप्यङ्गुलिं संस्पृशेद्वा।
भावैरेवं बहुविधविधैः सन्निपातादसाध्या ॥ ६१ ॥

अर्थ–जो नाडी कभी प्रखरतारहित मंदमंद गमन करे, कभी स्खलित भावसैं कभी व्याकुल व्याकुलवत् (जैसें त्रासित मनुष्य चलताहै) कभी ठहर ठहरके चले और जो संपूर्ण रूपसैं लुप्तहोजाय अथवा बहुत सूक्ष्म वहे अर्थात् यह प्रतीत नहोय कि यह नाडी चलेहै या नहीं चले और जो नित्यस्थान अर्थात् अंगुष्ठमूलको परित्यागकरदे, इसीप्रकार कुछकालमें फिर अपने स्थानमें प्रगटहोय ऊंगलियोंको आघातकरे, ऐसे अनेक प्रकारके भावोंकरके नाडीको मृत्युकी कारण जाननी ॥ ६१ ॥

महादाहेऽपि शीतत्वं शीतत्वे तापिता शिरा।
नानाविधगतिर्यस्य तस्य मृत्युर्न संशयः ॥ ६२ ॥

अर्थ–जिस प्राणीके देहमें अत्यंत ताप होय परंतु नाडी शीतल होय, एवं देह अत्यंत शीतल होय और नाडी उष्ण प्रतीतहो, तथा जिसनाडीकी अनेकप्रकारकी गति होय उसरोगीकी निश्चय मृत्यु होय, इस श्लोकमें महाशब्द पित्तकृत दाहके निवारणार्थ है ॥ ६२ ॥

त्रिदोषे स्पन्दते नाडी मृत्युकालेऽपि निश्चला ॥ ६३ ॥

अर्थ–संनिपातावस्थामें मृत्युकालमें भी नाडी सामान्य भावसैं चलती है क्योंकी अतीसारादि रोगोंमें हाथपैरमें स्वेदादिक करनेसैं नाडीका तडफना प्रतीत होता है ॥ ६३ ॥

पूर्वं पित्तगतिं प्रभञ्जनगतिं श्लेष्माणमाबिभ्रतीम्।
स्वस्थानभ्रमणं मुहुर्विदधतीं चक्राधिरूढामिव।
तीव्रत्वं दधतीं कलापिगतिकां सूक्ष्मत्वमातन्वतीम्।
नो साध्यां धमनीं वदन्ति सुधियो नाडीगतिज्ञानिनः ॥६४॥

अर्थ–प्रथम पित्तगतिसैं चले (अर्थात् प्रथम वातगति चलना चाहिये सो त्याग दे यह विपरीत क्रम दिखाया) फिर वातगति और फिर कफकी गतिसैं चले तथा अपने स्थानको छोड वारंवार अनेक प्रकारसैं चक्र (चाक) पर बैठ चाकफेरीके सदृश भ्रमणकरे, कभी तीव्रवेगसैं चले और कभी मोरकी गतिके समान

१ भीमत्वंदधतीं कदाचिदपि वा इति पाठांतरम्।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

उत्तरोत्तर मंद पडजावे ऐसी नाडीको नाडीके ज्ञाता साध्य नहींकहते, किंतु असाध्य कहतेहै ॥ ६४ ॥

यात्युच्चा च स्थिरात्यन्ता या चेयं मांसवाहिनी ।
या च सूक्ष्मा च वक्रा च तामसाध्यां विदुर्बुधाः ॥ ६५ ॥

अर्थ–जो नाडी अत्यंत ऊंची, अत्यंत स्थिर. और जो मांसवाहिनी कहिये मांसाहारकरनेसें जैसी चले ऐसी चलने लगे और जो अत्यंत सूक्ष्म, और टेढीहो उसको वैद्यजन असाध्य कहतेहै ॥ ६५ ॥

असाध्यनाडीका परिहार ।

भारप्रवाहमूर्च्छा भयशोकप्रमुखकारणान्नाडी ।
संमूर्च्छितापि गाढं पुनरपि सा जीवनं धत्ते ॥ ६६ ॥

अर्थ–अत्यंत वोझाके उठानेसें, अथवा विषवेग धाराके वहनेसे, रुधिरदेखनेके कारण जो मूर्छित हो गयाहो राक्षसादि दर्शनकरके भयभीततासें धनपुत्रादि नष्ट होनेके शोकसें जो नाडी अत्यंत स्पन्दरहितभी होगईहो वो फिरभी साध्यताको प्राप्त होतीहै कोई भावप्रवाह ऐसा पाठमानताहै सो असत्है ॥ ६६ ॥

पतितः सन्धितो भेदी नष्टशुक्रश्च यो नरः ।
शाम्यते विस्मयस्तस्य न किञ्चिन्मृत्युकारणम् ॥ ६७ ॥

अर्थ–जो उच्चस्थानादिसें गिराहो, हड्डी आदिके जोडनेसें, अतीसार रोग वाला, जिसकै यक्ष्मा आदि रोगके कारण अथवा रमणकरनेके कारण शुक्रक्षीण होगयाहो, ऐसे मनुष्योंकी यदि नाडी अत्यंत क्षीणभी होगईहो तथापि मृत्युका कारण नहीहै, अर्थात् असाध्यके विस्मयको दूरकरेहै ॥ ६७ ॥

तथा भूताभिषङ्गेऽपि त्रिदोषवदुपस्थिता । समाङ्गा वहते नाडी तथा च न क्रमंगता । अपमृत्युर्न रोगाङ्गा नाडी तत्सन्निपातवत् ६८

अर्थ–एवं भूताभिषंग अर्थात् भूतप्रेतबाधामें यदि नाडी सन्निपातके सदृश चले तथा वह नाडी वात पित्त कफ स्वभावक्रमवालीहो किंतु वे क्रम न होय तौ उस सन्निपातके सदृश नाडीसेंभी मृत्युका भय नहींहै ॥ ६८ ॥

स्वस्थानहीने शोके च हिमाक्रान्ते च निर्गदाः ।
भवन्ति निश्चला नाड्यो न किञ्चित्तत्र दूषणम् ॥ ६९ ॥

अर्थ–उच्चस्थानसें गिरनेसें शोक और हिम (बर्फ कोहल आदिकी शरदी)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सैं यदि नाडी निश्चल होय फिरभी प्रगट होय इस्से मृत्यु शंकाका भय नहीं है इस श्लोकमें "निर्गदा" जो पदहै सो असंगतहै। क्योंकि निर्गदा नाडीभी निश्चला होतीहै ॥ ६९ ॥

स्तोकं वातकफं जुष्टं पित्तं वहति दारुणम्।
पित्तस्थानं विजानीयाद्भेषजं तस्य कारयेत् ॥ ७० ॥

अर्थ-किंचिन्मात्र वातकफयुक्त और पित्त जिसमें प्रबल होय तो उस रोगीका यत्न करना चाहिये, वो असाध्य नही है ॥ ७० ॥

स्वस्थानच्यवनं यावद्धमन्या नोपजायते।
तावच्चिकित्सा सत्वेऽपि नासाध्यत्वमिति स्थितिः ॥ ७१ ॥

अर्थ-जबतक नाडी स्वस्थान कहिये अंगुष्ठमूलसैं च्युत न होय, तावत्कालतक चिकित्सा करे यह असाध्य नहीं है ॥ ७१ ॥

प्रसङ्गवशकालनिर्णय कहतेहै

भूलता भुजगाकारा नाडी देहस्य संक्रमात्।
विशीर्णा क्षीणतां याति मासान्ते मरणं भवेत् ॥७२॥

अर्थ-कभी नाडी केंचुएके सदृश कृश और टेढी चले, कभी सर्पके समान पुष्ट बलयुक्त और तिरछी चले, तथा कभी अलक्ष और अतिकृशतापूर्वक गमनकरे एवं कभी देह सूजन आदिसैं स्थूल होजावे और कभी कृशहो जाय तो वह रोगी दूसरे महिनेमें मरे ॥ ७२ ॥

क्षणाद्गच्छति वेगेन शान्ततां लभते क्षणात्।
सप्ताहान्मरणं तस्य यद्यङ्गं शोथवर्जितः ॥ ७३ ॥

अर्थ-कभी नाडी जल्दी चले कभी चलनेसैं रहि जावे और देहमें शोथ होय नहीं, तो उस प्राणीकी सातदिनमें मृत्यु होय ॥ ७३ ॥

निरीक्षा दक्षिणे पादे तदा चैषा विशेषतः।
मुखे नाडी वहेन्नित्यं ततस्तु दिनतुर्यकम् ॥ ७४ ॥

अर्थ-पुरुषके दहने पैरमें और स्त्रीके वामपैरमें यदि नाडी विशेष संचारकरे तथा आदिमें नित्य नाडी चले तो वहरोगी चारदिन जीवे। आदिशब्दसैं इस जगे तर्जनी ऊंगली जाननी ॥ ७४ ॥

१ तत्स्थाचिह्नस्य सत्वेपीति पाठान्तरम्।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

हिमवद्विशदा नाडी ज्वरदाहेन तापिनाम् ।
त्रिदोषस्पर्शभजतां तदा मृत्युर्दिनत्रयात् ॥ ७५ ॥

अर्थ–सन्निपात ज्वर दाहसैं संतप्त रोगीकी नाडी यदि शीतल और निर्मल होय तो वह रोगी तीन दिनमें मरे ॥ ७५ ॥

गतिन्तु भ्रमरस्येव वहेदेकदिनेन तु ।

अर्थ–जिस प्राणीकी नाडी भ्रमरके सदृश गमन करे अर्थात् जैसें भौंरा कुछ दूर उडकर चला जाताहै और फिर उसीजगे आय जाताहै इसप्रकार नाडी चलनेसें उसकी एकदिनमें मृत्यु होय ॥

कन्देन स्पन्दते नित्यं पुनर्लगति नाङ्गलौ ॥ ७६ ॥
मरणे डमरूकारा भवेदेकदिने न तु ।

अर्थ–मरणमें नाडी डमरूके आकार होतीहै, वो १ दिनमें मरे ॥ ७६ ॥

दृश्यते चरणे नाडी करे नैवाधि दृश्यते ।
मुखं विकसितं यस्य तं दूरात्परिवर्जयेत् ॥ ७७ ॥

अर्थ–जिसके चरणमें नाडी प्रतीत होय और हाथमें न मालुमहो, तथा जिसका मुख खुलगयाहो उसै वैद्य त्यागदेय ॥ ७७ ॥

वातपित्तकफाश्चापि त्रयो यस्यां समाश्रिताः ।
कृच्छ्रसाध्यामसाध्यां वा प्राहुर्वैद्यविशारदाः ॥ ७८ ॥

अर्थ–जिसकी नाडीमें वातपित्त और कफ ए तीनोंदोष होय उसरोगीको बुद्धिवान् वैद्य कृच्छ्रसाध्य अथवा असाध्य कहतेहै ॥ ७८ ॥

शीघ्रा नाडी मलोपेता शीलता वाथ दृश्यते ।
द्वितीयदिवसे मृत्युर्नाडीविज्ञातृभाषितम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–जिस रोगीकी नाडी बहुधा मलदूषित होकर शीघ्र चले, किंवा शीतल प्रतीतहो उस रोगीकी दूसरे दिन मृत्युहोय, इसप्रकार नाडीज्ञान पारंगत वैद्योंने कहाहै ॥ ७९ ॥

मुखे नाडी वहेत्तीव्रा कदाचिच्छीतला वहेत् ।
आयाति पिच्छलस्वेदः सप्तरात्रं न जीवति ॥ ८० ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अर्थ–वातनाडी तीव्रगति, तथा कभी मंदवहे तथा अंगमेंसें गाढा पसीनां निकले तो वह रोगी सातरात्रि नही वचे ॥ ८० ॥

देहे शैत्यं मुखे श्वासो नाडी तीव्रा विदाहिनी।
मासार्धं जीवितं तस्य नाडीविज्ञातृभाषितम् ॥ ८१ ॥

अर्थ–शरीरमें शीतलता, मुखसें अत्यंत श्वास छोडे, तथा नाडी तीव्रदाहयुक्त चले, उसका अर्धमास आयुष्यहै, ऐसें नाडीज्ञाताओंने कहाहै ॥ ८१ ॥

मुखे नाडी यदा नास्ति मध्ये शैत्यं बहिः क्लमः।
यदा मन्दा वहेन्नाडी त्रिरात्रं नैव जीवति ॥ ८२ ॥

अर्थ–जिस कालमें वातनाडी चले नहीं अंतर्गत शीतहो तथा बाहर ग्लानीहोकर मंदमंद नाडी चले तो वह रोगी तीनरात्रि नहीं जीवे ॥ ८२ ॥

अतिसूक्ष्मातिवेगा च शीतला च भवेद्यदि।
तदा वैद्यो विजानीयात्स रोगी त्वायुषः क्षयी ॥ ८३ ॥

अर्थ–जिसकालमें नाडी अति सूक्ष्म किंवा अतिवेगवान् और शीतल वहे तो रोगी क्षीण आयुहै ऐसें वैद्य जाने ॥ ८३ ॥

विद्युद्द्रोगिणां नाडी दृश्यते न च दृश्यते।
अकालविद्युत्पातेव स गच्छेद्यमसादनम् ॥ ८४ ॥

अर्थ–जिस रोगीकी नाडी कभी कभी बिजलीके समान फडकजावे और फिर अस्त होजावे, वो रोगी अकस्मात् जैसें बिजली गिरती है, इसप्रकार रोगी यमराजके घर जाय ॥ ८४ ॥

तिर्यगुष्णा च या नाडी सर्पगा वेगवत्तरा।
कफपूरितकण्ठस्य जीवितं तस्य दुर्लभम् ॥ ८५ ॥

अर्थ–नाडी उष्ण वक्रगति तथा सर्पके समान बहुत वेगवानहो, तथा कंठ कफसें घिरजावे ऐसा रोगीका जीवन दुर्लभ जानना ॥ ८५ ॥

चला चलितवेगा च नासिका धारसंयुता।
शीतला दृश्यते या च याममध्येच मृत्युदा ॥ ८६ ॥

अर्थ–जिसकी नाडी कांपनेवाली तथा चंचल नासिकाके श्वासोल्लासके आधारसें चलनेवाली और शीतल ऐसी प्रतीतहो वो रोगी एकप्रहरमें मरे ऐसा जानना ॥ ८६ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

शीघ्रा नाडी मलोपेता मध्याह्नेऽग्निसमो ज्वरः ।
दिनैकं जीवितं तस्य द्वितीयेऽह्नि म्रियेत सः ॥ ८७ ॥

अर्थ–जिस रोगीकी त्रिदोषयुक्त नाडी बहुतजल्दी चले, तथा जिसको मध्याह्नमें अग्निके समान ज्वर आवे, उस रोगीकी आयु एकदिनकी है दूसरे दिन मृत्यु होय ८७॥

स्कन्देन स्पन्दते नित्यं पुनर्लगति नाङ्गुलौ ।
मध्ये द्वादशयामानां मृत्युर्भवति निश्चितम् ॥ ८८ ॥

अर्थ–जो नाडी अपने मूलस्थानमें फडके नहीं और ऊंगलीयोंका स्पर्श न करे उसकी बारह प्रहरमें मृत्युहोय. ऐसा जानना ॥ ८८ ॥

स्थित्वा नाडी मुखे यस्य विद्युद्द्योतिरिवेक्षते ।
दिनैकं जीवितं तस्य द्वितीये म्रियते ध्रुवम् ॥ ८९ ॥

अर्थ–जिस रोगीकी नाडी मूलस्थानके अग्रभागमें ठहरकर विजलीके सदृश तडफजावे वह एकदिन जीवे, दूसरे दिन निश्चय मरे ॥ ८९ ॥

स्वस्थानविच्युता नाडी यदा वहति वा न वा । 40
ज्वाला च हृदये तीव्रा तदा ज्वालावधि स्थितिः ॥ ९० ॥

अर्थ–जिस रोगीकी नाडी अपने स्थानसें विच्युतहो (छूट) कर कभी चले कभी नहीं और हृदयमें तीव्र दाहहोय तो जबतक हृदयमें ज्वालाहै तावत्काल रोगीका जीवन है ॥ ९० ॥

अङ्गुष्ठमूलतो बाह्ये द्व्यङ्गुले यदि नाडिका ।
प्रहरार्द्धाद्बहिर्मृत्युं जानीयाच्च विचक्षणः ॥ ९१ ॥

अर्थ–अंगुष्ठमूल अर्थात् तर्जनी ऊंगली धरनेके स्थलमें यदि नाडीकी गति प्रतीत नहीं, केवल मध्यमा और अनामिका इन दो अंगुलीसें प्रतीतहोय तो उस रोगीकी अर्ध प्रहरके उपरांत मृत्यु होय ॥ ९१ ॥

सार्द्धद्व्याङ्गुलाद्बाह्ये यदि तिष्ठति नाडिका ।
प्रहरैकाद्बहिर्मृत्युं जानीयाच्च विचक्षणः ॥ ९२ ॥

अर्थ–नाडी मूलस्थानसें २॥ अंगुल अंतर अर्थात् यदि केवल अनामिकाके शेषार्द्ध मात्रमें फडके उसकी प्रहरउपरांत अर्थात् दूसरे प्रहरमें मृत्युहोय ॥ ९२ ॥

पादाङ्गुलगता नाडी चञ्चला यदि गच्छति ।
त्रिभिस्तु दिवसैस्तस्य मृत्युरेव न संशयः ॥ ९३ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अर्थ–यदि नाडी तर्जनीको सर्वांश और मध्यमा ऊंगलीके चतुर्थांशमें व्याप्तहो प्रतीत होवे और मध्यमाके अवशिष्ट पादत्रय और अनामिकाके सर्वांशमें न प्रतीत होय तो उस रोगीकी तीनदिनमें मृत्यु होय ॥ ९३ ॥

पादाङ्गुलगता नाडी कोष्णा वेगवती भवेत् ।
पञ्चभिर्दिवसैस्तस्य मृत्युर्भवति नान्यथा ॥ ९४ ॥

अर्थ–नाडी पूर्ववत् तर्जनी और मध्यमाके चतुर्थांशमें व्यापकहो जल्दी जल्दी चले और किंचिन्मात्र गरम प्रतीत होय तो उसरोगीकी चारदिनमें निश्चय मृत्युहोय ॥ ९४ ॥

पादाङ्गुलगता नाडी मन्दमन्दा यदा भवेत् ।
पञ्चभिर्दिवसैस्तस्य मृत्युर्भवति नान्यथा ॥ ९५ ॥

अर्थ–नाडी पूर्ववत् समग्र तर्जनी और मध्यमाके चतुर्थांशमें व्याप्तहो मन्दमन्द चले तो उसरोगीकी पांचवे दिन मृत्युहोय ॥ ९५ ॥

नाडीद्वारा आयुका ज्ञान ।

वामनाडी दीर्घरेखा बाहुमूले च स्पन्दते ।
जीवेत्पञ्चशतं वर्षं नात्र कार्या विचारणा ॥ ९६ ॥

अर्थ–जिस रोगी वामनाडी दीर्घरेखाके आकारसें भुजाकी जडमें तडफे वो १०९ वर्षजीवे इसमें संदेह नहीं ॥ ९६ ॥

दीर्घाकारा वामनाडी कर्णमूले च स्पन्दते ।
जीवेत्पञ्चशतं सार्द्धं धनिको धार्मिको भवेत् ॥ ९७ ॥

अर्थ–जिसकी वामनाडी आकारमें लंबी होकर कानकी जडमें प्रतीत होय वह सार्धपंचशतवर्ष जीवे और धनिक तथा धार्मिक होय ॥ ९७ ॥

वामनाडी स्वल्परेखा हनुमूले च स्पन्दते ।
पञ्चवर्षाधिकश्चैव जीवनं नात्रसंशयः ॥ ९८ ॥

अर्थ–जिसकी वामनाडी स्वल्परेखामें हो ठोडीकी जडमें तडफे वो पांचवर्ष अधिक जीवे इसमें संदेह नहीं ॥ ९८ ॥

नाडीद्वारा भोजनका ज्ञान ।

पुष्टिस्तैलगुडाहारे मांसे च लगुडाकृतिः । क्षीरे च स्तिमिता वेगा मधुरे भेकवद्गतिः ॥ ९९ ॥ रम्भागुडवटाहारे रूक्षशु-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

ष्कादिभोजने । वातपित्तार्त्तिरूपेण नाडी वहति निष्क्रमम् ॥ १०० ॥

अर्थ–तैल और गुडके खानेसें नाडी पुष्ट प्रतीत होतीहै, मांसके खानेसें नाडी लकडीके आकार चलती है, दूधपीनेसें मंदगतिसें चलती है । मधुर आहारसें नाडी मंडककेसमान चलतीहै केला, गुड, वडा रूक्षवस्तु, और शुष्कद्रव्यादि भोजनसें जैसी वातपित्तरोगमें नाडी चलती है उसप्रमाण चलेहै ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अथ रसज्ञानम् ।

मधुरे बर्हिगमना तिक्ते स्याद्धूलतागतिः[1] । अम्ले कोष्णा त्प्लवगतिः कटुके भृङ्गसन्निभा ॥ १०१ ॥ कषाये कठिना म्लाना[2] लवणे सरला द्रुता । एवं द्वित्रिचतुर्योगे नानाधर्मवती धरा ॥ १०२ ॥

अर्थ–मिष्ट पदार्थ भक्षणसें नाडी मोरकीसी चाल चलती है कडुई द्रव्य भक्षणसें स्थूलगति, खट्टे पदार्थ खानेसें कुछ उष्ण और मैंडकाकीगति होती है, चरपरी द्रव्य खानेसें भौंराके आकार गति होतीहै, कसेली द्रव्य खानेसें नाडी कठोर और म्लान होतीहै, निमकीन पदार्थ खानेसें सरल (सीधी) और जल्दी चलनेवाली होती है, इसीप्रकार भिन्न भिन्न रसके एकही समय सेवन करनेसें नाडी अनेकप्रकारकी गतिवाली होतीहै ॥ १०१ ॥ १०२ ॥

अम्लैश्च मधुराम्लैश्च नाडी शीता विशेषतः । चिपिटैर्भ्रष्टद्रव्यैश्च स्थिरा मन्दतरा भवेत् ॥ १०३ ॥ कूष्माण्डमूलकैश्चैव मन्दमन्दा च नाडिका । शाकैश्च कदलैश्चैव रक्तपूर्णेव नाडीका ॥ १०४ ॥

अर्थ–खट्टे पदार्थ अथवा मधुराम्ल (मिष्ठ और खट्टामिला) भोजनसें नाडी शीतल होती है चिरवा औ भुनीहुई (चना, वोहरी) द्रव्य भक्षणसें नाडी स्थिर और मंदगति चलतीहै पेठा मूली अथवा कंदपदार्थके भक्षणसें नाडी मंद मंद चलतीहै शाक (पत्रपुष्पादिकका) और केलेकी फली भक्षण करनेसें नाडी रक्तपूर्णके सदृश चलेहै ॥ १०३ ॥ १०४ ॥

---

१ तिक्ते स्यात्स्थूलता गतेः । २ कषाये कठिनाम्लावा इति वा पाठः ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मांसात्स्थिरवहा नाडी दुग्धे शीता बलीयसी । गुडैः क्षीरैश्च पिष्टैश्च स्थिरा मन्दवहा भवेत् ॥ १०५ ॥ द्रवेऽतिकठिना नाडी कोमला कठिनापि च । द्रवद्रव्यस्य काठिन्ये कोमला कठिनापि च ॥ १०६ ॥

अर्थ-मांस भक्षणसें नाडी मंदगामिनि होती है, दूधके पीनेसें नाडी शीतल और बलवती होती है, तथा गुड, दूध, और पिष्टपदार्थ (चूनके, पिट्टी आदिके पदार्थ) भक्षणसें नाडी चंचलतारहित मंदगामिनी होतींहे, द्रवपदार्थ (कढी, पने, श्रीखंडआदि) भोजनसें नाडी कठिन होतीहै और कठोर (लड्डुके सुहार आदिसें नाडी कोमल होती है यदि द्रवपदार्थ कुछ कठोर होयतो नाडी कोमल और कठोर उभय स्वभाववती होती है ॥ १०५ ॥ १०६ ॥

उपवासाद्भवेत्क्षीणा तथा च द्रुतवाहिनी ।
संभोगान्नाडिका क्षीणा ज्ञेया द्रुतगतिस्तथा ॥ १०७ ॥

अर्थ-उपवास (निराहार) सें नाडी क्षीण और शीघ्रवाहिनी होती है एवं स्त्री संभोगसें नाडी क्षीण और शीघ्र चलनेवाली होतीहै ॥ १०७ ॥

कुपथ्यवसनाडीकीचाल ।

उष्णत्वं विषमावेगा ज्वरिणां दधि भोजनात् ॥ १०८ ॥

अर्थ-यदि ज्वरवान् पुरुष दहि खाय तो उसकी नाडी गरम और विषमवेगवती होतीहै ॥ १०८ ॥

इति श्रीमाथुरकृष्णलालाङ्गजदत्तरामेणसङ्कलिते नाडीदर्पणे द्वितीयावलोकः

अब इसके उपरान्त कितनेक रोगोंकी नाडीकी जैसी अवस्था होतीहै, उसको लिखतेहै, तहां रोगनिरूपणमें प्रधानता करके प्रथम ज्वरनिरूपण करते है ।

ज्वरके पूर्वरूपमें ।

अङ्गग्रहेण नाडीनां जायन्ते मन्थराः प्लवाः ।
प्लवः प्रबलतां याति ज्वरदाहाभिभूतये ॥ १ ॥
सान्निपातिकरूपेण भवन्ति सर्ववेदनाः ।

अर्थ-ज्वर आनेवाली अवस्थाके कितनेक क्षण पहिले अंगमें पीडा होने लगे, नाडी मंथर (मंद) भावसें मेंडकाकी चाल चलने लगे तथा दाह ज्वरकी पूर्वव-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

स्थाके वा धारामें वहनेवाले मेंडकाके समान तथा सांनिपातिक ज्वरकी पूर्व अवस्थाके प्रमाण नाना आकृतिसें गमन करे ॥ १ ॥

ज्वरके रूपमें ।

ज्वरकोपेन धमनी सोष्णा वेगवती भवेत् ॥ २ ॥

अर्थ–जिस कालमें इसप्राणीको ज्वर चढआताहै उस समय नाडी गरम और वेगवती होती है ॥ २ ॥

ऊष्मा पित्तादृते नास्ति ज्वरो नास्त्यूष्मणा विना ।
उष्णा वेगधरा नाडी ज्वरकोपे प्रजायते ॥ ३ ॥

अर्थ–विना पित्तके गरमी नहीं और विना गरमीके ज्वर नहीं होता अतएव ज्वरके वेगमें नाडी गरम और वेगवान् होती है ॥ ३ ॥

ज्वरे च वक्रा धावन्ती तथा च मारुतप्लुवे ।
रमणान्ते निशि प्रातस्तथा दीपशिखा यथा ॥ ४ ॥

अर्थ–ज्वरके कोपमें और वादीमें नाडी टेढी और दोडती चलती है तथा मैथुनकरनेके पिछाडी रात्रिमें और प्रातःकालमें नाडी दीपशिखाके समान मंद गमन करती है ॥ ४ ॥

वातज्वरे ।

सौम्या सूक्ष्मा स्थिरा मन्दा नाडी सहजवातजा ।
स्थूला च कठिना शीघ्रा स्पन्दते तीव्रमारुते ॥ ५ ॥
वक्रा च चपला शीतस्पर्शा वातज्वरे भवेत् ।

अर्थ–स्वाभाविक वायुके द्वारा नाडी कोमल, सूक्ष्म, स्थिर, और मंद वेगवाली होती है । तीव्रवायुद्वारा नाडी स्थूल, कठिन, तथा जल्दी चलनेवाली होती है । और वातज्वरमें टेढी, चपल, तथा शीतल स्पर्शवान् नाडी होती है ॥ ५ ॥

द्रुता च सरला दीर्घा शीघ्रा पित्तज्वरे भवेत् ।
शीघ्रमाहननं नाड्याः काठिन्याच्चलते तथा ॥ ६ ॥

अर्थ–पित्तज्वरमें नाडी शीघ्र चलनेवाली, सरल, दीर्घ, और कठिनताके साथ शीघ्र फडकनेवाली होती है ॥ ६ ॥

नाडी तन्तुसमा[१] मन्दा शीतला श्लेष्मदोषजा ।

१ मंदाच सुस्थिरा शीता पिच्छला श्लेष्मिनोभवेत् इति पाठांतरम् ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मलाजीर्णे नातितरां स्पन्दनं च प्रकीर्त्तितम् ॥ ७ ॥

अर्थ–कफके प्रकोपमें नाडी तंतुवत् सूक्ष्म, मंदवेगवाली, और शीतल होती है । और मलाजीर्णमें अत्यंत नहीं फडकती ॥ ७ ॥

द्वंद्वजनाडी

चञ्चला[1] तरला स्थूला कठिना वातपित्तजा । ईषच्च दृश्यते तूष्णा मन्दा स्याच्छ्लेष्मवातजा ॥ ८ ॥ निरन्तरं खरं रूक्षं मन्दश्लेष्मातिवातलम् । रूक्षवाते भवेत्तस्य नाडी स्यात्पित्तसन्निभा ॥ ९ ॥ सूक्ष्मा शीता स्थिरा नाडी पित्तश्लेष्मसमुद्भवा ॥ १० ॥

अर्थ–वातपित्तकी नाडी चंचल, तरल, स्थूल, और कठोर होती है । वातकफकी नाडी कुछ गरम और मंदगामिनी होती है । जिस नाडीमें किंचिन्मात्र कफ और अधिक वात होती है । वह अत्यंत खर और रूक्ष होती है । जिसके नाडीमें वायुका अत्यंत कोप होय उसकी पित्तके सदृश अर्थात् अत्यंत वक्र और अत्यंत स्थूल होय, पित्तकफज्वरमें नाडी सूक्ष्म शीतल, और मन्दवेगवाली होती है ॥ १० ॥

रुधिरकोपजानडी ।

मध्ये करे वहेन्नाडी यदि सन्तापिता ध्रुवम् ।
तदा नूनं मनुष्यस्य रुधिरापूरितामलाः ॥ ११ ॥

अर्थ–मध्य करमें अर्थात् मध्यमांगुली निवेशस्थलमें नाडी संतापित होकर तडफे तो जानेकि वातादि दोषत्रय रक्तप्रकोपकरके परिपूर्ण है । अर्थात् रुधिरसैं दूषितहै ॥ ११ ॥

आगन्तुकरूपभेदमाह ।

भूतज्वरे सेक इवातिवेगात् धावन्ति नाड्यो हि यथाब्धिगामाः ।

अर्थ–भूतज्वरमें नाडी अत्यंत वेगसैं चलती है जैसैं समुद्रमें जानेवाली नदियोंका प्रवाह वेगसैं चलता है ॥ १२ ॥

तथा ।

एकाहिकेन क्वचन प्रदूरे क्षणान्तगामा विषमज्वरेण ॥

१ वक्रा च ईषच्चपला कठिना वातपित्तजा इति पाठान्तरम् ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

द्वितीयके वाथ तृतीयतुर्य्यें गच्छन्ति तप्ता भ्रमिवत् क्रमेण १३

अर्थ–एकाहिकज्वरमें नाडी सरलमार्गको त्यागकर क्षणक्षणमें पार्श्वगामिनी होती है तथा द्वितीय, तृतीय (तिजारी) और चातुर्थनामक विषमज्वरमें उष्ण होकर इतस्ततो धावमाना होती है ॥ १३ ॥ ४५

अन्यत्रापि ।

उष्णवेगधरा नाडी ज्वरकोपे प्रजायते । उद्वेगक्रोधकामेषु भयचिन्ताश्रमेषु च । भवेत् क्षीणगतिर्नाडी ज्ञातव्या वैद्यसत्तमैः १४

अर्थ–गरम और वेगवान् नाडी ज्वरके कोपमें होती है उद्वेग, क्रोध, कामबाधा भय, चिन्ता, और श्रम इनमें नाडी क्षीणगतिवाली होती है अर्थात् मंद मंद गमन करती है ॥ १४ ॥

प्रसङ्गादाह ।

व्यायामे भ्रमणे चैव चिन्तायां श्रमशोकतः ।
नाना प्रभावगमना शिरा गच्छति विज्वरे ॥ १५ ॥

अर्थ–व्यायाम (दंडकसरत) करनेसें, डोलनेसें, चिंता, श्रम, और शोकसें, एवं ज्वररहित मनुष्यकी नाडी अनेकप्रभावसें गमन करतीहै ॥ १५ ॥

अजीर्णरूपमाह ।

अजीर्णे तु भवेन्नाडी कठिना परितो जडा ।
प्रसन्ना च द्रुता शुद्धा त्वरिता च प्रवर्तते ॥ १६ ॥

अर्थ–आमाजीर्ण और पक्काजीर्ण दोनोंमें नाडी कठोर और दोनोपार्श्वोंमें जड होती है इसीप्रकार कभी निर्मल निर्दोष तथा शीघ्रवेगवाली होती है ॥ १६ ॥

तत्र विशेषमाह ।

पक्काजीर्णे पुष्टिहीना मन्दं मन्दं वहेज्जडा ।
असृक्पूर्णा भवेत् कोष्णा गुर्वी सामा गरीयसी ॥ १७ ॥

अर्थ–पक्काजीर्णमें नाडी पुष्टतारहित मंद मंद चलती है । तथा भारी होती है एवं रुधिरकरके परिपूर्णनाडी गरम, भारी होतीहै और आमवातकी नाडी भारी होती है ॥ १७ ॥

लघ्वी भवति दीप्ताग्नेस्तथा वेगवती मता ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मन्दाग्नेः क्षीणधातोश्च नाडी मन्दतरा भवेत् ।
मन्देऽग्नौ क्षीणतां याति नाडी हंसाकृतिस्तथा ॥ १८ ॥

अर्थ–दीप्ताग्निवाले मनुष्यकी नाडी हलकी और वेगवती होती है, मंदाग्निवालेकी और क्षीणधातुकपुरुषकी नाडी मंदतर होती है, इसीप्रकार जिस मनुष्यकी जठराग्नि सर्वथा मंदहोईहो उसकी नाडी हंसके समान अतिशय मंदहोती है ॥१८॥

आमाश्रमे पुष्टिविवर्धनेन भवन्ति नाड्यो भुजगाग्रमानाः ।
आहारमान्द्यादुपवासतो वा तथैव नाड्योऽग्रभुजाभिवृत्ताः॥१९॥

अर्थ–आम, और परिश्रम न करनेसैं तथा देहमें अत्यंत पुष्टता होनेसैं नाडी सर्पके अग्रभागके सदृश होती है इसीप्रकार थोडा भोजन करनेसैं या उपवास करनेसैं नाडी भुजाके अग्रभागमें सर्पके अग्रभाग समान होती है ॥ १९ ॥

ग्रहणीरोगे ।

पादे च हंसगमना करे मण्डूकसंप्लुवा ।
तस्याग्नेर्मन्दता देहे त्वथवा ग्रहणीगदे ॥ २० ॥

अर्थ–जिसकी पैरकी नाडी हंसके समान और हाथकी नाडी मैंडकाके समान चले उसके देहमें मंदाग्निहै अथवा संग्रहणी रोगहै ऐसा जानना ॥ २० ॥

भेदेन शान्ता ग्रहणीगदेन निर्वीर्यरूपा त्वतिसारभेदे ।
विलम्बिकायां प्लवगा कदाचिदामातिसारे पृथुता जडा च२१

अर्थ–संग्रहणीका दस्तहोनेके उपरांत नाडी शांतवेगा होती है अतिसाररोगका दस्तहोनेके उपरांत नाडी सर्वथा बलहीन होजातीहै विलंबिकारोगमें नाडी मैंडकाके तुल्य चलती है इसीप्रकार आमातिसारमें नाडी स्थूल और जडवत होती है ।

विषूचिकाज्ञानम् ।

निरोधे मूत्रशकृतोर्विड्ग्रहे त्वितराश्रिताः ।
विषूचिकाभिभूते च भवन्ति भेकवत्क्रमाः ॥ २२ ॥

अर्थ–केवल मल वा केवल मूत्र अथवा मलमूत्र दोनो एसाथ बंद होजावे वा इच्छापूर्वक इनके वेगको रोकनेसैं एवं विषूचिका रोगमें नाडीकी गति मैंडकाकी चालके समान होती है ॥ २२ ॥

अनाहमूत्रकृच्छ्रे ।

अनाहे मूत्रकृच्छ्रे च भवेन्नाडीगरिष्ठता ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अर्थ–अनाह अफरा और मूत्रकृच्छ्र रोगमें नाडी गुरुतर अर्थात् भारी होती है ॥

शूलरोगे ।

वातेन शूलेन मरुत्प्लुवेन सदैव वक्रा हि शिरा वहन्ती ।
ज्वालामयी पित्तविचेष्टितेन साध्या न शूलेन च पुष्टिरूपा ॥ २३ ॥

अर्थ–वायुशूलमें और वायुके प्रखरता निबंधनमें नाडी सदैव अत्यंत टेढी चलती है पित्तके शूलमें यह अतिशय गरम होती है। और आमशूलमें पुष्टियुक्त होती है ॥ २३ ॥

प्रमेहज्ञान ।

प्रमेहे ग्रन्थिरूपा सा सुतप्ता त्वामदूषणे ।

अर्थ–प्रमेह रोगमें नाडी ग्रंथि अर्थात् गांठके आकार प्रतीत होयहै और आमवात रोगमें नाडी सर्वकालमें उष्ण होती है ॥

विषविष्टम्भगुल्मज्ञानम् ।

उत्पित्सुरूपा विषरिष्टकायां विष्टम्भगुल्मेन च वक्ररूपा ।
अत्यर्थवातेन अधः स्फुरन्ती उत्तानभेदिन्यसमाप्तकाले ॥ २४ ॥

अर्थ–विषभक्षण वा सर्पादि दंशजन्य अरिष्टलक्षण प्रकाशित होनेसें तत्कालमें नाडी देखनेसें बोधहोयहैं । कि इसके यह रोगकी नवीन उत्पन्न होताहै । और विष्टंभ तथा गुल्म रोगमे विषके तुल्य और विशेषता यह होतीहै कि उसनाडीकी गति वक्ररूप होतीहै। इन दोनों पीडामें अत्यंत वायुका प्रकोप होनेसें नाडी अधस्फुरित होय एवं इनकी असंपूर्णावस्थामें अर्थात् पूर्वरूपावस्थामें नाडी अत्यंत ऊर्ध्व गतिहोय ॥ २४ ॥

गुल्मे विशेषमाह ।

गुल्मेन कम्पाथ पराक्रमेण पारावतस्येव गतिं करोति ॥ २५ ॥

अर्थ–गुल्मरोगमें नाडी कंपितहो बलपूर्वक खबुतरकी तुल्य गमन करती है ।

अथ भगन्दरज्ञानम् ।

व्रणार्थे कठिने देहे प्रयाति पैत्तिकं क्रमम् । भगन्दरानुरूपेण
नाडी व्रणनिवेदने ॥ २६ ॥ प्रयाति वातिकं रूपं नाडीपावकरूपिणी

अर्थ–व्रणरोगकी अपक्वअवस्थामें नाडीकी गति पैत्तिक नाडीके तुल्य होतीहै ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

भगंदर तथा नाडीव्रण रोगमें नाडीकी गति वातनाडीके तुल्य और अत्यंत उष्ण होतीहै ॥ २७ ॥

वान्तादिज्ञानम् ।

वान्तस्य शल्याभिहतस्य जन्तोर्वेगावरोधाकुलितस्य भूयः । गतिं विधत्ते धमनी गजेन्द्रमरालमानेव कफोल्बणेन ॥ स्त्रीरोगादिकमपि रक्तादिज्ञानक्रमेण ज्ञातव्यम् ॥ २८ ॥

अर्थ–वमित (जिसने रद्द करीहो) शल्याभिहत (जिसके किसी प्रकारका बाण आदि शल्य लगाहो) और वेगरोधी (जिसने मल मूत्रको धारण कर रक्खाहो) ऐसे प्राणियोंकी नाडी तथा कफोल्बणा नाडी हाथी और हंसादिककी गतिके समान चलतीहै । इसीप्रकार रक्तादि ज्ञानकरके अनुक्त जो स्त्रीके रोग प्रदरादिक उनकोभी वैद्य अपनी बुद्धि मानीसें जानलेवे यह नाडीपरीक्षा शंकरसेनके मतानुसार लिखिहै ॥ २८ ॥

नाडीस्पन्दनसंख्या ।

षष्ट्यास्पन्दास्तु मात्राभिः षट्पञ्चाशद्भवन्ति हि । शिशोः सद्यः प्रसूतस्य पञ्चाशत्तदनन्तरम् ॥ २९ ॥ चत्वारिंशत्ततः स्पन्दाःषट्त्रिंशद्यौवने ततः । प्रौढस्यैकोनत्रिंशत्स्युर्वार्धकेऽष्टौ च विंशतिः ॥ ३० ॥

अर्थ–अब नाडीके फडकनेकी संख्या कहतेहै, जैसें कि ६० दीर्घ अक्षर उच्चारण करनेमें जितना काल लगताहै उतने समयमें अर्थात् १ पलमें तत्काल हुए बालकी नाडीकी स्पंदनसंख्या ५६ वार होतीहै । इसके उपरान्त अवस्था बढनेके अनुसार ५० तथा ४० वार होती है । यौवन अवस्था अर्थात् जवानीमें ३६ वार होती है । और प्रौढ अवस्थामे २९ वार, और बुढापेमें २८ वार, एकपलमें नाडी फडकती है ॥ २९ ॥ ३० ॥

पुंसोऽतिस्थविरस्य स्युरेकत्रिंशदतः परम् । योषितां पुरुषाणांच स्पन्दास्तुल्याः प्रकीर्त्तिताः ॥ ३१ ॥ प्रौढानां रमणीनांतु द्व्यधिकाः सम्मता बुधैः ॥ ३२ ॥

अर्थ–अति वृद्धहोनेसें नाडीकी संख्या फिर बढनें लगती है अर्थात् एकपलमें ३१ वार तडफती है यह अवस्थाभेदकरके संपूर्ण स्पन्दन संख्या लिखि गईहै ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

यह संख्या स्त्री और पुरुष दोनोंमें समान कही है । परंतु केवल प्रौढावस्थामें स्त्री-की नाडी संख्या पुरुष संख्याकी अपेक्षा अधिक अधिक अर्थात् प्रौढ पुरुषकी स्पन्दनसंख्या प्रतिपलमें २९ वार होती है । और प्रौढा स्त्रीकी संख्या ३१ वार होती है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

दशगुर्वक्षरोच्चारकालः प्राणः षडात्मकैः ।
तैः पलं स्यात्तु तत् षष्ट्या दण्ड इत्यभिधीयते ॥ ३३ ॥

अर्थ-एक दीर्घवर्णउच्चारण करनेमें जितना समय लगता है उसको एक मात्रा अथवा निमेष कहते है । १० मात्राका १ प्राण ६ प्राणका १ पल ६० पलका १ दंड होताहै । अतएव एक पलका साठ भाग उसमें एक भागको विपल कहतेहै उसीको मात्रा कहते है ॥ ३३ ॥

मतान्तरेण ।

स्वस्थानां देहिनां देहे वयोवस्थाविशेषतः ।
प्रवहन्ति यथा नाडयस्तत्संख्यानमिहोच्यते ॥ ३४ ॥

अर्थ-अब मतान्तरसें कहते है कि स्वस्थपुरुषोंके देहमें आयुकी अवस्था विशे-षकरके जैसें नाडी चलती है उनकी संख्या इसग्रंथमें लिखते है ॥ ३४ ॥

सार्धद्वयपलः कालो यावद्गच्छति जन्मतः ।
तावत्प्रकम्पते नाडी चत्वारिंशच्छताधिकम् ॥ ३५ ॥

अर्थ-बालकके जन्मलेनेसें यावत् २॥ पल व्यतीत नहीं हो उतने समयमें १४० वार नाडी वारंवार कंपन होती है ॥ ३५ ॥

तदूर्ध्वं हायनं यावत्सार्द्धद्वयपलेन सा ।
मुहुः प्रकम्पमाधत्ते त्रिंशद्वारं शतोत्तरम् ॥ ३६ ॥

अर्थ-फिर १ वर्षकी अवस्थापर्यंत बालककी नाडी २॥ पलमें १३० वार त-डफती है ॥ ३६ ॥

उपरिष्टादाद्वितीयात्तावत्काले शरीरिणः ।
ततः प्रकम्पते नाडी दशाधिकशतं मुहुः ॥ ३७ ॥

अर्थ-वर्ष दिनसें लेकर जबतक यह बालक दो वर्षका होताहै तावत्कालपर्यंत नाडी ढाई पलमें ११० वार वारंवार तडफती है ॥ ३७ ॥

ततास्त्रिवत्सरं व्याप्य देहिनां धमनी पुनः ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

मुहुः प्रकम्पते तद्वत्सार्द्धद्वयपले शतम् ॥ ३८ ॥

अर्थ-फिर दो वर्षसैं उपरांत तीन वर्षतकके बालककी नाडी २॥ पलमें १०० वार वारंवार तडफती है ॥ ३८ ॥

ततस्त्वासप्तमाद्वर्षान्नवतिः स्यात्प्रवेपनम् ।
धमन्यास्तन्मिते काले प्रत्यक्षादनुभूयते ॥ ३९ ॥

अर्थ-फिर तीन वर्षसैं सात वर्षतकके बालककी नाडी २॥ पलमें ९० वार वारंवार चलती है ॥ ३९ ॥

ततश्चतुर्दशं तावत्पञ्चाशीतिः प्रवेपनम् । त्रिंशद्वर्षमभिव्याप्य ततोऽशीतिः प्रकीर्त्तितम् । शतार्द्धवत्सरं व्याप्य कम्पनं पञ्चसप्ततिः । ततोऽशीतौ प्रकथितं षष्टिवारं प्रवेपनम् ॥ ४० ॥

अर्थ-फिर सात वर्षसैं लेकर चौदह वर्षकी अवस्थातक इस प्राणीकी नाडी २॥ पलमें ८५ वार तडफती है । और चौदह वर्षकी अवस्थासैं लेकर ३० वर्षकी अवस्थापर्यंत ढाई पलमें ८० वार तडफती है । तीस वर्षके उपरांत पंचास वर्ष पर्यंत ७५ वार कंपन होती है । और पंचास वर्षसैं लेकर अस्सी वर्षकी अवस्थातक इस प्राणीको नाडी २॥ पलमें ६० वार कंप होती है ॥ ४० ॥

वयोऽवस्थाक्रमेणैवं क्षीयन्ते गतयो मुहुः ।
सार्द्धद्वयपले काले नाडीनामुत्तरोत्तरम् ॥ ४१ ॥

अर्थ-फिर जैसै जैसै अवस्था क्षीण होती जाती है उसी, प्रकार नाडीका गमनभी २॥ पलमें क्षीण होता जाताहै ॥ ४१ ॥

एवं बहुविधाद्रोगात्तत्तल्लिङ्गानुबोधनी ।
नाडीनां च गतिस्तद्वद्भवेत्कालात्पृथक् पृथक् ॥ ४२ ॥

अर्थ-इसप्रकार अनेकविध रोगोंसैं उन्हीं लिङ्गोकी बोधन करनेवाली नाडियोंकी गति पृथक् पृथक् कालमें पृथक् पृथक् होती है ॥ ४२ ॥

हृदयस्य बृहद्भागः संकोचं प्राप्यते यदि ।
प्रसारयेत्तदा नाडी वायुना रक्तवाहिनी ॥ ४३ ॥

अर्थ-जिस समय हृदयका बृहद्भाग संकुचित होताहै और खुलताहै उससमय रक्तवाहिनी नाडियोंकी गति पवनके वेगसैं प्रस्पन्दन होती है ॥ ४३ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

नाडीगतिरतिक्षीणा भवेन्मलविभेदतः ।
जीर्णज्वराद्दल्परक्ता दुर्बलत्वाच्च तादृशी ॥ ४४ ॥

अर्थ–मलके निकलनेसैं नाडीकी गति अत्यंत क्षीण होती है । उसीप्रकार जीर्णज्वरसैं अल्परुधिरसैं और दुर्बलतासैंभी नाडी अतिक्षीण होती है ॥ ४४ ॥

तर्पयन्त्यसृजं देहे व्याघातैर्गतिभेदतः ।
तेजःपुञ्जा चञ्चला च दुर्बला क्षीणधीरकैः ॥ ४५ ॥

अर्थ–ये संपूर्ण रक्तवाहिंनी नाडी आघातकरके और अपनी गतिके भेदसैं देहमें रुधिरको तर्पण करेहै अर्थात् सर्वत्र फैलाती है । उनकी गति भेद कहतेहै । जैसै तेजःपुंजा, चंचला, दुर्बला, क्षीणदा, और धीरगामिनी, ये नाडियोंकी पांच प्रकारकी गती है ॥ ४५ ॥

चंचला और तेजःपुंजगति ।

रक्तोष्णे शीघ्रगा नाडी ज्वरे च चञ्चला भवेत् ।
ज्वरारम्भे तथा वाते तेजःपुञ्जा गतिः शिरा ॥ ४६ ॥

अर्थ–तहां रुधिरके कोपमें गरमीमें नाडी शीघ्र चलती है, उसीप्रकार ज्वरमें चंचला नाडी होती है और ज्वरके आरंभमें तथा वातके रोगमें नाडीकी तेजःपुंजा गति होती है ॥ ४६ ॥

दुर्बलाऔरक्षीणनाडी ।

दुर्बले ज्वररोगे च अतिसारे प्रवाहिके ।
दुर्बला क्षीणदा नाडी प्रबला प्राणघातिका ॥ ४७ ॥

अर्थ–दुर्बलतामें ज्वरमें अतिसार और प्रवाहिकारोगमें नाडीकी दुर्बला गति होती है, क्षीणदा नाडीप्रबल प्राणोंकी नाशक होती है ॥ ४७ ॥

बहुकालगता रोगाः सा नाडी धीरगामिनी ।

अर्थ–जिसप्राणीके बहुतदिनोंसैं रोगहोवे उसकी नाडी धीरगामिनी होती है ।

सुखीपुरुषकीनाडी ।

हंसगा चैव या नाडी तथैव गजगामिनी ।
सुखं प्रशस्तं च भवेत्तस्यारोग्यं भवेत्सदा ॥ ४८ ॥

अर्थ–जिसप्राणीकी नाडी हंसकीसी अथवा हाथीकीसी चाल चले उसको उत्तम सुखहोय और सदैव आरोग्यरहे ॥ ४८ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सुव्यक्तता निर्मलत्वं स्वस्थानस्थितिरेव च।
अमन्दत्वमचाञ्चल्यं सर्वासां शुभलक्षणम् ॥ ४९ ॥

अर्थ–उत्तम प्रकारसैं प्रतीतहो निर्मल अपने स्थानमें स्थिति, अमंदत्व और चांचल्यता रहितहो येसंपूर्ण नाडियोंके शुभ लक्षण जानने ॥ ४९ ॥

दोषसाम्याच्च सादृश्यादनुक्तासु रुजास्वपि।
ज्ञातव्या धमनीधर्मा युक्तिभिश्चानुमानतः ॥ ५० ॥

अर्थ–यह कितनेएक रोगोंमें नाडीकी प्रकृति लिखी है, इस्सैं भिन्न अन्य समस्त रोगोंमें जैसी जैसी नाडियोंकी गति होती है उसको वैद्य अनुमान और युक्तिद्वारा जाने, अर्थात् जिस रोगकी जिस जिस रोगके साथ सादृश्यताहै अथवा जिसकिसी रोगमें संपूर्ण कुपितदोषोंके साथ अन्य किसीरोगके कुपित दोषोंकी साम्यता मिले उन उन रोग समस्तोंमें नाडीकी एकविध गति होती है ऐसा जानना ॥ ५० ॥

नाडीदर्शनानंतरहस्तप्रक्षालन।

नाडीं दृष्ट्वा तु यो वैद्यो हस्तप्रक्षालनं चरेत्।
रोगहानिर्भवेच्छीघ्रं गंगास्नानफलं लभेत् ॥ ५१ ॥

अर्थ–जो वैद्य रोगीकी नाडी देवखकर हाथको जलसैं धोताहै, तो जिसरोगीकी नाडीदेखी उसका रोग शीघ्र नष्टहोय, और वैद्यको गंगास्नानका फल प्राप्तहोय ॥५१॥

तथाच।

यो रोगिणः करं स्पृष्ट्वा स्वकरं क्षालयेद्यदि।
रोगास्तस्य विनश्यन्ति पङ्कःप्रक्षालनाद्यथा ॥ ५२ ॥

अर्थ–जो वैद्य रोगीकी नाडी देख अपने हाथको धोताहै इसकर्मसैं जैसै धोनेसै कीच जाती है इसप्रकार उस रोगीका रोग दूर होताहै ॥ ५२ ॥

इति श्रीपाठकज्ञातीयमाथुरकृष्णलालसूनुना दत्तरामेण निर्मिते आयुर्वेदोद्धारे बृहन्निघंटुरत्नान्तर्गते नाडीदर्पणे आयुर्वेदोक्तनाडीपरीक्षावर्णनंनामचतुस्त्रिंशस्तरङ्गः ॥ ३४ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अथ यूनानीमतानुसारनाडीपरीक्षामाह ॥

नाडीनामान्तरं नब्जं यूनानी वैद्यके मतः ।
विधास्ये तत्क्रमं चात्र वैद्यानां कौतुकाय च ॥ १ ॥

अर्थ—यूनानी वैद्यनाडीको नब्ज कहते हैं उस नब्जका क्रम अर्थात् नब्जपरीक्षाकोमें वैद्योंके कौतुकनिमित्त लिखताहू ॥ १ ॥

हयवानीचैव नफसानी रूहद्वयमुदाहृदम् ।
हृदयस्थं शिरस्थं च देही देहसुखावहम् ॥ २ ॥

अर्थ—रूह दो प्रकारकी है एक हयवानी दूसरी नफसानी हयवानी हृदयमें रहती है । और नफसानी मस्तकमें रहती है । ए दोनो देहधारियोंकी देहको सुखदायक है ॥ २ ॥

तत्सङ्गतास्तु या नाड्यः शुरियानसवः क्रमात् ।
हृत्पद्मे यास्तु संलग्नाः समन्तात्प्रस्फुरन्ति ताः ॥ ३ ॥

---

१ मानसिक शिराके परिवर्तनको नाडी कहते, वह मनके प्रफुल्लित और संकुचित होनेसैं चलतीहै । इसका यह कारणहै कि उसके विकसित होनेसैं वाहरी पवन भीतर जातीहै, इसीसैं हयवानीरूह जो मनमेंहै वह प्रसन्न होतीहै । और उष्ण पवनके दूरकरनेको हृत्पद्म संकुचित होताहै, इन दोनो कारणोंसैं मनुष्यके संपूर्ण देहकी चेष्टा और उसके रोग तथा स्वस्थताका ज्ञान होताहै इस नाडीके दश भेदोंसैं शरीरकी चेष्टा प्रतीत होती है ।

प्रथमतो यह कि यह कितनी विकसित और कितनी संकुचित होतीहै, इसके विस्तार (लंबाव) आयत (चोडाव) और गंभीरादि भेदसैं नौ भेद होतेहै, अर्थात् कितनी लंबी, कितनी चौडी, और कितनी गंभीर इनतीनोको अधिक न्यून और समानताके साथ प्रत्येकके गुणन करनेसैं नौ भेद होजातहै । जैसे १ दीर्घ २ ह्रस्व ३ समान ४ स्थूल ५ कृश और ६ समानविस्तृत ७ बहिर्गति अत्युच्च ८ अंतर्गति अतिनीच ९ उच्चनीचत्वसमान ।

१ अति लंबनाडीमें अति उष्णताके कारण रोगकी आधिक्यता प्रतीत होतीहै । २ न्यूनलंबनाडीमें गरमीके न्यून होनेसैं रोगकी न्यूनता प्रतीत होतीहै, ३ समान लंबनाडीमें प्रकृतिकी उष्णता यथार्थ रहतीहै, । ४ अधिक विस्तृतमें शरदी अधिक होतीहै । अतएव यह नाडी अपने अनुमानसैं अधिक चोडी होती है ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अर्थ-उस रूहके साथ लगीहुई जो नाडी है वो दो है एक शुरियान् दूसरी असद इनमें शुरियान् नाडी हृत्पद्ममें लगरही है उस्से सर्वत्र स्फुरण होताहै ॥ ३ ॥

शिरोन्तर्मार्गसम्बद्धास्ताभिश्चेष्टादिकं भवेत् ।
श्रेष्ठो जीवनिवासोऽहृद्राज्ञो राज्यासनं यथा ॥ ४ ॥

अर्थ-और दूसरी असव नामक जो नाडी है, वह शिरोन्तरभाग अर्थात् मस्तकके भीतर लगरहीहै, इन नाडीयोंकरके इसदेहकी चेष्टादि होतीहै । जैसें राजा राजसिंहासनपर स्थितहो शोभित होताहै । उसीप्रकार जीवका श्रेष्ठनिवास हृदय स्थान है ॥ ४ ॥

तद्भवाधमनी मुख्या मनुष्यमणीबन्धगा ।
परीक्षणीया भिषजाह्यङ्गुलीभिश्चतसृभिः ॥ ५ ॥

अर्थ-उन हृद्गतनाडीयोंमें मनुष्यके पहुचेकी धमनी नाडी मुख्यहै । उसको वैद्य चार उंगली रखकर परीक्षा करे । अपने शास्त्रमें तीन उंगलीसें परीक्षा करना सिखाहै परंतु यूनानी वैद्य चार दोषोंको चार उंगलियोंसें देखना कहते है ॥ ५ ॥

यथैणगतिपर्यायस्तद्वदुत्प्लुत्य गच्छति ।
गिजाली गतिराख्याता पित्तकोपविकारतः ॥ ६ ॥

अर्थ-जैसै मृगकाबच्चा उछलता कूदता चलता है इस प्रकार नाडीकी गतिको गिजाली कहतेहै । यह पित्त कोप विकारको सूचित करती है ॥ ६ ॥

तरङ्गनाममोजस्यात् मोजीगतिरितीरिता ।
निवेदयतिवर्ष्मस्थं वायोरूष्माणमेव सा ॥ ७ ॥

अर्थ-यूनानी जलकी लहरको मौज कहते है उस मौज सदृश नाडीकी गतिको मौजी गति कहतेहै यह देहस्थ पवनकी गरमीको जाहिर करती है ॥ ७ ॥

दूदस्यात्क्रिमिपर्यायो दूदी तस्य गतिः स्मृता ।
श्लेष्माणसंचयं चामं प्रकटीकुरुते हि सा ॥ ८ ॥

अर्थ-दूद (कानसलाई आदि) कृमिका पर्याय है अतएव तद्विशिष्ट नाडीकी गतिको दूदी गति कहते है । यह कफके संचयको और आमको प्रकाशित करती है ॥ ८ ॥

उमल्पिपीलिकामोर उमली तद्गतिः स्मृता ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

यस्य नाडी तथा गच्छेन्मृतिं तस्याशु निर्दिशेत् ॥ ९ ॥

अर्थ–उमल चैंटी (कीडी) और मोरका नामहै अतएव इन्हो किसी गतिको उमली गति कहते हैं । जिस पुरुषकी नाडी ऐसी अर्थात् मोर चैंटी कीसी चले वो प्राणी जल्दी मृत्युको प्राप्तही ॥ ९ ॥

असिपत्रस्य पर्यायो मिन्शार इति कीर्त्तितः ।
यथास्यात्तत्क्रमः काष्ठे मिन्शारी सा गतिर्भवेत् ॥ १० ॥
तद्गतिं धमनीधत्ते बाह्यान्तः शोथरोगिणः ।

अर्थ–आरेका पर्याय यूनानीमें **मिन्शार** है वो जैसै लकडीके ऊपर चलता है इसप्रकार नाडीके गमन करनेको **मिन्शारी** गति कहतेहै । इसप्रकारकी नाडी बाहरभीतर सोथ रोगीकी चलती है ॥ १० ॥

जन्वलफारनाम्नीया गतिर्मूषकपुच्छवत् ॥ ११ ॥
पित्तश्लेष्मप्रकोपेण धमन्याः सम्भवेत्किल ।

अर्थ–जिस नाडीकी गति मूषक (चूहे) की पुच्छसदृशहो अर्थात् एक ओरसैं मोटी और दूसरी तरफ क्रमसैं पतलीहो उसको **जन्वलफार** गति कहते है । यह पित्तकफके कोपमें होती है ॥ ११ ॥

माली शलाका सदृशी सूक्ष्मा धीरा बलात्ययात् ॥ १२ ॥
गत्याघातद्वयं यस्यामधस्तादङ्गुलेर्भवेत् ।
जुलफिकरत्तत्स्मृता पित्तश्लेष्मदग्धप्रबोधिनी ॥ १३ ॥

अर्थ–जो नाडी सलाईके आकार अत्यंत सूक्ष्म और धीरगामिनी होय वह **माली** कहाती है यह बल नाश होनेसैं होती है और जो नाडी मध्यमांगुलीमें दोवार आघातकरे वह पित्तकफ दग्धको बोधन करती है इसको **जुलफिकरत्** कहते दै ॥ १२ ॥ १३ ॥

मुर्त्तइद प्रस्फुरन्तीया गतिः कोष्ठस्य रूक्षताम् ।
विड्ग्रहत्वं च सौदावी विचारान् ज्ञापयत्यपि ॥ १४ ॥

अर्थ–जिस नाडीके प्रस्फुरणसैं कोठेकी रूक्षता प्रगटहोवे उसको **मुर्त्तइद** कहते है और इसीसैं मलबंधका ज्ञान होताहै यह **सौदावी** (वादीकी) नाडीके विचारसैं जाने ॥ १४ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

इर्तिशा कम्पपर्यायस्तद्विशिष्टा तु या भवेत् ।
मुर्त्तइश्नाम सा ज्ञेया सफ़रासौदाविकारयुक् ॥ १५ ॥

अर्थ–कंपको फारसीमें इर्तिशा कहते है उसके समान जो नाडी हो उसको मुर्त्तइस नाडी कहते है यह सफरा (पित्त) और सौदा दोनोंके मिश्रितावस्थामें होती है ॥ १५ ॥

मुम्तिला पूर्त्ति तूद्दिष्टाऽसृजोस्यां मुम्तिली तु सा ।
तमः कफादधोगाया मुन्खफ़िज् सा प्रकीर्त्तिता ॥ १६ ॥

अर्थ–परिपूर्णको फारसीमें मुम्तिला कहतेहै, अतएव जिस नाडीसें रुधिरकी परिपूर्णता प्रतीतहो उस नाडीकी गतिको मुम्तिली कहतेहै जो नाडी तमोगुण या कफसें अधोभागमें गमनकरे उसको मुम्खफिज् नाडी कहतेहै ॥ १६ ॥

उर्ध्वमुत्प्लुत्य या गच्छेत्किंचिन्मायुप्रकोपतः ।
शाहक्बुलन्द सा ख्याता धमनी संपरीक्षकैः ॥ १७ ॥

अर्थ–जो नाडी पित्तके प्रकोपसें उछलकर ऊपरको गमनकरे उसको नाडीके ज्ञाता वैद्य शाहक़्बुलन्द नामक कहतेहै ॥ १७ ॥

चतुरङ्गुलिसंस्थानादपि दीर्घा तवीलसा ।
दराज इति पर्यायस्तस्या एव निपातितः ॥ १८ ॥

अर्थ–जो नाडी चारअंगुलसें भी अधिक लंबीहो उसको तवील ऐसा कहतेहै और उसी नाडीका नामान्तर दराज है ॥ १८ ॥

परिमाणान्यूनरूपा सा कसीर समीरिता ।
अमीक निम्नगा या च अरीज आयती स्मृता ॥ १९ ॥

अर्थ–जितना नाडीका परिमाण कहाहै यदि उस्सें न्यूनहो उसको कसीर कहतेहै और अधोगामिनी नाडीको अमीक कहतेहै और लंबी नाडीको अरीज कहाहै ॥ १९ ॥

यथा गतिस्तु दोषाणां धत्ते प्राज्यत्वहीनते ।
गलवे कसूर अरक्कात तारतम्येन निर्दिशेत् ॥ २० ॥

अर्थ–दोषोंके यथागति अनुसार नाडीको बली और निर्बली जानना इनकेवली निर्वली आदि नाडियोंको गलवे कसूर और अरक्कातके तारतम्यसें कहे॥ २० ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

वाकियुल्वस्तनिर्द्दोषा स्वस्थस्य परिकीर्त्तिता ।
इति संक्षेपतो नाडीपरीक्षा कथिता बुधैः ॥ २१ ॥
विस्तरस्तु मया प्रोक्तो भाषायां जनहेतवे ।

अर्थ–स्वस्थ प्राणीकी निर्दोष नाडीको वाकियुल्वस्त कहतेहैं यह मैंने संक्षेपसैं यूनानी मतानुसार नाडीपरीक्षा कहीहै इसका विस्तार मैंने भाषामें कहाहै ॥ २० ॥

यूनानीमतानुसार नाडी कोष्टकम्.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
गिजालि	मोजी	दूदी	मिन्शारी	जनवुल फार	नुमूली	मतली	मतरकी	जुलफि-करत	वाकअ फिलवस्त
मृग शावक	तरंग	कृमि	आरा	मूंसेकी पूछ	मोरचैंटी	शलाई	हथोडा	शोकाक्रांत समान	विषम टं कोरदेना
मृगके बच्चेके समान जो नाडी उछलती कूदती चले उसको गिजाली कहतेहै यह पित्ताधिक्यसैं होतीहै ।	जो नाडी जलकी तरंगके समान गमनकरे उसको मोजी गति कहते है । यह तरीको सूचित करती है । अथवा देहकी निर्बलताको सूचित करेहै।	जो नाडी कीडाके समान मंद मंद गमनकरे वो कफ और आम दोषको सूचित करती है । इस नाडीकी गतिको दूदी कहतेहै ।	जैसै लकडीके ऊपर आरा चलता इसप्रकार खरदराट लिये जो नाडी ऊंगलियोंका स्पर्शकरे वो बाहर और भीतर सुजनको सूचित करतीहै । इस गतिको मिन्शारी गति कहतेहै ।	जो नाडी चूहेकी पूछसदृश गमन करे उसको जनवुल्फारगति कहतेहै । यह कफपित्तके कोपसैं होतीहै ।	जो नाडी चैंटी और मोरकी गतिके समान गमन करे उसको नुमली गति कहतेहै । ऐसी नाडी रोगीकी शीघ्र मृत्यु सूचना करतीहै ।	जो नाडी सलाईके समान दोनो प्रांतोंमें पतली और बीचमें मोटी होकर गमन करे उसको मतलीगति कहतेहै । यह निर्बलता सूचना करतीहै।	जो नाडी हथोडेके समान ऊंगलियोंको वारंवार चोट देवे उसको मतरकी गति कहतेहै । यह अत्यंत गरमीकी सूचना करतीहै ।	जो नाडी गमन करते करते ठहर जावे उसको जूल्फिकरगति कहते है। यह दिलकी कमजोरी सूचित करती है प्रायः यह शोक समय होतीहै।	जिस नाडीका टंकोरदेना जिस वख्तमें देनाउचितहै उस्से पूर्वही जास्ती टंकोर देदेवे यह श्वासाधिक्य निर्बलतामें होतीहै ।

यूनानी भाषामें नाडीको नब्ज कहनेका यह कारणहै कि नब्जका अर्थ शिराका तडफना है वह प्रत्येक मनुष्यकी प्रकृति, देश, काल, अवस्थाओंके भेदसै समान नहीं होती, कुछ न कुछ भेद रहताही है वैद्य जिस स्वस्थमनुष्यकी नाडी

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अनेकवार देखी होगी यदि फिर उसकी रोगावस्थामें देखेगा तो उसको उसकी नाडीका ज्ञान यथार्थ होगा, अन्यथा ज्ञान होना अति दुस्तर है ।

नाडीदेखने वालेको वा दिखाने वालेको उचित है कि किसीवस्तुका हाथको सहारा न देवे, न कोई वस्तु पकड रक्खीहो, तथारोगीके हाथमें पट्टीआदि बंधनादिक न होवे, यद्यपि बहुतसे वैद्य पहुचे, कनपटी, गुदा, टकने आदि अनेक स्थानकी नाडी देखते है, परंतु बहुधा हाथकी देखनेका यह कारणहै कि अन्यनाडी सब थोडी थोडी प्रगटहै शेष हाड मांसमें प्रवेश होनेके कारण अस्त होरही हैं उसजगे उंगलीयोंको स्पर्श प्रतीत नहीं होसकता परंतु हाथकी नाडी विशदहै अतएव इस-पर उंगली उत्तमरीतिसें धरी जाती है परंतु मुख्य कारण इसका यह है कि किसी स्त्रीकी नाडी देखनेकी आवश्यकता होवे तो वो अन्योन्य अङ्गोकी नाडी लज्जाके वस नहीं दिखा सकती, परंतु हाथके दिखानेमें किसिकोभी संकोच नहीं होता अतएव सर्वत्र हाथकी नाडी देखना प्रसिद्ध है ॥

अब कहतेहै कि यूनानी वैद्य नाडीकी गति दोप्रकारकी वर्णन करते है । प्रथम इम्बिसात दूसरी इन्किबाज ।

इम्बिसात (बाह्यगति)	इन्किबाज (अभ्यंतरगति)
इम्बिसात उसगतिको कहतेहैं जब नाडी बाहर आनकर ऊंगलीयोंका स्पर्श करती है ।	इन्किवाज उसगतिको कहतेहै कि ज़ब नाडी ऊंगलियोंका स्पर्शकर भीतरको प्रवेश करतीहै ।

दोषः खिल्त इति प्रोक्तः स चतुर्धा निरूप्यते ।
सौदा सफरा तथा वल्गम् तुरीयं खून उच्यते ॥ २१ ॥

यूनानीमें दोष शब्दको खिल्त कहतेहै वह चार प्रकारकाहै जैसै सौदा (वात) सफरा (पित्त वल्गम् (कफ) और चौथा दोष खून (रुधिर) है परंतु अपने शास्त्रमें दूष्यहोनेसैं इसको दोष नहीं माना यह शारीरकमें हम लिख आएहै ॥ २१ ॥

प्रत्येकदोषमें दोदोगुणहै यथा ।

तत्र सौदा धरातत्वं रूक्षं शीतं स्वभावतः । पित्तमग्नेः स्व-रूपन्तु सफरा रूक्षउष्णकम् ॥ २२ ॥ वल्गम्वारिस्वरूपं स्यात्सकफः स्निग्धशीतलः । अस्रं वायुः खून इति स्नि-ग्धोष्णं तेषु तद्वरम् ॥ २३ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

तहां सौदा अर्थात् वातमें पृथ्वीतत्त्व अधिकहै अतएव वातस्वभावसें ही रूक्ष और शीतलहै पित्तमें अग्नितत्त्व विशेषहै अतएव सफरा पित्त रूक्ष और उष्ण है बल्गम (कफ) में जलतत्त्व अधिक होनेसें स्निग्ध शीतल गुणवालाहै खून (रुधिर) में वायुतत्त्व अधिक होनेसें स्निग्ध और उष्णहै अतएव अन्य दोषोंकी अपेक्षा यह रुधिर श्रेष्ठ है।

इस प्रकार दोषोंके गुणोंका विचारकर उक्त नाडीके लक्षणोंसें मिलाकर द्वंद्वज गुण अपनी बुद्धिसें कल्पना करै।

जैसे जो नाडी दीर्घ और स्थूलहो उसको गरमतर गुणविशिष्ट होनेसें रुधिरकी जाननी और जो नाडी दीर्घ तथा पतली होवे उसमें गरम और खुष्क गुण होनेसें पित्तकी जाननी जो ह्रस्व और मोटीहो वुह शरद और तर गुणवाली होनेसें कफकी जाननी और जो नाडी ह्रस्व और पतली होवे उसमें शरद और खुष्क गुणहोनेसें वातकी नाडी जाननी चाहिये।

इम्बसातके भेद।

तवील (दीर्घाकार)			अरीज (स्थूलाकार)			उमक (बहिर्गत्याकार)		
मुअदिल समान ३	कसीर ह्रस्व २	तवील १ दीर्घ	अरीज स्थूल	ज्यैयकवा जीक (कृष)	मुअदिल समान	मुशरिफ उमक बहिर्गत	मुनखफिज अंतर्गत	मुअदिल समान
यदि नाडी चार अंगुलसें कुछभी न्यूनाधिक नहो किंतु समहो तो उसप्राणीके शरदी गरमी समान जाननी।	और चार अंगुलसें न्यून होवे तो वो शरदीके लक्षण वाली जाननी अर्थात् ऐसे पुरुषके शरदी जानना।	जो नाडी पहुचेसें भुजाके प्रति चार अंगुलसें अधिक लंबी प्रतीतहो तो वो गरमीके लक्षणवाली जाननी।	यदि नाडी तर्जनी उंगलीसें लेकर कनिष्ठिका पर्यंत स्थूल प्रतीत होवे तो वो तर अर्थात् जैसे रुधिर और कफमें।	जो नाडी पतली प्रतीतहोवे उसको कृश अर्थात् खुश्क कहतेहैं। जैसे पित्त और वातकोपमें होतीहै।	जो नाडी न स्थूलहो न कृशहोवे किंतु समानहो उसमें तरी ठीकठीक होतीहै।	जो नाडी अत्यंत उछलकर बलपूर्वक उंगलियोंको स्पर्शकरै उसमें गरमीकी आधिक्यता प्रतीत होतीहै।	जो नाडी हद्दसें कमउंची उठे अर्थात् धीरे उंगलियोंको स्पर्शकरे गरमी उसमें न्यूनता प्रतीत होतीहै। किंतु शरदीको चेतन करतीहै।	जो नाडी न बहुत न बहुत उभरी हुईहो न बहुत बिलकुल दबी हुई हो किंतु समानहो इसमें गरमी होतीहै।

अब जानना चाहिये कि हिकमतमें दोष चारप्रकारके कहे है यथा।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अन्यचक्र

क्रम	विषय	भेद	यूनानी नाम	विवरण
१	नाडीका बलाबल	सबल	शीघ्रचरिणी	जो नाडी उंगलियोंके मांसमें जोरसैं धक्कादेवेकर ऊंची उठावे तो हृदयकी प्रबलता जाने ।
		दुर्बल	मंदचारी	और यदि नाडी उंगलियोंको स्पर्शकर दवजावे तो हृदयकी दुर्बलता जाननी ।
		मोतदिल	समता	और जो नाडी न बहुत जोरसै लगे न अत्यंत धीरे लगे वो दिलकी समताको प्रगट करतीहै।
२	नाडीका विलंबहोना	सरी	समता	जो नाडी शीघ्र आवा गमनकरे वो देहमें गरमीकी विशेषता द्योतन करतीहै ।
		वती	मंदचारी	और धीरे धीरे आवा गमनकरे वो देहमें सरदीकी आधिक्यता द्योतन करतीहै ।
		मोअदिल	शीघ्रचारी	जो नाडी मध्यम चालसैं आवा गमन करे वो सरदी गरमीकी समानता प्रगट करतीहै ।
३	आकृति	मृदु	गरम	जो नाडी दावनेसै सहज दवजावे उसको तरस्निग्ध कहतेहै, इसे फारसीमें लीन कहतेहै ।
		कठिण	सखूक्त	और जो दवानेसैं न दवे वह खुष्क जाननी उसको फारसीमें सल्व कहतेहै ।
		सम	मोअद्दिल	जिसमें मध्यम गुणहो अर्थात् न बहुत कठोर न बहुत नम्र वो मोतदिल जाननी ।
४	प्रमाण	रुधिरपूर्ण	मुमतिला	जो नाडी मोटी और शीघ्र चलतीहो वह रुधिर और मवादसें भरी हूई जानना अथवा जीवसैं परिपूर्ण जानना ।
		स्वल्परुधिर	खाली	और जो नाडी खाली होतीहै वो मंद और पतली होतीहै उसमें थोडा रुधिर और मवाद जानना ।
		समता	मोद्दिल	और जब नाडी न भरीहो न खालीहो वो समान कहलातीहै । इसमें मवाद ठीक होताहै ।
५	स्पर्श	उष्ण	गरम	जिस समय नाडीका स्पर्श गरम प्रतीतहो तव रुधिरमें ज्वर वा गरमी जानना ।
		शीत	सरद	और जिस समय स्पर्शमें शीतलता प्रतीतहो तव रुधिरमें सरदीकी आधिक्यता जाने ।
		सम	मोअद्दिल	जिस समय नाडीमें शीत उष्णता समान प्रतीतहो उसको सम कहतेहै ।
६	साध्यासाध्य	पूर्वसदृश	उस्तवा	जो नाडी कमसैं कम् ३९ वार टंकोर देके ठेहर जावे वो साध्यहै ।
		विपरीत	इख्तिलाप	जो ३५ वार टंकोर देनेमें कई वार टूटजावे अर्थात् ठहर कर चले वो असाध्यहै ।
		समता	मोअदिल	जो बहुतवार न टूटे किन्तु अल्पवार टूटकर फिर शीघ्र चलने लगे उसको याप्य जानना ।
७	स्थिति	अत्यंत	मुतवातर	जो नाडी उंगलियोंको स्पर्शकरके शीघ्र नीचे चलीजावे वो निर्वल जाननी ।
		धैर्य	मुतफावत	जो नाडी उंगलियोंको कुछकालतक स्पर्शकरे उसको बलवान् कहतेहै ।
		समता	मोद्दिल	और जो समान रीतिसैं उंगलियोंका स्पर्शकरे उसको समान स्थिति वाली जाननी ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

प्रत्येक प्रस्तारके नो नो भेद होतेहै लंवाव चौडावा और गहराई इन तीनोंके प्रमाणको हकीम लोग कुतंर कहतेहै ।

उन दो तीन कुतरोंको एकत्र करो अर्थात् प्रस्तार करो तो दोप्रस्तार २७ सत्ताईस सत्ताईस के होतेहै जैसें आगेके दोनो चक्रोंमें लिखे है दोनो प्रस्तार करनेकी यह रीतिहै कि तीनप्रकारके लंवावको तीन प्रकारोंकी चोडाईके साथ गुणदेवे तो नो होवेगी इसीप्रकार लंबाई और गहराइयोंको तथा चौडाई और गहराईकी तीन तीन प्रकारोंके साथ मिलनेसैं नो नो भेद होतेहै इसप्रकार तीनो सत्ताईस सत्ताईस भेद होतेहै इसका उदाहरण आगे चक्रोसैं समझना चाहिये इस गुणनको फारसीवाले सनाई कहतेहै ।

नाडीनां प्रस्तारचक्रम् ।																	
सनाई (द्विगुण)									सलासी (त्रिगुण)								
द स	द क	द य	ह स	ह क	ह य	य स	य क	य य	द स व	द स अं	द स य	द क व	द क अं	द क य	द य व	द य अं	द य य
द व	द अं	द य	ह व	ह अं	ह य	य व	य अं	य य	ह स व	ह स अं	ह स य	ह क व	ह क अं	ह क य	ह य व	ह य अं	ह य य
स व	स अं	स य	क व	क अं	क य	य व	य अं	य य	य स व	य स अं	य स य	य क व	य क अं	य क य	य य व	य य अं	य य य

इन दोनो चक्रोंमें जो अक्षर है उनमें द सैं दीर्घ, ह सैं न्हस्व, और य सैं यथार्थ कहिये समान जानना उसीप्रकार स सैं स्थूल, क सैं कृश व सैं बहिर्गत अ सैं अंतरगतकी समस्या जानलेनी चाहिये ।

इति श्रीबृहन्निघंटुरत्नाकरे नाडीदर्पणे यूनानीमतानुसार नाडीपरीक्षणे तरङ्गः

PULSE EXAMIN.

अथैंग्लंडीयमतेन नाडीपरीक्षा

ऐंगलंडीयभाषायां नाडी पल्सेति शब्दिता । तस्याः परोक्षापरोक्षभेदेन द्विविधा गतिः ॥ १ ॥ द्रष्टुर्यांङ्गुलिसंस्पर्शे

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

परोक्षा न करोति सा। करोति या साऽपरोक्षाङ्गलिस्पर्शञ्च पश्यतः ॥ २ ॥

अर्थ–इंग्लंड अर्थात् अंगरेजीमें नाडीको पल्स Pulse कहतेहैं वह दो प्रकारकी है एक परोक्ष और दूसरी अपरोक्ष तहां जो नाडी देखनेवालेकी ऊंगलियोंका स्पर्श न करे वह परोक्ष कहाती है और जो उंगलियोंका स्पर्श करे वो अपरोक्ष अर्थात् प्रत्यक्ष नाडी कहाती है।

उत्थानापेक्षया पुंस आसने तदपेक्षया। शयने नाडीका वेगो मन्दी भवति नानृतम् ॥ ३ ॥ सायंतनाद्धि समयात्प्रातःकालेऽधिका गतेः। वेगसंख्या भवेन्निद्राकाले ह्रासं च गच्छति ॥ ४ ॥

अर्थ–खडे होनेकी अपेक्षा (वनिसवत) वैठनमें और बैठनेकी अपेक्षा सोनेमें नाडीकी गति घटजातीहै। उसीप्रकार सायंकालकी अपेक्षा प्रातःकालमें नाडीकी गति बढजाती है। और निद्रामें नाडीकी संख्या घटजाती है ॥ ४ ॥

भोजनस्याथ समये वेगसंख्या विवर्द्धते। अहिफेनसुरादीनामुष्णानां यदि भोजनम् ॥ ५ ॥ बुभुक्षावसरे नाडी गतेर्वेगो ह्रसत्यलम्। एषा नाडी गतेर्वेगचर्या सामान्यतो मता ॥ ६ ॥

अर्थ–यदि अफीम मद्य आदि गरमवस्तु खायतो उस गरम भोजनके कारण नाडीकी संख्या बढजाती है, और अत्यंत शीतलवस्तू खानेसें नाडीकी संख्या न्यून होजाती है, यह अर्थांशसें जाना जाताहै। उसीप्रकार भोजनके समय नाडीका वेग मंद होजाताहै, यह नाडीकी सामान्य गति संख्या कही है।

नाडीकी व्यवस्था जाननेके लिये वैद्यको प्रथम इतनी वस्तुओंका जानना अति आवश्यकहै। जैसे प्रथम नाडी देखनेकी विधि दूसरे आरोग्यावस्थाकी नाडी तीसरे रोगावस्थाकी नाडी और चतुर्थ नाडी देखनेका यंत्र।

१ नाडीदेखनेकी विधि–नाडी देखनेके जो नियम वैद्योंने निश्चितकर रक्खेहै, यदि उनके अनुसार न देखी जावेतो हम जानतेहै कि नाडीका यथार्थज्ञान होना अति असंभवहै। अतएव अब उन नियमोंको वर्णन करतेहै।

प्रथम–वैद्य या रोगी कहींसें चलकर आयाहो तो उचितहै कि थोडीदेर विश्राम

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

लेकर फिर नाडी देखे या दिखावे, तथा परिश्रमकी अवस्थामें और शोधक विचारके समयभी नाडी न देखे ऐसे समयकी नाडी विश्वास योग्य नहीं है।

दूसरे–रोगीको बिठलाकर या लिटाकर यदि कोई आवश्यकता होयतो खडा करके रेडिअल् आर्टेरी Radial Artery (जो पहुचेमें अंगूठेकी जडमें त्वचाके भीतरहै उसपर वरावर तीन उंगली रखकर नाडी देखना, परंतु कभी पहुचेकी देखना असंभव होयतो अन्योन्य स्थानकी देखे, जैसें मस्तक संबंधी रोगमें कनपटीकी नाडी तथा गठियामें पहुचेपर पटी बंधीहो अथवा दोनो हाथ कटगए हो तो प्रगंड (वाजू) की नाडी देखे, और कभी पैरमें टकनेके नीचे भीतरकी तरफ पोस्टीरिअर टीवीअल Posteriar Tibial नाडीको देखते है।

तीसरे–वैद्यको रोगीके दोनों हाथोंकी नाडी देखनी चाहिये, इसका यह कारण है कि ऐसा देखा गयाहै, कि एक ओरकी नाडी दूसरी नाडीसैं बडी होती है। और यहभी स्मरण रखना कि दहने हाथकी वामहाथसैं और वामहाथकी देहने हाथसैं नाडी देखे इसमें सरलता रहती है।

चतुर्थ–स्त्रीकी नाडी दहने हाथकी अपेक्षा वामहाथकी उत्तमरीतिसैं विदित होती है इस्सैं प्रतीत होताहै कि स्त्रियोंकी वाए हाथकी नाडी कुछ वडी होती है। हिंदुस्थानी वैद्य जो स्त्रीके वामकरकी नाडी देखतहै कदाचित् उसका यही कारण न होय।

पांचवे–नाडीकी स्पन्दन संख्या अर्थात् शीघ्रगति और मंदगति जाननेके पश्चात् उसके बलाबल जाननेको कुछ दवाकर फिर ढीली छोडदेवे, जिस्सै यह प्रतीत होजावे कि नाडी दबानेसैं कितनी दवती है। परन्तु इतनी न दवावे कि जिस्सै रुधिरका भ्रमण वन्दहोजावे, केवल इतनी दावेकि जिस्सै नाडीकी तडफ प्रतीत होती रहे।

छटे–धैर्यरहित पुरुषोंकी या अत्यंत डरपोककी नाडी देखैतो उनका ध्यान वार्त्तालापमें लगाय लेवे, इसका यह कारणहै कि ऐसे मनुष्योंकें तुच्छकारणसैं हृदयकी खटक न्यून होजाती है। अतएव नाडीका वृतान्त ठीक ठीक निश्चय नहीं होता।

अव कहतेहै कि रुदन करनेसैं और मचलनेसैं बालकोंके पहुचेकी नाडीका देखना कठिनहै। इसवास्ते उनको गोदीमें बैठाल खिलौने आदिका लोभ देके उनके छातीपर कान लगाकर हृदयकी धडधडाहटका निश्चय करना। यदि नाडी-काही देखना जरूरी होवेतो निद्रा अवस्थामें देखनी चाहिये।

सातमे–नाडी देखनेके समय यहभी अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि नाडी-

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

पर किसी प्रकारका दवाव नहो जैंसे बंध, अथवा तंगी, या रसौली, वा घोटू आदिका सहारा नहोवे। क्षणिक और मानसिक रोगोंमें अनेकवार नाडी देखनी चाहिये कि जिस्सै रोग भलेप्रकार समझमें आयजावे।

आरोग्यावस्थाकी नाडी।

मध्यम श्रेणीके युवापुरुषोंकी नाडी आरोग्यावस्थामें साथ प्रबंधके कुछ दवने वाली और कुछ भरीहुई होती है। परंतु चिन्ह भेद और अवस्था तथा स्वभावादि भेदसैं नाडीमें अंतर होजाताहै और वालिकाओंकी नाडी पुरुषोंकी अपेक्षा कुछ छोटी होती है और शीघ्रचारिणी होती है दंभी प्रकृतिवालोंकी नाडी भरीहुई, कठोर, और शीघ्रगामिनी होती है कोमलस्वभाववाले मनुष्योंकी नाडी धीरे धीरे चलेहै और नम्र होतीहै। वृद्धावस्थामें कठोर होती है।

नाडीकी स्पन्दनसंख्या (जिनका निश्चय करना नाडीकी और अवस्थाओंसे सुगमहै) सदैव हृत्पद्मके संकुचित खटकेके समान होती है। इस्सैं कदापि अधिक नहीं होती, परंतु अपस्मार आदि चित्तके रोग और मूर्च्छा आदिमें एक दो गति न्यून होजाती है।

छोटे वालककी नाडीकी गति अधिक होती है, फिर जैसैं जैसैं अवस्थाकी वृद्धि होतीहै उसी प्रकार क्रमसैं नाडीकी स्पन्दन संख्या न्यून होती जातीहै परंतु वृद्धावस्थामैं फिर कुछ कुछ बढती है।

अवस्थानुसारनाडीकीगति	
गतिप्रमाण	अवस्था
१४०	सद्यःप्रसूत बालककी
१२० सैं १३० तक	दूधपीनेवाले बालककी
१००	५ वर्षसैं ६ वर्ष तकके बालककी
९०	१५ वर्षतकवाले नवयुवावस्थामें
७० सैं ७५	३५ वर्षतक आर्थात् युवावस्थामें
७०	३५वर्षसैं लेकर ५० वर्ष वालोंकी आर्थात् वृद्धावस्थामें
७५ सैं ८० तक	अति वृद्धावस्थामें

इस चक्रमें जो नाडीकी संख्या है वह आरोग्यपुरुषके लिये ठीक है। परंतु रोगावस्थातें न्यूनाधिक होजातीहै। यदि नैरोग्यपुरुषकी नाडीकी गति १ मिंटमें ७२ वार हो और स्त्रीकी ८२ वार होय तो ठीक जाननी, स्त्रीकी १० गति पुरुषसैं सदैव अधिक होतीहै। और गर्मी-सूजन, ज्वर, अतिदुर्बलता, जागना, प्ले, थोराके प्रथमदर्जासिलानुरुधिर. क्रोध, जोश आदिमें ७० या अस्सीसैं १०० या १२० वरंच २०० तक नाडीकी गति संख्या प्रत्येक मिंटमें हो जातीहै एवं सरदी अलस्य, निद्रा, कुछ थकावट,

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

क्षुधामें, हवाके दवावमें, बेफिकरीमें, इत्यादि कारणोंसें नाडीकी गति ऐसी न्यून होजातीहै कि प्रत्येक मिंनटमें ६० या ३५ तकही रहजाती है ।

रोगावस्थाकी नाडी ।

रोगावस्थामें नाडीकी गति संस्था और अन्य अन्य लक्षणोंमें विशेष अंतर होताहै जैसै आगे लिखत है ।

ज्वर, प्रदर, वमन, विरेचन, वुहरान, इत्यादि रोगोंमें नाडी इतनी शीघ्र चलती है कि गणना करना कठिन होजाता है यदि ज्वरावस्थामें अकस्मात् नाडी मंदपडजावे तथा उसके साथ अन्य अशुभ लक्षणोंकी आधिक्यता होवे तो उसप्राणीके मस्तकमें किसीप्रकारके विघ्नसैं सत्ता या पक्षघात होकर रोगीके मरनेका भय रहता है ।

गति संख्याके शिवाय नाडीमें जो वृत्तान्त निश्चय होताहै, उसको आगे कहते है ।

नाडीकीइंग्रेजीसंज्ञा ।

आनन्दादितरावस्था स्वानंदापेक्षया गतेः ।
वेगसंख्या वर्द्धते सा नाडीन्फ्रीक्वेंटशब्दिता ॥ १ ॥

अर्थ–आनंदकी अपेक्षा जिस नाडीकी संख्या अधिक वेगवान् हो उसको इंग्रेजीमें Freequent फ्रीक्वेंट कहते है ।

आनन्दादितरावस्था स्वानंदापेक्षया गतेः ।
वेगसंख्या ह्रसति सा नाडीन्फ्रीक्वेंटशब्दिता ॥ २ ॥

अर्थ–जिस नाडीमें आनन्दकी अपेक्षा स्पन्दन संख्या न्यून होय उसमंदचारिणी नाडीको अंग्रेजीमें Infreequent इनफ्रीक्वेंट कहते है ।

चिरकालधृतायां च नाड्यां संख्या न वर्द्धते ।
न वा ह्रसति वेगस्य सा च रैग्यूलराभिधा ॥ ३ ॥

अर्थ–जिस नाडीपर बहुतदेरीतक हाथधरनेपरभी कुछ न्यूनाधिक्य प्रतीत न होय उस नाडीको इंग्रजीमें Regular रेग्यूलर कहते है ।

चिरकालधृतायाञ्च नाड्यां संख्या विवर्द्धते ।
मन्दी भवति चावस्था सैरैग्यूलरशब्दिता ॥ ४ ॥

अर्थ–जो नाडी बहुतदेरी हाथरखनेसैं कुछ न्यून्याधिक्य प्रतीत होय उस अवस्थाको डाक्टरलोग Irregular इरेग्यूलर कहतेहै ।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

सकृदङ्गुलिसंस्पर्शादन्तर्धानन्तु गच्छति ।
इन्टरमिटेंटा भिधा साऽसृक्कफाशयदूषिणी ॥५॥

अर्थ-जो नाडी एकवार उँगलियोंका स्पर्शकर छिपजावे, वह रुधिर और कफाशयको दूषितकर्त्ता हृदयसंबंधी व्याधिको उत्पन्नकरे इसको इंग्लंडीयवैद्य Intermittent इन्टरमिटेंट कहते है ॥ ५ ॥

यदा रक्तेन पूर्णत्वमापन्ना नाडीका भवेत् ।
तदा फुल् शब्दविख्याताथवा लार्जेति विश्रुता ॥ ६ ॥

अर्थ-जिस समय नाडी रुधिरसैं परिपूर्ण होती है उसको डाक्टरलोग फुल या Full Large लार्ज ऐसा कहते है ॥ ६ ॥

यस्यां हृत्कमलोच्छ्वासाद्रक्तमल्पं वहेत्तु सा ।
रिक्तानाडी स्माल संज्ञा समाख्याताङ्ग्लभाषया ॥ ७ ॥

अर्थ-जिस समय हृदयसैं रुधिर अल्पप्रगटहोय उस रिक्तनाडीको पाश्चिमात्यवैद्य Egual इस्माल ऐसा कहतेहैं ॥ ७ ॥

या वै गुणवदातन्वी नाडी क्षीणत्वशंसिनी ।
रक्ताऽक्तता द्योतयन्ती सा थ्रेडीपलससंज्ञिता ॥ ८ ॥

अर्थ-जो नाडी डोरेके माफिक वहुतबारिक प्रतीत होय वह क्षीणता और रक्तकी अल्पताको प्रकाश करने वालीको Thready pulse थ्रेडीपल्स कहते है ॥ ८ ॥

अङ्गुलीभिर्यदा नाडी पीडितापि न नम्रताम् ।
व्रजेत्तदातिरूक्षत्वद्योतिनीहाडशब्दिता ॥ ९ ॥

अर्थ-जो नाडी उँगलियोंके पीडनसैंभी अर्थात् दाबनेसैंभी नम्र न होवे वो रूक्षताकी द्योतनकरता नाडीको डाक्टरजन Hard हार्ड ऐसा कहते हैं ॥ ९ ॥

अङ्गुलीभिर्यदा नाडी पीडिता नम्रतां व्रजेत् ।
सार्द्रत्वद्योतिनी मृद्वी साफ्ट शब्देन शब्दिता ॥ १० ॥

अर्थ-जो नाडी उंगलियोंके दबानेसैं दबजावे उस मृदुनाडीको साफ्ट ऐस कहते है यह आर्द्रत्वको द्योतन करती है ॥ १० ॥

प्रतिस्पन्दं शीघ्रतायां संख्या यस्या न वर्द्धते ।
सकृच्छ्रैऽक्यधरा तूर्णगा नाडी क्वीक् शब्दिता ॥ ११ ॥

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अर्थ–जिस नाडीमेंकी प्रत्येक तडफ शीघ्रभी होय परंतु स्पन्दन संख्या न बढे किंतु एकवारही जल्दीकरे उस तूर्णगामिनी नाडीको इंग्लैंडीय वैद्य Quick क्वीक् ऐसा कहते है यह निर्बलताको द्योतन करती है ॥ ११ ॥

यस्या मन्दगतिर्या च नाडी पूर्णा भवेत्तु सा ।
स्लोशब्दशब्दिता ज्ञेया रक्तकोपप्रकाशिनी ॥ १२ ॥

अर्थ–जो नाडी मंदगतिहो और परिपूर्णहो वह रुधिरकोपके प्रकाश करनेवाली नाडीको इंग्लैंडीय वैद्य Slow स्लो कहते है ॥ १२ ॥

खूनकी गतिके कारण नाडीके अनेक भेद है जैसैं आर्योटा Poorta Water Hamr वाटरहेमर Bounding बौंडिंग Lavauering लेवरिंग Thriling Pulse थ्रिलिंग पल्स Readoudled रिडवल Dicrratores या डाईक्रोटस और इसीटेट- आदि है । जो लहरके समान उंगलियोंको लगकर हटजावे उसको जर्किंग अर्थात् झटकेदार नाडी कहते है । किवारोंकी रिगडके माफिक आर्योटा होती है । उछलनेवाली नाडीको वौडिंग् कहते है, जो नाडी काँपती हो उसको थ्रिलिंगपल्स कहते है । इसीप्रकार अन्य सब नाडियोंकी गतिको बुद्धिवान् डाक्टरद्वारा और उनके ग्रंथोंसैं जाननी इसजगे ग्रंथविस्तारके भयसैं नहीं लिखी ।

नाडीदर्शक यंत्र ।

नाडी देखनेके लिये अंग्रेजी डाक्टरोंने एक यंत्र निर्माण करा है उसको अंग्रेजी बोलीमें स्फिग्मोग्राफ Sphygmograph कहते है इसमें अनेक टुकडे होते है विना दृष्टिगोचर हुये उनका समझना मुसकिल है इसलिये उस यंत्रकी तसवीर जो इस नाडीदर्पणग्रंथके पिछाडी हैं उस्सैं समझना उसके आवश्यक विभागोंका कुछ इस जगे वर्णन करते है ।

अ–पटलीके चलाने और रोकनेका खूटी ।
क–तालील गानेकी कमानी ।
च–नाडीके कम् अधिक दवाव करनेका गोलाकार चक्रविशेष ।
ट–कज्जलसैं रंजित कागज धरनेकी जगह ।
त–चिन्हित होनेके पश्चात् जो कागज निकलता है ।
प–जिनसैं कागजपर चिन्ह होते है वो सूई ।

इस यंत्रके लगानेकी यह विधि है कि जब हांतीदांतवाले स्थानकी रेडियल्पर धरकर यंत्रको काममें लाते है तो नाडीकी तडफ कमानीको लगती है जिसके द्वारा सूईसैं कागजपर लहरदार रेखा प्रकट होती है । कि जिनसैं हृदयके घडनेका

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अथ डाक्टरीमतानुसार नाडीचक्रम्

नाडीयोंकी व्यवस्था	संस्कृतनाम	इंग्रेजीअक्ष०ना०	इंग्रेजी नाम	संख्या
हृदयके खटकाके संख्यानुसारनाडी दोप्रकारकीहै पहली फ्रीक्वेंट इसमें आरोग्य अवस्थाकी अपेक्षा गति संख्या अधिकहोतीहै।	शीघ्रचारिणी	Friquent	फ्रिक्वेंट	१
दूसरी इन्फ्रीक्वेंट इसकी दशा फ्रीक्वेंटसैं विपरीत होतीहै यह स्त्रीयोंके वातगुल्म रोगमें होतीहै।	मंदगामिनी	Infriquent	इन्फ्रिक्वेंट	२
हृदयकी गतिके प्रबंधानुसारसी नाडीकी दो अवस्था पाई जातीहै एक रेग्यूलर, नाडीन्में क्रमानुसार रुधिर जानेवाली नाडीको रेग्यूलर कहतेहै इसपर हाथ रखनेसें गति एकसी मालूमहो और कभी बीचमें अंतर नहीं पडता।	सावधानता सूचक	Regulars	रेग्यूलर्स	३
दूसरी इररेग्यूलर अर्थात् नाडीन्में क्रमके विपरीत रुधिर जाय इसपर हाथ रखनेसें गति एकसी प्रतित नहीं होती और बीचमें अंतर पड जाताहै रोगावस्थामें नाडीका सप्रबंधित अर्थात् क्रमपूर्वक चलना अच्छाहै।	असावधानता सूचक	Irregulars	इररेग्यूलर्स	४
जिस नाडीके तडफ होनेमें जितना काल जाताहै उससै अधिक होजाय अर्थात् दूसरी गतिकाभी कालव्यतीत होजावे उसको इंटरमिटेंट कहतेहै परंतु गतिके भेदसे यह दोप्रकारकीहै एक रेग्यूलर इन्टरमिटेंट और दूसरी इररेग्यूलर इन्टरमिटेंट है।	सांतरिक	Intermittent	इंटरमिटेंट	५
मस्तकके सूजनेमें अन्यकारणोंसें नाडीमें अधिक रुधिर पहुचें और उंगलियोंके नीचे नाडीका उत्प्लवन अधिक प्रतीतहो तो उसनाडीको फुल या लार्ज कहतेहै यह अधिक रुधिर वृद्धिमें अथवा कठोररोगों प्रतीत होतीहै।	परिपूर्ण	Full या Large	फूलया लार्ज	६
जो नाडी फुल लार्जके विपरीतहो अर्थात् नाडीमें अल्प रुधिर पहुचे और नाडीका उत्प्लवन उंगलियोंको थोडा प्रतीतहो उसनाडीको स्माल अर्थात् बारीक नाडी कहतेहै।	रिक्त	Esmal	इस्माल	७
जब नाडी अत्यंत सूक्ष्मसूतके समानहो तो उसको इंग्रेजीमें थ्रेडीपल्स कहतेहै यह रुधिरकी न्यूनावस्था अथवा दुर्बलतामें देखी जातीहै।	सूक्ष्मतर	Thready Pulse	थ्रेडीपल्स	८
नाडीकी दिवारकी लचकके तुल्यनाडीकी दोगति होतीहै एक हार्ड अर्थात् कठोर इसैं किंचिन्माभी दबानेसें उंगलियोंको कठोरता प्रतीत होतीहै यह नाडीकी अधिक लचकके कारण होतीहै।	काठिन	Hard	हार्ड	९
द्वितीय साफ्ट या नम्र जिसकी दशा हार्ड नाडीके विपरीत होतीहै यह नाडीके अनुरोध (नाडीकी दिवार) की लचकसैं और देहके निर्बलतामें पाई जातीहै।	मृदु	Soft	साफ्ट	१०
नाडीकी गतिमें जो समय व्यतित होताहै उसके अनुसार नाडी द्विविध होतीहै एक क्वीक् अर्थात् शीघ्रचारणी नाडीकी प्रत्येक गाति शीघ्र शीघ्रहो परंतु एक अथवा मानासीक रोगोमें जिनमें स्वभाव दुष्टहो उनमें पाईजातीहै।	शीघ्रगामिनी	quick	क्वीक्	११
जो क्वीक् नाडीके विपरीतहो अर्थात् सुस्तहो उसको स्लौ नाडी कहते है।	धीरगामिनी	Slow	स्लो	१२

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

हाल और रुधिरभ्रमणका वृत्तान्त उत्तमरीतीसैं प्रतीत होता है । प्रत्येक लहरमें एक रेखा उठनेकी होती है फिर मुडनेकी और फिर उतरनेकी तथा उतरनेकी लहरमें दो लहर प्रगट होती है इन लहरोंकाभी चिन्ह रिफग्मोग्राफ यंत्रमें लिखा है सो देखलेना ।

खडीरेखा हृदयके संकोच होनेसैं होती है और मुरडनेका कोना नाडियोंके किसीप्रकार संकोचसैं होताहै और जिससमय हृदयके संकोचसैं रुधिर अयार्टामें पहुँचताहै तो पहली रेखा प्रगट होती है फिर अयार्टाके किवाड बंदहोनेसैं दूसरी लहर खांचेतक वनती है अयार्टाके सुकडनेके पीछे रुधिर आगेको बढजाताहै और दूसरी लहर परिपूर्ण होकर एकवार हृदयके खटकेकी चिन्हतरेखा संपूर्ण होजाती है ।

इति नाडीदर्पणे ऐंग्लैंडीयनाडीपरीक्षावर्णनं नाम पञ्चमावलोकः ।

इति श्रीमाथुर कृष्णलालपुत्रदत्तरामेण सङ्कलिते आयुर्वेदोद्धारे बृहन्निघण्टुरत्नाकरान्तर्गते नाडीदर्पणे ऐंग्लैंडीयनाडीपरीक्षावर्णनं नाम पञ्चमावलोकश्चाष्टत्रिंशस्तरङ्गः ॥ ३८ ॥

समाप्तोयंनाडीदर्पणाख्यो ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना
कल्याण—मुंबई.

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

लक्ष्मीवेङ्कटेश्वरायनमः।

कोकिलाव्रतमाहात्म्यस्य

सूचनापत्रम्।

इह तावद्ब्रह्माण्डान्तर्वर्तिनवखण्डभूमण्डलशिखण्डीभूतकर्मकाण्डस्थलभरतखण्डे स्ववर्णाश्रमधर्माचरणश्रद्धावतां जनानाम् इहामुत्रेष्टफलावाप्तिसाधनानि नित्यनैमित्तिककाम्यानि नानाव्रतकर्मादीनि प्रसिद्धानि सन्ति। तथैव तत्तद्व्रतादिविधिप्रतिपादकव्रतार्कव्रतराजादयोपि ग्रन्थाः प्रसिद्धः। तेषु स्त्रीणां जन्मनि जन्मान्तरेच सौभाग्यादि प्रिययोगभोगदं कोकिलानामकं व्रतं तद्देवतार्चनोद्यापनादिविधिस्तदितिहासश्च कथितोस्ति खलु। तथापि स संक्षिप्त एव। अतो मया बहुप्रयत्नतः कस्यचित् विदुषःप्रस्थ सकाशात् स्कन्दपुराणान्तर्गतकनकाद्रिखण्डस्यैकत्रिंशदध्यायात्मकं शिवनारदसंवादरूपं साद्यन्तं मनोरमं कोकिलाव्रतोत्पत्तिहेतुभूतं दग्धदेहपार्वत्याः कोकिलाजन्मप्राप्तिकथोपबृंहितं कोकिलामाहात्म्यं समाहृत्य शास्त्रिभिः शोधयित्वा सटिप्पणम् कारयित्वा च अस्मल्लक्ष्मीवेङ्कटेश्वराख्येङ्कनयन्त्रे सललितसीसकाक्षरैर्मुद्रितमस्ति। यस्मिन् वर्षेधिकाषाढस्तस्मिन्नेव वर्षे शुद्धाषाढपूर्णिमामारभ्य मासपर्यन्तं प्रत्यहं स्नानदानार्चनमाहात्म्यश्रवणविधियुक्तकोकिलाव्रताचरणं स्त्रीभिःकार्यमित्युक्तम्। स व्रताचरणकालोऽस्मिन्नेव वर्षेऽधिकाषाढप्राप्तेरागन्तेति संप्रत्येवैतन्माहात्म्योपयोगः सर्वासां व्रताचरण शीलानांसम्यग् भविष्यतीति ज्ञात्वा झटिति संमुद्य प्रकाशितम्। तस्मात् तन्मुद्रणायासम् आस्तिकग्राहकाः सफलीकुर्वन्त्विति सविनयेयंमत्प्रार्थना! ग्राहकाणां माहात्म्यपुस्तकानि योग्यमूल्यैर्मिलिष्यन्तीत्यलं विस्तरेण।

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

हाल और रुधिरभ्र
रेखा उठनेकी ह
दो लहर प्रग
देखलेना।
ख
सीघ
तो
तन
पार
इ
त्वाकर
शस्त
इ

तनिश्लोक्याख्यया भूषणाख्यया रामानुजी
याख्यया च व्याख्यया समेतस्य
श्रीवाल्मीकिरामायणस्य

प्रसिद्धिपत्रिका।

भो भो विद्यापारावारपारीणा इदं विदाङ्कुर्वन्त्वत्रभवन्तः—तनिश्लोक्याख्य
या भूषणाख्यया रामानुजीयाख्यया च व्याख्यया समेतं श्रीवाल्मीकिरामाय
णम् अत्युत्तमतैलङ्गदेशीयपुस्तकमालोच्य पण्डितैः संशोधितं, तच्च सम्प्र
सुव्यक्तैः स्थूलसूक्ष्माक्षरैर्लक्ष्मीवेङ्कटेश्वरमुद्रणयन्त्रे मुद्यते, तस्य च नागेशप्रभृति
विनिर्मिताः सन्ति यद्यपि बह्वयो व्याख्याः, तथापि सहृदयहृदयाह्लादकनान
विधाऽपूर्वार्थान्वेषणे प्रयतमानैरार्यकुलोचितधर्ममर्यादाविचारशीलैर्महाशयैर्निर्वि
शेषत्वेन सविशेषत्वेन च ब्रह्मस्वरूपप्रतिपादकवेदान्तवाक्यानां समीचीनतत्व
सहकृतविषयभेदव्यवस्थापनेन तात्पर्यार्थनिर्णायकतया श्रीवाल्मीक्यभिप्रायानु
रामानुजीयव्याख्यातनिश्लोकीव्याख्यासमेता भूषणाख्यव्याख्याऽवश्यं निरीक्षणी
येति, मन्येऽहं निरीक्षणेनाभिज्ञानामवश्यं जिघृक्षा भवेदिति।

व्याख्याद्वयोपेतस्य भगवद्गुणदर्पणाख्यस्य
श्रीविष्णुसहस्रनामभाष्यस्य

प्रसिद्धिपत्रिका।

अनुष्टुप्श्लोकात्मकनिरुक्त्याख्यव्याख्यासमेतं, नामनिर्वचनोपयोगिप्रकृतिप्र
त्ययप्रदर्शकनिखिलतन्त्रप्रधानीभूतपाणिनीयस्मृतिसूत्रगर्भितनिर्वचनाख्याद्वितीय
व्याख्यासमेतं च, सहृदयहृदयाह्लादकं श्रीभगवद्गुणदर्पणाख्यं श्रीविष्णुसहस्र
नामभाष्यमासीत्तैलङ्गदेशाक्षरैर्द्राविडदेशाक्षरैश्च मुद्रितम्, तच्चास्मदीयदेशेऽती
वदुर्लभतरमिति मनसि निधाय सकलजनोपकृतयेऽतिप्रयासेन तच्च तैलङ्गदेशा
द्धानाय्य देवाक्षरैर्लेखयित्वा मुहुर्मुहुरभिज्ञजनद्वारा संशोध्य च, स्थूलसूक्ष्मा
र्मनोहरं मुद्र्यते, येषां महाशयानां स्याज्जिघृक्षा, तैर्द्रुततरम् सूचना क
यतस्तत्पुस्तकप्रेषणेऽहमुद्यतोभवेयमिति मे विज्ञप्तिः

श्रीकृष्णदासात्मजो गंगाविष्णुः
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" मुद्रणयन्त्रम् कल्याण—(मुंबई)

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No.......................
Book No.......................
Acc No.......................

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection

Digitization by Agam Nigam Digital Preservation Trust, Chandigarh. Funding by IKS-MoE

अ. भा.
श्री शंक
स्मा
क्रमांक
ग्रन्थनाम
लेखक

CC-0. All India Ayurvedic Congress (A.I.A.C), Dhanwantri Bhawan New Delhi Collection